उ.प्र. राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय

(उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा निर्गत अधिनियम संख्या 10, 1999 द्वारा स्थापित)

MASY-112/114N

सामाजिक जनांकिकी

परामर्श समिति

प्रो. सत्यकाम, माननीय कुलपति, उ.प्र. राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

कर्नल विनय कुमार, कुलसचिव, उ.प्र. राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

पाठ्यक्रम निर्माण समिति (अध्ययन बोर्ड)

प्रो. संतोषा कुमार, निदेशक, समाज विज्ञान विधाशाखा, उ.प्र. राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

प्रो. आशीष सक्सेना, विभागाध्यक्ष, समाजशास्त्र विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज

प्रो. महेश शुक्ला, प्रोफेसर, टी.आर.एस. कालेज, ए.पी.एस. विश्वविद्यालय, रीवाँ, म.प्र.

डॉ. रमेश चन्द्र यादव, असि. प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, बैसवारा, पी.जी. कालेज, लालगंज, रायबरेली।

इकाई लेखकः डॉ. दुर्गेश कुमार श्रीवास्तव, असि. प्रोफेसर, समाजशास्त्र, पं. दीनदयाल उपाध्याय राजकीय महाविद्यालय, सैदपुर, गाजीपुर, इकाईः 1,5,6,7,11,12,13,15,21

इकाई लेखकः डॉ. पंकज सिंह, असि. प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, इकाईः 2,19

इकाई लेखकः डॉ. सुस्मिता सिंह, एसो. प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, इकाईः 3,4

इकाई लेखकः डॉ. हसन बानो, असि. प्रोफेसर, समाजशास्त्र, डी.ए.वी. पी.जी. कॉलेज, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, इकाईः 18,20

इकाई लेखकः डॉ. ऐश्वर्या सिंह, असि. प्रोफेसर, जगत तारन गर्ल्स डिग्री कॉलेज, जार्जटाउन, प्रयागराज, इकाईः 16,17

इकाई लेखकः डॉ. रमेश चन्द्र यादव, असि. प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, बैशवारा पी.जी. कॉलेज, लालगंज, रायबरेली, लखनऊ विश्वविद्यालय, उ.प्र. इकाईः 14

इकाई लेखकः डॉ. मनोज कुमार, असि. प्रोफेसर, समाजशास्त्र (संविदा) समाज विज्ञान विधाशाखा, उ.प्र. राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराजए इकाईः 8,9,10

सम्पादक – डॉ. विमल कुमार लहरी असि. प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग,काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

पाठयक्रम समन्वयकः डॉ. मनोज कुमार असि प्रोफेसर (संविदा), समाज विज्ञान विधाशाखा, उ.प्र. राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

2024 (मुद्रित)

© उ.प्र. राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज–211021

ISBN …

सर्वाधिक सुरक्षित इस सामग्री के किसी भी अंश को उ.प्र. राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज की लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप में मिमियोग्राफी (वक्रमुद्रण) द्वारा या अन्यथा पुन: प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

नोट: पाठ्यक्रम सामग्री में मुद्रित सामग्री के विचारों एवं आंकड़ों आदि के प्रति विश्वविद्यालय उत्तरदायी नहीं है।

प्रकाशन– उ.प्र. राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

प्रकाशक– कुलसचिव, कर्नल विनय कुमार, उ.प्र. राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

मुद्रक – मेसर्स चंद्रकला प्राइवेट लिमिटेड, प्रयागराज

पाठ्यक्रम

इकाई	शीर्षक
इकाई–1	जनांकिकी– आशय, क्षेत्र प्रकृति और महत्व
इकाई–2	सामाजिक जनांकिकी का उद्विकास एवं सामाजिक जनांकिकी का अध्ययन
इकाई–3	माल्थस के जनसंख्या संबंधी विचारों के प्रेरक कारक एवं माल्थस का जनसंख्या का सिद्धान्त
इकाई–4	माल्थस के जनसंख्या सिद्धान्त की आलोचनाएं एवं नव–माल्थसवाद
इकाई–5	माईकेल थामस सेडलर का घनत्व एवं संतनोत्पादकता सिद्धान्त एवं डबल डे का आहार सिद्धान्त
इकाई–6	कैस्ट्रो का प्रोटीन उपभोग सिद्धान्त रेमण्ड पर्ल एवं लावेल लीड का जनसंख्या सिद्धान्त
इकाई–7	हरबर्ट स्पेन्सर का प्रजनन फलन सिद्धान्त
इकाई–8	हेनरी जॉर्ज का सामाजिक असंतुलन का सिद्धान्त और आर्सेन ड्यूमॉन्ट का सामाजिक केशाकर्षक का सिद्धान्त और फ्रैंक फिटर का जनसंख्या सिद्धान्त
इकाई–9	आर्थर हैंडले और एडन वेबर का सिद्धांत और निटिस का जनसंख्या सिद्धांत और ब्रेंटो की जनसंख्या
इकाई–10	हेनरिक मेरकर, ईस्टेनबर्ग, लीबिन्सटीन और एलेक्जेण्डर मोरिस कार–साउण्डर्स का सिद्धान्त का जनसंख्या सिद्धांत
इकाई–11	अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धान्त का उद्भव एवं विकास, अनुकूलतम जनसंख्या के मापदण्ड, अनुकूलतम सिद्धान्त की विशेषताए
इकाई–12	डाल्टन तथा राबिन्स के विचारों तुलना व कार साउडर्स के विचार, अनुकूलतम जनसंख्या की आलोचनाएं
इकाई–13	अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धान्त का महत्व एवं माल्थस के जनसंख्या सिद्धान्त से तुलना एवं श्रेष्ठता
इकाई–14	समाजिक परिवर्तन की अवधारणा और परिभाषा, सामाजिक परिवर्तन की विशेषताएंः परिवर्तन के तीन प्रतिमान
इकाई–15	सामाजिक परिवर्तन के सिद्धान्त और कारक, जनसंख्यात्मक कारक और सामाजिक परिवर्तन
इकाई–16	भारत में जनाधिक्य–निराशावादी विचारधारा और आशावादी विचारधारा
इकाई–17	भारत में जनाधिक्य के कारण और भारत में जनाधिक्य के दुष्परिणाम
इकाई–18	जनसंख्या नीति की परिभाषा और उद्देश्य, जनसंख्या नीति का सकारात्मक और नकारात्मक पहलू
इकाई–19	जनसंख्या नीति के उपागम, जनसंख्या नीति की आवश्यकता
इकाई–20	जनसंख्या शिक्षा का अर्थ एवं परिभाषा, जनसंख्या शिक्षा के तत्व
इकाई–21	जनसंख्या शिक्षा का पाठ्यक्रम और उद्देश्य, जनसंख्या शिक्षा की आवश्यकता तथा महत्व

विषय वस्तु

इकाई	शीर्षक	लेखक का नाम एवं पता	पृ.सं.
इकाई–1	जनांकिकी– आशय, क्षेत्र प्रकृति और महत्व	डॉ. दुर्गेश कुमार श्रीवास्तव असि. प्रोफेसर, समाजशास्त्र, पं. दीनदयाल उपाध्याय राजकीय महाविद्यालय, सैदपुर, गाजीपुर	4–32
इकाई–2	सामाजिक जनांकिकी का उद्विकास एवं सामाजिक जनांकिकी का अध्ययन	डॉ. पंकज सिंह असि. प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय	33–48
इकाई–3	माल्थस के जनसंख्या संबंधी विचारों के प्रेरक कारक एवं माल्थस का जनसंख्या का सिद्धान्त	डॉ. सुस्मिता सिंह एसोसिएट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय	49–59
इकाई–4	माल्थस के जनसंख्या सिद्धान्त की आलोचनाएं एवं नव–माल्थसवाद	डॉ. सुस्मिता सिंह एसोसिएट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय	60–71
इकाई–5	माईकेल थामस सेडलर का घनत्व एवं संतनोत्पादकता सिद्धान्त एवं डबल डे का आहार सिद्धान्त	डॉ. दुर्गेश कुमार श्रीवास्तव असि. प्रोफेसर, समाजशास्त्र, पं. दीनदयाल उपाध्याय राजकीय महाविद्यालय, सैदपुर, गाजीपुर	72–89
इकाई–6	कैस्ट्रो का प्रोटीन उपभोग सिद्धान्त रेमण्ड पर्ल एवं लावेल लीड का जनसंख्या सिद्धान्त	डॉ. दुर्गेश कुमार श्रीवास्तव असि. प्रोफेसर, समाजशास्त्र, पं. दीनदयाल उपाध्याय राजकीय महाविद्यालय, सैदपुर, गाजीपुर	90–108
इकाई–7	हरबर्ट स्पेन्सर का प्रजनन फलन सिद्धान्त	डॉ. दुर्गेश कुमार श्रीवास्तव असि. प्रोफेसर, समाजशास्त्र, पं. दीनदयाल उपाध्याय राजकीय महाविद्यालय, सैदपुर, गाजीपुर	109–123
इकाई–8	हेनरी जॉर्ज का सामाजिक असंतुलन का सिद्धान्त और आर्सेन ड्यूमॉन्ट का सामाजिक केशाकर्षक का सिद्धान्त और फ्रैंक फिटर का जनसंख्या सिद्धान्त	डॉ. मनोज कुमार असि. प्रोफेसर, समाजशास्त्र, उ.प्र. राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज	124–142
इकाई–9	आर्थर हैंडले और एडन वेबर का सिद्धांत और निटिस का जनसंख्या सिद्धांत और ब्रेंटो की जनसंख्या	डॉ. मनोज गौतम असि. प्रोफेसर, समाजशास्त्र, उ.प्र. राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज	143–157
इकाई–10	हेनरिक मेरकर, ईस्टेनबर्ग, लीबिन्सटीन और एलेक्जेण्डर मोरिस कार–साउण्डर्स का सिद्धान्त का जनसंख्या सिद्धांत	डॉ. मनोज कुमार असि. प्रोफेसर, समाजशास्त्र, उ.प्र. राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज	158–174

इकाई–11	अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धान्त का उद्भव एवं विकास, अनुकूलतम जनसंख्या के मापदण्ड, अनुकूलतम सिद्धान्त की विशेषताए	डॉ. दुर्गेश कुमार श्रीवास्तव असि. प्रोफेसर, समाजशास्त्र, पं. दीनदयाल उपाध्याय राजकीय महाविद्यालय, सैदपुर, गाजीपुर	175–190
इकाई–12	डाल्टन तथा राबिन्स के विचारों तुलना व कार साउडर्स के विचार, अनुकूलतम जनसंख्या की आलोचनाएं	डॉ. दुर्गेश कुमार श्रीवास्तव असि. प्रोफेसर, समाजशास्त्र, पं. दीनदयाल उपाध्याय राजकीय महाविद्यालय, सैदपुर, गाजीपुर	191–204
इकाई–13	अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धान्त का महत्व एवं माल्थस के जनसंख्या सिद्धान्त से तुलना एवं श्रेष्ठता	डॉ. दुर्गेश कुमार श्रीवास्तव असि. प्रोफेसर, समाजशास्त्र, पं. दीनदयाल उपाध्याय राजकीय महाविद्यालय, सैदपुर, गाजीपुर	205–218
इकाई–14	समाजिक परिवर्तन की अवधारणा और परिभाषा, सामाजिक परिवर्तन की विशेषताएंः परिवर्तन के तीन प्रतिमान	डॉ. रमेश चन्द्र यादव, असि. प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, बैशवारा पी.जी. कॉलेज, लालगंज, रायबरेली, लखनऊ विश्वविद्यालय, उ.प्र.	219–243
इकाई–15	सामाजिक परिवर्तन के सिद्धान्त और कारक, जनसंख्यात्मक कारक और सामाजिक परिवर्तन	डॉ. दुर्गेश कुमार श्रीवास्तव असि. प्रोफेसर, समाजशास्त्र, पं. दीनदयाल उपाध्याय राजकीय महाविद्यालय, सैदपुर, गाजीपुर	244–274
इकाई–16	भारत में जनाधिक्य–निराशावादी विचारधारा और आशावादी विचारधारा	डॉ. ऐश्वर्या सिंह असि. प्रोफेसर, जगत तारन गर्ल्स डिग्री कॉलेज, जार्जटाउन, प्रयागराज	275–283
इकाई–17	भारत में जनाधिक्य के कारण और भारत में जनाधिक्य के दुष्परिणाम	डॉ. ऐश्वर्या सिंह असि. प्रोफेसर, जगत तारन गर्ल्स डिग्री कॉलेज, जार्जटाउन, प्रयागराज	284–292
इकाई–18	जनसंख्या नीति की परिभाषा और उद्देश्य, जनसंख्या नीति का सकारात्मक और नकारात्मक पहलू	डॉ. हसन बानो असि. प्रोफेसर, समाजशास्त्र, डी.ए.वी. पी.जी. कॉलेज, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय	293–310
इकाई–19	जनसंख्या नीति के उपागम, जनसंख्या नीति की आवश्यकता	डॉ. पंकज सिंह असि. प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय	311–324
इकाई–20	जनसंख्या शिक्षा का अर्थ एवं परिभाषा, जनसंख्या शिक्षा के तत्व	डॉ. हसन बानो असि. प्रोफेसर, समाजशास्त्र, डी.ए.वी. पी.जी. कॉलेज, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय	325–341
इकाई–21	जनसंख्या शिक्षा का पाठ्यक्रम और उद्देश्य, जनसंख्या शिक्षा की आवश्यकता तथा महत्व	डॉ. दुर्गेश कुमार श्रीवास्तव असि. प्रोफेसर, समाजशास्त्र, पं. दीनदयाल उपाध्याय राजकीय महाविद्यालय, सैदपुर, गाजीपुर	342–362

इकाई–1: जनांकिकी– आशय, क्षेत्र प्रकृति और महत्व

इकाई की रूपरेखा

1.1 उद्देश्य
1.2 प्रस्तावना
1.3 जनांकिकी का अर्थ एवं आशय
    1.3.1 संकुचित दृष्टिकोण
    1.3.2 व्यापक दृष्टिकोण
1.4 जनांकिकी का क्षेत्र
    1.4.1 जनांकिकी की विषय सामग्री
        1.4.1.1 जनसंख्या का आकार
        1.4.1.2 जनसंख्या की संरचना अथवा गठन
        1.4.1.3 जनसंख्या का वितरण
        1.4.1.4 जनसंख्या को प्रभावित करने वाले तत्व
        1.4.1.5 जनसंख्या नीति
1.5 जनांकिकी की प्रकृति
    1.5.1 जनांकिकीय विश्लेषण की रीतियाँ
        1.5.1.1 व्यक्ति, विशिष्ट या सूक्ष्म जनांकिकी रीति
        1.5.1.2 व्यापक जनांकिकी रीति
1.6 जनांकिकी का अन्य शास्त्रों से सम्बन्ध
    1.6.1 जीवशास्त्र एवं जनांकिकी
    1.6.2 समाजशास्त्र एवं जनांकिकी
    1.6.3 भूगोल एवं जनांकिकी
    1.6.4 अर्थशास्त्र एवं जनांकिकी
    1.6.5 मानवशास्त्र एवं जनांकिकी
1.7 जनांकिकी का महत्व
1.8 सारांश
1.9 संदर्भ ग्रन्थ
1.10 बोध के प्रश्न
    1.10.1 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न
    1.10.2 लघु उत्तरीय प्रश्न
    1.10.3 वस्तुनिष्ठ प्रश्न
1.11 वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर
1.12 पारिभाषिक शब्दावली
1.12 उपयोगी/सहायक पाठ्य सामग्री

1.1 उद्देश्य

इस इकाई अध्ययन करने के पश्चात आप निम्न बिन्दुओं को समझने में सक्षम होंगे :

1. जनांकिकी का अर्थ या आशय।
2. जनांकिकी के संकुचित एवं व्यापक दृष्टिकोण से आशय
3. जनांकिकी का क्षेत्र, विषय सामग्री, जनसंख्या का आकार. जनसंख्या की संरचना, अथवा गठन, जनसंख्या का वितरण।
4. जनसंख्या को प्रभावित करने वाले तत्त्व कौन–कौन हैं?
5. जनसंख्या नीति एवं अर्थ
6. जनांकिकी की प्रकृति, व्यष्टि या सूक्ष्म जनांकिकी रीति. व्यापक, या समष्टि जनांकिकी रीति।
7. जनांकिकी का अर्थशास्त्र से सम्बन्ध यथा–जीवशास्त्र एवं जनांकिकी, समाजशास्त्र एवं जनांकिकी, भूगोल एवं जनांकिकी, अर्थशास्त्र एवं जनांकिकी, मानवशास्त्र एवं जनांकिकी।
8. जनांकिकी के अध्ययन का क्या महत्व है?

1.2 प्रस्तावना

यह सर्वविदित है कि मनुष्य एक जिज्ञासु जीव है। प्राचीन काल से ही वह अपने समाज को बेहतर बनाने के लिए चिन्तन मनन करता रहा है और उसी क्रम में जनसंख्या के प्रति भी मनुष्य की जिज्ञासा उसके आविर्भाव के समय से ही रही है। आर्थिक विकास की ओर तीव्रता से उन्मुख वर्तमान गतिशील संसार के समस्त देश अपने देश में उपलब्ध संसाधनों का यथासम्भव अनुकूलतम उपयोग कर मानव संसाधन के विकास के प्रति जागरूक हैं और अपने देश में उपलब्ध जनसंख्या के विषय में गुणात्मक एवं संख्यात्मक दृष्टिकोण से अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करना चाहते है। यही कारण है कि जनांकिकी आज अर्थशास्त्रियों, समाजशास्त्रियों तथा शिक्षाविदों का ध्यान आकर्षित करने में सफल रहा है। अन्य विज्ञानों की अपेक्षा अध्ययन की इस नयी शाखा के विस्तृत अध्ययन एवं विश्लेषण से पूर्व हमे इसका आाशय (Meaning), प्रकृति (Nature), क्षेत्र (Scope) एवं महत्व (Importance) की जानकारी प्राप्त करना श्रेयस्कर होगा। आइये, सर्वप्रथम इसके आशय (Meaning) को जानने के पूर्व इस इकाई के अध्ययन का उद्देश्य हम समझें।

1.3 जनांकिकी का अर्थ या आशय

'Demography' शब्द जिसका हिन्दी में अर्थ जनांकिकी होता है की उत्पत्ति ग्रीक भाषा से हुई है। 'Demography' ग्रीक भाषा के दो शब्दों से मिलकर बना है। प्रथम शब्द है **Demas (डिमास)** जिसका अर्थ होता है– मनुष्य (People) और दूसरा शब्द है **Grapho (ग्राफो)** जिसका अर्थ होता है– लिखना या अंकित करना (To draw or write about people)। इस प्रकार Demography का शाब्दिक अर्थ हुआ– मनुष्य या जनता के विषय में लिखना या अंकित करना हुआ। (To draw or write about people) जैसा कि **आजिले गुइलार्ड (Achille Guillard)** ने संक्षेप में कहा है "यह वह विज्ञान है, जो मनुष्यों की संख्या के विषय में अध्ययन करता है। (It is the science which studies the number of people)"

'Demography' (जनांकिकी) शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग फ्रांसीसी विद्वान **आशिले**

गुइलार्ड (Schille Guillard) द्वारा 1855 में अपनी **पुस्तक 'Elements destatique human on demograhpic compare'** में किया गया। लेकिन एक विशिष्ट और स्वतंत्र विज्ञान के रूप में इसकी नींव इंग्लैण्ड के विद्वान **जॉन ग्रान्ट (John Graunt)** द्वारा 1662 में रखी जा चुकी थी। **जॉन ग्रान्ट** ने 1662 में अपनी महत्वपूर्ण कृति जिसका नाम **'Natural and Political Observation made upon Mortality'** था द्वारा जनांकिकी का सूत्रपात कर दिया था। यही कारण है कि इन्हें जनांकिकी के जनक की संज्ञा प्राप्त है।

'Demography' शब्द के जन्म के पूर्व जनसंख्या सम्बन्धी अध्ययनों के लिए कुछ अन्य नाम भी समय–समय पर प्रचलित रहे हैं यथा **डिमोलाजी (Demology)** व जनसंख्या का अध्ययन (Population studies) आदि पर ये शब्द अधिक दिन तक नहीं चल सके, और न ही लोकप्रिय हो सके। अतः 1662 में **आशिले गुडलार्ड (Achille Guillard)** द्वारा ग्रीक भाषा का शब्द 'डिमोग्राफी (Demography)' ही अधिक लोकप्रिय एवं प्रचलित है। इस प्रकार संक्षेप में शाब्दिक अर्थ से हमें demography का आशय विदित हो जाता है कि डिमोग्राफी जनसंख्या की विशेषताओं का अध्ययन और विश्लेषण करने वाला विज्ञान है।

विभिन्न विद्वानों ने 'जनांकिकी' से क्या आशय समझा है यह भी जानना आवश्यक है क्योंकि विद्वानों का दृष्टिकोण किसी शब्द के अर्थ को बेहतर ढंग से समझने में मदद करता है। जनांकिकी की परिभाषाओं पर यदि दृष्टि डाली जाए तो स्पष्ट होता है कि समाजशास्त्रियों, अर्थशास्त्रियों एवं शिक्षाविदों द्वारा जनांकिकी की परिभाषा पर दिये गये विचारों में एकमत नहीं है। कुछ विद्वानों ने इस शास्त्र के विषय–वस्तु को आधार मानकर परिभाषा दी है तो कुछ विद्वान ने इसकी वैज्ञानिकता, उपयोगिता एवं महत्ता को ध्यान में रखकर इसे परिभाषित किया है। एक अर्थशास्त्री जनसंख्या को श्रमपूर्ति के रूप में उपभोक्ता के रूप में देखता है और जनांकिकी के अध्ययन को विकास के अर्थशास्त्र का अंग मानता है। समाजशास्त्रियों द्वारा जनांकिकी में जनसंख्या के सामाजिक पहलुओं का अध्ययन किया जाता है। जीव शास्त्री तथा भूगोलशास्त्री जनांकिकी में जैविक तथ्यों एवं भौगोलिक वितरण का अध्ययन करते हैं। यही कारण है कि किसी एक परिभाषा में सभी तत्त्वों को एक साथ समावेश कर प्रस्तुत करना कठिन है। अध्ययन की सरलता की दृष्टि से विभिन्न जनांकिकीविदों द्वारा दी गई परिभाषा को आइये हम दो शीर्षकों में वर्गीकृत कर अध्ययन करते हैं

(अ) संकुचित दृष्टिकोण।

(ख) व्यापक दृष्टिकोण।

1.3.1 संकुचित दृष्टिकोण

संकुचित दृष्टिकोण की परिभाषाओं में जनसंख्या के परिमाणात्मक पहलू को सम्मिलित किया जाता है तथा जीवन समंकों के अध्ययन एवं विश्लेषण में सांख्यिकीय पद्धतियों को महत्त्व प्रदान किया जाता है। प्रायः जनसंख्या को प्रभावित करने वाले पाँच कारकों– प्रजनन, विवाह, मृत्यु, प्रवास एवं सामाजिक गतिशीलता का अध्ययन दो शीर्षकों जनसंख्या की संरचना अथवा गठन तथा समयानुसार परिवर्तन के अन्तर्गत किया जाता है। यह पाँचों कारक जनसंख्या के आकार, प्रादेशिक वितरण, संरचना के निर्धारण में सदैव सक्रिय रहते हैं और जनसंख्या को गतिशील बनाये रखते हैं। इस कारण जनसंख्या में अल्पकालीन स्थिरता रहती है।

संकुचित दृष्टिकोण वाली जनांकिकी की प्रमुख परिभाषाएं निम्न हैं–

आशिले गुड़लार्ड (Achille Guillard) के अनुसार, "यह (जनांकिकी) जनसंख्या की

सामान्य गति और भौतिक, सामाजिक तथा बौद्धिक दशाओं का गणितीय ज्ञान है। (It is a mathematical knowledge of the general movement and of physical, social, moral and intellectual conditions of population...)"

लिबासियर (Livasseur) के अनुसार, "यह (जनांकिकी) साधारणतया जनसंख्या का विज्ञान है जो मुख्यतया जन्मों, विवाहों, मृत्युओं तथा जनसंख्या के प्रवास की गति को सुनिश्चित करने के साथ ही साथ उन नियमों की खोज कराने का भी प्रयास करता है जो इन गतियों को नियमन करते हैं। (It is simply science of population, a science which ascertains movements- chiefly births, marriage, deaths and migration of population and which endeavours to discover the laws which control these movements.)"

बी. बेन्जामिन (B. Benjamin) के अनुसार, "जनांकिकी, मानवीय जनसंख्या का समूहों के रूप में वृद्धि, विकास एवं गतिशीलता से सम्बन्धित अध्ययन है। (Demography is concerned with the growth, development and movement of human population as aggregates.)"

जी. सी. व्हिपल (G.C. Whipple) के अनुसार, "जनांकिकी वह विज्ञान है जो सांख्यिकीय–पद्धति द्वारा मानवीय–पीढ़ी, उसके विकास, ह्रास एवं मृत्यु आदि का व्यवस्थित अध्ययन करता है। (Demography is the science of human generation, growth, decay and death as studied by the statistical methods. - Whipple, G.C.: Vital Statistics)"

जी. बान मैयर (G. Von Mayer) के अनुसार, "जनांकिकी जनसंख्या की दशा एवं गतिशीलता का सांख्यिकीय विश्लेषण है, जिसके अन्तर्गत जनगणना (Census) एवं जीवन की महत्त्वपूर्ण घटनाओं (Vital processes) का पंजीयन किया जाता है तथा इस प्रकार से प्राप्त मौलिक जनगणना एवं पंजीकृत आँकड़ों के आधार पर जनसंख्या की दशा में गतिशीलता का सांख्यिकीय विश्लेषण किया जा सकता है। (Demography is the numerical analysis of the State and movements of human population inclusive of census enumerations and registration of vital processes and of whatever qualitative statistical analysis can be made of the State and movements of population on the basis of fundamental census and registration data.)" इस परिभाषा में जनांकिकी को मानव–जीवन का लेखा–जोखा रखने वाली सांख्यिकीय पद्धति के रूप में विकसित किया गया है जिसके अन्तर्गत जनसंख्या और प्रमुख जैवकीय घटनाओं का नियमित रूप से अध्ययन एवं विश्लेषण होता रहता है।

पी. आर. कॉक्स (P.R. Cox) के शब्दों में "जनांकिकी वह विज्ञान है, जिसमें मानवीय जनसंख्या के अध्ययन में सांख्यिकीय प्रणालियों, मुख्यतः जनसंख्या के आकार, वृद्धि तथा ह्रास, जीवित व्यक्तियों की संख्या तथा अनुपात, किसी क्षेत्र विशेष में जन्मे तथा मृत ऐसे प्रकार्यों की माप, जैसे– प्रजननता, मृत्यु तथा विवाह दर है। (Demography is the science which denotes the study of human populations, by statistical methods and deals primarily with the size of growth of dimunition, with the number and proportion of persons living, being born or dying with some area or region and with the measurement of related functions such as rates of fertility, mortality and marriage.)"

1.3.2 व्यापक दृष्टिकोण

व्यापक दृष्टिकोण वाली परिभाषाओं में जनसंख्या के परिमाणात्मक अध्ययन एवं विश्लेषण के साथ–साथ गुणात्मक पहलू पर भी ध्यान दिया गया है। ऐसा करके जनांकिकी को

एक विस्तृत सामान्य एवं व्यावहारिक विज्ञान के रूप में विकसित करने का प्रयास किया है। इससे सम्बन्धित कुछ परिभाषाएं इस प्रकार हैं:

हाउजर एवं डंकन (Houser and Dancan) के अनुसार, "जनांकिकी जनसंख्या के आकर, क्षेत्रीय विवरण, गठन व उनमें परिवर्तन के घटक, जो कि जन्म, मृत्यु, क्षेत्रीय गमन (प्रवास) एवं सामाजिक गतिशीलता (स्तर में परिवर्तन) के रूप में जाने जाते हैं, का अध्ययन करता है।" इस परिभाषा में जनसंख्या की संरचना के अन्तर्गत जनसंख्या के परिमाणात्मक तथा गुणात्मक दोनों पक्षों का समावेश है। परिभाषा में सामाजिक गतिशीलता के अध्ययन पर विशेष बल दिया गया है क्योंकि जनसंख्या के जन्म, मृत्यु से ही परिवर्तन नहीं आता अपितु सामाजिक स्तर में परिवर्तन जैसे अविवाहित से विवाहित हो जाना, विवाहित से विधुर/विधवा, बेरोजगार से रोजगार होना आदि भी महत्वपूर्ण कारक है जो जनसंख्या को प्रभावित करते हैं।

थाम्पसन एवं लेविस (Thompson and Lewis) के अनुसार, "इसकी (जनांकिकी) रूचि वर्तमान समय की जनसंख्या के आकार, संरचना तथा वितरण में ही नहीं बल्कि समय–समय पर इन पक्षों में हो रहे परिवर्तनों एवं इन परिवर्तन के कारणों में भी है।" उपरोक्त परिभाषा का उल्लेख दोनो अमेरिकन जनांकिकीविदों ने 1930 में अपनी पुस्तक 'Population Problems' में किया था। इन्होंने अपने Population Study में जनसंख्या का आकार (Size of Population), जनसंख्या की संरचना (Composition of Population) एवं जनसंख्या का वितरण (Distribution of Population) को शामिल कर जनांकिकी के अध्ययन को व्यापक बनाने का प्रयास किया।

3. **प्रो. डोनाल्ड जे. बोग (Prof Donald J. Bogue)** – प्रो. बोग अमेरिका के शिकागो विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र के प्राध्यापक रहे हैं। इन्होंने 1969 में प्रकाशित अपनी पुस्तक Principles of Demography में जनांकिकी के आधारभूत नियमों, प्रक्रियाओं एवं विषयवस्तु की विधिवत विवेचना प्रस्तुत की। प्रो. बोग के अनुसार, "जनांकिकी पाँच प्रकार की जनांकिकी प्रक्रियाओं, प्रजननशीलता, मृत्युकम, विवाह, प्रवास तथा सामाजिक गतिशीलता का परिणामात्यक अध्ययन है। कुछ अन्य परिभाषाएं

1. **बर्कले (Barclay)** के अनुसार, "जनसंख्या के आंशिक चित्रण को कभी–कभी जनांकिकी के रूप में जाना जाता है तथा इसमें कुछ विशिष्ट प्रकार के समंकों के द्वारा निरूपित व्यक्तियों का समग्र दृष्टिकोण से अध्ययन किया जाता है। जनांकिकी का सम्बन्ध समूह व्यवहार से होता है न कि किसी व्यक्तिगत व्यवहार से।

2. **स्पेंगलर एवं डंकन (Spengler and Duncan)** के अनुसार, "बहुत से अन्य विषयों की भांति जनांकिकी भी अपने में विविध विषयों को समेटे हुए है, परन्तु आज इसका क्षेत्र समन्वित ज्ञान के निकाय तक ही सीमित है जो कुल जनसंख्या तथा उसमें परिमार्जन करने वाले तत्वों से सम्बन्धित है। इन तत्वों के अन्तर्गत समुदायों का आकार, जन्म, विवाह तथा मृत्युदर, आयु संरचना तथा प्रवास को सम्मिलित किया जाता है।"

3. **विक्टर पेट्रोव (Victor Petrov)** के अनुसार, "जनांकिकी वह विज्ञान है जो जनसंख्या की संरचना तथा आवागमन का अध्ययन करता है।" उपर्युक्त परिभाषाओं से हम जनांकिकी का अर्थ या आशय को व्यापक रूप में जान गये हैं कि जनांकिकी के अन्तर्गत जनसंख्या के समस्त निर्धारक तत्वों तथा उनके परिणामों का अध्ययन किया जाता है। इसके अन्तर्गत जनसंख्या के परिमाणात्मक तथा गुणात्मक दोनों ही पक्षों का अध्ययन व विश्लेषण किया जाता है।

1.4 जनांकिकी का विषय क्षेत्र

जनांकिकी के क्षेत्र के रूप में इस तथ्य से आप परिचित हैं कि जनांकिकी एक गतिशील विज्ञान है। अतः इसके क्षेत्र में निरन्तर वृद्धि होती जा रही है। प्रसिद्ध अर्थशास्त्री डॉ. जॉन मेनार्ड कीन्स ने कहा है कि क्षेत्र (Scope) के अध्ययन में तीन बातें शामिल होना चाहिए

1. सम्बन्धित शास्त्र (जनांकिकी) की विषय सामग्री
2. सम्बन्धित शास्त्र (जनांकिकी) की प्रकृति या स्वभाव
3. सम्बन्धित शास्त्र (जनांकिकी) का अन्य शास्त्रों (या विज्ञानों) से सम्बन्ध

1.4.1 जनांकिकी की विषय सामग्री

जनांकिकी के विषय में अध्ययन करने पर आपको ज्ञात हो गया है कि जनांकिकी की सर्वसम्मत या सर्वमान्य परिभाषा देना बहुत ही कठिन कार्य है। इसके क्षेत्र और विषय सामग्री का कोई सर्वसम्मत तथ्य प्राप्त नहीं है। इस सन्दर्भ में दो दृष्टिकोण है यथाव्यापक दृष्टिकोण– जिसके अन्तर्गत प्रमुख रूप से स्पेंगलर (Spangler), वॉन्स (Vance), राइडर (Ryder), लोरिमेर (Lorimer) तथा मुरे (Moore) आदि के विचारों को सम्मिलित किया जा सकता है। दूसरा दृष्टिकोण संकुचित दृष्टिकोण– जिसके अन्तर्गत प्रमुख रूप में हाउजर एवं डंकन (P.H. Houser and D. Duncan), बर्कले (Barclay), थाम्पसन तथा लेविस (Thompson and Lewis) व आइरीन टेउबर (Irene Teauber) आदि के विचारों को सम्मिलित किया जा सकता है।

वर्तमान समय में जनांकिकी विज्ञान की व्यापकता एवं उपादेयता के आधार पर इस शास्त्र की विषय सामग्री को विद्वानों ने निम्न पाँच भागों में विभाजित किया है

1. जनसंख्या का आकार (Size of Population)
2. जनसंख्या की संरचना अथवा गठन (Composition of Population)
3. जनसंख्या का वितरण (Distribution of Population)
4. जनसंख्या को प्रभावित करने वाले तत्व (Factors influencing changes in Population)
5. जनसंख्या नीति (Population Policy)।

आइये क्रमबद्ध रूप में उपर्युक्त पाँचों बिन्दुओं का अध्ययन करते हैं।

1.4.1.1 जनसंख्या का आकार

किसी समय, किसी स्थान विशेष में रहने वाली मानव समुदाय की सम्पूर्ण जनसंख्या को उस स्थान विशेष की जनसंख्या का आकार कहा जाता है। यह देखने में जितना सरल कार्य लगता है वास्तव में उतना है नहीं। वास्तव में यह एक जटिल प्रक्रिया के अन्तर्गत आता है। जनसंख्या का आकार जानने के लिए पहले स्थान (Place), समय (Time) तथा व्यक्ति (Person) को स्पष्ट रूप से परिभाषित किया जाता है उसके बाद पंजीकरण (Registration) अथवा निदर्शन (Sample) के आधार पर पूरी जनसंख्या के आकार का आकलन किया जाता है। इस प्रक्रिया में मात्र आकार (Size) ही जान लेना पर्याप्त नहीं होता अपितु जनसंख्या में परिवर्तन– वृद्धि, हास या स्थिरता भी जानना आवश्यक होता है। परिवर्तन के साथ परिवर्तन की दर एवं भविष्य में उसके वृद्धि या घटने की दर का अनुमान भी लगाया जाता है। इसके अलावा

इस तथ्य का विश्लेषण करना आवश्यक होता है कि जनसंख्या परिवर्तन के लिए कौन–कौन से कारक महत्वपूर्ण हैं? ये कारक प्रमुख रूप से जन्म (Natality), मृत्यु (Mortality) तथा प्रवास (Migration) है जिन्हें जनांकिकीय प्रक्रिया के रूप में अध्ययन किया जाता है। एक ओर जनसंख्या जहाँ जैविकीय तत्वों से प्रभावित होती है तो दूसरी ओर उस देश के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक तत्व भी महत्वपूर्ण हो जाते हैं। यही कारण है कि जनांकिकीविद् को जीवविज्ञानी, समाजशास्त्री अर्थशास्त्री, गणितज्ञ और सांख्यिकीवेत्ता की भी भूमिका निभानी पड़ती है।

1.4.1.2 जनसंख्या की संरचना अथवा गठन

जनसंख्या की संरचना अथवा गठन का अध्ययन करना जनांकिकी का दूसरा महत्वपूर्ण विषय है। जनसंख्या का आकार जहाँ परिमाणात्मक व्याख्या करता है। वहीं जनसंख्या की संरचना से गुणात्मक विश्लेषण सम्भव हो पाता है। इसके अध्ययन से हमें उस स्थान विशेष की जनसंख्या की विशेषताओं की स्पष्ट जानकारी हो पाती है। दो स्थानों की जनसंख्या का आकार समान होने पर भी उनमें आयु., लिंग, जाति, धर्म तथा निवास आदि की भिन्नता हो सकती है। सामाजिक संरचनागत विकास, भिन्नता, समानता, विशेषता ऐसे महत्वपूर्ण तथ्य सामने आते हैं जो गुणात्मक व्याख्या को स्पष्ट समझाते हैं। इस तरह जनसंख्या का आकार व्यष्टिगत व्याख्या (Macro Analysis) करता है तो जनसंख्या की संरचना व्यक्तिगत व्याख्या (Micro Analysis) करता है। प्रो0 हाले के अनुसार जनसंख्या की संरचना के अध्ययन से प्रमुख चार उद्देश्य प्राप्त होते हैं–

1. इससे विभिन्न जनसमुदाय में परस्पर तुलना (Inter Population Composition) सम्भव हो पाता है।
2. किसी समाज में श्रमशक्ति (Labour Force) का अनुमान लगाया जा सकता है।
3. जनसंख्या संरचना को जानने के बाद ही जनांकिकी प्रक्रिया को समझ सकते हैं। यथा जन्म दर एवं मृत्यु दर जानने के लिए आयु संरचना तथा लैंगिक संरचना जानना आवश्यक है।
4. संरचना सम्बन्धी सूचनाओं द्वारा सामाजिक व्यवस्था और उसमें संभावित परिवर्तन का अनुमान लगा सकते हैं। जनांकिकी विशेषताओं के आधार पर जनसंख्या का वर्गीकरण (Classification) किया जा सकता है जैसे
    - आयु संरचना (Age Composition)
    - लैंगिक संरचना (Sex Composition)
    - कार्यशील जनसंख्या (Working Population)
    - वैवाहिक स्तर (Marital Status)
    - शैक्षणिक स्तर (Educational Standard)
    - धर्मानुसार या जाति के अनुसार वितरण (Distribution by Religion or Caste)

आयु एवं लैंगिक वितरण जनांकिकी में अत्यन्त महत्वपूर्ण कारक हैं। किसी देश की जनसंख्या की आयु संरचना से वहाँ की जन्म दर एवं मृत्यु दर भी निर्धारित होती है। किसी क्षेत्र विशेष की प्रजनन शक्ति की माप उस क्षेत्र में निवास करने वाली पुनरुत्पादन आयु वर्ग

(Reproductive age group) की स्त्रियों की संख्या के आधार पर किया जाता है। इसी प्रकार जहाँ वृद्ध व्यक्तियों की संख्या अधिक होगी वहाँ मृत्यु दर ऊँची होगी। इसके अलावा जिस समाज में बच्चों तथा वृद्ध व्यक्तियों की संख्या अधिक होगी वहाँ निर्भरता अनुपात (Dependency Ratio) भी अधिक होगा और समाज की श्रम शक्ति पर भरण पोषण का भार अधिक होगा।

इसी तरह कार्यशील जनसंख्या के अध्ययन की दृष्टि से आयु संरचना के आधार पर किया गया वर्गीकरण महत्वपूर्ण होता है। यदि किसी देश की अधिकांश जनसंख्या 15–59 वर्ष के आयु वर्ग में होती है, वहाँ कार्यशील श्रम शक्ति अधिक होती है और वहाँ के श्रमिकों की उत्पादकता अधिक रहती है अपेक्षाकृत उस देश के जहाँ की अधिकांश जनसंख्या 15 वर्ष की आयु से कम और 59 वर्ष की आयु से अधिक होती है।

इसके अलावा ग्रामीण व शहरी जनसंख्या, वैवाहिक स्थिति, कार्य, व्यवसाय, शिक्षा तथा धर्म जाति ऐसे घटक हैं जो जन्मदर, मृत्युदर एवं प्रवास को प्रभावित कर जनसंख्या को निर्धारित करते हैं। जनसंख्या की संरचना एवं जनसंख्या की प्रक्रिया परस्पर एक दूसरे को प्रभावित करते रहते हैं। थाम्पसन तथा लेविस के शब्दों में, "जनसंख्या की संरचना तथा उसकी मृत्युदर, प्रजनन दर तथा शुद्ध प्रवास के मध्य परस्पर अनुक्रमात्मक (Reciprocal) सम्बन्ध पाया जाता है। अर्थात् संरचना, आयु तथा लिंग की सरचना के माध्यम से प्रभावित करती हैं। जनसंख्या की संरचना के सम्बन्ध में डंकन तथा हाउजर कहते हैं, "जनसंख्या संरचना के अन्तर्गत जनसंख्या की आयु, लिंग तथा वैवाहिक स्थिति जैसे पहलू ही नहीं आते, बल्कि स्वास्थ्य स्तर, बौद्धिक स्तर, प्रशिक्षण से प्राप्त तकनीकी की क्षमता आदि गुण भी शामिल किये जाते हैं।"

1.4.1.3 जनसंख्या का वितरण

जनसंख्या का वितरण, जनांकिकी के अध्ययन क्षेत्र का तीसरा महत्वपूर्ण भाग है। इसके अन्तर्गत यह अध्ययन किया जाता है कि विश्व अथवा उसके किसी भू–भाग में जनसंख्या का वितरण कैसा है? तथा इस वितरण में परिवर्तन का स्वरूप कैसा है? **प्रो. डोनाल्ड जे. बोग** का मत है कि किसी देश की जनसंख्या का अध्ययन दो प्रकार से किया जा सकता है

1. समग्रात्मक विधि (Aggregative Method) – इस विधि के अनुसार देश को एक समग्र इकाई मानकर उसकी जनसंख्या के आकार, गठन व परिवर्तनों का अनुमान लगाया जाता है।

2. वितरणात्मक विधि (Distribution Method) – इस विधि के अनुसार किसी भी देश के छोटे–छोटे खण्डों की जनसंख्या के आकार व गठन का अध्ययन किया जाता है तदोपरान्त निष्कर्ष निकालना चाहिए। वास्तव में दोनों विधियाँ एक दूसरे के विरोधी नहीं वरन् पूरक हैं।

जनसंख्या सम्बन्धी आँकड़े दो आधार पर एकत्रित किये जाते हैं

(1) भौगोलिक इकाई यथा महाद्वीप, रेगिस्तानी क्षेत्र, पर्वतीय तथा सम्पूर्ण विश्व का आधार मानकर तथा

(2) प्रशासनिक इकाई यथा– देश, प्रदेश, जिला, शहर, ब्लॉक, नगर निगम, जिला परिषद, नगरपालिका. ग्राम व मुहल्ले आदि को आधार मानकर। थाम्पसन तथा लेविस ने विश्व की जनसंख्या के वितरण का अध्ययन करने के लिए नगरीकरण तथा औद्योगीकरण के आधार

पर तीन श्रेणियाँ बनाई है

1. उन्नत नगरीय औद्योगिक क्षेत्र (Advanced Urban Industrial Region)

2. नव–नगरीय औद्योगिक क्षेत्र (New-uban Industrial Region)

3. नगरीय एवं औद्योगिक विकास से पूर्व की स्थिति जनसंख्या के वितरण का अध्ययन जनघनत्व के आधार पर आसानी से किया जा सकता है। विभिन्न उद्देश्यानुसार घनत्व जानकर जनसंख्या का दबाव का अनुमान कर सकते हैं, जैसे– जनघनत्व, कृषि घनत्व, आर्थिक घनत्व आदि। जन घनत्व के निर्धारित तत्वों को तीन भागों में बाँट सकते हैं।

(i) भौगोलिक और प्राकृतिक कारक– जलवायु. वनस्पति, भू–संरचना पर्वत, पठार, मैदान, हिम क्षेत्र, वन क्षेत्र, रेगिस्तानी क्षेत्र इत्यादि।

(ii) सांस्कृतिक, सामाजिक एवं आर्थिक कारक– उद्योग, व्यापार, व्यवसाय, शहरीकरण, रोजगार आदि।

(iii) जनांकिकीय कारक– इसके अन्तर्गत जन्मदर, मृत्युदर तथा प्रवास दर को सम्मिलित किया जाता है।

1.4.1.4 जनसंख्या को प्रभावित करने वाले तत्व

उपर्युक्त अध्ययन से हम यह जान गये है कि विभिन्न तत्वों से प्रभावित जनसंख्या में सतत् परिवर्तन होता रहता है। जनांकिकीय प्रवृत्तियों के साथ–साथ समाज में होने वाले परिवर्तन भी जनसंख्या के आकार एवं संरचना को प्रभावित करते हैं। जब मनुष्य की सामाजिक स्थिति में परिवर्तन हो जाता है तब वह अपने जनांकिकीय परिवेश को प्रभावित करने में सक्षम हो जाता है। इन परिवर्तनों की गति, दिशा, दशा के अनुसार भावी जनसंख्या का अनुमान लगाना जनांकिकी के अध्ययन क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। जनांकिकी प्रवृत्तियों के साथ–साथ सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक परिवर्तन भी जनसंख्या की संरचना तथा आकार को प्रभावित करते हैं।

1.4.1.5 जनसंख्या नीति

आप समझ गये होंगे कि आधुनिक जगत में जनसंख्या नीति जनांकिकी के अध्ययन क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण अंग बन गया है। जनसंख्या नीति, जनांकिकी के प्रति सरकारी चिन्तन एवं निर्धारण नियंत्रण हेतु दस्तावेज होता है। जनसंख्या का आकार देश के साधनों के अनुरूप कैसे सामंजस्य बैठाये, वृद्धि या हास की दर कितनी रहे? कैसे परिमाणात्मक या गुणात्मक सुधार लाया जाय इस पर जनसंख्या नीति में विचार प्रस्तुत होता है। परिवार कल्याण या नियोजन प्रभावी ढंग से क्रियान्वित हो? कौन–कौन से नियंत्रण हेतु सरकारी उपाय हो, प्रोत्साहन या दण्ड का स्वरूप कैसा हो इत्यादि नियोजन की विशद व्याख्या नीति में निरूपित रहती है। विश्व जनसंख्या सम्मेलनों एवं क्षेत्रीय जनसंख्या अध्ययन केन्द्रों में जनसंख्या सम्बन्धी निम्न विषयों का अध्ययन व विश्लेषण किया जाता है जिस जनांकिकी क्षेत्र (Scope of Demography) के अन्तर्गत सम्मिलित कर सकते हैं यथा

1. प्रजनन शक्ति एवं प्रजनन दर
2. मृत्युक्रम एवं अस्वस्थता
3. विवाह एवं वैवाहिक दरें–प्रस्थिति

4. आयु तथा लैंगिक संरचना

5. आवास एवं प्रवास

6. प्रक्षेपण (Population Projection)

7. जनसंख्या एवं साधन

8. जनसंख्या का आकार, गठन एवं वितरण

9. परिवार कल्याण, नियोजन

10. जनांकिकीय मापन

11. जनांकिकीय शोध

12. प्रशिक्षण

13. श्रमपूर्ति के जनांकिकी पहलू

14. जनसंख्या के गुणात्मक स्तम्भ– शिक्षा, आवास, जीवन शैली

15. जनसंख्या एवं सामाजिक आर्थिक विकास

1.5 जनांकिकी की प्रकृति

आइये जनांकिकी की प्रकृति समझने में आपकी मदद करें– यह (जनांकिकी) वह विज्ञान है जो मानव जनसंख्या के विषय में अध्ययन करता है। चूँकि यह मनुष्य की संख्या एवं मानवीय विशेषताओं का अध्ययन करता है अतः यह सतत् परिवर्तनशील प्रवृत्तियों का अध्ययन करता है क्योंकि किसी भी क्षेत्र यथा– देश, राज्य, जिला, नगर या गाँव की जनसंख्या जन्म एवं अन्तः प्रवास (In-migration) से बढ़ती है और मृत्यु और वाह्य प्रवास (Out-migration) से घटती है। इस प्रक्रिया में जनसंख्या के निर्धारक तत्व लैंगिक स्वरूप, आयु– संरचना, वैवाहिक प्रस्थिति, शैक्षिक प्रगति, श्रमिकों का वर्गीकरण व आर्थिक क्रियाओं में भी परिवर्तन होता रहता है। इससे सम्बन्धित समस्त सूचनाएं या आंकड़े तभी मिलते है जब सतत् अधिकार सम्पन्न संस्थायें इस कार्य को सावधानीपूर्वक पंजीकरण करते हुए करती हैं।

जनांकिकी विज्ञान है। वैज्ञानिकता ही इसकी प्रकृति है। क्रमबद्ध अध्ययन ही विज्ञान है। विज्ञान ज्ञान का वह क्रमबद्ध रूप है जो किसी विशेष घटना या तथ्य के कारण तथा परिणामों के पारस्परिक सम्बन्ध को प्रकट करता है। यहाँ स्मरणीय है कि तथ्यों को केवल इकट्ठा करना ही विज्ञान नहीं है बल्कि विज्ञान होने के लिए तथ्यों का क्रमबद्ध रूप में एकत्रित करना, उनका वर्गीकरण व विश्लेषण करना और उसके फलस्वरूप कुछ नियमों एवं सिद्धान्तों का प्रतिपादन करना होता है। संक्षेप में आइये जानते हैं कि विज्ञान होने के लिए निम्न बातों का ज्ञान होना आवश्यक है

1. ज्ञान का अध्ययन क्रमबद्ध होना चाहिए।

2. विज्ञान के अपने नियम और सिद्धान्त होने चाहिए।

3. यह सिद्धान्त कारण और परिणाम के सम्बन्ध के आधार पर निर्मित होने चाहिए।

4. ये नियम सार्वभौमिक रूप से सत्य होने चाहिए। जनांकिकी को एक विज्ञान माना जाता है जिसके पक्ष में निम्न तर्क दिये जाते हैं

1. वैज्ञानिक तकनीकी का प्रयोग– जनांकिकी में अध्ययन की वैज्ञानिक तकनीकी का प्रयोग किया जाता है। इसमें तथ्यों का संकलन प्रश्नावली एवं अनुसूची के माध्यम से किया जाता है तथा तथ्यों के विश्लेषण द्वारा सामान्य सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया जाता है।

2. तथ्यपरक अध्ययन– जनांकिकी के अन्तर्गत जनगणना की सहायता से जनसंख्या का तथ्यपरक अध्ययन किया जाता है। जनगणना में जनसंख्या की वस्तुगत गणना की जाती है।

3. कारण–परिणाम– इसके अन्तर्गत कारण–परिणाम सम्बन्धों का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया जाता है।

4. सार्वभौमिकता– इसके द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों की सत्यता सार्वभौमिक होती है।

5. सत्यता का परीक्षण– जनांकिकी सिद्धान्तों की सत्यता का परीक्षण किया जा सकता है।

6. पूर्वानुमान– जनांकिकी विधियों के विश्षेणात्मक अध्ययन से भविष्य की घटनाओं का पूर्वानुमान लगाया जा सकता है। जनांकिकी एक स्थैतिक विज्ञान (Static Science) नहीं है अपितु प्रावैगिक विज्ञान है। इसमें एक अवधि के अन्तर्गत जनसंख्या में होने वाले परिवर्तनों तथा भविष्य में जनसंख्या के परिवर्तनों का अनुमान लगाया जाता है। चूँकि यह समय एवं परिवर्तनों का अध्ययन करता है। अतः यह प्रावैगिक विज्ञान (Dynamic Science) है। अन्ततः इस तरह कहा जा सकता है कि जनांकिकी न केवल सैद्धान्तिक विज्ञान है वरन् इसे व्यावहारिक विज्ञान की भी संज्ञा प्रदान की जा सकती है।

1.5.1 जनांकिकीय विश्लेषण की रीतियां

जनांकिकी के अन्तर्गत जनसंख्या की स्थिति तथा उसमें होने वाले परिवर्तनों के माप का अध्ययन एवं विश्लेषण किया जाता है। जनांकिकी के सभी तत्व गतिशील होते हैं तथा इनमें निरन्तर परिवतेन होता रहता है फलतः निरन्तर आंकड़े इकट्ठा करना, वर्गीकरण, सम्पादन, विश्लेषण होता रहता है। सामान्यतया, जनांकिकी के अध्ययन हेतु दो प्रमुख रीतियों से किया जाता है– (1) विशिष्ट रीति (2) व्यापक रीति।

1.5.1.1 व्यक्ति, विशिष्ट या सूक्ष्म जनांकिकी रीति

इस रीति के अन्तर्गत किसी देश के व्यष्टि या विशिष्ट समूहों, घटकों तथा उनसे सम्बन्धित समस्याओं एवं घटनाओं का अध्ययन किया जाता है। इस विश्लेषण में संरचना का अध्ययन महत्वपूर्ण होता है। सूक्ष्म या व्यष्टि विश्लेषण की सहायता से एक सीमित क्षेत्र की जनांकिकीय विशेषताओं का गहनता से अध्ययन करना सम्भव हो जाता है। अनुसन्धान की दृष्टि से यह विश्लेषण अत्यन्त उपयोगी है क्योंकि इसकी सहायता से किसी छोटे से क्षेत्र की सम्यक जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

1.5.4.2 व्यापक या समष्टि जनांकिकीय रीति

व्यापक या समष्टि विश्लेषण जनांकिकीय रीति के अन्तर्गत किसी देश के विभिन्न समुदायों एवं क्षेत्रों की जनांकिकीय घटनाओं को पृथक–पृथक करके सामूहिक रूप से अध्ययन किया जाता है। इससे विभिन्न देशों की जनांकिकीय स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन करने में सहायता मिलती है। यही कारण है कि संयुक्त राष्ट्र संघ ने विश्व के समस्त देशों से जनगणना (Census) को एक ही समय से सम्बन्धित करने का आग्रह किया है। इस रीति से जनसंख्या की वृद्धि–दर, जन्म–दर, मृत्यु–दर, विवाह की दर, जीवन तालिका, जनसंख्या पिरामिड, राष्ट्रीय

जनसंख्या नीति का विश्लेषण आसान हो जाता है। इस रीति से अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर तुलनात्मक अध्ययन सहज हो जाता है। जनांकिकीय विश्लेषण के लिए दोनों रीतियों का प्रयोग आवश्यक है वास्तव में उपर्युक्त दोनों रीतियाँ भिन्न–भिन्न अवश्य हैं लेकिन दोनों अन्तरविरोधी नहीं वरन् एक दूसरी के पूरक हैं। विश्लेषण के लिए एक ही रीति नहीं वरन् दोनों रीतियों का प्रयोग जनांकिकी के लिए श्रेयस्कर होगा। इस दृष्टि से यदि यह कहा जाय कि इन दोनों दृष्टिकोणों से तथ्य का सम्मिलित अध्ययन विषय के ज्ञान को पूर्णता प्रदान करता है तो गलत न होगा। अमेरिकी जनांकिकीविद् थाम्पसन एवं लेविस ने अपनी पुस्तक Population Problems में स्पष्ट किया है कि जनसंख्या के विभिन्न पदों के अध्ययन को जनसंख्या अध्ययन (Population study) कहा जाता है। "इसकी (जनांकिकी की) रूचि केवल वर्तमान जनसंख्या के आकार, संरचना तथा वितरण में ही नहीं, बल्कि समय–समय पर इन पहलुओं में होने वाले परिवर्तनों तथा इन परिवर्तनों के कारकों में भी है।"

1.6 जनांकिकी का अन्य शास्त्रों से सम्बन्ध

(Relationship of Demography with other disciplines) मानव समुदाय के आकार, संरचना एवं वितरण का विश्लेषण करने वाला शास्त्र जनांकिकी है। मानव समुदाय के अध्ययन के अन्य अनेक पहलू हैं, जैसे– सामाजिक, जैविकीय, भौगोलिक, आर्थिक आदि। इन सभी शास्त्रों का अध्ययन विषय मनुष्य ही है। अन्तर केवल इतना है कि प्रत्येक शास्त्र मनुष्य की केवल एक प्रकार की भूमिका को ही अपना विषयवस्तु बनाता है। आर्थिक पहलू का अध्ययन करने वाला शास्त्र अर्थशास्त्र, प्राकृतिक पर्यावरण से सम्बन्ध रखने वाला शाख भूगोल, समाज में मनुष्य की भूमिका का अध्ययन समाजशात्र में होता है। अतः यह स्वाभाविक है कि प्रत्येक शास्त्र का एक दूसरे शास्त्र के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। ये सभी विषय एक दूसरे की सीमाओं में अतिक्रमण भी करते रहते हैं क्योंकि किसी भी सामाजिक विज्ञान को सदैव के लिए स्थिर सीमाओं के अन्तर्गत बाँध नहीं सकते। सामाजिक विज्ञान की उपयोगिता इसी बात में है कि उसमें अन्तरशास्त्रीय दृष्टिकोण अपनाया जाता है। जनांकिकी अपनी विषय सामग्री के अध्ययन के लिए अन्य विज्ञानों पर उतना ही आश्रित है जितना अन्य विज्ञान जनांकिकी पर। रसियन जनांकिकीविद Victor Petrov लिखते हैं कि, "चूँकि सभी सामाजिक घटनाओं का विषय जनसंख्या होता है, अतः जनांकिकी सभी सामाजिक एवं अन्य विज्ञानों का स्पर्श करती है।

अब तक के अध्ययन से हमें स्पष्ट हो जाता है कि जनांकिकी का क्षेत्र व्यापक होता जा रहा है। अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से जनांकिकी अपने विषय सामग्री के अध्ययन के लिए जिन अन्य ज्ञान की शाखाओं से सम्बन्धित है तथा उससे सम्बन्धित जिन तथ्यों का अध्ययन करती है, वे निम्न हैं

1.6.1 जीवशास्त्र एवं जनांकिकी

जनसंख्या जीवशास्त्रीय तथ्य है अतः जनांकिकी के अन्तर्गत जनसंख्या के निम्न जीवशास्त्रीय तथ्यों का अध्ययन किया जाता है

1. जन्मदर एवं मृत्यु दर
2. जन्मदर एवं मृत्यु दर में परिवर्तन
3. जन्मदर एवं मृत्यु दर की प्रवृत्तियाँ
4. लैंगिक अनुपात

5. आयु संरचना
6. स्वास्थ्य स्तर
7. जनसंख्या वृद्धि आदि

1.6.2 समाजशास्त्र एवं जनांकिकी

जनसंख्या एक सामाजिक प्रमेय है। इस दृष्टि से समाजशास्त्र के अन्तर्गत जनसंख्या सम्बन्धी निम्नलिखित तथ्यों का अध्ययन किया जाता है

1. पारिवारिक संरचना
2. समाज एवं समुदाय
3. धर्म का स्वरूप
4. शिक्षा का स्तर
5. जाति व्यवस्था
6. संस्कृति एवं संस्कार
7. प्रवास के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण

जनांकिकी अध्ययन के समाजशास्त्रीय पहलू को स्पष्ट करते हुए F.W. Notestein ने कहा है कि, "जब एक जनसंख्याशास्त्री जन्मदर के आँकड़ों को व्यक्त करता है तब उसको याद रखना पड़ता है कि प्रत्येक संख्या एक पुत्र था पुत्री की अभिव्यक्ति करती है, जब मृत्यु के आँकड़े सामने आते हैं तब उसे याद रखना पड़ता है कि प्रत्येक संख्या एक दुखद घटना को व्यक्त करती है; जब वह विवाह का अध्ययन करता है तो उसे याद रखना पड़ता है कि उसका सम्बन्ध मानव समाज की एक आधारभूत संस्था से है।"

1.6.3 भूगोल एवं जनांकिकी

जनसंख्या परिस्थितिशास्त्रीय घटना है। भूगोल एवं जनांकिकी को एकरमैन ने बड़े ही अच्छे ढंग से व्यक्त किया है। "आधुनिक भूगोलवेत्ताओं ने पृथ्वी के सांस्कृतिक पहलू को लिया है। उन्होंने इसको जातीय एवं जैविक सिद्धान्तों तथा स्थान से सम्बन्धित कर विश्लेषित करने का प्रयास किया तथा सांस्कृतिक पहलुओं को भौतिक एवं जीवन सम्बन्धी विशेषताओं से सह–सम्बन्धित किया। इसके लिए विभिन्न क्षेत्रों में जनसंख्या के वितरण का अध्ययन किया। यह वितरण का पहलू जनांकिकी तथा भूगोल दोनों में शामिल है।" इस दृष्टि से भूगोल विषय में जनसंख्या की निम्न विशेषताओं का अध्ययन किया जाता है

1. भौगोलिक वितरण।
2. भौगोलिक वितरण के कारण।
3. नगरीकरण।
4. प्रवास।

1.6.4 अर्थशास्त्र एवं जनांकिकी

अर्थशास्त्र के अन्तर्गत जनसंख्या सम्बन्धी निम्न विशेषताओं का अध्ययन किया जाता है

1. जनसंख्या और रोजगार की स्थिति।
2. जनसंख्या का जीवन स्तर।
3. आय का स्तर।
4. जनसंख्या और खाद्य सामग्री का सम्बन्ध।
5. जनसंख्या की गतिशीलता।
6. श्रम–पूँजी का निर्माण।
7. विनियोजन।
8. उत्पादकता।
9. जनसंख्या की कार्यक्षमता।
10. श्रमशक्ति नियोजन (Man Power Planning)

जनांकिकी एवं अर्थशास्त्र के सम्बन्ध में अपना मत व्यक्त करते हुए जे0जे0 स्पेंग्लर ने कहा है. "सामान्यतया जनसंख्या परिवर्तन को मात्र समंकों में परिवर्तन मान लिया जाता है जबकि जनसंख्या के परिवर्तन समस्त आर्थिक प्रणाली में परिवर्तन लाते हैं। अतः जनांकिकी चरों में आर्थिक चरों की परस्पर निर्भरता को ध्यान में रखना अनिवार्य है, यह भी आवश्यक है कि उन कारणों को भी ध्यान में रखा जाना चाहिए जो कि आर्थिक स्तरों में इस प्रकार परिवर्तन लाते हैं कि उनसे जनांकिकी घटकों में भी परिवर्तन आते हैं।" प्रो० पीगू के अनुसार, "मनुष्य आर्थिक क्रियाओं का उद्देश्य भी है और उत्पत्ति का साधन भी। इस तरह मनुष्य ही समस्त आर्थिक क्रियाओं का सृजक भी है तथा साध्य भी है।" उपर्युक्त विद्वानों के मतों से स्पष्ट है कि जनांकिकी तथा अर्थशास्त्र एक–दूसरे से घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित है।

1.6.5 जनांकिकी एवं मानवशास्त्र

जनांकिकी तथा मानवशास्त्र में भी बहुत निकट का सह–सम्बन्ध पाया जाता है। आक्सफोर्ड यूनिवर्सल डिक्शनरी ने जनांकिकी को मानवशास्त्र के एक अंग के रूप में परिभाषित किया है – Demography is that branch of anthropology which treats of the statistics of births, deaths, deseases etc. प्रो0 हैरीसन एवं वायसी ने मानवशास्त्र की जनांकिकी के लिए उपयोगिता को व्यक्त करते हुए लिखा है, "प्राचीन अवशेषों का अध्ययन करने की मानव विकासशास्त्र की विधि जनांकिकी के लिए बहुत उपयोगी है क्योंकि इसके माध्यम से हम इतिहास के गर्त में छपी हई सभ्यताओं से सम्बन्धित अनेक जनांकिकीय सूचनायें एकत्र कर लेते हैं। इन दोनों शास्त्रों में जिन समान विषयों का अध्ययन होता है. वे निम्न हैं :

1. अन्तः प्रजनन का अध्ययन (Study of Inbreeding)
2. सजातीय प्रजनन (Indogamous Breeding)
3. समवर्गीय सहवास एवं प्रजनन (Assortative Mative and Breeding)
4. उत्परिवर्तन (Mutation)
5. जीन–प्रवाह (Gene flow)

इस तरह मानव शास्त्र तथा जनांकिकी एक दूसरे से घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित है।

1.7 जनांकिकी का महत्त्व

आप क्या जनांकिकी महत्त्व से परिचित हैं? इसका तात्पर्य यह है कि इस विषय का अध्ययन क्यों किया जाता है? इस विषय के अध्ययन से क्या लाभ है? व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में जनांकिकी की क्या उपयोगिता है इन्हीं प्रश्नों का उत्तर इस शीर्षक के अन्तर्गत जानने का प्रयास करेंगे।

जनांकिकी जनसंख्या के व्यवस्थित विवरण की वैज्ञानिक शाखा है। जनसंख्या समाज की महत्त्वपूर्ण इकाई है। सामाजिक एवं व्यक्तिगत दोनों दृष्टिकोण से इसका ज्ञान उपयोगी है। जनसंख्या के महत्त्व एवं समस्याओं के प्रति विश्व का ध्यान प्राचीन काल से ही मनुष्य के मस्तिष्क में रहा है लेकिन लोगों ने गम्भीरता से विचार करना तब शुरू किया जब 1798 में प्रो0 राबर्ट माल्थस ने जनसंख्या समस्या को एक वृहद् दृष्टिकोण से देखा और उसकी गंभीरता के प्रति दुनिया को सचेत किया। अपने विचारों में माल्थस ने जनसंख्या वृद्धि एवं खाद्यान्न उत्पादन में गणितीय विधाओं का परिचय देते हुए संभावित असन्तुलन की ओर संकेत करते हुए सचेत किया कि प्रकृति ने खाने की मेज पर निश्चित लोगों को बुलाया है। यदि उसे ज्यादा लोग खाने आयेंगे तो लोग भूखों मरेंगे। माल्थस के विचार, क्रान्तिकारी थे फलतः विवादों के कारण उपेक्षित रहे। प्रतिष्ठित अर्थशास्त्री इस बात के लिए भी निश्चिन्त रहे कि अर्थव्यवस्था में सदैव पूर्ण रोजगार रहता है और अतिउत्पादन हो ही नहीं सकता। यदि होता है तो मात्र अल्पकालिक होगा जो स्वतः संतुलित हो जायेगा। परन्तु माल्थस के बाद की शताब्दी के तीसरे दशक में लोगों को विश्व में आयी सर्वव्यापी मन्दी ने लोगों को पुनः सोचने पर मजबूर कर दिया कि व्यापार चक्रों की खोज किया जाय। प्रतिष्ठित सम्प्रदाय को मंदी ने ध्वस्त कर दिया। केन्द्रीय युग का सूत्रपात होता है जिसमें हस्तक्षेप की नीति पर मन्दी से उबरने के लिए बल दिया गया। जॉन मेनार्ड कीन्स ने स्पष्ट किया कि मंदी का प्रमुख कारण प्रभावपूर्ण माँग (effective demand) में भी अर्थात् उपभोगत वस्तुओं की मांग में कमी होना भी है। इसी समय से जनसंख्या के संरचनात्मक परिवर्तनों का अध्ययन किया जाने लगा।

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद अविकसित देशों ने विकास की गति तीव्र करने के लिए नियोजन पद्धति का आश्रय लिया। भारत ने भी पंचवर्षीय योजना को विकास का माध्यम बनाया। इन देशों के सम्मुख बढ़ती जनसंख्या नियोजन के सम्मुख बाधा बनकर खड़ी हो गयी। नियोजन से इन राष्ट्रों को लाभ तो हुआ। स्वास्थ्य सेवाओं की दशाओं में सुधार हुआ। मृत्यु–दर में कमी आयी लेकिन उच्च जन्म दर की स्थिति यथावत रही। बढ़ती जनसंख्या ने विकास को निगल लिया। बढ़ती जनसंख्या ने उपभोग तो बढ़ाया लेकिन बचत की दर घटने से विनियोग एवं पूँजी निर्माण की गति को प्रभावित कर विकास रोक दिया। इन अविकसित देशों में मंदी की स्थिति उतनी भयानक नहीं रही जितनी विकसित देशों में रही क्योंकि यहाँ सीमान्त उपभोग प्रवृति वैसे ही अधिक रहती है। फलतः प्रभावी माँग (effective demand) की समस्या उतनी नहीं रही। विकसित देशों की स्थिति भिन्न रही। युद्ध में अत्यधिक प्रभावित तो अवश्य हुए लेकिन शिक्षा का स्तर एवं तकनीकी प्रौद्योगिकी के ज्ञान ने उन्हें शीघ्र ही संभलने में मदद भी किया। फलतः विकसित राष्ट्रों ने कम समय में ही विकास की पूर्व स्थिति प्राप्त कर ली जबकि अविकसित देश उतना अपेक्षित विकास की गति नहीं प्राप्त कर सके। इस तरह विकसित राष्ट्रों के यहाँ जनांकिकी का गुणात्मक पक्ष को अधिक महत्ता मिली जबकि अविकसित राष्ट्रों के यहाँ परिमाणात्मक पद के अध्ययन से महत्ता अधिक मिली। आज जनांकिकी विज्ञान व्यावहारिक कार्यक्रमों में अपनी उल्लेखनीय भूमिका निभा रहा है। प्रो0 अशोक मित्रा के अनुसार जनांकिकी

के महत्व का अध्ययन करने की दृष्टि से समस्त अर्थव्यवस्थाओं को तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है:

1.7.1 विकसित अर्थव्यवस्थाएँ

विकसित राष्ट्रों में जनसंख्या की कुल मांग को पूर्ण रोजगार स्तर पर बनाये रखने का एक साधन माना जाता है। विकसित देशों में वस्तु की पूर्ति की नहीं बल्कि मांग की समस्या है। अतः वहाँ बढ़ती हुई जनसंख्या वस्तुओं एवं सेवाओं के प्रभावपूर्ण माँग में वृद्धि करती है जिससे उत्पादन एवं रोजगार में वृद्धि होती है। इसके अतिरिक्त जनसंख्या वृद्धि से श्रमशक्ति में वृद्धि हो जाती है जिससे उद्योगों में अतिरिक्त क्षमता का उपयोग किया जा सकता है। यही कारण है कि इन अर्थव्यवस्थाओं में जनसंख्या के गुणात्मक पक्ष : जनस्वास्थ्य; आवास, बीमा, शिक्षा, सामाजिक सुविधाएँ आदि पर विशेष ध्यान दिया जाता है। प्रो0 अशोक मित्रा के अनुसार "विकसित बाजार अर्थव्यवस्थाओं में जनांकिकीय समंको का उपयोग सामान्यतया श्रमिकों की संख्या तथा उसकी विशेषताओं का उत्पादन फलन तथा बचत फलन से सम्बद्ध परिवारों की संख्या तक सीमित रहता है।" इस तरह स्पष्ट है कि विकसित देशों के आर्थिक विकास के मॉडल में जनांकिकी चर को महत्व प्रदान किया जाता है।

1.7.2 नियंत्रित एवं केन्द्रीय नियोजित अर्थव्यवस्थाएं

साम्यवादी एवं समाजवादी अर्थव्यवस्थाओं में जनसंख्या न तो मांग को प्रभावित करती है और न ही उपभोग की प्रकृति एवं दिशा को. क्योंकि इन अर्थव्यवस्थाओं में उपभोक्ता की स्वयं की अपनी स्वतंत्र सत्ता नही होती है। परन्तु इन राष्ट्रों में कार्यशील जनसंख्या, महिलाओं का आर्थिक क्रियाओं में योगदान. राष्ट्रीय आय, प्रति व्यक्ति आय, प्रजननशीलता, मृत्युक्रम, परिवार का आकार, स्वास्थ्य, शिशु–शिक्षा इत्यादि सभी जनांकिकी के ही अवयव हैं।

1.7.3 विकासशील अर्थव्यवस्थाएं

प्रो. अशोक मित्रा का विचार है कि जनांकिकी विकासशील देशों में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करता है। आँकड़ों में बेरोजगारी से अभी बहुत उपयोगी परिणाम नहीं प्राप्त हो पा रहे हैं परन्तु इससे विषय की महत्ता कम नहीं हुई है। विकासशील राष्ट्रों में श्रम नियोजन एवं आर्थिक नियोजन में जनांकिकी की महत्ता अत्यधिक बढ़ी है। आर्थिक विकास इस प्रकार की अर्थव्यवस्थाओं में प्रमुख लक्ष्य होता है। फलतः आर्थिक विकास की प्रवृत्ति, व्यावसायिक ढांचा, ग्रामीण एवं नगरीय जनसंख्या वृद्धि की दर, परिवार नियोजन, खाद्य समस्या. बेरोजगारी समस्या, श्रमिक समस्याएं एवं आर्थिक नीतियों का अध्ययन महत्त्वपूर्ण हो गया है। जनांकिकी के महत्त्व की विवेचना करते हुए किंग्सले डेविस ने लिखा है कि, "मानव समाज के आधार को समझने में जनांकिकी महत्त्वपूर्ण उपागम है।" थाम्पसन एवं लेविस ने लिखा है कि जनांकिकी एक ज्ञानदायक विज्ञान ही नहीं वरन् फलदायक विज्ञान भी है।" उन्होंने तीन लाभों का उल्लेख किया है।

1. जनांकिकी के अध्ययन से व्यक्ति यह समझ सकता है कि किस प्रकार समाजशास्त्रीय क्षेत्र में आँकड़ों का प्रयोग कर निष्कर्ष निकाला जाता है।

2. विश्व जनसंख्या; उसकी प्रवृत्तियों एवं महत्त्वपूर्ण जनांकिकीय चरों व सूचनाओं का ज्ञान प्राप्त होता है।

3 अध्ययनकर्ता अनेकानेक जनांकिकीय तकनीकी घटकों जैसे– प्रजननता, पुनरुत्पादन–दर, मृत्यु–दर, जन्मदर व जीवन प्रत्याशा आदि को समझ जाता है। जनांकिकी के

महत्त्व को स्पष्ट करते हुए ओरगेन्स्की लिखते हैं कि. "यदि आप यह जानना चाहते हैं कि राष्ट्र कितनी तेजी से अपने आर्थिक आधुनिकीकरण में प्रगति कर रहा है, तब कृषि, उद्योग तथा सेवाओं में कार्यरत जनसंख्या के प्रतिशत अनुपात पर दृष्टि डालिए। उनके रहन–सहन के स्तर को जानने के लिए जीवित रहने की प्रत्याशा पर दृष्टिपात कीजिए, क्योंकि इससे अच्छा जीवन स्तर का क्या माप हो सकता है कि कोई सभ्यता प्रत्येक व्यक्ति को जीवन के कितने वर्ष देती है। यदि आप राष्ट्रीय संस्कृति की अवस्था जानना चाहते हैं तो साक्षरों की संख्या तथा उनके शैक्षिक स्तर इस विषय में कुछ जानकारी दे सकेंगे और जातीय भेदभाव के लिए जातिवार व्यवसायों, आय–स्तरों, शिक्षा तथा जीवन अवधि के स्तरों को देखिए। इसी प्रकार राष्ट्रीय शक्ति के अनुमान का आधार जनसंख्या के आकार के साथ–साथ आय तथा व्यवसाय की संख्याओं से लगाया जा सकता है।" वास्तव में एक प्रबुद्ध और कर्त्तव्यशील नागरिक के लिए जनसंख्या का ज्ञान आवश्यक है। आज के विश्व की अनेक गम्भीर समस्याओं में से तीव्र गति से बढ़ती हुई जनसंख्या ही आधारभूत समस्या है। इसके समाधान व अन्य क्षेत्रों में इसके सह–सम्बन्ध को जानने के लिए जनांकिकी का अध्ययन और ज्ञान समय की एक बहुत बड़ी माँग है।

1.8 सारांश

प्रस्तुत इकाई सं0 1 में जनांकिकी से क्या आशय है, उसका क्षेत्र, प्रकृति और महत्त्व का अध्ययन किया गया है। जनांकिकी के अर्थ का आशय स्पष्ट करने में इसके आंग्ल भाषा के शब्द Demography जो ग्रीक शब्द है की व्याख्या की गई है। उसके विकास के साथ–साथ विद्वानों के विचारों का भी अध्ययन आपने किया है और स्पष्ट हुआ कि जनांकिकी–जनसंख्या की विशेषताओं का अध्ययन और विश्लेषण करने वाला विज्ञान है। इसके संकुचित और व्यापक दृष्टिकोण को भी व्याख्या से आप परिचित हुए हैं। इससे सम्बन्धित जनांकिकीविदों के विचार महत्त्वपूर्ण हैं। जनांकिकी के क्षेत्र (Scope of demography) अध्ययन में इसकी विषय सामग्री, प्रकृति या स्वभाव एवं अन्य शास्त्रों से इसका सम्बन्ध किस प्रकार का है की भी व्याख्या आपने समझी है। विषय सामग्री के अध्ययन में जनसंख्या का आकार, संरचना अथवा गठन, वितरण, जनसंख्याओं को प्रभावित करने वाले तत्त्व एवं जनसंख्या नीति महत्त्वपूर्ण बिन्दु के रूप में आपको दिखायी पड़े हैं। जनांकिकी की प्रकृति का स्वभाव के अध्ययन में यह पाया गया है कि जनांकिकी विज्ञान की कसौटी पर खरा उतरता है अतः विज्ञान है। यह न केवल सैद्धान्तिक विज्ञान है वरन् इस व्यावहारिक विज्ञान भी माना जाता है। इसके अध्ययन में विश्लेषण की Micro demographic method एवं Macro demographic method दोनों का प्रयोग होता है यह अपने देखा है। इस जनांकिकी विज्ञान का सम्बन्ध विभिन्न शास्त्रों से है यथा– जीवशासत्र. समाजशास्त्र, भूगोल, अर्थशास्त्र एवं मानवशास्त्र। जनांकिकी के बढ़ते महत्त्व को विकसित अर्थव्यवस्थओं, नियंत्रित एवं केन्द्रीय नियोजित अर्थव्यवस्थाओं एवं विकासशील अर्थव्यवस्थाओं के रूप में भी इसका अध्ययन आपने किया है।

1.9 सन्दर्भ ग्रन्थ

1. Dr. Premi, M.K., Ramanamma, A., Bambawale, Usha,. An Introduction to social demography, Vikas Publishing House, New Delhi.
2. Appleman, Philip (ed.) Thomos Robert Malthus: An Essay on the Principle of Population, New York: W.W. Norton and Co., Inc., 1976.
3. Carr- Saunders, A.M., World Population: Past Growth and Present Trends,

Oxford: Clarendon Press, 1936.

4. Coale, Ansley J. and Edgar M. Hoover, Populationi Growth and Economic development in low income countries, Princeton University Press, 1958.

5. Thompson, Warren S. and David T. Lewis: Population Problems; New York: Mc Graw Hill Book Co. 1976.

1.9.1 सहायक/उपयोगी पाठ्य सामग्री

- डॉ. मिश्रा, जे.पी., जनांकिकी, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स आगरा।
- डॉ. बघेल. डी.एस., जनांकिकी, विवेक प्रकाशन, दिल्ली।
- डॉ. पन्त, जीवन चन्द्र, जनांकिकी, गोयल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ।
- डॉ. मलैया, के.सी., जनसंख्या शिक्षा, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

1.10 बोध के प्रश्न

1.10.1 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. जनांकिकी के संकुचित एवं व्यापक दृष्टिकोण के अनुसार इसके आशय को स्पष्ट करें।
2. जनांकिकी के क्षेत्र, विषय सामग्री एवं प्रकृति की संक्षिप्त व्याख्या समझाइये।
3. जनांकिकी के जिन शास्त्रों से गहन सम्बन्ध है उसकी व्यापकता का उल्लेख करें।
4. आधुनिक युग में जनांकिकी के बढ़ते महत्त्व की व्याख्या विस्तार से करें।

1.10.2 लघु उत्तरीय प्रश्न

1. संकुचित दृष्टिकोण के अनुसार जनांकिकी से क्या आशय है?
2. व्यापक दृष्टिकोण के अनुसार जनांकिकी का क्या आशय है?
3. जनांकिकी की विषय सामग्री में किन–किन तत्त्वों का अध्ययन होता है?
4. "जनांकिकी की वैज्ञानिकता ही इसकी प्रकृति है" व्याख्या करें?
5. जनांकिकी का अन्य किन–किन शास्त्रों से गहन सम्बन्ध है?
6. जनांकिकी के बढ़ते महत्व को रेखांकित करें।
7. जनसंख्या नीति से क्या आशय है?

1.10.3 वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्र 1. Demography, कहाँ के दो शब्दों से मिलकर बना है?

क) जर्मन

ख) इण्डोजर्मन

ग) इंग्लोइडियन

घ) ग्रीक

प्र 2. व्यापक दृष्टिकोण के अनुसार जनांकिकी का आशय बताने वाले जनांकिकीविद् हैं

क) आशिले गुइलार्ड

ख) थाम्पसा एवं लेविस

ग) जी.सी. ठिप्पल

घ) पी.आर. कॉक्स

प्र 3. जनसंख्या को प्रभावित नहीं करने वाले तत्त्व कौन हैं?

क) जन्म–दर

ख) मृत्यु–दर

ग) प्रवास

घ) व्याकरण

1.11 वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर

उत्तर

1–घ

2–ख

3–घ

1.12 पारिभाषिक शब्दावली

- Demography का हिन्दी में अर्थ जनांकिकी है, जिसकी उत्पत्ति ग्रीक भाषा Demos एवं Grapho से हुआ है जिसका अर्थ होता है लिखना या अंकित करना (To draw or write about people). "यह वह विज्ञान है जो मनुष्यों की संख्या के विषय में अध्ययन करता है"– Achille Guillard.
- **जनांकिकी का अर्थ संकुचित दृष्टिकोण व्यापक दृष्टिकोण –** संकुचित दृष्टिकोण की परिभाषाओं में जनसंख्या के परिमाणात्मक पहलू को सम्मिलित किया जाता है तथा जीवन समंकों के अध्ययन एवं विश्लेषण में सांख्यिकीय पद्धतियों को महत्त्व प्रदान किया जाता है। व्यापक दृष्टिकोण वाली परिभाषाओं में जनसंख्या के परिमाणात्मक अध्ययन एवं विश्लेषण के साथ–साथ गुणात्मक पहलू पर भी ध्यान दिया जाता है।
- **जनांकिकी का क्षेत्र (Scope of demography)** इसमें तीन तथ्यों का अध्ययन सम्मिलित है। (1) जनांकिकी विषय सामग्री (2) इसकी प्रकृति या स्वभाव एवं (3) – जनांकिकी का अन्य शास्त्रों से सम्बन्ध किस प्रकार का है।
- **जनसंख्या का आकार (Size of Population)–** किसी समय किसी स्थान विशेष में रहने वाली मानव समुदाय की सम्पूर्ण जनसंख्या को उस स्थान विशेष की जनसंख्या आकार कहा जाता है। यह परिमाणात्मक व्याख्या करता है।
- **जनसंख्या की संरचना (Composition of Population)–** इसमें स्थान विशेष की जनसंख्या की आयु, लिंग, जाति, धर्म एवं समानता विभिन्नता का अध्ययन होता है। यह गुणात्मक व्याख्या करता है।

- **जनसंख्या नीति–** जनांकिकी के प्रति सरकारी चिन्तन एवं निर्धारण–नियंत्रण हेतु महत्वपूर्ण दस्तावेज
- **जनांकिकी की प्रकृति–** वैज्ञानिकता ही इसकी प्रकृति है।
- **सूक्ष्म या व्यष्टि जनांकिकी रीति –** सीमित क्षेत्र की जनांकिकी विशेषताओं का गहनता से अध्ययन रीति।
- **व्यापक या समष्टि से जनांकिकी रीति –** किसी देश के विभिन्न समुदायों एवं क्षेत्रों की सामूहिक गहनता अध्ययन रीति

इकाई–2: सामाजिक जनांकिकी का उद्विकास एवं सामाजिक जनांकिकी का अध्ययन

इकाई की रूपरेखा

2.1 उद्देश्य

2.2 प्रस्तावना

2.3 सामाजिक जनांकिकी की अवधारणा

2.4 सामाजिक जनांकिकी का उद्विकास

2.4.1 प्रथम चरण

2.4.2 द्वितीय चरण

2.4.3 तृतीय चरण

2.4.4 चतुर्थ चरण/वर्तमान चरण

2.5 सामाजिक जनांकिकी की विषय वस्तु

2.5.1 जनसंख्या का आकार

2.5.2 जनसंख्या की संरचना

2.5.3 जनसंख्या का वितरण

2.5.4 जनसंख्या को प्रभावित करने वाले कारक

2.6 सामाजिक जनांकिकी के अध्ययन की आवश्यकता या महत्व

2.7 सारांश

2.8 संदर्भ ग्रंथ

2.9 बोध के प्रश्न

2.9.1 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

2.9.2 लघु उत्तरीय प्रश्न

2.9.3 वस्तुनिष्ठ प्रश्न

2.10 वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर

2.11 पारिभाषिक शब्दावली

2.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप–

1. सामाजिक जनांकिकीय संकल्पना से अवगत हो सकेंगे।
2. सामाजिक जनांकिकी के उद्विकास एवं सामाजिक जनांकिकी के अध्ययन की आवश्यकता पर अपनी एक समझ विकसित कर सकेंगे।

2.2 प्रस्तावना

जनसंख्या संबंधी अध्ययन ज्ञान – विज्ञान की एक नवीन शाखा है। हालाकि जनसंख्या संबंधी आंकड़े मानव ने प्राचीन काल से इकट्ठे करने प्रारंभ कर दिए थे, परंतु उनका सांख्यिकी व व्यवस्थित अध्ययन बीसवीं शताब्दी में ही शुरू हुआ। जनांकिकी का अंग्रेजी रूपांतरण डेमोग्राफी शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग 1955 में गुइलार्ड ने अपनी पुस्तक 'Elements De Statistique Humaine On Demographic Compare' में किया था; परंतु जनांकिकी को व्यवस्थित व वैज्ञानिक अध्ययन 20 वीं सदी में होने के कारण इसे बीसवीं सदी का विज्ञान ही माना जाता है (पंत, 2010] च.01)। जान ग्रांट को जनांकीकी का जनक माना जाता है तथा इसको वैज्ञानिक आधार प्रदान करने का श्रेय थॉमस रॉबर्ट माल्थस को दिया जाता है (कुमार, 1999, 01)। जनांकिकी मानवीय जनसंख्या के अध्ययन के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जिसमें उसके संयोजन, वितरण, घनत्व, विकास तथा अन्य विशेषताओं सहित कारणों एवं परिणामों में परिवर्तन करने वाले कारकों को सम्मिलित किया जाता है।

डेमोग्राफी शब्द की उत्पत्ति से पहले कुछ अन्य शब्द भी जनसंख्या संबंधी अध्ययनों के लिए प्रचलन में रहे हैं, जैसे डेमोलाजी (Demology) एवं पापुलेशन स्टडीज (Papulation Studies) आदि ज्यादा समय तक प्रचलित नहीं रहे और ना ही लोकप्रिय हुए। समाजशास्त्रियों द्वारा जनसांख्यिकी में जनसंख्या के सामाजिक पक्षों का अध्ययन किया जाता है। जियोशास्त्री तथा भूगोलशास्त्री जैविक तथ्यों एवं भौगोलिक वितरण का अध्ययन करते हैं। यही कारण है कि किसी एक परिभाषा में सभी तत्वों को समावेशित कर प्रस्तुत करना कठिन है।

2.3 सामाजिक जनांकिकी की अवधारणा

जनांकिकी शब्द का अंग्रेजी रूपांतरण डेमोग्राफी के दो ग्रीक शब्दों डेमोस (Demos), जिसका अर्थ जनसंख्या होता है तथा ग्राफी (Graphy), जिसका अर्थ लिखना, विवरण या व्याख्या होता है, से मिलकर बना है। इसके संधि– विच्छेदात्मक अर्थों के आधार पर हम कह सकते हैं कि डेमोग्राफी (जनांकिकी) से तात्पर्य जनसंख्या को अनुसंधान के आधार पर वर्णित एवं विश्लेषण करने के विज्ञान से है। जनांकिकी के तहत मानव जनसंख्या के आकार, संयोजन एवं उम्र संरचना के साथ–साथ भौगोलिक वितरण को खोजता एवं अध्ययन करता है। जनांकिकी विज्ञानी मूलतः एक निश्चित समय के दौरान किसी जनसंख्या विशेष में उनके विकास परिवर्तन एवं उत्पादन–पुनरुत्पादन को परीक्षित व विश्लेषण करते हैं। इस विज्ञान में तीन मूलभूत परिप्रेक्ष्य को अवलोकित किया जाता है। जन्म दर, जनन क्षमता, मृत्यु दर और उत्प्रवास एवं अप्रवास।

जनांकिकी सिर्फ समकालीन जनसंख्या का अध्ययन नहीं करता, बल्कि यह जनसंख्यात्मक परिवर्तन को प्रभावित करने वाले कारकों का अत्यधिक अध्ययन करता है।

आशीले गुइलार्ड जनांकिकी को विस्तृत अर्थों में समझाते हुए लिखते हैं कि जनांकिकी सामान्य गतियों एवं जन संख्याओं की भौतिक, सामाजिक, नैतिक एवं बौद्धिक दशाओं का अथवा विस्तृत अर्थों में मानव जाति की प्राकृतिक एवं सामाजिक इतिहास का गणितीय ज्ञान है (खरे एवं सिन्हा, 1985, 01)।

हाउजर एवं डंकन ने जनांकिकी को परिभाषित किया है कि जनांकिकी जनसंख्या के आकार क्षेत्रीय वितरण एवं संरचना व उसमें परिवर्तन तथा इन परिवर्तनों के तत्व जो कि जन्म दर, मृत्यु दर, क्षेत्रीय तथा सामाजिक गतिशीलता है, का अध्ययन करता है (कुमार, 1999, 01)। फ्रांसीसी विद्वान लिवासियर के अनुसार जनांकिकी मात्र जनसंख्या का विज्ञान है, जो मुख्यतः जनसंख्या के जन्म, विवाह, मृत्यु एवं गतिशीलता की तीव्रता को सुनिश्चित करने के साथ उन सिद्धांतों की खोज करने का प्रयास करता है, जो इन जातियों को नियंत्रित करते हैं। वही वर्कले के अनुसार जनसंख्या का संख्यात्मक चित्रण जनांकिकी के नाम से जाना जाता है। इसके अंतर्गत जनसंख्या को व्यक्तियों के समग्र के रूप में कुछ विशिष्ट प्रकार के सामानों के रूप में प्रदर्शित किया जाता है। जनांकिकी जनसंख्या के समग्र के व्यवहार से संबंधित है, ना की किसी विशेष व्यक्ति के व्यवहार से (कुमार, 1999, 01)।

प्रोफेसर डोनाल्ड वोंग कहते हैं कि जनांकिकी मुख्यतः पांच जनांकिकीय प्रक्रियाओं उर्वरता, प्रजनन शीलता, मृत्यु, विवाह, प्रवासिता एवं सामाजिक गतिशीलता सामाजिक स्थिति अर्थात दशाओं का परिमाणात्मक अध्ययन है (सिन्हा एवं सिन्हा, 2006, 04)।

सामान्यता जनसांख्यिकी की औपचारिक परिभाषाएं थोड़ी अधिक सटीक शब्दों में एक ही बात कहते हैं जनसांख्यिकी जनसंख्या का विज्ञान है जो परीक्षित करता है कि :

1. विभिन्न मानदंडों के अनुसार आबादी की संरचना एवं आकार, आयु, प्रजाति तथा लिंग, संघ की स्थिति (वैवाहिक या सहवास) शैक्षिक प्राप्ति स्थानिक विवरण एवं आगे अन्य।
2. बहुआयामी एवं गतिशील जीवन यात्रा की प्रक्रिया है, जो इस संरचना को परिवर्तित करती हैं; जैसे जन्म मृत्यु प्रवसन आदि।
3. जनसंख्या संरचना एवं परिवर्तन /बदलाव के मध्य संबंध एवं व्यापक सामाजिक एवं नैतिक वातावरण जिसमें कि वे मौजूद हैं।

2.4 सामाजिक जनांकिकी का उद्विकास

जनसंख्या संबंधी अध्ययन किस समय बिंदु से प्रारंभ हुआ यह निश्चित रूप से बता पाना असंभव है, परंतु प्राचीन काल से ही जनसंख्या संबंधी विभिन्न समस्याओं ने समाज वैज्ञानिकों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया ऐतिहासिक दृष्टिकोण से जनसंख्या संबंधी आंकड़ों के संकलन की परंपरा प्राचीन काल से चली आ रही है।द्य जब उन्मुक्त जीवन त्याग कर लोगों ने सामाजिक नियंत्रण स्वीकार किया तथा राज्य की स्थापना हुई; उसी समय से जनसंख्या संबंधी समस्याओं की उत्पत्ति हुई। वर्तमान समाज में जनसंख्या संबंधी आंकड़े इकट्ठा करना आवश्यक हो गया है।

मिस्र, चीन एवं भारत जैसी अनेक प्राचीन सभ्यताओं से जनांकिकी आंकड़े प्राप्त होने के साक्ष्य मिलते हैं। 2030 ईसा पूर्व जद्दा में जनगणना की गई थी, जिसके आधार पर 28 लाख जनसंख्या का अनुमान लगाया गया था। सुरक्षा एवं कर निर्धारण के उद्देश्य से 1250 ईसा पूर्व

में जीवन संभव को आंकड़ों के पंजीयन की प्रणाली प्रारंभ की गई थी। ग्रीस के प्रसिद्ध इतिहासकार हेरोडोटस के अनुसार 480 ईसा पूर्व जेरेक्स ने ग्रीस पर आक्रमण करने से पूर्व अपनी सैन्य शक्ति का जनांकिकी अध्ययन करवाया था। रोम जैसे मशहूर राज्य में भी 335 ईसा पूर्व में जनगणना की गई थी और आगामी 470 सालों में 69 बार जनगणना करवाया गया (कुमार, 1999, 40)। इसके अलावा चीन बेबीलोनिया तथा भारत में जनसंख्या संबंधी आंकड़ों के संकलन के प्रमाण मिलते हैं। महाभारत में सेना संबंधी सूचनाओं की उपलब्धता के साक्ष्य मिलते हैं तथा अबुल फजल की कृति आईन–ए–अकबरी में अकबर के शासनकाल के दौरान सेनाओं के स्वरूप एवं उनकी संख्यात्मक जानकारी प्राप्त होती है।

हालांकि प्राचीन काल से ही जनसंख्या के संबंध में विभिन्न प्रकार के आंकड़ों को इकट्ठा करने, उसको सुरक्षा, नीतियों के निर्माण व क्रियान्वयन में प्रयोग के साक्ष्य मिलते हैं, परंतु वह व्यवस्थित नहीं थे। इसलिए उनमें से किसी को जनांकिकी का अग्रदूत नहीं कहा जा सकता। जनांकिकी के विचारों को व्यवस्थित रूप से उकेरने एवं उसे वैज्ञानिक दृष्टिकोण देने का श्रेय जॉन ग्रान्ट (1620–1674) को जाता है, उन्होंने अपनी कृति 'Natural And Political Observations Made up on the Bills of Mortality 1662' में जनांकिकी संबंधी विश्लेषकों को प्रस्तुत किया। जॉन ग्रान्ट को उनकी इस पुस्तक के आधार पर ही जनांकिकी का जनक माना जाता है सन् 1690 में जॉन ग्रान्ट के मित्र विलियम पैटी की 'Essay on Political Arithmetic' (एस्से ऑन पॉलिटिकल अर्थमैटिक) नामक पुस्तक प्रकाशित हुई जो उनके देहावसान के बाद लोगों के सामने आ पाई थी। उन्होंने भी जनसंख्या विस्तार, श्रमिकों की संख्या, बेरोजगारी, राष्ट्रीय आय, जनसंख्या संरचना जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर काम किया था। जॉन ग्रान्ट के पश्चात जनांकिकी में जितने भी कार्य किए गए थे, उनमें मौलिकता एवं नवीनता का अभाव था। जान ग्रांट के बाद दूसरा महत्वपूर्ण कार्य थॉमस रॉबर्ट माल्थस का था। माल्थस का प्रसिद्ध निबंध 'An Essay on The Principles of Population as it Effects and Future Improvement of Society' सन् 1798 में प्रकाशित हुआ।

वर्तमान समय में जनसंख्या शास्त्री माल्थस तथा उनके बाद के जनांकिकीय इतिहास को चार चरणों में विभक्त किया जाता है, इनमें से प्रथम चरण का प्रारंभ माल्थस से होता है।

2.4.1 प्रथम चरण

जनांकिकी में व्यवस्थित अध्ययन शुरू करने का श्रेय थामस रॉबर्ट माल्थस को दिया जाता है। रॉबर्ट माल्थस ने सन 1798 में अपने निबंध में समस्या मूलक दृष्टिकोण अपनाया था, जो कि पूरे यूरोप में प्रसिद्ध हुआ। 1798 के अपने निबंध में माल्थस ने अपना नाम अर्थात पहचान नहीं दिया था।द्य चार साल बाद सन 1802 ईस्वी में उन्होंने अपने निबंध का नवीन एवं संशोधित संस्करण पुनः प्रकाशित करवाया, जिसमें यह पुष्टि किया कि जनसंख्या की वृद्धि ज्यामिति दर (Geometric Progression) से होती है, जबकि खाद्यान्नों में वृद्धि अंकगणितीय दर (Arithmetic Progression) से होती है। परिणामस्वरूप जनसंख्यात्मक वृद्धि दर एवं खाद्यान्न वृद्धि दर में भिन्नता के कारण असंतुलन उत्पन्न हो जाता है। असंतुलन की स्थिति के कारण मानव जीवन में सामाजिक एवं पर्यावरण संबंधी अनेक समस्याएं जन्म ले लेती हैं, जिससे मानव भविष्य अंधकार में हो जाता है। इस विकट परिस्थिति से बचाव हेतु माल्थस ने उपाय सुझाया कि इस असंतुलन की स्थिति को नैतिक संयम द्वारा दूर किया जा सकता है उन्होंने चेतावनी भी दी कि यदि मनुष्य नैतिक संयम से काम नहीं लेगा तो संतुलन स्थापित करने के लिए प्रकृ

ति क्रियाशील हो जाती है। प्रकृति प्राकृतिक प्रकोपों के माध्यम से संतुलन स्थापित करती है। चीनी दार्शनिक हूंग लियांग ची ने भी माल्थस के समरूप विचार व्यक्त करते हुए जनसंख्या वृद्धि की समस्या से निजात पाने के लिए नैतिक संयम की बात की थी।

2.4.2 द्वितीय चरण

इस काल का प्रारंभ 19वीं सदी से होता है। इस समय राष्ट्रीय स्तर पर जनसंख्या संबंधों को एकत्रित करने का कार्य प्रारंभ किया गया। इस चरण के प्रमुख विद्वान विलियम फार थे, जिन्होंने विक्टोरिया के साम्राज्य काल की जनसंख्या के समंको को एकत्र किया तथा साथ ही जन्म मृत्यु के आंकड़ों की रिपोर्ट भी तैयार की। अधिक मृत्यु दर वाले स्थानों पर कारणों की जांच की गई। इसी काल में संभावित के सिद्धांत का विकास हुआ तथा अमेरिका में जनांकिकी पंजीकरण प्रारंभ हुआ। यूरोप एवं अमेरिका में जन्म एवं मृत्यु संबंधी पंजीकरण आवश्यक समझा जाने लगा तथा सरकारों ने यह कार्य करने की जिम्मेदारी उठाने के लिए तैयार हुई। सन 1885 में सर्वप्रथम आशीले गुइलार्ड नामक फ्रांसीसी विद्वान ने जनांकिकी 'Demography' शब्द की रचना की इससे पूर्व जनांकिकी राजनैतिक गणित 'Political Arithmetic' के रूप में प्रसिद्ध थी। इसी काल में जनांकिकी अनुसंधान की नवीन प्रविधियां के विकास एवं उद्देश्यों के निर्धारण में आंग्ल विद्वानों ने विशेष योगदान दिया। ड्यूमा का सामाजिक केशाकर्षण सिद्धांत भी इस दिशा में एक अन्य प्रयास था।

2.4.3 तृतीय चरण

इस चरण की उत्पत्ति बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ से मानी जाती है। अलेक्ज़ेंडर कार–सांडर्स की सुप्रसिद्ध पुस्तक 'The Population Problem A Study In Human Evaluation' का प्रकाशन सन् 1922 में हुआ। इस पुस्तक में सांडर्स ने जनसंख्या के अनुकूलतम सिद्धांत optimum theory of population का प्रतिपादन किया। उन्होंने जनांकिकी को जीवन विज्ञान से सामाजिक विज्ञान बनाने का प्रयास किया। इस चरण में प्रोफेसर साउंडर्स के अतिरिक्त अन्य नाम आर्सने ड्यूमोंट हैं, जिन्होंने जनसंख्या के संबंध में एक सिद्धांत प्रतिपादित किया, जिसे 'theory of social capillarity' के नाम से जाना जाता है। उनका विचार था कि जैसे जैसे व्यक्ति की आर्थिक स्तर उच्चतम होता जाता है, वैसे वैसे उसकी पुनरुत्पादकता घटती जाती है।

2.4.4 चतुर्थ चरण /वर्तमान चरण

जनांकिकी की विकास यात्रा में चौथे चरण या वर्तमान चरण का प्रारंभ जनसंख्या संबंधी समस्याओं के समाधान करने के क्रम में सांख्यिकी के प्रयोग से होता है। वर्तमान समय में समस्याओं को हल करने के क्रम में गणितीय प्रणालियों को अधिक महत्व दिया जाने लगा। इसे दृष्टिगत रखे तो अमेरिका में विशेष प्रगति परिलक्षित होती है। जनसंख्या संबंधी आंकड़ों को संतुलित करना उसका वर्गीकरण करना संपादन करना और पर्याप्त आंकड़ों की पूर्ति करना तथा जनसंख्या प्रक्षेपण के लिए गणितीय एवं सांख्यिकी परिप्रेक्ष्य का प्रयोग किया जाने लगा। केनन, बाउले, ह्वेलपटन, पर्ल आदि ने जनांकिकी को व्यवहारिक बनाने के लिए अधिकाधिक गणित प्रविधियों का प्रयोग किया। बरहालस्ट जनसंख्या के विकास सिद्धांत की व्याख्या के लिए वृद्धिघाट सिद्धांत का प्रयोग किया। इस सिद्धांत के अनुसार एक समय के पश्चात जनसंख्या की वृद्धि दर शून्य हो जाएगी और जनसंख्या स्थिर हो जाएगी।

इस चरण में पूरे विश्व में जनांकिकी संबंधी विभिन्न संस्थाओं की स्थापना तथा विकास

भी हुआ है। राष्ट्रीय जनसंख्या संस्थान पेरिस, जनसंख्या अनुसंधान समिति लंदन, जनसंख्या परिषद संयुक्त राज्य अमेरिका आदि कुछ महत्वपूर्ण संस्थाएं हैं जो इस क्षेत्र में मुस्तैदी से कार्यरत है।

2.5 सामाजिक जनांकिकी की विषय वस्तु

जनांकिकी का विषय सामग्री या क्षेत्र इसके परिभाषा में ही निहित है। जनांकिकी के अंतर्गत मुख्यतः चार बिंदुओं का अध्ययन किया जाता है :

2.5.1 जनसंख्या का आकार

जनसंख्या के आकार से तात्पर्य किसी स्थान विशेष में किसी विशिष्ट समय में निवास करने वाले जन समुदाय की कुल जनसंख्या से है। जनसंख्या की गणना करना जितना आसान प्रतीत होता है, धरातलीय दृष्टि से उतना सरल और सहज नहीं है। यह एक जटिल प्रक्रिया है। जनसंख्या गणना हेतु यह आवश्यक है कि स्थान व्यक्ति और समय को उचित व पर्याप्त रूप से निश्चित व परिभाषित किया जाए। उसके बाद जनगणना पंजीकरण अथवा निदर्शन विधि द्वारा जनसंख्या की गणना की जाए।

2.5.2 जनसंख्या की संरचना

जनांकिकी की विषय वस्तु के अंतर्गत जनसंख्या की संरचना काफी महत्वपूर्ण है। जनसंख्या के आकार से हमें सामान्य जानकारी मिलती है, परंतु उसकी संरचना से हमें उसके विशेषताओं के संबंध में ज्ञान होता है। दो स्थानों या समयों की जनसंख्या की अलग–अलग विशेषताएं हो सकती हैं। उदाहरण स्वरुप लिंग, जाति, धर्म, निवास आदि जिनके अध्ययन से जनसंख्या का समष्टिगत चित्र उभर कर सामने आता है; जबकि एक ही स्थान व समय में जनसंख्या के संरचनात्मक अध्ययन से उस जनसंख्या का व्यक्तिगत चित्र प्रस्तुत होता है।

2.5.3 जनसंख्या का वितरण

जनसंख्या के संबंध में तीसरा सबसे महत्वपूर्ण विषय जनसंख्या का वितरण है। इसके तहत इस प्रश्न का समाधान खोजने की कोशिश की जाती है कि लोग कहां और किस प्रकार वितरित हैं और जनसंख्या के इस वितरण में किस प्रकार परिवर्तन घटित हो रहे हैं। थॉमसन एवं डेविस के अनुसार विश्व की जनसंख्या के वितरण के अध्ययन की दृष्टि से शहरीकरण एवं औद्योगिकरण के आधार पर निम्न तीन श्रेणियां बनाई गई हैं :

1. उन्नत शहरी एवं औद्योगिक क्षेत्र
2. नव शहरी एवं औद्योगिक क्षेत्र
3. शहरी एवं औद्योगिक विकास के पूर्व की स्थिति

ऊपर वर्णित तीनों प्रकार के क्षेत्रों में जनसंख्या का वितरण उस वितरण में होने वाले परिवर्तन, परिवर्तन लाने वाले कारक तथा उसके परिणाम आदि को प्रमुख विषय मानते हुए अध्ययन किया जाता है।

2.5.4 जनसंख्या को प्रभावित करने वाले कारक

जनसंख्या के निरंतर गतिशील रहने के कारण इसके कारकों एवं परिणामों का अध्ययन करना भी जनांकिकी का एक महत्वपूर्ण विषय वस्तु बन जाता है। सामान्य तौर पर परिवर्तन के

कारकों को जन्म, मृत्यु व प्रवास की घटनाओं का नाम दे दिया जाता है तथा उन्हें जनांकिकी की प्राथमिक प्रक्रियाओं के रूप में समझा जाता है। सामाजिक गतिशीलता, सामाजिक संरचना को प्रभावित करती है एवं ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि एक परिस्थिति से दूसरी परिस्थिति में स्थानांतरित होने में संरचना की विशेषताएं बदल जाती हैं। सामाजिक गतिशीलता की संकल्पना जो जनसंख्या के संरचना को प्रभावित करती है। मूलतः पित्रीम सोरोकिन ने प्रतिपादित किया है। वह कहते हैं कि सामाजिक गतिशीलता सामाजिक आयामों में व्यक्तियों के स्थानांतरण की घटना है। प्रोफेसर वोंग सामाजिक गतिशीलता द्वारा होने वाले जनसंख्या के आकार एवं जनसंख्या में परिवर्तनों के अध्ययन के लिए गतिशीलता सांख्यिकी का प्रतिपादन किया है, जो एक क्रांतिकारी विकास सिद्ध हो सकता है।

2.6 सामाजिक जनांकिकी के अध्ययन की आवश्यकता या महत्व

वर्तमान समय में जनांकिकी व्यवहारिक नीतियों के निर्धारण करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करने लगी है। जनसंख्याविद अशोक मित्रा के अनुसार जनांकिकी के महत्व को स्पष्ट करने के लिए हम विश्व को तीन अर्थव्यवस्थाओं में बांट सकते हैं :

2.6.1 विकसित अर्थव्यवस्था

विकसित अर्थव्यवस्थाओं में जनसंख्या की मांग का सृजक माना जाता है। जनसंख्या बढ़ने से मांग बढ़ती है, मांग बढ़ने से रोजगार बढ़ता है और इसी तरह जनसंख्या कुल मांग को बढ़ाकर पूर्ण रोजगार के स्तर पर आर्थिक संतुलन बनाए रखने का प्रयास करती हैद्य इसी कारण जनसंख्या के सामाजिक सुरक्षा एवं सुविधा संबंधी पहलुओं पर अधिक ध्यान दिया जाता है। अशोक मित्रा का विचार है कि विकसित देशों में जहां बाजार अर्थव्यवस्था होती है जनांकिकी आंकड़ों का उपयोग श्रमिकों की संख्या निर्धारण करने तथा जनसंख्या की विशेषताओं का उत्पादन फलन तथा बचत फलन से संबंध बनाने तक सीमित रहता है (मित्रा, 2008, 02)।

2.6.2 नियंत्रित एवं केंद्र नियोजित अर्थव्यवस्था

साम्यवादी तथा समाजवादी अर्थव्यवस्था में जनसंख्या मांग उपभोग की प्रकृति एवं दिशा को प्रभावित नहीं करती, क्योंकि ऐसी अर्थव्यवस्था में उपभोक्ता की संप्रभुता नहीं होती, परंतु ऐसे देशों में रोजगार कार्यशील जनसंख्या महिलाओं का आर्थिक क्रियाओं में योगदान राष्ट्रीय आय प्रति व्यक्ति आय, शिशु शिक्षा, स्वास्थ्य, प्रसन्नता, पोषण का स्तर आदि अनेक आर्थिक लक्ष्य होते हैं, जिन्हें प्राप्त करने के लिए केंद्रीय नियोजन किया जाता है।यह लक्ष्य सामान्यतः जनांकिकी अध्ययन तथा अनुसंधान पर निर्भर रहते हैं।

2.6.3 विकासशील देश

श्रम शक्ति पूंजी निर्माण की प्रक्रिया एवं मात्रा को निर्धारित करता है, नए आविष्कार करता है, मांग को जन्म देता है तथा उसके उत्पादन के लिए एक सशक्त साधन बनकर सामने आता है। प्रोफेसर हरविसन एवं मायर ने पूंजी प्राकृतिक साधन विदेशी सहायता तथा अंतरराष्ट्रीय व्यापार की तुलना में श्रम शक्ति को अधिक महत्व दिया।

सामान्य तौर पर जनांकिकी के महत्वपूर्ण निम्न बिंदुओं द्वारा समझ सकते हैं :

1. जनांकिकी के आर्थिक महत्व के रूप में हम समझ सकते हैं कि इसके द्वारा आर्थिक विकास की प्रकृति व्यावसायिक ढांचा ग्रामीण एवं नगरीय जनसंख्या में वृद्धि दर

पारिवार नियोजन एवं खाद्य समस्या का विस्तृत रूप से अध्ययन किया जाता है।

2. आर्थिक विकास के लिए उत्पादन एवं जनसंख्या दोनों ही महत्वपूर्ण हैं इसी के द्वारा भविष्य की जनसंख्या, उसके अन्न वस्त्र तथा आवास की आवश्यकता का अनुमान लगाया जाता है।

3. करारोपण शिक्षा स्वास्थ्य आदि के व्यय का अनुमान जनसंख्या के आंकड़ों के आधार पर लिया जाता है।

4. जनांकिकी से जन्म एवं मृत्यु दर स्त्री पुरुष अनुपात विवाह ग्रामीण एवं नगरीय जनसंख्या अनुपात शैक्षणिक एवं व्यवसाय की स्थिति का ज्ञान होता है।

5. सामाजिक कुरीतियों जैसे बाल विवाह, सती प्रथा, विधवा समस्या, मद्यपान, भिखारियों की समस्या, महामारी तथा अन्य संतुलन बिगाड़ने वाले तथ्यों एवं कारकों की वास्तविक स्थिति का ज्ञान होता है।

6. धर्म, लिंग, भाषा, प्रजाति एवं आज की सूचनाएं जनांकिकी के माध्यम से मिलती हैं, जिनका अत्यधिक सामाजिक महत्व है।

7. राजनीति व्यवस्था में राज्यसभा लोकसभा तथा विधानसभाओं की सीटों का निर्धारण जनांकिकी से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर होता है। केंद्र एवं राज्य के बीच आय का विभाजन जनसंख्या के आधार पर ही होता है (सिन्हा एवं सिन्हा, 2006)।

8. जनांकिकी विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों को उचित एवं पर्याप्त सूचनाएं देने में सक्षम है जो उनके अध्ययन हेतु आवश्यक है।

9. किसी शहर के मास्टर प्लान बनाने के लिए या शहर के प्रारूप को निर्धारित करने के लिए जनसांख्यिकीय आंकड़े अहम भूमिका अदा करते हैं।

10. राज्य या केंद्र में चुनाव के समय जनसांख्यिकीय आंकड़ों की आवश्यकता तैयारियों को पुख्ता करने तथा प्रशासनिक नियंत्रण के लिए आवश्यक होता है।

11. जब कभी कृत्रिम या प्राकृतिक आपदा आ जाती है तथा जान माल की हानि हो जाती है तो उस समय भी जनांकिकी आंकड़े स्थिति का सही सही अनुमान लगाने में हमारी मदद करते हैं।

12. सरकारी एवं गैर सरकारी संगठनों एवं संस्थाओं को नीतियों का निर्धारण एवं निर्माण करने तथा उसका सफल कार्यान्वयन करने हेतु जनांकिकी आंकड़ों की सहायता चाहिए होती है इसके बिना यह कार्य सटीकता से संभव नहीं हो सकता।

13. उपर्युक्त सभी बिंदुओं के गहन विश्लेषण से स्पष्ट हो जाता है कि हमारे जीवन के विभिन्न पक्षों में जनांकिकीय आंकड़े अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं जिनके अभाव में एक सुविधाजनक जीवन जीने की कल्पना नहीं की जा सकती।

2.7 सारांश

जनांकिकी/डेमोग्राफी दो ग्रीक शब्दों डेमोस (Demos), जिसका अर्थ जनसंख्या होता है तथा ग्राफी (Graphy), जिसका अर्थ लिखना, विवरण या व्याख्या होता है। जनांकिकी से तात्पर्य

जनसंख्या को अनुसंधान के आधार पर वर्णित या विश्लेषित करने के विज्ञान से है। इस विज्ञान में तीन मूलभूत परिप्रेक्ष्य को अवलोकित किया जाता है– जन्म दर, जनन क्षमता, मृत्यु दर और उत्प्रवास एवं अप्रवास।

मिस्र, चीन एवं भारत जैसी अनेक प्राचीन सभ्यताओं से जनांकिकी आंकड़े प्राप्त होने के साक्ष्य मिलते हैं। 2030 ईसा पूर्व जद्दा में जनगणना की गई थी, जिसके आधार पर 28 लाख जनसंख्या का अनुमान लगाया गया था। महाभारत में सेना सम्बन्धी सूचनाओं की उपलब्धता के साक्ष्य मिलते हैं तथा अबुल फजल की कृति आईन–ए–अकबरी में अकबर के शासनकाल के दौरान सेनाओं के स्वरूप एवं संख्यात्मक जानकारी प्राप्त होती है।

जनांकिकी के विचारों को व्यवस्थित रूप से उकेरने एवं उसे वैज्ञानिक दृष्टिकोण देने का श्रेय जॉन ग्राण्ट (1620–1674) को जाता है, उन्होंने अपनी कृति "Natural and Political Observations Made Up on the bills of Morality 1662" में जनांकिकी संबंधी विश्लेषकों को प्रस्तुत किया। जॉन ग्रान्ट के पश्चात् जनांकिकी में जितने भी कार्य किए गए थे, उनमें मौलिकता और नवीनता का अभाव था। जॉन ग्रान्ट के बाद थॉमस राबर्ट माल्थस का प्रसिद्ध निबंध "An Essay on the Principles of Population as it Effects and Future Improvement of Society" सन् 1798 में प्रकाशित हुआ।

जनांकिकीय इतिहास को 4 चरणों में विभक्त किया जाता है :

प्रथम चरण : जनसंख्या की वृद्धि ज्यामिति दर (Geometric Progression) से होती है, जबकि खाद्यान्नों में वृद्धि अंकगणितीय दर (Arithmetic Progression) से होती है। दोनों वृद्धि दर में भिन्नता से असंतुलन उत्पन्न हो जाता है।

द्वितीय चरण : 1885 में सर्वप्रथम आशीले गुइलार्ड नामक फ्रांसीसी विद्वान ने 'Demography' शब्द की रचना की।

तृतीय चरण : अलेक्जेंडर कार–सॉन्डर्स की सुप्रसिद्ध पुस्तक "The Population Problem- A Study In Human Evaluation" का प्रकाशन सन् 1922 में हुआ। इस पुस्तक में सॉन्डर्स के Optimum theory of population का प्रतिपादन किया। उन्होंने जनांकिकी को जीवन विज्ञान से सामाजिक विज्ञान बनाने का प्रयास किया।

चतुर्थ चरण : इस चरण में पूरे विश्व में जनांकिकी संबंधी विभिन्न संस्थाओं की स्थापना तथा विकास भी हुआ है। उदाहरण– राष्ट्रीय जनसंख्या संस्था पेरिस, जनसंख्या अनुसंधान समिति, लंदन, जनसंख्या परिषद, संयुक्त राज्य अमेरिका।

सामाजिक जनांकिकी के अध्ययन की आवश्यकता या महत्व को अधोलिखित बिन्दुओं पर सारांशगत रूप में स्पष्ट किया गया है :

1. विकसित अर्थव्यवस्थाओं में जनसंख्या को मांग का सृजक माना जाता है। मांग बढ़ने से रोजगार बढ़ता है। इसी तरह जनसंख्या कुल मांग को बढ़ाकर पूर्ण रोजगार के स्तर पर आर्थिक संतुलन बनाए रखने का प्रयास करती है।
2. सामाजिक जनांकिकी की आवश्यकता नियंत्रित एवं केन्द्र नियोजित अर्थव्यवस्था है।
3. श्रम शक्ति पूंजी निर्माण की प्रक्रिया एवं मात्रा को निर्धारित करता है, नए आविष्कार करता है, मांग को जन्म देता है तथा उसके उत्पादन के लिए एक सशक्त बनकर सामने आता है।

2.8 संदर्भ ग्रंथ

1. कुमार, वि. (1999) : जनांकिकी. साहित्य भवन, आगरा
2. खरे, पी.सी. एवं सिन्हा, वी.सी. (1985) : सामाजिक जनांकिकी एवं भारत में जनस्वास्थ्य नेशनल पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद
3. सिन्हा, वी.सी. एवं सिन्हा, पुष्पा (2006) : जनांकिकी के सिद्धांत, मयूर पेपर बैक, दिल्ली
4. पंत, जे.सी. (2010) : जनांकिकी, विशाल पब्लिशिंग कारपोरेशन, जालंधर
5. Mitra, Ashok (2008) : Aspect of Population Policy in India, Council for Social Development, Delhi
6. Das, Narayan Gandotra (Ed). (2009) : Population Policy in India with Reference to Infant Mortality And Fertility, Michigan, Blackie
7. Abhi, B.L. (2009) : Population Research Centers in India, Centre for Research in Rural and Industrial Development, Delhi

2.9 बोध के प्रश्न

2.9.1 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. सामाजिक जनांकिकी के उद्विकास की विवेचना कीजिए।
2. सामाजिक जनांकिकी के महत्व की विवेचना कीजिए।

2.9.2 लघु उत्तरीय प्रश्न

1. सामाजिक जनांकिकी की विषय–वस्तु क्या है? टिप्पणी कीजिए।
2. सामाजिक जनांकिकी से आप क्या समझते हैं? विवेचना कीजिए।

2.9.3 वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. जनांकिकी के अंग्रेजी रूपांतरण डेमोग्राफी शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग किसने और कब किया?

(a) आशीले गिलार्ड, 1955 (b) कार्ल मार्क्स, 1948

(c) मैक्स वेबर, 1860 (d) हर्बर्ट स्पेन्सर 1897

2. डेमोग्राफी शब्द किस भाषा के शब्दों से मिलकर बना है?

(a) इटैलियन (b) ग्रीक भाषा

(c) जर्मन (d) फ्रेंच

3. कार साउंडर्स की पुस्तक का क्या नाम है?

(a) The Society (b) Das Capital (c)Social Organization

(d) The Population Problem: A Study in Human Evaluation

4. जनांकिकी में व्यवस्थित अध्ययन शुरू करने का श्रेय किसको दिया जाता है?

(a) हैरी एंड जानसन (b) कार्ल पापर

(c) थामस रॉबर्ट माल्थस(d) आगस्त काम्ट

2.10 वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर

1. (a)

2. (b)

3. (d)

4. (c)

2.11 पारिभाषिक शब्दावली

जनन क्षमता – किसी व्यक्ति की संतान पैदा करने की क्षमता।

मृत्युदर– प्रति एक हजार जनसंख्या पर एक वर्ष में मृत व्यक्तियों की संख्या।

उत्प्रवास– मूल निवास स्थान को छोड़कर दूसरे स्थान में बसा। (अपने देश को छोड़कर दूसरे देश में बसना)

अप्रवास– दूसरे स्थान से आकर यहां बसना (दूसरे देश से आकर यहां बस)

औद्योगिक क्षेत्र– वे क्षेत्र जहां उत्पादन के लिए बड़े–बड़े कारखाने स्थापित हो।

विकसित अर्थव्यवस्था– उच्च आर्थिक विकास एवं नागरिकों के लिए प्रचुर मात्रा में धन और संसाधन उपलब्ध हो।

नियोजित अर्थव्यवस्था– उत्पादन, वितरण, निवेश एवं वित्तीय निर्णय सरकार की योजनाओं के अनुसार।

विकासशील देश– आर्थिक विकास की उच्च स्तर को प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील देश।

इकाई–3 : माल्थस के जनसंख्या संबंधी विचारों के प्रेरक कारक एवं माल्थस का जनसंख्या का सिद्धान्त

इकाई की रूपरेखा

3.1 उद्देश्य

3.2 प्रस्तावना

3.3 माल्थस के जनसंख्या सम्बन्धी विचारों के प्रेरक कारक

3.3.1 औद्योगिक क्रांति

3.3.2 इंग्लैंड की आर्थिक स्थिति

3.3.3 अर्थशास्त्री तथा प्रकृतिवादी विद्वानों के विचार

3.3.4 विलियम गाडविन के विचारों का प्रतिरोध

3.3.5 अन्य समकालीन विचारकों का प्रभाव

3.4 माल्थस का जनसंख्या सिद्धांत

3.5 माल्थस के जनसंख्या सिद्धांत की सामान्य मान्यताएं

3.6 माल्थस के जनसंख्या सिद्धांत के प्रमुख तत्व

3.7 जनसंख्या नियंत्रण हेतु सुझाव

3.7.1 नैसर्गिक या प्राकृतिक अवरोध

3.7.2 प्रतिबंधात्मक अवरोध

3.8 सारांश

3.9 संदर्भ सूची

3.10 बोध के प्रश्न

3.10.1 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

3.10.2 लघु उत्तरीय प्रश्न

3.10.3 वस्तुनिष्ठ प्रश्न

3.11 वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर

3.12 पारिभाषिक शब्दावली

3.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप :

1. माल्थस के जनसंख्या की अवधारणा से परिचित होंगे।
2. माल्थस के जनसंख्या सिद्धान्त की सामान्य मान्यताओं को समझ सकेंगे तथा जनसंख्या में किस प्रकार से परिवर्तन होता है एवं इसे नियंत्रित करने के लिए सुझाए गए विधियों के संबंध में जानकारी प्राप्त कर पायेंगे।

3.2 प्रस्तावना

जनसंख्या के प्रति मनुष्य की जिज्ञासा उसके आविर्भाव के समय से ही रही है। आर्थिक विकास की तीव्रता से उन्मुख वर्तमान गतिशील संसार के समस्त देश अपने देश में उपलब्ध संसाधनों का यथासंभव अनुकूलतम उपयोग कर मानव संसाधन के विकास के प्रति जागरूक हैं और अपने देश में उपलब्ध जनसंख्या के विषय में गुणात्मक एवं संख्यात्मक दृष्टिकोण से सम्यक जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं। यही कारण है कि जनांकिकी आज अर्थशास्त्रियों, समाजशास्त्रियों तथा शिक्षाविदों के अध्ययन का व्यापक अंग बन गया है। जनसंख्या की समस्या एक गंभीर एवं ज्वलंत समस्या है। प्राचीन काल से हीं विद्वान जनसंख्या की समस्या से अवगत थे। प्रसिद्ध चीनी विचारक कन्फ्यूसियस ने इस तथ्य की ओर ध्यान आकृष्ट किया कि जनसंख्या में अनियंत्रित वृद्धि से प्रति–व्यक्ति उत्पादन घट सकता है तथा लोगों का जीवन स्तर भी गिर सकता है। प्राचीन यूनानी विचारक प्लेटो एवं अरस्तू ने भी जनसंख्या की आदर्श स्थिति के विषय में अपने विचार व्यक्त किए हैं, उनके अनुसार किसी भी समाज के आत्मनिर्भरता एवं सुरक्षा के लिए जितनी जनसंख्या की आवश्यकता हो जनसंख्या में वृद्धि उसी अनुपात में होनी चाहिए। अन्यथा की स्थिति में निर्धनता में वृद्धि होगी तथा घरेलू एवं वैश्विक स्तर पर विभिन्न प्रकार की आर्थिक समस्याएं उत्पन्न होंगी। जनसंख्या की समस्या पर माल्थस ने गंभीर, सुनियोजित एवं व्यवस्थित रूप से अपना विचार प्रस्तुत किया तथा उनके द्वारा जनसंख्या वृद्धि तथा उसके निर्धारक कारकों की भी स्पष्ट एवं विस्तृत विवेचना की गई है।

3.3 माल्थस के जनसंख्या सम्बन्धी विचारों के प्रेरक कारक

यदि माल्थस से संबंधित ग्रंथों एवं लेखों का अध्ययन करें तो यह स्पष्ट हो जाएगा कि माल्थस के विचारों पर तत्कालीन आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक परिस्थितियों तथा उनके समकालीन एवं पूर्ववर्ती विचारकों के विचारों का स्पष्ट प्रभाव दिखाई पड़ता है। माल्थस के जनसंख्या संबंधी विचारों पर जिन प्रेरक कारकों का प्रभाव पड़ा वे निम्नलिखित हैं :

3.3.1 औद्योगिक क्रांति

जिस समय माल्थस के जनसंख्या संबंधी विचार परिपक्व हो रहे थे, उस समय औद्योगिक क्रांति का सूत्रपात हो चुका था। कृषि क्षेत्र की स्थिति में गिरावट तथा औद्योगिक क्षेत्र में होने वाली आशातीत वृद्धि ने आर्थिक विषमता तथा असंतुलन की स्थिति को जन्म दिया। औद्योगिक क्रांति तथा पूंजीवादी व्यवस्था के सभी दोष उभरकर सामने आने लगे थे। तीव्र गति से होने वाले औद्योगिक विकास ने एक तरफ पूंजीपतियों, धनिक वर्गों तथा समाज के शक्तिशाली व्यक्तियों के प्रभुत्व को बढ़ा दिया तथा वहीं दूसरी तरफ निर्धन, श्रमिकों तथा शोषित

वर्गों की स्थिति अत्यंत दयनीय होती चली गई। पूंजीपति वर्ग के द्वारा श्रमिकों का शोषण किया जा रहा था जिससे श्रमिकों में बेरोजगारी, धन तथा संसाधनों के असमान वितरण के कारण निर्धनता की समस्या अत्यंत विकराल रूप धारण करती जा रही थी। इन सभी परिस्थितियों का माल्थस के विचारों पर गहरा प्रभाव पड़ा। माल्थस ने अनुभव किया कि देश की जनसंख्या तथा खाद्य सामग्री में असंतुलन की स्थिति उत्पन्न हो गई है। औद्योगिक क्रांति ने धनी एवं निर्धन के मध्य अंतर को कम करने की बजाय और बढ़ा दिया है। अतः औद्योगिक क्रांति के द्वारा उत्पन्न हुई तत्कालीन परिस्थिति ने माल्थस के जनसंख्या संबंधी सिद्धांत में प्रेरक का कार्य किया।

3.3.2 इंग्लैंड की आर्थिक स्थिति

इंग्लैंड तथा निकटवर्ती स्थानों में अकाल, महामारी, गरीबी तथा बेरोजगारी जैसे भयावह संकट व्याप्त थे। इंग्लैंड की आर्थिक स्थिति दिन–प्रतिदिन खराब होती जा रही थी। 18 वीं सदी के पूर्वार्ध में कृषि व्यवस्था उन्नत स्थिति में थी जिसमें तीव्र गति से गिरावट आने लगी। एक तरफ जहां जनसंख्या वृद्धि तथा गंभीर आर्थिक संकट के कारण जनसंख्या का भरण पोषण कठिन हो गया था वही कृषि की बिगड़ती हुई दिशा से समाज पर अतिरिक्त दबाव बढ़ रहा था। युद्ध के कारण आयात बंद होने से अनाज व खाद्यान्न सामग्री के मूल्यों में वृद्धि हो गई थी। इस स्थिति के निराकरण के लिए इंग्लैंड ने फसल कानून पारित किया परंतु इससे स्थिति में पर्याप्त सुधार नहीं हो सका था। माल्थस ने अनेक देशों का भ्रमण किया तथा यह पाया कि खाद्य सामग्री का पर्याप्त मात्रा में उत्पादन नहीं हो पा रहा है। इस बिगड़ती स्थिति ने माल्थस को जनसंख्या की समस्या के कारणों एवं समाधान पर चिंतन के लिए प्रेरित किया।

3.3.3 अर्थशास्त्री तथा प्रकृतिवादी विद्वानों के विचार

18वीं शताब्दी के अनेक अर्थशास्त्री तथा प्रकृतिवादियो ने जनसंख्या वृद्धि को आर्थिक राजनीतिक व सैन्य दृष्टिकोण से देश की समृद्धि एवं शक्ति को बढ़ाने में लाभकारी मानते हुए उचित ठहराया था। केंटीलन स्टुअर्ट तथा विलियम पेट्टी जैसे विद्वानों ने जनसंख्या वृद्धि के दुष्परिणामों पर गहन चिंतन तथा अध्ययन किये बिना ही इसे देश हित के लिए लाभकारी माना। इसी प्रकार प्रकृतिवादी विचारको ने जनसंख्या वृद्धि की स्वाभाविक गति पर अंकुश लगाने को अनुचित एवं अप्राकृतिक मानते हुए इसका खण्डन किया, जबकि फ्रांसीसी विचारक बफौन तथा माउंटेनग्यु जनसंख्या नियंत्रण के पक्षधर थे। माल्थस का जनसंख्या संबंधी विचार इन्हीं आशावादी विचारकों के विचारों की प्रतिक्रिया थी।

3.3.4 विलियम गाडविन के विचारों का प्रतिरोध

माल्थस के जनसंख्या संबंधी विचारों को विलियम गाडविन ने सबसे अधिक प्रभावित किया। सन् 1793 में प्रकाशित पुस्तक 'Enquiry Concerning Political Justice And It's Influence On Morals And Happiness' में गाडविन ने तत्कालीन समाज में मनुष्य के सभी समस्याओं का मुख्य कारण शासन व्यवस्था को माना है। गाडविन व्यक्तिगत संपत्ति का विरोध करते थे तथा उनका उद्देश्य समानता तथा साम्यवाद की स्थापना करना था। वे बढ़ती हुई जनसंख्या को मानव जाति की प्रगति का सूचक मानते थे तथा उनका मत था कि समाज स्वयं जनसंख्या को उस सीमा तक रखता है जिस सीमा तक उसके पास संसाधन उपलब्ध हैं। फ्रांस के विचारक काण्डरसेट ने भी बढ़ती हुई जनसंख्या को समस्या ना मानते हुए गाडविन के विचारों का समर्थन किया। माल्थस ने गाडविन के विचारों को काल्पनिक एवं आशावादी मानते हुए इसका विरोध किया। माल्थस का सिद्धांत मुख्य रूप से गाडविन के विचारों का प्रतिरोधात्मक परिणाम है। उनका मत था कि जनसंख्या एवं खाद्य सामग्री के मध्य संतुलन

स्थापित करने का कार्य प्रकृति का है।

3.3.5 अन्य समकालीन विचारकों का प्रभाव

मात्थस पर मुख्य रूप से सर मैथ्यू हैले, डेविड ह्यूम, जोसेफ टाउन साइंड, सर वाल्टर रेले तथा रॉबर्ट बेलास जैसे समकालीन विद्वानों के विचारों का प्रभाव पड़ा। इन विचारकों का मत था कि मृत्यु दर की तुलना में जनसंख्या में वृद्धि अधिक होती है तथा जनसंख्या दर में अनियंत्रित वृद्धि विभिन्न समस्याओं को जन्म देती है। अतः माल्थस के जनसंख्या संबंधी सिद्धांत पर इन विचारकों का गहरा प्रभाव पड़ा।

3.4 माल्थस का जनसंख्या सिद्धान्त

जनसंख्या के विभिन्न सिद्धांतों में माल्थस का जनसंख्या सिद्धांत प्रारंभिक एवं महत्वपूर्ण अवधारणा है। माल्थस ऐसे प्रथम सामाजिक अर्थशास्त्री थे जिन्होंने जनसंख्या का आर्थिक विश्लेषण प्रस्तुत किया। उन्होंने यूरोप में बढ़ती हुई जनसंख्या के प्रवृत्तियों के आधार पर संसाधन एवं जनसंख्या के अंतर्संबंधों को केंद्र बिंदु में रखकर जनसंख्या सिद्धांत को विकसित किया। माल्थस के जनसंख्या सिद्धांत के अनुसार– "जीवन–निर्वाह साधनों की अपेक्षा जनसंख्या में वृद्धि तीव्र गति से होती है।"

चूकिं जनसंख्या की वृद्धि दर संसाधनों के उत्पादन में होने वाली वृद्धि की दर से सदैव आगे रहती है अतः आर्थिक समृद्धि को बढ़ाने का एकमात्र तरीका जनसंख्या नियंत्रण है।

3.5 माल्थस के जनसंख्या सिद्धांत की सामान्य मान्यताएं

1. स्त्री एवं पुरुष के मध्य स्वभाविक काम–प्रवृत्ति की स्थिति विद्यमान रहती है। मनुष्य की प्रजनन क्षमता तथा संतानोत्पति की इच्छा यथा स्थिर रहती है, जिस पर शिक्षा एवं सभ्यता की प्रगति का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
2. मनुष्य के जीवित रहने के लिए विभिन्न बुनियादी आवश्यकताओं में खाद्य–सामग्री सबसे अनिवार्य घटक है, जबकि कृषि में उत्पत्ति हास का नियम लागू होता है।
3. आर्थिक संपन्नता में वृद्धि होने पर मनुष्य में संतानोत्पादन की इच्छा भी तीव्र रहती है, जबकि जीवन स्तर में कमी होने पर यह घटती है।

3.6 माल्थस के जनसंख्या के प्रमुख तत्व

माल्थस के जनसंख्या सिद्धांत को निम्न बिंदु के अंतर्गत रखकर समझा जा सकता है :

जनसंख्या में वृद्धि ज्यामिति अनुपात में होती है: माल्थस के अनुसार जनसंख्या में वृद्धि ज्यामितिय तथा गुणात्मक रूप से होती है। जैसे– (2,4,8,16,32... आदि की श्रृंखला में)। उनका मत है कि स्त्री एवं पुरुष के मध्य प्रबल यौनाकर्षण पाया जाता है परिणामस्वरूप संतानोत्पत्ति स्वाभाविक है। उन्होंने स्वयं लिखा है कि– **"यदि जनसंख्या को रोका न गया तो जनसंख्या प्रत्येक 25 वर्ष में दोगुनी हो जाने की प्रवृत्ति रखती है।"**

खाद्य सामग्री में वृद्धि अंकगणितीय अनुपात में होती है : मानव के जीवन और अस्तित्व के लिए भोजन आवश्यक है, परंतु जनसंख्या में वृद्धि तथा खाद्य–आपूर्ति के मध्य असंतुलन पाया जाता है। खाद्य सामग्री में समानांतर अर्थात अंकगणितीय अनुपात में वृद्धि होती है। इसका

प्रमुख कारण कृषि उत्पत्ति में ह्रास का नियम लागू होना है। अर्थात जैसे–जैसे खेत में फसल उगाने का क्रम बढ़ता जाता है क्रमानुसार कृषि उत्पादन घटता जाता है। खाद्य सामग्री के अंकगणितीय अनुपात को इस प्रकार रखकर समझा जा सकता है (1,2,3,4,5……आदि की श्रृंखला में)।

जनसंख्या तथा खाद्य सामग्री के मध्य असंतुलनः यद्यपि जनसंख्या एवं खाद्य सामग्री दोनों में वृद्धि होती है, परंतु वृद्धि दर में असमानता होने के कारण दोनों के मध्य असंतुलन की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। चूंकि जनसंख्या में ज्यामितीय दर से वृद्धि होने के कारण गणितीय दर से बढ़ने वाली खाद्य सामग्री पीछे रह जाती है। माल्थस के अनुसार जनसंख्या एवं खाद्य सामग्री के मध्य असंतुलन अनेक कष्टकारी परिणामों को उत्पन्न करता है। आर्थिक समृद्धि तथा जीवन स्तर जनसंख्या वृद्धि के लिए उत्तरदायी हैं। इस संदर्भ में माल्थस का कथन है कि– **"प्रकृति की मेज सीमित अतिथियों के लिए ही लगी है। जो बिना बुलाए मेहमान होंगे, उन्हें अवश्य भूखा मरना होगा।"**

3.7 जनसंख्या नियंत्रण हेतु सुझाव

माल्थस ने जनसंख्या नियंत्रण हेतु दो प्रकार के अवरोधों का वर्णन किया है :

3.7.1 नैसर्गिक या प्राकृतिक अवरोध

यह अवरोध प्रकृति के द्वारा लगाए जाते हैं। इसमें विभिन्न संक्रामक महामारी, युद्ध, अकाल, भूकंप, बाढ़, भुखमरी, कुपोषण आदि शामिल है। प्राकृतिक अवरोध अत्यंत दुखद तथा कष्टकारी होते हैं। यद्यपि इस प्रक्रिया में मृत्यु दर में वृद्धि होने के कारण जनसंख्या तथा खाद्य आपूर्ति में संतुलन स्थापित हो जाता है, परंतु यह संतुलन अल्पकालिक तथा अस्थायी होता है। यह स्थिति चक्र की भांति चलती रहती है, जिसे कुछ विद्वानों ने 'माल्थुसियन चक्र' की संज्ञा दी है।

3.7.2 प्रतिबंधात्मक अवरोध

माल्थस ने मानवीय प्रयत्न को जनसंख्या नियंत्रण के दूसरे प्रतिबंध के रूप में चिन्हित किया है। उनका मत है कि प्राकृतिक प्रतिबंध मानव के लिए अत्यंत कष्टकारी हैं। अतः मनुष्य को प्रतिबंधात्मक अवरोधों के माध्यम से जनसंख्या पर नियंत्रण बनाए रखना चाहिए। प्रतिबंधात्मक अवरोध के अंतर्गत नैतिक प्रतिबंध तथा कृत्रिम साधनों के माध्यम से अवरोध को सम्मिलित किया जाता है। माल्थस ने जनसंख्या नियंत्रण कृत्रिम साधनों के स्थान पर नैतिक प्रतिबंध को ही उचित मानते हुए इसका समर्थन किया है। नैतिक प्रतिबंध के अंतर्गत संयम, ब्रम्हचर्य तथा विलंब विवाह जैसे उपायों को शामिल किया जाता है, जिसका प्रयोग मनुष्य अपने विवेक के आधार पर करता है। माल्थस के अनुसार नैतिक प्रतिबंध ही एक ऐसा तरीका है जिससे मानव जाति प्राकृतिक अवरोधों के कष्टकारी प्रभाव से बच सकती है। अतः माल्थस ने भविष्य पर गंभीरता से विचार करते हुए जनसंख्या वृद्धि को हतोत्साहित करने का सुझाव दिया।

3.8 सारांश

उपरोक्त आलोचनाओं से यह ज्ञात होता है कि माल्थस का जनसंख्या सिद्धांत उन्हीं देशों में अस्वीकृत कर दिया गया जहां की सामाजिक, आर्थिक पृष्ठभूमि को केंद्र में रखकर इसे विकसित किया गया था। यद्यपि माल्थस के जनसंख्या सिद्धांत में कुछ त्रुटियां अवश्य थी, परंतु इसके बावजूद इसकी प्रासंगिकता सदैव बनी रहेगी, इसका प्रमुख कारण यह है कि माल्थस के

सिद्धांत में वर्णित जनसंख्या वृद्धि के भयावह एवं कष्टकारी परिणामों को ध्यान में रखते हुए ही यूरोप के देश समय रहते सजग हो गए तथा जनसंख्या वृद्धि को रोकने तथा बढ़ी हुई जनसंख्या के निवारण के लिए विभिन्न तरीके अपनाना शुरू कर दिए परिणामस्वरुप वे अपने देश को अति जनसंख्या की समस्या से बचा सके।

3.9 संदर्भ ग्रंथ

1. Malthus, T. (1798). An Essay on the Principle of Population. London: Oxford University Press.
2. Carr Saunders, A. M. (1936). World Population: Past Growth and Present Trends. Oxford: Clarendon press.
3. Coale A. J. (1978). Population growth and economic development: the case of Mexico. Foreign affairs (Council on Foreign Relations), 56(2), 415–429.
4. Coale, A.J. and Hoover, E. (1958). Population and Economic Development in Low-income Countries. Princeton, NJ: Princeton University Press.
5. Thompson, Warren Simpson. & Lewis, David T. (1965). Population problems. New York: McGraw-Hill.
6. Glass, D. V. & Malthus, T. R. & Malthus, T. R. (1953). Introduction to Malthus. London: Watts
7. Plumb, J. H. 1. (1963). England in the eighteenth century. Harmondsworth, Middlesex, Eng.; Baltimore, Md., Penguin Books.
8. Hardin, Garrett. (1969). Population, evolution, and birth control : a collage of controversial ideas. San Francisco: W.H. Freeman
9. Brown, Ford K. (1926). The life of William Godwin. London : New York : J.M. Dent ; E.P. Dutton
10. Glass, D. V. & Malthus, T. R. & Malthus, T. R. (1953). Introduction to Malthus. London: Watts
11. Bogue, J. (1959). The Study of Population: An Inventory and Appraisal. Chicago: University of Chicago Press.
12. McCleary, G. F. (1953). The Malthusian population theory. London: Faber
13. Godwin, William. (1798). Enquiry concerning political justice, and its influence on morals and happiness. London: Printed for G.G. and J. Robinson.
14. Bairoch, P. (1988). Cities and economic development: from the dawn of history to the present. Chicago: the University of Chicago Press. J. Econ. Hist. 49, 1076–1078. Doi: 10.1017/ S0022050700010135
15. Boserup, Ester. (1965). The conditions of agricultural growth: the economics of agrarian change under population pressure. New York: Aldine Pub. Co.

3.10 बोध के प्रश्न

3.10.1 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. वर्तमान भारतीय परिस्थिति को दृष्टि में रखते हुए माल्थस के जनसंख्या सम्बन्धी सिद्धान्त का मूल्यांकन कीजिए।
2. माल्थस का जनसंख्या सम्बन्धी सिद्धान्त की विवेचना कीजिए और भारतीय संदर्भ में इसके औचित्य की विवेचना कीजिए।

3.10.2 लघु उत्तरीय प्रश्न

1. माल्थस के जनसंख्या सिद्धान्त पर निबंध लिखिए।
2. जनसंख्या के आर्थिक सिद्धान्तों पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
3. माल्थस के द्वारा प्रतिपादित जनसंख्या के सिद्धान्त का आलोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए।

3.10.3 वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. माल्थस के अनुसार जनसंख्या में वृद्धि अंकगणतीय गति जबकि संसाधनों में ज्यामितीय गति से वृद्धि होती है–

   (क) सत्य (ख) असत्य

2. माल्थस ने जनसंख्या नियंत्रण हेतु दो प्रकार के अवरोधों प्राकृतिक अवरोध तथा प्रतिबंधात्मक अवरोध का वर्णन किया है–

   (क) सत्य (ख) असत्य

3. गाडविन ने जनसंख्या एवं खाद्य सामग्री के मध्य संतुलन स्थापित करने में प्रकृति की भूमिका को महत्वपूर्ण माना है–

   (क) सत्य (ख) असत्य

4. माल्थस के जनसंख्या सिद्धांत के अनुसार महामारी प्राकृतिक आपदा एवं युद्ध इत्यादि किस अवरोध के अंतर्गत आते हैं–

   (क) प्राकृतिक अवरोध (ख) प्रतिबंधात्मक अवरोध

3.11 वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर

1. सत्य
2. सत्य
3. सत्य
4. प्राकृतिक अवरोध

3.12 पारिभाषिक शब्दावली

अंक गणितीय अनुपात : इसमें मनुष्य और थल के अनुपात को मुख्य आधार मानकर अंकगणितीय अनुपात निकाला जाता है।

जनसंख्या वृद्धि दर : इसका तात्पर्य किसी देश, प्रदेश अथवा क्षेत्र की बढ़ी हुई जनसंख्या की दर से है।

इकाई–4 : माल्थस के जनसंख्या सिद्धान्त की आलोचनाएं एवं नव–माल्थसवाद

इकाई की रूपरेखा

4.1 उद्देश्य

4.2 प्रस्तावना

4.3 माल्थस के जनसंख्या सिद्धांत का आलोचनात्मक परीक्षण

4.3.1 माल्थस की आधारभूत मान्यता अवास्तविक

4.3.2 कृषि में उत्पत्ति ह्रास नियम की मान्यता दोषपूर्ण

4.3.3 सिद्धांत का गणितीय स्वरूप अवास्तविक

4.3.4 जनसंख्या में प्रत्येक वृद्धि हानिकारक नहीं

4.3.5 माल्थस का जनसंख्या नियंत्रण संबंधी सुझाव अव्यवहारिक

4.4 नव–माल्थसवाद सिद्धांत की उत्पत्ति

4.5 नव–माल्थसवादी सिद्धांत का विकास

4.5.1 फ्रांस में नव.माल्थसवादी विचारधारा का आगमन

4.5.2 स्पेन में नव.माल्थसवाद

4.5.3 पुर्तगाल में नव.माल्थसवाद

4.5.4 इटली में नव.माल्थसवाद

4.5.5 भारत में नव.माल्थसवाद

4.6 नव–माल्थसवाद तथा पारिस्थितिकी विमर्श

4.7 सारांश

4.8 सन्दर्भ–ग्रन्थ

4.9 बोध के प्रश्न

4.9.1 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

4.9.2 लघु उत्तरीय प्रश्न

4.9.3 वस्तुनिष्ठ प्रश्न

4.10 वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर

4.11 पारिभाषिक शब्दावली

4.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप :

1. माल्थस के जनसंख्या सिद्धान्त के कुछ अव्यवहारिक तथ्यों से परिचित होंगे।
2. नव माल्थस्वादी सिद्धांत की उत्पत्ति एवं विकास को समझ पायेंगे तथा नव–माल्थसवाद से जुड़े पारिस्थितिकी विमर्श से सबंधित जानकारी प्राप्त कर पायेंगे।

4.2 प्रस्तावना

18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में थामस आर. माल्थस द्वारा प्रतिपादित जनसंख्या वृद्धि की एक वैज्ञानिक व्याख्या प्रस्तुत की गई। माल्थस के अनुसार जनसंख्या में वृद्धि गुणोत्तर अनुपात में होती है जबकि खाद्य आपूर्ति अंकगणितीय अनुपात में बढ़ता है। अतः जनसंख्या में निरंतर वृद्धि तथा खाद्य–आपूर्ति में असंतुलन होने से अनेक समस्याएं उत्पन्न होती है। जनसंख्या वृद्धि एवं खाद्य आपूर्ति के मध्य असंतुलन से उत्पन्न समस्याओं को समाप्त करने के लिए माल्थस ने सुझाव भी प्रस्तुत किया है। उनके अनुसार जब जनसंख्या अधिक हो जाएगी और संसाधन सीमित हो जाएंगे तो प्रकृति स्वयं इसे प्राकृतिक प्रकोप, अकाल, भुखमरी, बाढ़, एवं महामारी इत्यादि की सहायता से नियंत्रित कर लेगी। मानव की प्रजनन शक्ति की स्वाभाविक प्रवृत्ति के कारण जनसंख्या पुनः खाद्य सामग्री से अधिक हो जाएगी अतः यह क्रम निरंतर चलता रहेगा। प्रकृति द्वारा जनसंख्या वृद्धि में नियंत्रण को ही नैसर्गिक प्रतिबंध कहा जाता है। इसके अतिरिक्त माल्थस ने जनसंख्या नियंत्रण से संबंधित एक अन्य उपाय की चर्चा की है जिसे निवारक प्रतिबंध के नाम से जाना जाता है। निवारक प्रतिबंध के अंतर्गत उन उपायों को सम्मिलित किया जाता है जिसे मानव स्वयं अपनाकर जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित कर सकता है, जैसे– संयमित जीवन, विवाह ना करना तथा विलंब विवाह आदि को अपनाकर जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित किया जा सकता है।

आधुनिक समाज में माल्थस के जनसंख्या सिद्धांत की आलोचना की जाने लगी, तथा यह स्वीकार किया जाने लगा कि गर्भनिरोधक उपायों के द्वारा जनसंख्या की असीम वृद्धि को रोका जा सकता है। साथ ही कृषि में वैज्ञानिक एवं तकनीकी साधनों के प्रयोग द्वारा खाद्य आपूर्ति एवं जनसंख्या में होने वाले असंतुलन को भी कम किया जा सकता है।

4.3 माल्थस के जनसंख्या सिद्धांत का आलोचनात्मक परीक्षण

माल्थस का जनसंख्या सिद्धांत एक विश्वविख्यात सिद्धांत है। एक तरफ जहां कोसा, मार्शल, एली, टॉशिंग, कार्वर, पैटन, प्राइस, वुल्फ, क्लार्क तथा वाकर आदि विद्वानों का उन्हें समर्थन प्राप्त हुआ वहीं दूसरी तरफ गाडविन, मोंबार्ट, ओपनहीम, निकोल्सन, ग्रे तथा कैनन आदि जैसे विद्वानों की कटु आलोचनाओं का शिकार होना पड़ा। माल्थस का जनसंख्या संबंधी सिद्धांत यूरोप में जनसंख्या वृद्धि की प्रवृत्तियों और वहां खाद्यान्न संकट के संदर्भ में तत्कालीन परिस्थितियों में बहुत हद तक लागू होता था, परंतु यूरोप में तीव्र गति से बढ़ती हुई जनसंख्या की तुलना में होने वाले खाद्यान्न में कमी की समस्या को संसाधन विकास, कृषि विकास नवीन कृषि भूमि उपयोग, कृषि में नवीन तकनीकी का प्रयोग इत्यादि माध्यमों के द्वारा समाधान कर लिया गया और यह देखा गया कि जनसंख्या की तुलना में खाद्यान्न उपलब्धता और संसाधनों का विकास अधिक तीव्रता से हुआ है। इस प्रकार यूरोपीय देशों में ही माल्थस के सिद्धांत के

अनुरूप जनसंख्या एवं संसाधन के अनुपात की प्रवृतियां नहीं पाई गई। विश्व के अन्य देशों में भी माल्थस के सिद्धांत के अनुरूप प्रवित्तियाँ नहीं मिलती हैं। अतः माल्थस के सिद्धांत की आलोचना की जाने लगी जिसे निम्न बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता है :

4.3.1 माल्थस की आधारभूत मान्यता अवास्तविक

माल्थस ने लोगों की काम–भावना तथा संतानोत्पत्ति की इच्छा को एक ही माना है जो कि पूर्ण रूप से अवास्तविक है । जीड एवं रिस्ट के अनुसार–" कामवासना जीवधारियों की एक प्राकृतिक इच्छा है जो सभी जीवों में पाई जाती है, जबकि संतान पैदा करने की इच्छा का उदय विभिन्न स्थान, समय एवं सामाजिक,आर्थिक तथा धार्मिक परिस्थितियों पर निर्भर करता है।" मनुष्य की काम–भावना को यथा–स्थिर मानना भी उचित नहीं है, क्योंकि आयु में वृद्धि, जीवन–स्तर में सुधारात्मक परिवर्तन होने तथा मनोरंजन के साधन बढ़ जाने से कामेच्छा में घटने की प्रवृत्ति देखी जाती है। वहीं संतानोत्पत्ति इच्छा सामाजिक, धार्मिक तथा आर्थिक कारणों से प्रभावित होती है तथा मनुष्य उसे कृत्रिम उपायों से रोक सकता है। अतः आर्थिक संपन्नता तथा संतानोत्पत्ति के बीच सकारात्मक संबंध नहीं है।

4.3.2 कृषि में उत्पत्ति ह्रास नियम की मान्यता दोषपूर्ण

माल्थस के अनुसार कृषि में उत्पत्ति ह्रास का नियम लागू होने के कारण खाद्यान्न में कमी आ जाती है, परंतु विद्वानों की मान्यता है कि माल्थस औद्योगिक क्रांति के परिणामों का सही ढंग से अवलोकन करने में असफल रहे। उन्होंने इस तथ्य की अवहेलना की कि वैज्ञानिक आविष्कारों के माध्यम से, रसायनिक खाद, उन्नत बीज, कीटनाशक इत्यादि के प्रयोग से कृषि में उत्पत्ति ह्रास के नियम को स्थगित किया जा सकता है।

4.3.3 सिद्धांत का गणितीय स्वरूप अवास्तविक

माल्थस के सिद्धांत में प्रयुक्त गणितीय स्वरूप की विद्वानों द्वारा आलोचना की गई है। विश्व के किसी भी देश में जनसंख्या में ज्यामितीय अनुपात में तथा संसाधन में अंकगणितीय अनुपात में वृद्धि नहीं देखी गई, और ना ही 25 वर्ष में किसी देश की जनसंख्या दोगुनी हुई है। जनसंख्या वृद्धि की यह प्रवृत्ति ना तो यूरोपीय देशों तथा जनसंख्या विस्फोट से प्रभावित चीन एवं भारत जैसे विकासशील देशों में भी नहीं पाई गई है अतः माल्थस के सिद्धांत की जनसंख्या एवं संसाधन वृद्धि संबंधी अवधारणा को अस्वीकृत कर दिया गया।

4.3.4 जनसंख्या में प्रत्येक वृद्धि हानिकारक नहीं

माल्थस जनसंख्या में प्रत्येक वृद्धि को हानिकारक समझते थे, परंतु उनका यह दृ ष्टिकोण उचित नहीं है। यदि किसी देश की जनसंख्या उस देश के प्राकृतिक साधनों की अपेक्षा कम है तो जनसंख्या में वृद्धि लाभदायक होगी। ऐसी स्थिति में प्राकृतिक संसाधनों का भली–भांति विदोहन करके राष्ट्रीय आय एवं प्रति व्यक्ति आय को बढ़ाया जा सकता है। अतः कुछ विशिष्ट स्थिति में जनसंख्या वृद्धि राष्ट्रहित में होती है।

4.3.5 माल्थस का जनसंख्या नियंत्रण संबंधी सुझाव अव्यवहारिक

माल्थस ने जनसंख्या नियंत्रण हेतु जिस आत्म–संयम, नैतिकता एवं संयमित जीवन व्यतीत करने का सुझाव दिया है, वह व्यवहारिक नहीं है। वहीं उनके द्वारा बताई गई प्राकृतिक अवरोध के नियम को जनसंख्या विस्फोट वाले देश में भी अवास्तविक तथा अव्यवहारिक माना

गया। अतः माल्थस का जनसंख्या सिद्धांत उन्हीं देशों में अस्वीकृत हो गया जहां की सामाजिक, आर्थिक एवं भौगोलिक परिस्थितियों को ध्यान में रखकर बनाया गया था।

यद्यपि वैश्विक स्तर पर एक समय के बाद माल्थस के जनसंख्या सिद्धांत को अस्वीकृत कर दिया गया था, फिर भी समय–समय पर यह सिद्धांत नए रूप में सामने आता रहा और इसी कारण इसकी प्रासंगिकता बनी रही, इसमें नव–माल्थसवादी सिद्धांत एवं विकास की सीमा की अवधारणा का प्रमुख योगदान है।

4.4 नव–माल्थसवाद सिद्धांत की उत्पत्ति

नव–माल्थसवाद शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम 1877 में डॉ सैमुअल वान हाउटन द्वारा किया गया था। नव–माल्थसवाद केवल जनसंख्या नियंत्रण तक ही सीमित नहीं था, अपितु यह मानव आचरण एवं व्यवहार पर जनसंख्या के प्रभावों का आकलन करने हेतु एक विशिष्ट अंतर्दृष्टि एवं परिप्रेक्ष्य प्रदान करता है।

नव–माल्थसवाद माल्थस के अनुयायियों द्वारा चलाया गया वह आंदोलन है जो परिवार नियोजन तथा संतति निग्रह के कृत्रिम उपाय अपनाकर जनसंख्या को सीमित रखने पर बल देता है। नव–माल्थसवादी, रति आनंद को नष्ट किए बिना गर्भनिरोध के कृत्रिम उपायों तथा गर्भपात एवं ऑपरेशन आदि के भी समर्थक हैं। उनके अनुसार किसी भी शारीरिक, रसायनिक तथा यांत्रिक ढंग से किसी स्वस्थ स्त्री पुरुष के समागम पर भी गर्भधारण में बाधा पहुंचाना ही संतति निग्रह है।

इस प्रकार माल्थस के उत्तराधिकारी कहे जाने वाले यह विचारक माल्थस द्वारा बताई गई जनसंख्या वृद्धि संबंधी संभावनाओं में तो विश्वास करते थे, परंतु वह माल्थस के विपरीत गर्भनिरोध के कृत्रिम साधनों के समर्थक है। इस तरह के मतावलंबियों की धारणा थी कि कामेच्छा पर किसी प्रकार का अन्यथा प्रभाव पड़े बिना यदि संतान उत्पादन कम हो सके तो संतति निग्रह की कृत्रिम विधियों का खुलकर प्रयोग किया जाना चाहिए। वर्तमान समय में नव–माल्थसवादी विचारधारा को विभिन्न डॉक्टर, समाजशास्त्री, राजनीति विशेषज्ञ, अर्थशास्त्री एवं जागरूक चिंतकों का भरपूर समर्थन प्राप्त है।

4.5 नव–माल्थसवादी सिद्धांत का विकास

1900 के आरंभ में नव–माल्थसवाद पश्चिमी और मध्य यूरोप के साथ–साथ संयुक्त राज्य अमेरिका में भी मजबूती के साथ अपनी जगह बना चुका था। संयुक्त राज्य अमेरिका में गर्भनिरोधक को सामाजिक और कानूनी स्वीकृति प्रदान कराने में मार्ग्रेट सेंगर की भूमिका अविस्मरणीय है। उन्होंने 'वुमेन रिबेल' नामक पत्रिका का प्रकाशन किया जो समाजवाद, नारीवाद और गर्भनिरोधक का समर्थन करता था। उन पर कॉमस्टॉक अधिनियम 1873] जो कि एक गर्भनिरोधक विरोधी अधिनियम था, का उल्लंघन करने का आरोप लगाया गया था। सेंगर ने नव– माल्थसवादी विचारधारा के राजनीतिक एवं कट्टरपंथी रूप धारण करने के कारण गर्भ नियंत्रण के स्थान पर "परिवार नियोजन" शब्द प्रयोग किए जाने का सुझाव दिया।

विभिन्न देशों में नव माल्थसवादी विचारधारा का उद्‌भव तथा विकास अलगदृअलग परिस्थितियों एवं वैचारिक परिदृश्य में हुआ। जिसे निम्नलिखित रूप में समझा जा सकता है :

4.5.1 फ्रांस में नव–माल्थसवादी विचारधारा का आगमन

सन 1900 के प्रारंभिक वर्षो में फ्रांस में नव–माल्थसवादी विचाराधारा का आगमन हुआ। फ्रांसीसी नव–माल्थसवादी महिला अधिकार तथा ऐच्छिक प्रजनन के अधिकार के संबंध में महिलाओं में जागरूकता फैलाने के लिए समर्पित था। इसके साथ ही वह सर्वहारा वर्ग को सीमित प्रजनन का सुझाव देता है, जिसमें वे शोषण एवं गुलामी के खिलाफ अपने अधिकार के लिए जागरूक हो सके। फ्रांस में नव–माल्थसवाद ना केवल शहरी क्षेत्र में बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में भी उतनी ही तत्परता के साथ लोकप्रिय हुआ।

4.5.2 स्पेन में नव–माल्थसवाद

सन् 1904 में लुईस बल्फी की अध्यक्षता में बर्सिलोना में "ह्यूमन रीजेनरेशन लीग" की स्पेनिश शाखा का गठन किया गया था। यह लीग मातृत्व की स्वतंत्रता का पक्षधर है तथा यह दावा करता है कि प्राकृतिक पर्यावरण की सीमितता के कारण असीमित प्रजनन वृद्धि संभव नहीं है। 1904 से 1914 के मध्य स्पेन में नव–माल्थसवाद के प्रसार में 'सलूद वाई फ्रुएर्जा' नामक पत्रिका के प्रकाशन ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसने औपनिवेशिक सैन्यवाद, विदेशी प्रवासन तथा यौन दासता से बचने के लिए सर्वहारा वर्ग की महिलाओं को सीमित प्रजनन का सुझाव दिया।

4.5.3 पुर्तगाल में नव–माल्थसवाद

स्पेन की तर्ज पर पुर्तगाल में भी सन् 1900 के आसपास मजदूर वर्ग के जन्म दर को सीमित करने का विचार किया जाने लगा। स्पेन के विचारक लुईस बल्फी के प्रकाशनों के पुर्तगाली भाषा में अनुवाद किए जाने के पश्चात पुर्तगाल में भी नव–माल्थसवादी विचारधारा का तीव्र गति से प्रसार हुआ। यद्यपि स्पेन की भांति पुर्तगाल में नव–माल्थसवादी विचारधारा पर केंद्रित कोई विशिष्ट पत्रिका उपलब्ध नहीं थी, परंतु कुछ पत्रिकाएँ जैसे "पॉज ए लिबरेड" तथा "द एगिटेटर" जनसंख्या नियंत्रण तथा गर्भनिरोधक उत्पादों के संबंध में जानकारी प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 1920 से 1924 की अवधि में पुर्तगाली जन्मदर में 18 प्रतिशत की कमी का अनुमान लगाया गया था। सन् 1930 के दशक के बाद लिस्बन में जन्मदर बेल्जियम, डेनमार्क तथा फिनलैंड के स्तर तक कम हो गया।

4.5.4 इटली में नव–माल्थसवाद

बीसवीं सदी के अंत में इटली में निर्धन वर्गों के मध्य नव–माल्थसवादी विचारधारा का प्रचार होने लगा था। इसका उदय उच्च शिशु मृत्यु दर, पलायन तथा कार्य की दयनीय स्थिति के राजनीतिक प्रतिक्रिया स्वरूप हुआ। सन 1910 में नव–माल्थसवादी विचारको ने फ्लोरेंस में एक राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया तथा निम्न वर्गों को स्वेच्छा से अपने प्रजनन को प्रतिबंधित करने के अधिकार के विषय में जागरूक किया। सन 1914 से 1918 की युद्धकालीन अवधि के बावजूद इटली में नव–माल्थसवाद एक संगठित आंदोलन के रूप में 1922 तक कायम रहा ।

4.5.5 भारत में नव–माल्थसवाद

भारत में जनसंख्या नियंत्रण के लिए महिला नसबंदी तथा इंदिरा गांधी की सरकार द्वारा वृहद पैमाने पर चलाई गई पुरुष नसबंदी पर बहुत अधिक निर्भरता रही है। विभिन्न अनुसंधान इस तथ्य की पुष्टि करते हैं कि भारत में घटती प्रजनन दर के लिए उत्तरदायी कारकों में से कन्या भ्रूण हत्या भी एक महत्वपूर्ण कारक है। अतः भारत में जनसंख्या नीति केवल परिवार

नियोजन तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह महिलाओं को सामाजिक संरचना में होने वाले परिवर्तन तथा उन्हें सामाजिक एवं आर्थिक बाधाओं से मुक्त वैवाहिक एवं प्रजनन विकल्प का चयन करने की स्वतंत्रता देता है।

भारत में पर्यावरणविदों के अनुसार नव–माल्थसवाद जनसंख्या की अधिकता को दुर्लभ संसाधनों पर एकमात्र बोझ के रूप में देखता है। हालांकि नव– माल्थसवाद जनसंख्या घनत्व के साथ–साथ प्रति व्यक्ति खपत एवं कार्यरत जनसंख्या पर भी ध्यान केंद्रित करता है। तीन व्यक्ति प्रति हेक्टेयर की जनसंख्या घनत्व के साथ भारत का पारिस्थिति की पदचिह्न पहले से ही उसके क्षेत्रफल की तुलना में अधिक है। इसके अतिरिक्त जनसंख्या वृद्धि के लिए आर्थिक विकास एवं उत्पादन में तीव्र वृद्धि भी उत्तरदायी है।

4.6 नव–माल्थसवाद तथा पारिस्थितिकी विमर्श

बीसवीं सदी के प्रारंभ में आसवर्ग ने माल्थस के जनसंख्या संबंधी सिद्धांत एवं विचारधारा को विश्व की बढ़ती हुई जनसंख्या के संदर्भ में समझाने का प्रयास किया। जिस प्रकार विश्व की जनसंख्या में तीव्र गति से वृद्धि हो रही है, ऐसे में संसाधनों के ऊपर दबाव तथा संसाधनों के अभाव की समस्या उत्पन्न हो गई है। जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण नहीं किया गया तो वैश्विक स्तर पर जनसंख्या के समक्ष संकट की स्थिति उत्पन्न हो जाएगी। 1970 के दशक में ऊर्जा संकट और कई विकासशील एवं अल्प विकसित देशों के आर्थिक स्थिति का कमजोर होना नव–माल्थसवाद को और भी अधिक प्रमाणित करता है। क्लब ऑफ रोम के वैज्ञानिकों ने "द लिमिट्स टू ग्रोथ" नामक पुस्तक लिखी जो एक विचारधारा के रूप में स्थापित हुआ। इसमें विश्व की बढ़ती हुई जनसंख्या को एक चुनौती माना गया और इसे भविष्य के लिए एक गंभीर समस्या के रूप में देखा गया। यह सिद्धांत पृथ्वी की तुलना एक ऐसे अंतरिक्ष यान से करता है जिस पर सीमित मात्रा में ही संसाधन उपलब्ध है, और यदि इस पर आवश्यकता से अधिक लोग सवार हो जाएंगे तो उपलब्ध संसाधन कम समय के अंदर ही समाप्त हो जाएंगे ऐसी स्थिति से बचने के लिए जनसंख्या पर नियंत्रण अत्यंत आवश्यक है।

4.7 सारांश

माल्थस के जनसंख्या सिद्धांत जनसंख्या वृद्धि को कम करने तथा जनसंख्या वृद्धि एवं खाद्य असंतुलन से उत्पन्न समस्याओं को समाप्त करने सम्बन्धी सुझाव अनेक देशों में अप्रासंगिक साबित हुए , जिसके कारण विभिन्न देशों में नव–माल्थसवादी विचारधारा का सूत्रपात एक नवीन आंदोलन के रूप में हुआ। विभिन्न देशों में यह आंदोलन अलग–अलग सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक पृष्ठभूमि के साथ विकसित हुआ। यह एक ऐसा वैचारिक आंदोलन था जो केवल सीमित प्रजनन पर ही बल नहीं देता है बल्कि गर्भ निरोधक के कृत्रिम साधनों का भी प्रबल समर्थन करता है। नव–माल्थसवाद ने महिलाओं से संबंधित उन सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक बंधनों को भी तोड़ा, जो उनकी स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता में बाधक थे। इस आंदोलन ने वर्षों से दासता व अधिकारविहीन जीवन जी रहे वंचित वर्गों को भी जागरूक करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। नव–माल्थसवादी विचारधारा को वैश्विक स्तर पर वर्तमान परिस्थितियों के अनुरूप वास्तविक तथा व्यावहारिक मानते हुए इसे सामाजिक, राजनीतिक विचारकों, चिकित्सकों एवं अनेक बुद्धिजीवियों का व्यापक समर्थन प्राप्त हुआ।

4.8 सन्दर्भ–ग्रन्थ

1. Mohan 1994. An imagined reality. Malthusianism, Neo-Malthusianism and Population myth. Ecological and Political Weekly: 5, 2؛9 January.
2. Krishnaraj, Maithreyi et al., 1998. Gender, Population and Development, Oxford U.P., Delhi.
3. D'Souza, Rohan, 2003. Environmental Discourse and Environmental Politics, in Smitu Kothari
4. Imtiaz Ahmad and Helmut Reifeld, The Value of Nature. Ecological Politics in India. Konrad Adenauer Stiftung, Rainbow Publishers, Delhi.
5. Ehrlich, P. R., 1968. The population bomb. Ballantine. New York.
6. Gordon, Linda, 1976. Woman's body, woman's right: a social history of birth control in America, Grossman. New York.
7. Livi-Bacci, M. 1972. A Century of Portuguese Fertility. Princeton.
8. Wrigley, E.A. 1969. Population and History Weidenfeld and Nicolson. London.
9. Sauvy, Alfred, 1960. General Theory of Population. Basic Books. New York.
10. Silliman, J. and Y. King, eds. 1999. Dangerous intersections: feminist perspectives on
11. Population, environment and development. South End Press, Cambridge MA.

4.9 बोध के प्रश्न

4.9.1 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. माल्थस के जनसंख्या सिद्धान्त का आलोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए।
2. नव माल्थसवादी सिद्धान्त के विकास के चरणों की विवेचना कीजिए।

4.9.2 लघु उत्तरीय प्रश्न

1. जनसंख्या सिद्धान्त से क्या समझते हैं?
2. नव माल्थसवादी सिद्धान्त क्या है?
3. कृषि में उत्पत्ति ह्रास नियम क्या है?

4.9.3 वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. नव–माल्थसवाद शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम डॉ सैमुअल वान हाउटन द्वारा किया गया था:

   (क) सत्य (ख) असत्य

2. नव–माल्थसवाद की उत्पत्ति माल्थस के जनसंख्या सिद्धांत के प्रतिक्रिया स्वरूप हुई :

(क) सत्य (ख) असत्य

3. विभिन्न देशों में नव–माल्थसवादी विचारधारा का उद्भव तथा विकास अलगदृ अलग परिस्थितियों एवं वैचारिक परिदृश्य में हुआ :

(क) सत्य (ख) असत्य

4. नव–माल्थसवाद परिवार नियोजन तथा संतति निग्रह के कृत्रिम उपाय अपनाकर जनसंख्या को सीमित रखने पर बल देता है

(क) सत्य (ख) असत्य

5. नव–माल्थसवाद की अवधारणा पारिस्थितिकी विमर्श के साथ जुड़ी हुई है :

(क) सत्य (ख) असत्य

4.10 वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर

1. क
2. क
3. क
4. क
5. क

4.11 पारिभाषिक शब्दावली

प्राकृतिक प्रकोप– प्राकृतिक के कारण होने वाली भयावह घटना या रोग।

अकाल– किसी क्षेत्र में लंबे समय तक खाद्य संकट जो कुपोषण, भुखमरी एवं मृत्यु का कारण होता है।

भूखमरी– भोजन की गंभीर कमी से शरीर के अंगों में प्रभावित या मृत्यु होना।

बाढ़– पानी का तीव्र बहाव या उफान जिससे बड़े स्तर पर जान माल की खतरा हो।

महामारी– जो बीमारी या रोग अचानक वृद्धि से आबादी के एक महत्वपूर्ण हिस्से को प्रभावित करता है।

विलंब विवाह– 30 वर्ष के बाद विवाह करना। (समाज के मानकों से ज्यादा देर में विवाह करना)

शिशु मृत्युदर– प्रति एक हजार जन्मे बच्चों में से एक वर्ष से कम आयु के बच्चों की मृत्यु।

पलायन– एक स्थान से दूसरे स्थान में गमन करना।

इकाई–5: माईकेल थामस सेडलर का घनत्व एवं संतनोत्पादकता सिद्धान्त एवं डबल डे का आहार सिद्धान्त

इकाई की रूपरेखा

5.1 उद्देश्य

5.2 प्रस्तावना

5.3 माइकल थामस सैडलर का घनत्व एवं सन्तानोत्पादकता सिद्धान्त

5.4 सैडलर के सिद्धान्त के मुख्य तत्व

5.5 सैडलर के सिद्धान्त की आलोचना

5.6 डबलडे का आहार सिद्धान्त

5.7 आहार सिद्धान्त की आलोचना

5.8 सारांश

5.9 सन्दर्भ ग्रन्थ

5.10 बोध प्रश्न

5.10.1 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

5.10.2 लघु उत्तरीय प्रश्न

5.10.3 वस्तुनिष्ठ प्रश्न

5.10.4 वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर

5.11 पारिभाषिक शब्दावली

5.1 उद्देश्य

इस इकाई का उद्देश्य आपको निम्न बिंदुओं को समझने में मदद करना है :

1. जनसंख्या के जैविकीय या नैसर्गिक सिद्धान्त से आशय
2. माइकल थामस सैडलर का घनत्व एवं सन्तानोत्पादकता सिद्धान्त का अर्थ
3. सैडलर के सिद्धान्त के मुख्य तत्वों का परिचय
4. सैडलर के सिद्धान्त के मुख्य तत्वों का परिचय
5. सैडलर के सिद्धान्त की आलोचना के प्रमुख बिन्दु

6. डबलडे का आहार सिद्धान्त की विशेषताएँ

7. डबलडे के आहार सिद्धान्त की आलोचना के प्रमुख बिन्दु

5.2 प्रस्तावना

यह सर्वविदित है कि मनुष्य एक जिज्ञासु जीव है। प्राचीन काल से ही वह अपने समाज को बेहतर बनाने के लिए चिन्तन मनन करता रहा है और उसी क्रम में जनसंख्या के प्रति भी मनुष्य की जिज्ञासा उसके आविर्भाव के समय से ही रही है। आर्थिक विकास की ओर तीव्रता से उन्मुख वर्तमान गतिशील संसार के समस्त देश अपने देश में उपलब्ध संसाधनों का यथासम्भव अनुकूलतम उपयोग कर मानव संसाधन के विकास के प्रति जागरूक हैं और अपने देश में उपलब्ध जनसंख्या के विषय में गुणात्मक एवं संख्यात्मक दृष्टिकोण से अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करना चाहते है।

जनसंख्या के नैसर्गिक या जैविकीय सिद्धान्तों के अन्तर्गत उन विचारों का अध्ययन किया जाता है जो प्रकृति प्रदत्त गुणों अथवा जैविकीय अवधारणाओं से सम्बद्ध हैं। इनमे थॉमस सैडलर का घनत्व एवं सन्तानोत्पादकता नियम, थॉमस डबलडे का आहार सिद्धान्त, रेमण्ड पर्ल एवं रीड का लोजिस्टिक कर्व सिद्धान्त, गिनी का जैविक अवस्था नियम, हर्बर्ट स्पेंसर का प्रजनन फलन कास्त्रो का प्रोटीन उपभोग सिद्धान्त एवं कूजेन्सकी का जैविक सिद्धान्त शामिल हैं । इन सिद्धान्तों के अन्तर्गत यह संकेत दिया गया है कि मनुष्य का जन्म जीवन मरण उसी प्रकार होता है जैसा कि पेड़–पौधों एवं अन्य जीव–जन्तुओं का होता है। मानव में भी अन्य जीवों की तरह खाना, सोना, संभोग, गर्भाधान, भय, जन्म एवं मृत्यु आदि प्रकृति प्रदत्त मूल प्रवृत्तियाँ विद्यमान हैं। इस अध्याय में हम थॉमस सैडलर का घनत्व एवं संतनोत्पादकता नियम, थॉमस डबलडे का आहार सिद्धान्त को समझने का प्रयास करेंगे।

5.3 माइकल थामस सैडलर का घनत्व एवं सन्तानोत्पादकता सिद्धान्त

उद्भव एवं विकास

जनसंख्या सम्बन्धी सिद्धान्तों में माल्थस का सिद्धान्त एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। उनके जनसंख्या सम्बन्धी विचारों ने न केवल समकालीन विद्वानों को अपितु आधुनिक विद्वानों को भी प्रभावित किया है। अनेक सिद्धान्तों को प्रतिपादन में भी माल्थस के जनसंख्या सम्बन्धी विचारों को मूलभूत मान्यता के रूप में अपनाया गया है। माल्थस का विचार उस समय आया जब यूरोप में औद्योगिक क्रांति का आभास मात्र था तथा इंग्लैंड युद्ध में लगा हुआ था। मनुष्य की प्राथमिक आवश्यकता भोजन की होती है अर्थात खाद्यान्न की मांग पहले होती है। इसलिए माल्थस ने जनसंख्या वृद्धि दर तथा खाद्य पदार्थ की वृद्धि दर को आधार बनाकर अपना सिद्धान्त दिया। उनके अनुसार जनसंख्या की वृद्धि ज्यामितीय गति से होती है। वस्तुतः उनका ऐसा कहना जनसंख्या की तीव्र वृद्धि दर को इंगित करना था। उस समय कृषि विज्ञान का उतना विकास नहीं हुआ था तथा कृषि उत्पादन दर काफी कम ही थी।

एक तरह यदि देखा जाय तो माल्थस का सिद्धान्त भी एक तरह से नैसर्गिक सिद्धान्त ही है। उसके अनुसार निर्वाह साधनों की अपेक्षा जनसंख्या का अधिक होना स्त्री–पुरुषों की कामुकता का परिणाम है। कामेच्छा मानव की मूल प्रवृत्ति है। खाद्यान्न की उत्पत्ति एक प्राकृतिक प्रक्रिया है। कामेच्छा नैसर्गिक गुण है, अतः इससे सम्बन्धित सुख–दुःख भी मनुष्य के लिए अवश्यम्भावी है जब तक कि निरोधक उपायों को अपनाया नहीं जाता। माल्थस का विचार है

कि इन उपायों का अपनाना सहज नहीं है। यदि जनसंख्या और निर्वाह के साधनों के मध्य सन्तुलन बनाए रखने की बात प्रकृति पर छोड़ दी जाय तो निरोधक उपायों की आवश्यकता नहीं पड़ेगी।

जनसंख्या में रेखागणितीय अनुपात से वृद्धि के फलस्वरूप किसी देश की जनसंख्या लगभग पच्चीस वर्षों में दोगुनी हो जाने का माल्थस ने अनुमान प्रस्तुत किया था और इससे चिन्तित होकर जनसंख्या समस्या के सम्बन्ध में निराशावादी दृष्टिकोण प्रस्तुत किया वहीं माइकल थामस सैडलर ने इसी सन्दर्भ में आशावादी विचार प्रस्तुत किए। आइए हम माइकल थामस सैडलर के विचारों को समझने का प्रयास करते हैं।

माइकल थामस सैडलर माल्थस के समकालीन ब्रिटिश समाज सुधारक एवं चिंतक थे जिन्होंने माल्थस के समय में ही 1830 में एक पुस्तक की रचना की जिसका शीर्षक था 'जनसंख्या का नियम' (*The Law of Population*)। दो खण्डों में प्रकाशित इस पुस्तक में अनेक तालिकाओं के साथ 1300 पृष्ठ थे जिसके दो–तिहाई हिस्सों में माल्थस के विचारों की आलोचना की गयी है। उन्होंने माल्थस को साहित्यिक नकलची (Plagiarist) तथा बेईमान (Dishonest) तक कहा और बताया कि माल्थस द्वारा व्यक्त किया गया "मनुष्य की उच्च सन्तानोत्पादन क्षमता" (high fecundity) तथा जनसंख्या की प्रत्येक 15–25 वर्ष में दुगनी होने की प्रवृत्ति का विचार उनका मौलिक नहीं था। ये विचार तो **टाउनसेण्ड** (Townsend) ने पहले ही व्यक्त कर दिया था जिसे माल्थस ने ग्रहण कर बाद में अपने विचार के रूप में प्रस्तुत किया।

5.4 सैडलर के सिद्धान्त के मुख्य तत्व

सैडलर के सिद्धान्त के मुख्य तत्व निम्नलिखित हैं –

1. जनसंख्या घनत्व और उर्वरता में विपरीत सम्बन्ध

सैडलर का विचार था कि जनसंख्या वृद्धि का नैसर्गिक सिद्धान्त माल्थस की धारणा के बिल्कुल विपरीत है। उनके अनुसार, "मानव की प्रजनन शक्ति उसके घनत्व का प्रति–लोमानुपाती होती है।" (The fecundity of human beings is in the inverse ratio of the condensation of their numbers)। इस तरह सैडलर की धारणा थी कि मनुष्य की संख्या वृद्धि की प्रवृत्ति जनसंख्या का घनत्व बढ़ने के साथ–साथ घटती जाती है और अन्य बातों के समान रहने पर, उसकी वृद्धि वहाँ रुक जाती है जहाँ वह अधिकतम सुख भोगता है। उन्हीं के शब्दों में, "मनुष्यों की प्रजनन शक्ति, अन्य बातों के समान रहने पर उसकी संख्या की सघनता से विलोम रूप से सम्बन्धित है तथा प्रचलित माल्थस के विचारों से प्रत्यक्ष रूप से विपरीत दिशा में अग्रसर होती है। थॉमप्सन एवं लुईस ने अपनी पुस्तक "द स्टडी ऑफ पापूलेशन" में सैडलर को उद्धृत करते हुए लिखा है कि (Fecundity) सन्तानोत्पादन क्षमता में परिवर्तन, दीनहीन दशा (wretchedness), और दुःखों (misery) से नहीं बल्कि आनन्द सम्पन्नता एवं खुशहाली से प्रभावित होती है।" (The fecundity of human beings is, caeteris paribus, in he inverse ratio of the condensation of their numbers; and still in direct contradiction to the theory now maintained (Malthusian Theory). The variation is that the fecundity is not effectuated by the wretchedness and misery but by the happiness and prosperity of the species) दूसरे शब्दों में, सैडलर का मत था कि सन्तानोत्पादन शक्ति दुःखों, कष्टों एवं विपत्तियों से न प्रभावित होकर मनुष्य की सुख–सुविधा एवं समृद्धि से प्रभावित होती है। जैसे–जैसे किसी स्थान या देश में जनसंख्या की सघनता बढ़ती जाती है वैसे–वैसे वहाँ की

प्रजनन दर में काफी कमी आती जाती है और सघनता घटने से बढ़ती है।

2. आशावादी दृष्टिकोण

माल्थस के निराशावादी दृष्टिकोण के विपरीत, सैडलर का सिद्धान्त आशावादी था। वह इस बात को मानने को तैयार नहीं थे कि जनसंख्या 'ज्यामितीय अनुपात' में बढ़ती है। उनका मत था कि यदि जनसंख्या बढ़ेगी तो जनसंख्या की सघनता बढ़ेगी और जन घनत्व बढ़ने से प्रजनन–दर गिर जाएगी क्योंकि ऐसी स्थिति में प्रजननशक्ति कम हो जाती है।

3. उर्वरता एवं खाद्य सामग्री में प्रत्यक्ष सम्बन्ध

सैडलर इस दृष्टि से भी आशावादी थे कि वे इस बात से भयभीत नहीं थे कि जनसंख्या अप्रत्याशित ढंग से बढ़ती जाती है। उनका विश्वास था कि जनसंख्या के बढ़ने पर कृषि में उचित विकास कर खाद्यान्नों में वृद्धि की जा सकती है। इस तरह, जहाँ माल्थस का विचार था कि जनसंख्या वर्तमान खाद्य सामग्री की मात्रा तक सीमित रहती है वहीं सैडलर का विश्वास था कि मनुष्यों की प्रजनन दर बढ़ेगी तो वे अपने लिए अतिरिक्त खाद्य सामग्री का उत्पादन कर लेंगे। वह खाद्य सामग्री में उत्पत्ति वृद्धि नियम के समर्थक थे।

4. मृत्यु दर या जन्म दर का प्रत्यक्ष सम्बन्ध

जनसंख्या के सम्बन्ध में सैडलर ने एक और मत व्यक्त किया कि "यदि मृत्यु दर अधिक है तो उसकी क्षतिपूर्ति के लिए जन्म–दर भी अधिक होगी और वह कम होगी तो जन्म–दर भी कम होगी। (The prolificness of an equal number of individuals, other circumstances being similar is greater when the mortality is greater, and on the contrary smaller when the mortality is less) उनकी यह भी धारणा थी कि जनसंख्या का घनत्व बढ़ने से कुछ और भी कारण यथा –अस्वास्थ्यप्रद वातावरण उत्पन्न हो जाते हैं जिससे मृत्यु–दर बढ़ जाती है।

सैडलर के सिद्धान्त को निम्न रेखा चित्र के माध्यम से भी समझ जा सकता है –

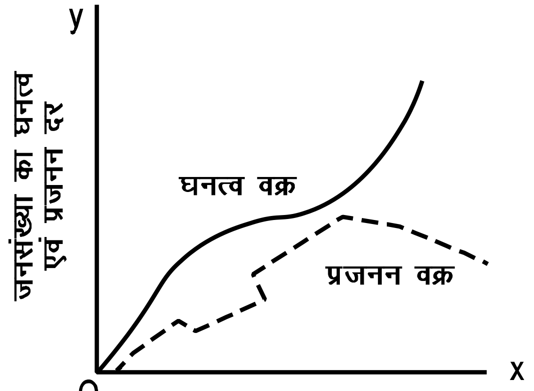

चित्र में स्पष्ट है की जैसे जैसे जनसंख्या का घनत्व बढ़ता जाता है वैसे वैसे प्रजनन दर घटती जाती है। P बिन्दु के बाद घनत्व का वक्र ऊपर उठने लगता है जबकि प्रजनन का वक्र नीचे की ओर झुकने लगता है।

सैडलर के अनुसार, प्रजननशीलता को बनाए रखने के लिए दो बातें आवश्यक होती है :

(i) **शारीरिक श्रम (Physical labours)**

(ii) **एकान्त (Privacy)।**

कम जन घनत्व वाले कृषि प्रधान एवं अविकसित देशों में जनसंख्या की प्रजनन दर अधिक रहती है, क्योंकि यहाँ के निवासी अधिक शारीरिक श्रम करते हैं। आर्थिक विकास एवं सभ्यता में वृद्धि के साथ–साथ लोग विवेकशील होते जाते हैं। मशीनों के आविष्कार से शारीरिक श्रम में कमी आई है। इस तरह, विश्व का एक बड़ा भाग श्रम की कठोरता से मुक्त हो चुका है और मनुष्य का अधिकांश कार्य बौद्धिक कसरत मात्र रह गया है। मनुष्य की संख्या में वृद्धि के अनुपात में आवास में वृद्धि नहीं हुई जिससे एकान्त का वातावरण धीरे–धीरे घटता गया। सैडलर के अनुसार प्रजननशीलता को बनाए रखने वाले दोनों तत्व धीरे–धीरे घट रहे हैं जिसके परिणामस्वरूप जन्म–दर का घटना स्वाभाविक है। इस तरह, जिस नैसर्गिक नियम के आधार पर माल्थस ने जनसंख्या की बेरोक–टोक वृद्धि की कल्पना की तथा मनुष्य के अंधकारमय भविष्य की एक कल्पना की, उसी प्राकृतिक नियम के आधार पर सैडलर ने मानव कल्याण के अधिकतम होने के नियम की व्याख्या की है। सैडलर के शब्दों में, "प्रत्येक पग पर (जनसंख्या) वृद्धि का सिद्धान्त घटता (Contract) जाता है तथा जैसा कि मेरा विचार है वह ऐसे उचित (या यथार्थ) बिन्दु पर रुक जाएगा जहां वह अधिकतम मनुष्यों के लिए अधिकतम मात्रा का सुख उपलब्ध करा सकेगा। (At every step the principle of increase contracts and as I contend, would pause at that precise point where it had secured the utmost possible degree of happiness to the greatest possible number of human beings) संक्षेप में, सैडलर के विचारानुसार, जनसंख्या में वृद्धि के साथ प्रजननशीलता में कमी आती जाती है और जनसंख्या में कमी होने पर बढ़ती है। इस तरह, जनसंख्या स्वतः वातावरण के साथ स्वयं को समायोजित कर लेती है।

5.5 सैडलर के सिद्धान्त की आलोचना

सैडलर के सिद्धान्त के विरुद्ध अग्र बातें कही जाती हैं :

(1) सैडलर का सिद्धान्त आशावादी था और उसने माल्थस के निराशावादी सिद्धान्त से लोगों को मुक्त करने का प्रयास किया, परन्तु व्यवहार में उनका सिद्धान्त खरा नहीं उतरा। यथार्थ में जिन स्थानों पर जनसंख्या का घनत्व अधिक रहा वहाँ प्रजनन दर में कमी नहीं दृष्टिगोचर हो रही है। यथा– भारत, श्रीलंका तथा पाकिस्तान आदि देशों में जनसंख्या घनत्व अधिक है फिर भी इन देशों में प्रजनन दर अधिक है। इसके विपरीत, रूस, अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया आदि देशों में घनत्व कम है परन्तु प्रजनन–दर भी कम है।

(2) सैडलर के सिद्धान्त में विरोधाभास स्पष्ट परिभाषित होता है। उनके अनुसार, जहाँ जनसंख्या का घनत्व अधिक होता है वहाँ जन्म–दर कम और मृत्यु दर अधिक होती है। अधिक मृत्यु–दर की क्षतिपूर्ति के लिए घनत्व में भी वृद्धि हो जाती है। इसका अर्थ यह हुआ कि जनसंख्या घनत्व में वृद्धि से जन्म–दर बढ़ जाएगी। इस तरह इस सिद्धान्त में विरोधाभास है। यह विरोधाभास इस सिद्धान्त को व्यर्थ बना देता है।

(3) सैडलर ने प्रजननशक्ति (Fecundity) तथा प्रजननशीलता (Fertility) जैसे शब्दों को

समानार्थी समझा। प्रजननशक्ति से तात्पर्य सन्तानोत्पादन की शारीरिक शक्ति से है, जबकि प्रजननशीलता से तात्पर्य वास्तविक पुनरुत्पादन से है। सैडलर दोनों शब्दों का अर्थ ठीक–ठीक नहीं समझ पाया। सैडलर के शब्दों में, जहाँ प्रजननशक्ति कम होती है वहाँ प्रजननशीलता अधिक नहीं हो सकती। परन्तु उच्च प्रजननशक्ति वाली जनसंख्या की प्रजननशीलता को गर्भ निरोधक उपायों, गर्भपातों अथवा अन्य कारणों से कम किया जा सकता है अर्थात, जनसंख्या वृद्धि की दर में कमी आ सकती है। इस तरह, सैडलर का विचार था कि मनुष्य में सन्तानोत्पादन की प्राकृतिक शक्ति, जिसको उसने कभी भी परिभाषित नहीं किया और उत्पन्न हुए लोगों के लिए जीवन निर्वाह के साधनों में कोई भी विपरीत सम्बन्ध नहीं है। परन्तु अपने इस कथन की पुष्टि में वह तत्कालीन राष्ट्रों में एक भी ऐसा उदाहरण नहीं ढूंढ़ सका जो यह सिद्ध कर सके कि प्रजननशक्ति में स्वाभाविक कमी आ रही है।

5.6 डबलडे का आहार सिद्धान्त

सैडलर की ही भाँति थामस डबलडे (Thomas Doubleday), जो एक अंग्रेज अर्थशास्त्री, सामाजिक चिंतक एवं दार्शनिक थे, ने सैडलर के लगभग 20 वर्ष पश्चात् जनसंख्या वृद्धि के एक अन्य नैसर्गिक सिद्धान्त का प्रतिपादन किया जिसे 'डबलडे के आहार सिद्धान्त' के नाम से जाना जाता है। इस सिद्धान्त के अन्तर्गत जनसंख्या वृद्धि के निर्धारण में खाद्य पूर्ति (food supply) के तत्व को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। जहाँ सैडलर का विचार था कि जनसंख्या घनत्व में वृद्धि के साथ–साथ प्रजननशक्ति में कमी आती जाती है और जनसंख्या में वृद्धि पर नैसर्गिक प्रतिबन्धों का प्रभाव भी समाप्त होता जाता है। वहाँ डबलडे का विचार था कि मनुष्य की संख्या में वृद्धि और खाद्यपूर्ति में विपरीत सम्बन्ध होता है। खाद्यपूर्ति जितनी अधिक होती है, जनसंख्या की वृद्धि दर उतनी ही कम होगी। अन्य शब्दों में, अधिक भोजन सन्तानोत्पादन प्रवृत्ति में बाधक होता है। इस तरह, डबलडे का मत था कि जनसंख्या की प्रजनन–दर घनत्व आधारित न होकर जनसंख्या के आहार पर निर्भर करती है। उन्होंने इसे जनसंख्या का सामान्य नियम बताया। जिसके अनुसार, जिस समाज में जीवन–यापन कठिन होता है तथा जीवित रहने के लिए संघर्ष करना पड़ता है वहाँ प्रकृति जन्म–दर को बढ़ाकर इस तरह होने वाली क्षति की पूर्ति कर देती है। इसके विपरीत, यदि जीवन–यापन सहज है तथा मृत्यु का दबाव कम है तो वहाँ प्रकृति प्रजननशीलता में कमी लाकर स्वयं सन्तुलन बनाए रखती है। यह नियम जीव–जन्तुओं एवं वनस्पतियों सभी में क्रियाशील रहता है। थॉमप्सन एवं लुईस ने आपनी पुस्तक "द स्टडी ऑफ पापूलेशन" में डबल डे को उद्धृत करते हुए लिखा है कि एक महत्वपूर्ण सामान्य नियम के अनुसार, जब कभी किसी जीव या वनस्पति की जाति के अस्तित्व पर संकट आ जाता है, प्रकृति उसके संरक्षण एवं निरन्तरता बनाए रखने के लिए प्रतिरोधात्मक प्रयास करती है, अतः सन्तानोत्पादन क्षमता अथवा प्रजननशीलता बढ़ती है; ऐसा विशेष रूप से तब होता है जब कभी भोजन एवं पौष्टिक आहार के अभाव में किसी जाति के अस्तित्व के लिए खतरा उत्पन्न हो जाता है तब प्रजननशीलता बढ़ती है। The great law, then, which as it seems really regulates the increase or decrease both of vegetable and of animal life is this that whenver a specie or Genus is endangered, a corresponding effort is invariably made by nature for its preservation and continuance of fecundity or fertility and that this especially takes whenever such danger arises from a diminution of proper nourishment is favourable to fertility throughout nature, universally in the vegetable as well as in the animal world.

5.6 डबलडे के आहार सिद्धान्त की मान्यताएँ

डबलडे ने आहार की उपलब्धता की दो स्थितियों की कल्पना की थी :

(i) **बाहुल्यता की स्थिति (Plethoric State)**

(ii) **रिक्तता की स्थिति (Deplethoric State)।**

डबलडे की बाहुल्यता की स्थिति वह है जब लोगों को प्रचुर मात्रा में पौष्टिक आहार उपलब्ध होता है। इसके विपरीत, रिक्तता अथवा अल्पता की स्थिति वह है जब लोगों को उचित मात्रा में आवश्यक आहार की मात्रा उपलब्ध नहीं हो पाती है।

डबलडे का विचार है कि बाहुल्यता की स्थिति में जब लोगों को प्रचुर मात्रा में अच्छा और पौष्टिक भोजन प्राप्त होता है तब सन्तानोत्पादन क्षमता कम और रिक्तता की स्थिति में प्रजननशीलता बढ़ती है। उन्होंने कहा कि प्रजनन क्षमता का यह सिद्धान्त मनुष्यों के अतिरिक्त पशु–पक्षियों एवं वनस्पतियों में भी समान रूप से लागू होता है। उनका कथन है कि मोटे जानवर तथा पक्षी कम बच्चे पैदा करते हैं जब दुबले जानवर एवं पक्षी अधिक बच्चे उत्पन्न करने की क्षमता रखते हैं। यही स्थिति पेड़–पौधों की भी होती है। यदि किसी पौधे को अधिक खाद–पानी दिया जाता है तो उसमें अपेक्षाकृत कम फल लगते हैं और हो सकता है कि पौधे सड़ भी जाय। यदि कोई पौधा ऐसी स्थिति में आता है तो कभी–कभी उसकी काट–छाँट करनी पड़ती है और उसको दी जाने वाली खाद–पानी की मात्रा भी कम कर दी जाती है।

डबलडे ने उपलब्ध आहार की मात्रा के आधार पर जनसंख्या को तीन वर्गों में विभाजित किया है। प्रथम वर्ग, आहार बाहुल्यता वाले धनी वर्ग का है जिसको पौष्टिक आहार एवं विलासिता पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है। उसकी प्रजनन क्षमता कम होती है। परन्तु इस वर्ग का व्यक्ति अगर शारीरिक श्रम करता है और व्यस्त जीवन व्यतीत करता है तो उसकी प्रजनन शक्ति बढ़ सकती है। द्वितीय वर्ग, रिक्तता का वर्ग अर्थात् गरीबी है जहाँ भोजन की पूर्ति दयनीय स्थिति में रहती है। इनका जीवन कष्टमय होता है और इनकी प्रजननशीलता अधिक होने के कारण इनकी संख्या में निरन्तर वृद्धि होती रहती है। अर्थात् इस वर्ग में जनसंख्या गरीबी के अनुपात में बढ़ती है। तृतीय वर्ग, मध्यम वर्ग के लोगों का होता है जो न बहुत अच्छा भोजन प्राप्त करते हैं और न ही खराब, काम की अधिकता भी नहीं है और न ही बेकार हैं। इस वर्ग की जनसंख्या प्रायः स्थिर रहती है। समाज में जनसंख्या बढ़ती है अथवा घटती है यह इस बात पर निर्भर करेगा कि समाज में इन तीनों वर्गों में सन्तुलन किस तरह का है।

इसी तर्क के आधार पर डबलडे ने मत व्यक्त किया है कि आहार के प्रकार का सन्तानोत्पादन शक्ति पर प्रभाव पड़ता है। मांसाहारी जातियाँ अल्पसंख्यक रही हैं, क्योंकि इनकी प्रजननशक्ति कम होती है। इसलिए चरागाही–अर्थव्यवस्था में जनसंख्या कम घनी रहती है। जो व्यक्ति शाकाहारी होते उनकी प्रजननशक्ति अधिक होती है। जहाँ मांसाहारी तथा शाकाहारी दोनों तरह का भोजन किया जाता है वहाँ प्रथम स्थिति (अर्थात् मांसाहारी स्थिति) के अनुपात में जनसंख्या अधिक होती है। इस तरह, चावल खाने वाले क्षेत्र में प्रजननशीलता अधिक होती है।

उपर्युक्त विवेचना के आधार पर डबलडे इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि इससे जनसंख्या के वितरण में समानता बनी रहेगी। उनके शब्दों में, "धनी व्यक्ति अपनी सम्पत्ति को अधिक समय तक भावी पीढ़ियों को हस्तान्तरित नहीं कर सकेंगे.... कालान्तर में उनके पास सम्पत्ति तो होगी, परन्तु उत्तराधिकारी नहीं होंगे। इसके विपरीत, गरीबों के पास उत्तराधिकारी तो हैं, परन्तु सम्पत्ति नहीं, अतः धनी व्यक्तियों की सम्पत्ति के उत्तराधिकारी न होने की दशा में ऐसे व्यक्तियों की सन्तानों को धन प्राप्त हो जाएगा जो अभी तक धनी नहीं रहे। इस प्रकार असमानता के मध्य

इतनी सुन्दरतापूर्वक समानता आ जाएगी जिसका समस्त प्रबुद्ध वर्ग स्वागत करेगा।" संक्षेप में, खाद्यान्नपूर्ति बढ़ने के साथ प्रजननशीलता का घटना असन्तुलन की स्थिति नहीं उत्पन्न होने देता। इस तरह माल्थस के निराशावाद की स्थिति नहीं उत्पन्न होने पाती है।

डबलडे के अनुसार किसी भी समाज में जनसंख्या घटती है या बढ़ती है अथवा स्थिर है यह उस समाज में इन तीनों जनसंख्या के वर्गों के संतुलन पर निर्भर है। डबलडे के शब्दों में "जिस समाज में जीवनयापन कठिन हो, जीवित रहना संघर्षमय हो वहाँ प्रकृति जन्मदर बढ़ाकर क्षतिपूर्ति कर देती है। इसके विपरीत यदि जीवन सरल है, मृत्यु का दबाव कम है तो वहाँ प्रजननता घटाकर प्रकृति स्वयमेव ही संतुलन कायम रखती है।" यह नियम मनुष्य पशु एवं वनस्पति सभी में लागू होता है। थॉम्पसन एवं लूइस ने डबलडे के विचारों को उद्धृत करते हुए लिखा है कि जब कभी किसी वनस्पति, जीव व जाति का अस्तित्व संकट में आ जाता है तो प्रकृति प्रतिरोधात्मक प्रयत्न करके संरक्षण एवं निरन्तरता की रक्षा करती है जिससे संतानोत्पादन क्षमता या प्रजननता बढ़ जाती है, उस समय विशेषकर जबकि किसी जाति के अस्तित्व को भोजन एवं पौष्टिक तत्वों की कमी से खतरा हो जाता है तब प्रजननता बढ़ती है।

डबलडे के उपरोक्त विचारों की पुष्टि के लिए जोस–डी–कैस्ट्रो (Jouse-de-Castro) ने चूहों पर अध्ययन किया और इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि अधिक प्रोटीन वाले भोजन करने से मनुष्य में मोटापा बढ़ता है और उसकी प्रजनन–क्षमता कम हो जाती है और कम प्रोटीन वाले भोजन प्रजननशक्ति में वृद्धि करते हैं, क्योंकि पौष्टिक भोजन के अभाव में स्त्रियों के शरीर में संगमेच्छा (Oestrogen) निष्क्रिय नहीं हो पाती है जिसके कारण प्रजननशक्ति में वृद्धि होती है। अतः गरीबों की प्रजननशक्ति में कमी लाने के लिए आवश्यक है कि उनके भोजन में प्रोटीन की मात्रा बढ़ाई जाय।

5.7 आहार सिद्धान्त की आलोचना

डबलडे के आहार सिद्धान्त के विरुद्ध निम्न बातें कहीं जाती हैं :

(1) डबलडे ने आहार के प्रकार, मोटापा तथा प्रजननशीलता के मध्य जो सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयास किया है वह उचित नहीं प्रतीत होता।

इस सम्बन्ध में स्पेन्सर का विचार है कि हो सकता है कि मोटापे से प्रजनन में कुछ कमी आ जाती हो परन्तु हर धनी व्यक्ति मोटा ही होगा यह आवश्यक नहीं है। इसके अतिरिक्त पौष्टिक भोजन करने से व्यक्ति स्वस्थ रहता है जबकि मोटापा अपने आप में एक रोग है और यह खराब पाचन क्रिया के कारण होता है। उन्हीं के शब्दों में, "डबलडे ने मोटापे से सम्बन्धित प्रजननहीनता के जो उदाहरण प्रस्तुत किए हैं, वे वास्तव में उच्च पौष्टिकता के उदाहरण नहीं है बल्कि वे निम्न पौष्टिकता को स्थापित करने वाले दोषपूर्ण अवशोषण अथवा समांगीकरण के उदाहरण हैं।" (The cases Doubleday cites of infertility accompanied by fatness are not cases of high nutritioin properly so called, but cases of such defective absorption or assimilation as constitute low nutrition)

यह उचित है कि धनी व्यक्तियों के यहाँ निर्धनों की अपेक्षा कम बच्चे पैदा होते हैं परन्तु इसके लिए अनेक आर्थिक एवं सामाजिक कारक उत्तरदायी होते हैं। धनी व्यक्तियों के कम बच्चे प्रायः ऐच्छिक होते हैं न कि गर्भधारण की क्षमता न होने कारण। धनी लोगों के कम बच्चे होना एक प्रवृत्ति तो हो सकती है, परन्तु इसे सिद्धान्त नहीं कहा जा सकता। अन्यथा हॉलैण्ड, स्वीडन आदि देश तो धनाढ्यता की चरम सीमा पर पहुँच गए हैं वहाँ जनसंख्या स्थिर हो जाती, जबकि

ऐसा नहीं हो पाया है।

(2) डबलडे के सिद्धान्त में विरोधाभास परिलक्षित होता है। उन्होंने अपने सिद्धान्त में यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि मानव जाति कालान्तर में समाप्त हो जाएगी। अल्पता की स्थिति (deplathoric state) में तो जनसंख्या भोजन की कमी के फलस्वरूप समाप्त हो जाएगी और बाहुल्यता की स्थिति (Plethoric state) में प्रजननशक्ति में ह्रास के कारण समाप्त हो जाएगी। परन्तु इस तरह की स्थिति न तो कभी उत्पन्न हुई है और न ही भविष्य में उत्पन्न होने की आशा है।

(3) डबलडे के सिद्धान्त के विपरीत यह भी दिखाई पड़ता है कि शहरों की अपेक्षा गाँवों में प्रजनन–दर अधिक पाई जाती है। गाँव के लोगों का भोजन शहरी व्यक्तियों की अपेक्षा अधिक शुद्ध तथा पर्याप्त मात्रा में होता है।

(4) डबलडे ने धनी व्यक्ति से निर्धन व्यक्ति की तरफ सम्पत्ति के हस्तान्तरण की जो कल्पना की है वह हास्यास्पद है। यह आशावाद की पराकाष्ठा ही कही जाएगी जिसमें जनांकिकीय प्रवृत्तियों के माध्यम से सुन्दर समाजवाद की स्थापना की परिकल्पना की गयी है।

(5) डबलडे ने भी प्रजननशीलता तथा प्रजननशक्ति को एक ही समझ लिया। प्रजननशक्ति के स्थिर बने रहने पर भी वास्तविक प्रजननशीलता को कृत्रिम उपायों द्वारा रोका जा सकता है।

5.8 सारांश

जनसंख्या के प्रति मनुष्य की जिज्ञासा उसके आविर्भाव के समय से ही रही है। जनसंख्या के नैसर्गिक या जैविकीय सिद्धान्तों के अन्तर्गत उन विचारों का अध्ययन किया जाता है जो प्रकृति प्रदत्त गुणों अथवा जैविकीय अवधारणाओं से सम्बद्ध हैं। इनमे प्रमुख रूप से थॉमस सैडलर का जनसंख्या घनत्व एवं सन्तानोत्पादकता नियम तथा थॉमस डबलडे का आहार सिद्धान्त शामिल हैं। इन सिद्धान्तों के अन्तर्गत यह संकेत दिया गया है कि मनुष्य का जन्म जीवन मरण उसी प्रकार होता है जैसा कि पेड़–पौधों एवं अन्य जीव–जन्तुओं का होता है। मानव में भी अन्य जीवों की तरह खाना, सोना, संभोग, गर्भाधान, भय, जन्म एवं मृत्यु आदि प्रकृति प्रदत्त मूल प्रवृत्तियाँ विद्यमान हैं।

माल्थस के निराशावादी दृष्टिकोण के विपरीत सैडलर ने अपने आशावादी दृष्टिकोण में कहते हैं कि मनुष्य एक विवेकशील प्राणी है। वह यूँ ही मर जाने से पहले किसी भी समस्या का समाधान ढूँढ निकालता है। अतः वह जनसंख्या वृद्धि की समस्या के फलस्वरूप उत्पन्न असंतुलन को दूर करने के लिए विचार करता है और खाद्य सामग्री में वृद्धि करने का प्रयास करता है। जब जब समाज की जनसंख्या मे वृद्धि होगी तब तब मानव खाद्य सामग्री का उत्पादन भी बढ़ाएगा और इस तरह मानव जाति नष्ट होने से या प्रकृति का कोप भाजन बनने से बच जाएगी। वही डबलडे ने अपने सिद्धान्त में जनसंख्या एवं खाद्य पूर्ति के मध्य विपरीत सम्बन्ध पाया। इनका मानना है कि जैसे जैसे खाद्य पूर्ति बढेगी जनसंख्या की प्रजनन दर घटेगी। दूसरे शब्दों में जिस समाज में जीवनयापन कठिन हो, जीवित रहना संघर्षमय हो वहाँ प्रकृति जन्मदर बढ़ाकर क्षतिपूर्ति कर देती है। इसके विपरीत यदि जीवन सरल है, मृत्यु का दबाव कम है तो वहाँ प्रजननता घटाकर प्रकृति स्वयमेव ही संतुलन कायम रखती है।

5.9 सन्दर्भ ग्रन्थ

1. Thompson, Warren S. and David T. Lewis: Population Problems; New York: Mc Graw Hill Book Co. 1976.
2. Dr. Premi, M.K., Ramanamma, A., Bambawale, Usha,. An Introduction to social demography, Vikas Publishing House, New Delhi.
3. Bhende A A and Kanitkar T (:(2010Principles of Population Studies, Himalaya Publishing House, New Delhi.
4. Jhingan M L, Bhatt B K and Desai J N (:(2006Demography, Vrinda Publications (P) Ltd, delhi.
5. Nussbaum, Martha and Sen, Amartya (ed.) (1993) : The Quality of Life, Oxford, Clarendon Press.
6. Alva Myrdal (1978), An International Economy : Greenwood press.
7. डॉ. मिश्रा, जे.पी., जनांकिकी, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा।
8. डॉ. बघेल. डी.एस., जनांकिकी, विवेक प्रकाशन, दिल्ली।
9. डॉ. पन्त, जीवन चन्द्र, जनांकिकी, गोयल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ।

5.10 बोध के प्रश्न

5.10.1 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. सैडलर के जनसंख्या के सिद्धान्त की विस्तार से व्याख्या कीजिए।
2. डबलडे के आहार के आधार पर दिए गए जनसंख्या के सिद्धान्त की आलोचनात्मक व्याख्या कीजिए।

5.10.2 लघु उत्तरीय प्रश्न

1. डबलडे ने उपलब्ध आहार की मात्रा पर जनसंख्या को कितने वर्गों में विभाजित किया? संक्षिप्त टिप्पणी कीजिए।
2. डबलडे के जनसंख्या के सिद्धान्त के सामान्य नियम को संक्षेप में समझाइए।

5.10.3 वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. डबलडे के जनसंख्या वृद्धि के सिद्धान्त को किस नाम से जाना जाता है –

   अ. मानव की प्रजनन शक्ति

   ब. आहार सिद्धान्त

   स. सन्तानोत्पाद सिद्धान्त

   द. प्रोटीन उपभोग सिद्धान्त

2. डबलडे के जनसंख्या वृद्धि के सिद्धान्त में किस तत्व को महत्त्व दिया गया है ?

   अ. खाद्य पूर्ति

   ब. प्रजनन शक्तियों में कमी

स. नैसर्गिक प्रतिबन्धों का प्रभाव

द. जनसंख्या घनत्व में वृद्धि

3. डबलडे ने अपने सिद्धान्त में आहार की उपलब्धता के लिए कौन सी स्थितियां बताई –

1 . बाहुल्यता की स्थिति 2. रिक्तता की स्थिति

अ. केवल 1

ब. केवल 2

स. 1 एवं 2 दोनों

द. न तो 1 न ही 2

4. डबलडे के विचारों की पुष्टि के लिए जोस डी कैस्ट्रो ने किस पर अध्ययन किया था ?

अ. चूहा

ब. बिल्ली

स. कुत्ता

द. मनुष्य

5. डबलडे ने उपलब्ध आहार के आधार पर जनसंख्या को कितने वर्गों में विभाजित किया –

अ. एक

ब. दो

स. तीन

द. चार

5.10 वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर

1. (ब), 2. (अ), 3. (स), 4. (अ), 5. (स)।

5.11 पारिभाषिक शब्दावली

- प्रजननशक्ति (Fecundity)– फिकनडीटी अथवा जनन क्षमता का तात्पर्य प्रजनन शक्ति से है। यह एक जैविकीय अवधारणा है यह क्षमता प्रायः सभी स्त्रियों में समान होती है जो स्वस्थ हों। उर्वरता को व्यक्ति की प्रजनन क्षमता के रूप में परिभाषित किया गया है। उर्वरता या व्यक्ति की प्रजनन करने की क्षमता उसके द्वारा उत्पादित युग्मकों या प्रजनन कोशिकाओं की अनुमानित संख्या की गणना करके निर्धारित की जा सकती है। दूसरे शब्दों में उर्वरता एक इकाई है जो गर्भावस्था की सम्भावनाओं को मापती है। उदाहरण के लिए मानव महिला की उर्वरता को रजोदर्शन या किशोरावस्था में मासिक धर्म की शुरुआत और रजोनिवृत्ति के बीच मापा जाता है। एंटी–मुलरियन हार्मोन (एएमएच) की सान्द्रता की खोज करने वाले रक्त परीक्षण द्वारा इसकी मात्रा निर्धारित की जा सकती है, जो डिम्बग्रन्थि रिजर्व में अपरिपक्व अण्डों की संख्या की भविष्यवाणी करता है। व्यक्तियों में उर्वरता का वास्तविक जीवन उदाहरण देने के लिए एक युगल

जिसमें आनुवंशिक विलोपन जैसे कारकों के कारण पुरुष साथी में शुक्राणुओं की संख्या कम से शून्य तक होती है, उन्हें बहुत कम या न के बराबर उर्वरता वाला कहा जाएगा। यदि महिला को डिम्बग्रन्थि विफलता और ओव्यूलेशन में कठिनाई होती है, तो उसे कम उर्वरता वाली भी कहा जाएगा।

- प्रजननशीलता (Fertility) – प्रजननशीलता का अभिप्राय किसी स्त्री या उनके समूह के द्वारा किसी समयावधि में कुल सजीव जन्मे बच्चों की वास्तविक संख्या से है। अर्थात् किसी जनसंख्या में एक विशिष्ट काल अवधि में बच्चों का जन्म किस आवृत्ति से होता है, यह प्रजननता का द्योतक है। यह एक सांस्कृतिक अवधारणा है। हर संस्कृति में ये अलग हो सकता है। किसी संस्कृति मे बच्चों की संख्या कम होने को अच्छा माना है जबकि किसी अन्य में अधिक बच्चों का जन्म लेना उचित मन जाता है तथा समाज इसका ही अनुसरण करता है।

इकाई–6 : कैस्ट्रो का प्रोटीन उपभोग सिद्धान्त रेमण्ड पर्ल एवं लावेल लीड का जनसंख्या सिद्धान्त

इकाई की रूपरेखा

6.1 उद्देश्य

6.2 प्रस्तावना

6.3 कैस्ट्रो का प्रोटीन उपभोग सिद्धान्त

6.3.1 उद्भव एवं विकास

6.3.2 प्रमुख मान्यताएँ

6.4 कैस्ट्रो के सिद्धान्त की आलोचनात्मक समीक्षा

6.5 रेमण्ड पर्ल एवं रीड का वृद्धिघात सिद्धान्त

6.5.1 उद्भव एवं विकास

6.5.2 प्रमुख मान्यताएँ

6.5.3 सिद्धान्त की विशेषताएँ

6.5.4 सिद्धान्त की आलोचना

6.6 शुद्ध पुनरुत्पादन दर का सिद्धान्त

6.6.1 अर्थ एवं अवधारणा

6.6.2 सिद्धान्त की व्याख्या

6.6.3 सिद्धान्त का आलोचना

6.7 सारांश

6.8 सन्दर्भ ग्रन्थ

6.9 बोध के प्रश्न

6.9.1 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

6.9.2 लघु उत्तरीय प्रश्न

6.9.3 वस्तुनिष्ठ प्रश्न

6.10 वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर

6.11 पारिभाषिक शब्दावली

6.1 उद्देश्य

जनसंख्या के विभिन्न प्राणिशास्त्रीय सिद्धान्तों को जानने के क्रम में आइए अब हम निम्न तथ्यों को जानने का प्रयास करते हैं–

- कैस्ट्रो के प्रोटीन उपभोग सिद्धान्त को समझना
- प्रोटीन उपभोग सिद्धान्त का आलोचनात्मक मूल्यांकन करना
- रेमंड पर्ल के सिद्धान्त से परिचित होना
- लोजिस्टिक कर्व सिद्धान्त का आलोचनात्मक मूल्यांकन करना
- शुद्ध पुनरुत्पादन दर के सिद्धान्त से परिचित होना
- क्यू जेन्सकी के सिद्धान्त के गुण दोष का मूल्यांकन करना

6.1 प्रस्तावना

मनुष्य एक जिज्ञासु जीव है। प्राचीन काल से ही वह अपने समाज को बेहतर बनाने के लिए चिन्तन मनन करता रहा है और उसी क्रम में जनसंख्या के प्रति भी मनुष्य की जिज्ञासा उसके आविर्भाव के समय से ही रही है। आर्थिक विकास की ओर तीव्रता से उन्मुख वर्तमान गतिशील संसार के समस्त देश अपने देश में उपलब्ध संसाधनों का यथासम्भव अनुकूलतम उपयोग कर मानव संसाधन के विकास के प्रति जागरूक हैं और अपने देश में उपलब्ध जनसंख्या के विषय में गुणात्मक एवं संख्यात्मक दृष्टिकोण से अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करना चाहते है।

जनसंख्या के नैसर्गिक या जैविकीय सिद्धान्तों के अन्तर्गत उन विचारों का अध्ययन किया जाता है जो प्रकृति प्रदत्त गुणों अथवा जैविकीय अवधारणाओं से सम्बद्ध हैं। इनमे थॉमस सैडलर का घनत्व एवं सन्तानोत्पादकता नियम, थॉमस डबलडे का आहार सिद्धान्त, कैस्ट्र का प्रोटीन उपभोग सिद्धान्त, रेमण्ड पर्ल एवं रीड का लोजिस्टिक कर्व सिद्धान्त, गिनी का जैविक अवस्था नियम, हर्बर्ट स्पेंसर का प्रजनन फलन कास्त्रो का प्रोटीन उपभोग सिद्धान्त एवं कूजेन्सकी का जैविक सिद्धान्त शामिल हैं। इस अध्याय में हम कैस्ट्रो का प्रोटीन उपभोग सिद्धान्त, रेमंड पर्ल का लोजिस्टिक कर्व सिद्धान्त तथा लोवेल लीड के सिद्धान्त का अध्ययन करके उनके विचारों को जानने का प्रयास करेंगे।

6.3 कैस्ट्रो का प्रोटीन उपभोग सिद्धान्त

जनसंख्या के प्राणिशास्त्रीय सिद्धान्तों को जानने के क्रम में आइए अब हम सबसे पहले कैस्ट्रो के प्रोटीन उपभोग सिद्धान्त से परिचित होते हैं। कैस्ट्रो ने डबल डे के आहार सिद्धान्त का समर्थन करते हुए इसे और स्पष्ट करने के क्रम मानव की प्रजनन क्षमता को प्रोटीन उपभोग से जोड़कर देखा।

6.3.1 उद्‌भव एवं विकास

जोस डि कैस्ट्रो (Jouse de Castro) ने अपनी पुस्तक 'The Geography of Hunger' में जिसका प्रकाशन 1952 में हुआ था, जन्म–दर को प्रोटीन उपभोग से सम्बन्धित किया है। अपने सिद्धान्त को प्रतिपादित करने में कैस्ट्रो ने सन 1920 में आर.जे. स्लोन्कर (R.J. Slonakar) के

चूहों पर किए गए प्रयोग के निष्कर्षों को मान्यता प्रदान की। स्लोन्कर ने चूहों पर परीक्षण कर यह निष्कर्ष निकाला था कि–

(i) जब चुहियों को 10 प्रतिशत प्रोटीन युक्त आहार दिया गया जो उनके द्वारा उत्पन्न किए गए बच्चों का औसत 23.3 था।

(ii) जब चुहियों का 18 प्रतिशत प्रोटीन युक्त आहार दिया गया तो औसत रूप से प्रति चुहिया 17.4 प्रतिशत बच्चे पैदा हुए थे।

(iii) जब भोजन में प्रोटीन की मात्रा बढ़ाकर 22 प्रतिशत कर दी गयी तो बच्चों की संख्या घटकर प्रति चुहिया 13.8 प्रतिशत रह गयी।

इस तरह जैसे–जैसे भोजन में प्रोटीन की मात्रा बढ़ती गयी चुहियों की प्रजननशीलता घटती गयी। इस प्रयोग के आधार पर कैस्ट्रो ने यह निष्कर्ष निकाला कि प्रजनन–दर तथा प्रोटीन उपभोग में विपरीत सह–सम्बन्ध पाया जाता है।

6.3.2 प्रमुख मान्यताएँ

कैस्ट्रो ने इस प्रयोग के आधार पर निष्कर्ष निकाला कि मनुष्य के प्रजनन दर और प्रोटीन उपभोग में भी विपरीत सह सम्बन्ध पाया जाता है। कैस्ट्रो के मतानुसार, अधिक मात्रा में प्रोटीन के उपभोग से मोटापा बढ़ता है जिससे ओस्ट्रोजन (Oestrogen) निष्क्रिय हो जाते है जिससे सन्तानोत्पादन शक्ति कम हो जाती है। इसके विपरीत, कम प्रोटीन वाले भोजन सन्तानोत्पादन शक्ति में वृद्धि करते हैं, क्योंकि पौष्टिक भोजन की कमी से ओस्ट्रोजन सक्रिय रहते हैं, अतः प्रजननशीलता बढ़ती है। कैस्ट्रो के अनुसार, "यह ज्ञात है कि जिगर (Liver) तथा डिम्बग्रन्थियों (Ovaries) के कार्य करने की प्रक्रिया में सीधा सम्बन्ध होता है। जिगर का कार्य डिम्बग्रंथियों द्वारा रक्त धारा में प्रवाहित अतिरिक्त ओस्ट्रोजन को निष्क्रिय करना होता है। प्रोटीन की कमी से जिगर ठीक से कार्य नहीं करता और वह खराब हो जाता है। जब जिगर ठीक से कार्य नहीं करता तब वह अतिरिक्त ओस्ट्रोजन को भी प्रभावी ढंग से निष्क्रिय नहीं कर पाता। इसका परिणाम यह होता है कि महिलाओं की पुनरुत्पादन क्षमता में पर्याप्त वृद्धि हो जाती है।" It is known that there is a direct connection between the functioning of the liver and ovaries, the role of liver being to inactivate the excess oestrogens which the ovaries throw into the blood stream. Fatty degeneration of the liver and the tendency to cirrhosis are....... some of the characteristic results of protein deficiency....... when degeneration of the liver occurs, it begins to operate less efficiently and is less effective at its job inter activating excess oestrogen. The result is a marked increase in the women's reproductive capacity." – Jouse de Castro : *'The Geography of Hunger;* Little Brown & Company, Bostan, 1952, p. 140.

कैस्ट्रो के इस कथन से स्पष्ट होता है कि जिनके भोजन में प्रोटीन की कमी रहती है उनका जिगर ठीक से कार्य नहीं करता जिससे ऐसी स्त्रियों की रक्तवाहिनी नाड़ियों में जो ओस्ट्रोजन होते हैं उनकी संख्या बढ़ जाती है परिणामस्वरूप उनकी सन्तानोत्पादन शक्ति बढ़ जाती है। अतः यदि गरीब लोगों की प्रजनन क्षमता घटानी हो तो उनके भोजन में प्रोटीन की मात्रा बढ़ायी जानी चाहिए।

कैस्ट्रो ने यह मत व्यक्त किया कि वास्तव में गरीब देशों की प्रजनन–दर की अधिकता के लिए वहाँ के निवासी ही जिम्मेदार हैं। उनकी यह धारणा उचित नहीं है। गरीब देशों के निवासियों की ऊँची प्रजनन–दर के लिए साम्राज्यवादी तथा उपनिवेशवादी शक्तियों, व्यापारी,

पूँजीपति आदि उत्तरदायी हैं जिन्होंने इस उपनिवेशों के निवासियों का शोषण किया जिससे वहाँ के लोगों का जीवन–स्तर निम्न हुआ। इन शक्तियों ने उपनिवेशों के निवासियों के जीवन–स्तर को ऊँचा उठाने का प्रयास नहीं किया जिससे उनका भोजन प्रोटीन रहित रहा और प्रजनन–दर ऊँची रही।

कैस्ट्रो का मत है कि विश्व में भूख और सन्तुलित आहार के प्रश्न को अधिक महत्व नहीं दिया गया। पूँजीपति, उपादक तथा वैज्ञानिक आदि ने जिन्हें कि पर्याप्त भोजन मिलता है, इस प्रश्न को कभी गम्भीरता से स्वीकार नहीं किया। अक्सर सरकारें 'भूमि–क्षरण' एवं 'मशीन क्षरण' पर तो बड़े जोर–जोर से चर्चाएँ करती रहती हैं, परन्तु 'मानव क्षरण' जो कि भूख एवं असन्तुलित भोजन के कारण होता है, की ओर कभी ध्यान नहीं देती कैस्ट्रो के विचारानुसार आज विश्व की 2/3 जनता असन्तुलित भोजन ही प्राप्त करती है। उन्होंने भारत के सम्बन्ध में टिप्पणी करते हुए लिखा है कि, "भारत में पैदा होने वाले आधे बच्चे केवल 'भुखमरी' आहार के रूप में पाते हैं और वे स्वयं कुछ पैदा करने की स्थिति में आने से पहले ही मौत के शिकार हो जाते हैं।" इसी तरह, 'भूख' और 'काम की इच्छा' को सह–सम्बन्धित करते हुए कैस्ट्रो कहते हैं कि निरन्तर भूख से पीड़ित रहने के कारण शारीरिक भूख में वृद्धि होने लगती है। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि अकालग्रस्त भूख से पीड़ित व्यक्तियों की सम्भोग क्रियाएँ बढ़ जाती हैं।

जनसंख्या वृद्धि को रोकने के लिए कैस्ट्रो अपना मत व्यक्त करते हुए कहते हैं कि आर्थिक विकास के द्वारा जीवन स्तर को ऊँचा उठाकर ही इसमें सफलता प्राप्त की जा सकती है। इसके लिए सभी समाधान खोजे जाने चाहिए। जंगलों, रेगिस्तानों, आदि को विकसित कर उन्नतशील खेती की जानी चाहिए। इससे लोगों का जीवन स्तर ऊँचा होगा और वे अधिक प्रोटीन युक्त भोजन प्राप्त कर सकेंगे जिससे जन्मदर नीची हो सकेगी।

6.4 कैस्ट्रो के सिद्धान्त की आलोचनात्मक समीक्षा

यद्यपि कैस्ट्रो ने प्रोटीन उपभोग एवं प्रजनन क्षमता में मध्य सह सम्बन्ध को व्यवस्थित ढंग से प्रस्तुत किया है तथापि ये सिद्धान्त आलोचना से परे नहीं है। वास्तव में कैस्ट्रो के सिद्धान्त में भी कमोबश वही गलतियाँ हैं जो डबल डे के सिद्धान्त में हैं। इस बात में तो कोई संदेह नहीं कि भोजन की प्रकृति का प्रजनन क्षमता या संतानोत्पादन क्षमता पर प्रभाव तो पड़ता है पर इसे एक नियम या सिद्धान्त के रूप में स्वीकार किए जाने के लिए अब तक के अध्ययन अपर्याप्त हैं।

कैस्ट्रो के इस कथन का वैज्ञानिक आधार पर सिद्ध नहीं किया जा सकता कि प्रोटीन का उपभोग करने से सन्तानोत्पादकता घटती है। विकसित देशों में प्रोटीन युक्त भोजन प्राप्त करने के बावजूद आज वहाँ प्रजनन–दर ऊँची का जा सकती है। इन देशों में जनसंख्या वृद्धि में कमी का कारण अन्य सामाजिक, आर्थिक स्थितियाँ तथा सन्तति निग्रह के कृत्रिम उपायों का प्रयोग, मनोरंजन के साधनों में वृद्धि आदि है।

इसी तरह जिन गरीब देशों में प्रजनन दर अधिक है, वहाँ इसका कारण असंतुलित आहार (प्रोटीन का भोजन में अभाव) ही नहीं है बल्कि अन्य कारण भी हैं जैसे– शिक्षा एवं मनोरंजन के साधनों का अभाव, धार्मिक सांस्कृतिक मान्यताएँ, बाल विवाह, संयुक्त परिवार प्रणाली तथा कृषि प्रधान एवं श्रम प्रधान अर्थव्यवस्था है।

थॉम्पसन एवं लेविस के अनुसार, "इस पर केवल यही टिप्पणी की जा सकती है कि इस विश्वास का कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है कि जनसंख्या घनत्व, आहार में प्रोटीन का

अनुपात अथवा कैलोरीज (Calories) की सापेक्षिक अधिकता का सन्तानोत्पादन पर कोई विशेष प्रभाव पड़ता है।" The only comment needed on it to say that there is no scientific basis for the belief that, the density of population, the proportion of protein in the diet or the relative abundance of calories have any noticeable effect upon fecundity." – Thompson nad Lewis : *op. cit.,* p. 40

इसी तरह लेविन्सटीन ने कैस्ट्रो के इन विचारों की आलोचना की कि विकास की ओर पहले ध्यान नहीं दिया जाना चाहिए जिससे प्रजनन–दर स्वतः कम हो जाती है। वास्तव में उनका मत है कि बिना जन्म दर में कमी लाए विकास कैसे सम्भव हो सकता है। इसी सन्दर्भ में आपने लिखा है कि, "प्रसार (विकास) अवधि में एक निश्चित विकास गति के प्राप्त न होने के कारणों में से एवं जन्म–दर में कमी न होना भी है। इसी कारण यह दृष्टिकोण भ्रामक है।" "The reason why the approach is fallacious is that the economy might not have experienced sustained development if fertility rates had not declined at some cruicial state during the expansion." – H. Leibenstein : *Economic Backwardness and Economic Growth*, p.p. 151-52. सच तो ये है कि विश्व के अनेक देशों में इस बात के स्पष्ट प्रमाण हैं कि वहाँ आर्थिक विकास के साथ प्रजनन दर बढ़ी ही है, न कि घटी है।

कुंटज् का मानना है की यह तो स्वीकार किया जा सकता है कि गरीबी के कारणों में सामाजिक आर्थिक परिस्थितियाँ प्रमुख योगदान करती हैं परन्तु ये नहीं कहा जा सकता कि मानव उत्पादन क्षमता केवल भोजन पर निर्भर करती है। व्यापार चारों के समय में जन्म दरों में परिवर्तन को हम भोजन से किसी तरह संबंधित नहीं कर सकते हैं।

6.5 रेमण्ड पर्ल का जनसंख्या का वृद्धिघात वक्र सिद्धान्त

6.5.1 उद्‌भव एवं विकास

वास्तव में देखा जाए तो यह सिद्धान्त भी जनसंख्या का जैविकीय सिद्धान्त है और माइकल सैडलर के जनसंख्या घनत्व के सिद्धान्त का ही एक संशोधित रूप है। इस सिद्धान्त की वृद्धिघात वक्र रेखा सिद्धान्त (Logistic Curve Theory Of Population) के नाम भी जाना जाता है। क्वेटलेट ने 1935 में इस वक्र का सूत्रपात किया था परन्तु वृद्धि–घात रेखा का सर्वप्रथम प्रस्तुतीकरण टमतीनसेज ने 1838–1844 में किया, यद्यपि उसे कोई विशेष मान्यता नहीं मिल सकी । बाद में रेमंड पर्ल ने अपनी पुस्तक The Biology of Population Growth, 1925 में बड़े प्रभावशाली ढंग से इसे प्रस्तुत किया। इस सिद्धान्त के चित्र में बनने वाले वक्र अंग्रेजी के अक्षर 'S' से मिलता जुलता है। जिसके माध्यम से जनसंख्या के विकास के स्वरूप को प्रदर्शित किया गया है। पर्ल का जनसंख्या का यह सिद्धान्त मधुमक्खियों पर किए गए प्रयोगों के निष्कर्षों पर आधारित था।

6.5.2 प्रमुख मान्यताएँ एवं सिद्धान्त

जनसंख्या के 'वृद्धिघात वक्र सिद्धान्त' का प्रतिपादन सुप्रसिद्ध अमेरिकी जीवशास्त्री रेमण्ड पर्ल (Raymond Pearl) ने किया। उन्होंने सन् 1925 ई. में प्रकाशित अपनी पुस्तक 'The Biology of Population Growth' में अपने विचार व्यक्त कर इस सिद्धान्त की प्रस्थापना की। यह सिद्धान्त 'वृद्धिघात वक्र' (Logestic Curve) सिद्धान्त के नाम से भी प्रसिद्ध है। प्रो. पर्ल ने फल की मक्खियों (Fruit fly) पर किए गए प्रयोग के आधार पर इस सिद्धान्त का निर्धारण

किया और विचार व्यक्त किया कि जनसंख्या सदैव समान गति से नहीं बढ़ती, बल्कि, इसके बढ़ने की गति समय–समय पर बदलती रहती है। प्रारम्भ में जनसंख्या तेजी के साथ बढ़ती है, फिर उसके बढ़ने की गति धीमी हो जाती है। यद्यपि वृद्धि की धीमी गति के कारण जनसंख्या कुछ कम अवश्य हो जाती है, फिर भी प्रारम्भिक स्तर से अधिक बनी रहती है। इसके बाद जनसंख्या पुनः बढ़ने लगती है, पहले तेजी के साथ फिर धीमी गति से और फिर वही प्रक्रिया दोहराई जाती है। जनसंख्या विकास का यह चक्रीय–क्रम चलता रहता है। इसे अन्य शब्दों में इस प्रकार कहा जा सकता है, "जनसंख्या बढ़ती और घटती है, चढ़ती और गिरती है, और तेजी से या धीमी गति से बढ़ती है फिर भी कुल मिलाकर यह हमेशा बढ़ती ही रहती है।" इस प्रकार यह सिद्धान्त जनसंख्या के विकास के स्वरूप (nature) पर प्रकाश डालता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि प्रो. पर्ल फल की मक्खियों पर किए गए अपने प्रयोग के आधार पर जनसंख्या के व्यवहार सम्बन्धी इस निष्कर्ष पर पहुँचे थे। उन्होंने फल की मक्खियों पर प्रयोग के समय यह देखा कि पहले फल–मक्खियों की संख्या तेजी से बढ़ती है, फिर उनकी वृद्धि–दर धीमी पड़ जाती है और अन्त में घट जाती है। फिर उनकी संख्या में वृद्धि की यह चक्रीय प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है। परन्तु हर बार जब उनकी संख्या घटने लगती है तब भी उनकी घटी संख्या मूल संख्या से अधिक ही रहती है। इस प्रकार फल–मक्खियों पर प्राप्त निष्कर्ष उन्होंने मानव जाति पर भी लागू कर दिया और पाया कि जनसंख्या की प्रवृत्ति भी इसी प्रकार चक्रीय ढंग से बढ़ने की रहती है। रेमण्ड पर्ल ने अपने इस कथन की पुष्टि 'वृद्धिघात वक्र' (Logestic Curve) की सहायता से की है।

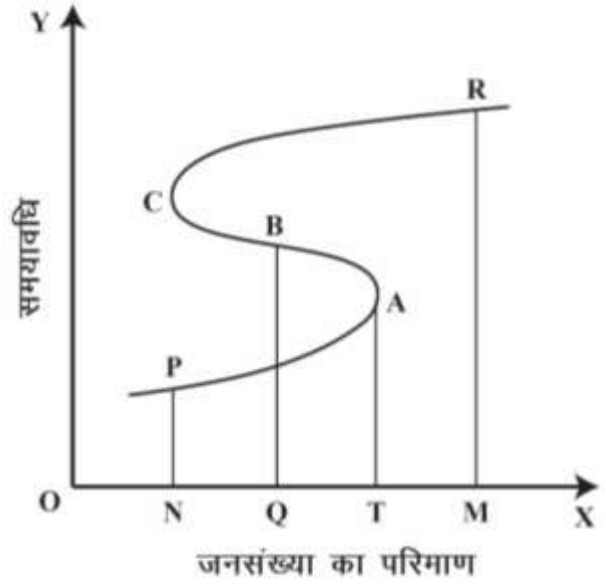

चित्र 01: रेमण्ड पर्ल 'वृद्धिघात वक्र' (Logestic Curve)

रेमण्ड पर्ल ने जनसंख्या वृद्धि की प्रवृत्ति को निम्न वृद्धिघात वक्र की सहायता से दर्शाया है। चित्र 01 में x–अक्ष पर जनसंख्या का परिमाण तथा y–अक्ष पर समयावधि को प्रदर्शित किया गया है। चित्र में S आकृति वृद्धिघात वक्र है जिसके बिन्दु P से जनसंख्या की वृद्धि शुरू होती है और A बिन्दु तक बढ़ती जाती है। ON से OT तक जनसंख्या में तेजी से वृद्धि होती है। A से आगे जनसंख्या घटने लगती है। बिन्दु B पर वह OT से घटकर OQ हो जाती है। जनसंख्या में यह कमी तब तक जारी रहती है जब तक C बिन्दु नहीं आ जाता, जहाँ से जनसंख्या पुनः बढ़ना शुरू हो जाती है तथा कालपर्यन्त जनसंख्या का कुल परिमाण

वक्र के R बिन्दु पर OM तक बढ़ जाता है।

6.5.3 सिद्धान्त की विशेषता

यह सिद्धान्त जनसंख्या के विकास के स्वरूप पर प्रकाश डालता है। यह सिद्धान्त माल्थस के विचारों का समर्थन करता है, क्योंकि यह स्पष्ट करता है कि जनसंख्या की प्रकृति अन्ततः बढ़ने की होती है। परन्तु यह सिद्धान्त एक दूसरी दृष्टि से माल्थस के विचार का खण्डन भी करता है। माल्थस की धारणा थी कि जनसंख्या सदैव तेजी से बढ़ती है, जबकि जैविकीय सिद्धान्त के अनुसार यह पहले तो तेजी से बढ़ने लगती है। फिर इसके बढ़ने की गति धीमी पड़ जाती है। इस प्रकार जनसंख्या वृद्धि में उतार–चढ़ाव होता रहता है। माल्थस की विचारधारा यह भी थी कि आर्थिक सम्पन्नता के साथ–साथ जनसंख्या की प्रवृत्ति बढ़ने की होती है, जबकि जैविकीय सिद्धान्त के अनुसार आर्थिक विकास की उच्च दशा में जनसंख्या स्थिर होने लगती है अथवा घटने लगती है।

6.5.4 सिद्धान्त की आलोचना

(1) आलोचकों का मत है कि यह सिद्धान्त एक पक्षीय है, क्योंकि यह जनसंख्या के केवल जैविक पक्ष पर ध्यान देता है और जनसंख्या को प्रभावित करने वाले सामाजिक, आर्थिक पक्षों की उपेक्षा करता है।

(2) वह आवश्यक नहीं है कि फल की मक्खियों पर किए गए प्रयोग पर आधारित यह सिद्धान्त मनुष्यों पर भी समान रूप से लागू हो।

(3) यह कृषि तकनीक में विकास के फलस्वरूप खाद्यान्नों के उत्पादन में वृद्धि का अध्ययन नहीं करता।

(4) अभी तक यह सिद्ध नहीं किया जा सका है कि वृद्धि प्रक्रिया की आन्तरिक प्रकृति के कारण जनसंख्या वृद्धिघात का अनुसरण करेगी।

6.6 क्यूजिंसकी का शुद्ध पुनरुत्पादन दर का सिद्धान्त

क्यूजिंसकी ने जनसंख्या के विकास के सम्बन्ध में विभिन्न अध्ययन किए तथा जनसंख्या के भविष्य में विकास अथवा ह्रास के विश्लेषण में अपने शुद्ध पुनरुत्पादन दर के सिद्धान्त (Theory of Net Reproduction Rate) का प्रतिपादन किया। क्यूजिंसकी का सिद्धान्त जनसंख्या को मापने की विधि को स्पष्ट करता है।

6.6.1 अर्थ एवं अवधारणा

जनसंख्या के शुद्ध पुनरुत्पादन दर के सिद्धान्त का प्रतिपादन प्रो. कुजिन्सकी (Kuezynski) द्वारा किया गया था। इस सिद्धान्त के अनुसार किसी देश में जनसंख्या की वृद्धि–दर, जन्म–दर तथा मृत्यु–दर के अन्तर पर निर्भर न करके शिशुजनन आयु (Child Bearing Age) की स्त्रियों की संख्या पर निर्भर करती है। अन्य शब्दों में जनसंख्या की वास्तविक वृद्धि–दर ज्ञात करने के लिए शिशु–जनन आयु की स्त्रियों की वृद्धि–दर ज्ञात करना चाहिए।

कुजिन्सकी के शब्दों में, "जिस दर से स्त्री–जनसंख्या अपने आपको प्रतिस्थापित (अर्थात् अपने स्थान की पूर्ति) करती है वह शुद्ध पुनरुत्पादन दर कहलाती है।") "The net reproduction rate shows the rate at which the female population is replacing itself." –

Kuczynski, Balance of Births and Deaths, p. 43.(

6.6.2 क्यूजिंसकी के सिद्धान्त की व्याख्या

इस रीति द्वारा जनसंख्या की वृद्धि–दर ज्ञात करने के लिए निम्नलिखित विधि अपनाई जाती है–

(1) सर्वप्रथम इस बात का पता लगाया जाता है कि शिशु–जनन आयु (अर्थात् 15 वर्ष से 49 वर्ष के मध्य) की स्त्रियों की संख्या कितनी है?

(2) अब यह पता लगाना होगा कि ये कितनी कन्याओं (भावी माताओं) को जन्म देंगी?

(3) तत्पश्चात् यह मालूम करना होगा कि इन नवजात कन्याओं में से कितनी शिशु–जनन आयु तक जीवित रहती हैं? इसके लिए नवजात कन्याओं की संख्या में से उन कन्याओं की संख्या घटा देते है जिनके शिशु–जनन आयु तक पहुँचने से पहले मर जाने की सम्भावना रहती है अथवा जिनसे यह उम्मीद हो कि वे किसी कन्या को जन्म नहीं देंगी या कुँवारी रहेंगी या विधवा हों जायेंगी।

शिशु–जनन–आयु की स्त्रियों की संख्या में से शिशु–जनन न करने वाली स्त्रियों की संख्या घटा देने पर शिशु–जनन करने वाली स्त्रियों की शुद्ध संख्या निकल आएगी। शिशु–जनन आयु की स्त्रियों की कुल संख्या का अनुपात जनसंख्या की वृद्धि दर को मापता है जो कि शुद्ध जनन दर होती है।

$$\text{शुद्ध जनन दर (NRR)} = \frac{\text{शिशु जनन आयु की स्त्रियों की कुल संख्या}}{\text{शिशु जनन करने वाली स्त्रियों की कुल संख्या}}$$

$$\text{NET REPRODUCTION RATE (NRR)} = \frac{\text{Total number of child–bearing wome}}{\text{Net number of child–bearing women}}$$

इसे एक उदाहरण द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है– मान लीजिए शिशु जनन आयु की स्त्रियों की संख्या 1,000 है जो अपने प्रजनन काल (15 से 49 वर्ष) में 2,000 शिशुओं को जन्म देती हैं। लिंग–अनुपात (sex-ratio) यदि 50 प्रतिशत दिया हुआ मान लिया जाय तो इसका अर्थ हुआ कि कुल जन्मे 2,000 शिशुओं में से 1,000 कन्याएँ हैं। यदि 1,000 जन्मी कन्याओं में से सभी अपनी सन्तानोत्पादन आयु (15 वर्ष से 49 वर्ष) तक जीवित रहती हैं तथा विभिन्न आयु वर्ग की प्रजनन दरों (fertility rates) में कोई परिवर्तन नहीं होता तो शुद्ध पुनरुत्पादन दर इकाई के बराबर होगी जो यह व्यक्त करती है कि जनसंख्या की वृद्धि दर स्थिर है।

यदि यह मान लिया जाय कि उत्पन्न हुई 1,000 कन्याओं में से 800 ही शिशु जनन आयु (सन्तानोत्पादन की आयु) तक जीवित रहती हैं तो शुद्ध जनन दर = $\frac{800}{1,000} = 0.8 < 1$ होगी जिसका अभिप्राय यह है कि जनसंख्या दर घट रही है। इसी प्रकार, यदि शिशु–जनन–आयु की 1,000 स्त्रियां 1,500 पुत्रियां उत्पन्न करें जो बच्चों को जन्म देंगी तो शुद्ध–जनन–दर 1.5 होगी जो इकाई से अधिक (1.5 > 1) होगी जिसका तात्पर्य है जनसंख्या बढ़ रही है।

6.6.3 सिद्धान्त की आलोचना

निःसन्देह यह सिद्धान्त जनसंख्या के विकास के लिए एक सन्तुलित तथा विवेकपूर्ण माप प्रस्तुत करता है तथा 'सन्तान उत्पादन शक्ति' तथा 'प्रजननशीलता' के बीच अन्तर को स्पष्ट करता है जबकि माल्थस ने इन दोनों के मध्य कोई अन्तर नहीं किया था। फिर भी इस सिद्धान्त की कुछ कमियाँ भी है जो इस प्रकार हैं–

(1) इसे जनसंख्या का पूर्ण सिद्धान्त मानना उचित नहीं होगा क्योंकि यह जनसंख्या वृद्धि के विभिन्न कारकों एवं कारणों का अध्ययन नहीं करता। यह सिद्धान्त स्पष्ट नहीं करता कि जनसंख्या क्यों बढ़ती है तथा उसे किस प्रकार नियन्त्रित किया जा सकता है, जनसंख्या तथा खाद्य पदार्थों के उत्पादन में क्या सम्बन्ध है? जनसंख्या का आर्थिक विकास के साथ क्या सम्बन्ध है? इस प्रकार यह सिद्धान्त कारण एवं परिणाम के मध्य सम्बन्ध स्थ्झापित नहीं करता, अतः इसे सिद्धान्त मानना अनुचित होगा।

(2) यह सिद्धान्त प्रजनन दर (fertility rate) तथा मृत्यु दर (mortality rate) को स्थिर मान लेता है जबकि व्यवहार में यह दरें परिवर्तित होती रहती हैं।

(3) यह सम्भव हो सकता है कि जनसंख्या में कमी जन्म दर में कमी के कारण न होकर देशान्तरण (emigration) के कारण हो और अप्रवासियों के कारण जनसंख्या में वृद्धि हो जाय। ऐसी स्थिति में प्राप्त शुद्ध पुनरुत्पादन दर जनसंख्या के विकास और उसकी प्रवृत्ति की गलत धारणा प्रस्तुत कर सकती है।

6.7 सारांश

इस अध्याय में हमने देखा की जनसंख्या और समाज के सम्बन्धों के बारे में कई विद्वानों ने अपने विचार व्यक्त किए हैं। इन विद्वानों में मतैक्य का अभाव होते हुए भी इन्होंने समाज को नए नजरिए से देखा है। कैस्ट्रो ने डबल डे के आहार सिद्धान्त का समर्थन करते हुए इसे और स्पष्ट करने के क्रम मानव की प्रजनन क्षमता को प्रोटीन उपभोग से जोड़कर देखा। कैस्ट्रो ने इस प्रयोग के आधार पर निष्कर्ष निकाला कि मनुष्य के प्रजनन दर और प्रोटीन उपभोग में भी विपरीत सह सम्बन्ध पाया जाता है। कैस्ट्रो के मतानुसार, अधिक मात्रा में प्रोटीन के उपभोग से मोटापा बढ़ता है जिससे ओस्ट्रोजन (Oestrogen) निष्क्रिय हो जाते है जिससे सन्तानोत्पादन शक्ति कम हो जाती है। कैस्ट्रो का मत है कि विश्व में भूख और सन्तुलित आहार के प्रश्न को अधिक महत्व नहीं दिया गया। पूँजीपति, उपादक तथा वैज्ञानिक आदि ने जिन्हें कि पर्याप्त भोजन मिलता है, इस प्रश्न को कभी गम्भीरता से स्वीकार नहीं किया। अक्सर सरकारें 'भूमि–क्षरण' एवं 'मशीन क्षरण' पर तो बड़े जोर–जोर से चर्चाएँ करती रहती हैं, परन्तु 'मानव क्षरण' जो कि भूख एवं असन्तुलित भोजन के कारण होता है, की ओर कभी ध्यान नहीं देती कैस्ट्रो के विचारानुसार आज विश्व की 2/3 जनता असन्तुलित भोजन ही प्राप्त करती है।

रेमंड पर्ल ने फल की मक्खियों (Fruit fly) पर किए गए प्रयोग के आधार पर इस सिद्धान्त का निर्धारण किया और विचार व्यक्त किया कि जनसंख्या सदैव समान गति से नहीं बढ़ती, बल्कि, इसके बढ़ने की गति समय–समय पर बदलती रहती है। इसे अन्य शब्दों में इस प्रकार कहा जा सकता है, "जनसंख्या बढ़ती और घटती है, चढ़ती और गिरती है, और तेजी से या धीमी गति से बढ़ती है फिर भी कुल मिलाकर यह हमेशा बढ़ती ही रहती है।" इस प्रकार यह सिद्धान्त जनसंख्या के विकास के स्वरूप (nature) पर प्रकाश डालता है।

कुजिन्सकी (Kuezynski) के अनुसार किसी देश में जनसंख्या की वृद्धि–दर, जन्म–दर तथा मृत्यु–दर के अन्तर पर निर्भर न करके शिशुजनन आयु (Child Bearing Age) की स्त्रियों की संख्या पर निर्भर करती है। इस प्रकार हमने देखा की अनेक विद्वानों ने अपने अपने तरीके से जनसंख्या वृद्धि की व्याख्या करने का प्रयास किया है। इनमे से हर सिद्धान्त हमे जनसंख्या के बारे एक नवीन दृष्टिकोण देता है तथापि इनमे से कोई भी सिद्धान्त अपने आप में पूर्ण नहीं है।

6.8 सन्दर्भ ग्रन्थ

1. Bottomore, T. B., Sociology, Asia Publishing House, Bombay,1978.
2. Davis, Kingsley, Human Society, Macmillan, NewYork, 1959.
3. Ogburn W.F. and Nimkoff, M. F., Sociology, Houhton, Mifflin Company, Boston, 1958,
4. दोषी, एस. एल. एवं जैन, पी.सी., समाजशास्त्र नई दिशाएँ, मालिक बुक कम्पनी, जयपुर, 2020
5. डॉ जे.पी. मिश्र, जनांकिकी, साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा, 2021
6. डॉ. बघेल. डी.एस., जनांकिकी, विवेक प्रकाशन, दिल्ली।
7. डॉ. सिन्हा वी.सी., जनांकिकी के सिद्धान्त, मयूर बुक्स, दिल्ली।
8. डॉ. मलैया, के.सी., जनसंख्या शिक्षा, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

6.9 बोध के प्रश्न

इस इकाई का भली भाँति अध्ययन करने के पश्चात आइए अब हम अपने ज्ञान का परीक्षण करते हैं।

6.9.1 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. कैस्ट्रो के प्रोटीन उपभोग सिद्धान्त का आलोचनात्मक मूल्यांकन करिए।
2. रेमंड पर्ल के जनसंख्या संबंधी सिद्धान्त की विस्तार से चर्चा करिए।
3. शुद्ध पुनरुत्पादन दर से आप क्या समझते हैं? क्या क्यू जेन्सकी का सिद्धान्त अब भी प्रासंगिक है?

6.9.2 लघु उत्तरीय प्रश्न

1. गरीब देशों की प्रजनन दर की अधिकता के लिए वहाँ के निवासी ही जिम्मेदार हैं। कैस्ट्रो के कथन के आलोक में इस पर टिप्पणी कीजिए।
2. रेमंड पर्ल का सिद्धान्त माल्थस का समर्थन करते हुए भी उसका विरोधी है। समझाइए।
3. जैसे जैसे जनसंख्या घनत्व बढ़त जाता है वैसे वैसे जनसंख्या में गर्भ धरण की क्षमता कम होती जाती है, विवेचना कीजिए।

6.9.3 वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. "The Geography of Hunger (1952)" पुस्तक के लेखक हैं–

A. Sadler

B. Castrow

C. Ginni

D. Spencer

2. 'The Biology of Population Growth') 1925(पुस्तक के लेखक हैं–

A. Raymond Pearl

B. Mathew Arnold

C. Corado Ginni

D. Michel Sadler

3. प्रजनन दर और प्रोटीन उपभोग में विपरीत सह सम्बन्ध पाया जाता है। यह सिद्धान्तवेत्ता हैं–

A. स्पेंसर

B. कैस्ट्रो

C. रीड

D. हेनरी जॉर्ज

4. जनसंख्या के वृद्धिघात (Logistic Curve) सिद्धान्त के प्रणेता हैं–

A. रेमंड पर्ल

B. फ्रैंक फेटर

C. कैस्ट्रो

D. आर्सेन इयुमो

5. NRR का विस्तारित रूप है–

A. Non-Reproductive Rate

B. Net Reproduction Rate

C. Number Reverse Ratio

D. None of These

6. लोजिस्टिक कर्व थ्योरी में कर्व (वक्र) का आकार होता है–

A. U आकार का

B. C आकार का

C. S आकार का

D. इनमें से कोई नहीं

7. किसने कहा है की किसी देश की जनसंख्या शिशु जनन आयु (Child Bearing Age) की स्त्रियों की संख्या पर निर्भर करती है –

A. Ginni

B. Spencer

C. Castrow

D. Kuezynski

8. किसका मानना है कि जनसंख्या और खाद्य पूर्ति के बीच विपरीत संबंध है?

A. हर्बर्ट स्पेंसर

B. डबल डे

C. रेमंड पर्ल

D. सैडलर

9. किसने कहा है की जनसंख्या ज्यामितीय अनुपात में नहीं बढ़ती, बल्कि कभी तेजी से तो कभी धीमी गति से बढ़ती है, तत्पश्चात घटने लगती है।

A. रेमंड पर्ल

B. कैस्ट्रो

C. गिन्नी

D. सैडलर

10. किसने कहा है कि जिस समाज में जीवनयापन कठिन हो, जीवित रहना संघर्षमय हो वहाँ प्रकृति स्वयं जन्मदर बढ़ाकर क्षति की पूर्ति कर देती है।

A. डबल डे

B. कैस्ट्रो

C. पर्ल

D. कूजिंसकी

6.10 वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर

1)b ,( )2a ,( )3b,( )4 a,( )5 b,( )6 c,( )7 d ,( )8b,( )9 a ,( )10a (

6.11 पारिभाषिक शब्दावली

- **NRR)Net Reproduction Rate) -** नेट जनन दर एक महत्वपूर्ण आँकड़ा है जो महिलाओं की जीवनकाल में उनके द्वारा प्रत्येक बच्चे की उम्र के अनुसार जन्म देने की

क्षमता को दर्शाता है। इसका गणना आयु–विशेष प्रजनन दर (Age & Specific Fertility Rates, ASFR) को जोड़कर आयु–विशेष मृत्यु दर (Age & Specific Mortality Rates, ASMR) से घटाकर की जाती है। इसका मतलब है कि नेट जनन दर वह संख्या होती है जिसके अनुसार एक महिला अपने जीवनकाल में जीवित जन्में देने की क्षमता रखती है, जो वर्तमान प्रजनन और मृत्यु दरों पर आधारित होती है। यह एक देश या क्षेत्र की जनसंख्या के विकास और नियंत्रण के मार्ग में मदद करने में महत्वपूर्ण है।

- **लॉजिस्टिक वक्र (Logistic Curve)** – यह एक गणितीय रूप है जो जीवित जन्मों की वृद्धि को दर्शाता है। यह वक्र आमतौर पर जनसंख्या विकास के संदर्भ में प्रयुक्त होता है। यह वक्र शुरुआत में धीमी वृद्धि दिखाता है, फिर जल्दी से गति बढ़ाता है और अंत में फिर से धीमी हो जाता है। यह वक्र जनसंख्या के विकास के लिए एक सीमित संसाधन की उपयोगिता को दर्शाने में मदद करता है। जब जनसंख्या एक सीमित संसाधन की ओर बढ़ती है, तो लॉजिस्टिक वक्र उपयोगकर्ता को यह दिखाता है कि विकास की गति कैसे धीमी हो जाती है।
- **एस्ट्रोजेन (Estrogen)**– यह एक महत्वपूर्ण हार्मोन है जो मुख्य रूप से महिलाओं में प्रजनन और यौन विकास के लिए महत्वपूर्ण होता है। इसे महिला सेक्स हार्मोन भी कहा जाता है। "एस्ट्रोजेन" शब्द इस समूह के सभी रासायनिक रूप से समान हार्मोनों का संचालन करता है, जैसे कि एस्ट्रोन (Estrone), एस्ट्रिऑल (Estriol), और एस्ट्राडियोल (Estradiol) हैं। यह हार्मोन हर महीने महिलाओं के अंडाशय द्वारा कोलेस्ट्रॉल से निर्मित होता है। एस्ट्रोजेन रक्त के माध्यम से सभी अंगों और ऊतकों तक पहुँचता है और यकृत (liver) में एंजाइमों द्वारा इसका चयापचय (Metabolised) किया जाता है। एस्ट्रोजेन का उत्पादन अंडाशय और कुछ मात्रा में एड्रिनल कोर्टेक्स (प्रत्येक किडनी के शीर्ष पर स्थित एड्रिनल ग्रंथि का बाहरी भाग) वृषण (Testes) तथा भ्रूण और प्लेसेंटा (Fetoplacental unit) द्वारा होता है। एस्ट्रोजेन प्रधानता (Estrogen dominance) पुरुषों और महिलाओं दोनों में होने वाले हार्मोन असंतुलनों में प्रमुख है। एस्ट्रोजेन प्रधानता तब होती है जब किसी न किसी तरह एस्ट्रोजेन की तुलना में प्रोजेस्टेरोन का अनुपात बहुत अधिक हो जाता है। एस्ट्रोजेन प्रधानता में प्रोजेस्टेरोन की तुलना में एस्ट्रोजेन का बढ़ा हुआ स्तर भी देखने को मिलता है लेकिन ऐसा बहुत कम होता है।

इकाई–7 : हरबर्ट स्पेन्सर का प्रजनन फलन सिद्धान्त

इकाई की रूपरेखा

7.1 उद्देश्य

7.2 प्रस्तावना

7.3 हरबर्ट स्पेन्सर का प्रजनन फलन सिद्धान्त के मुख्य तत्व

7.4 स्पेंसर के सिद्धान्त की व्याख्या

7.5 स्पेन्सर के सिद्धान्त की आलोचना

7.6 कोरोडो गिनी का जैविक अवस्था सिद्धान्त

7.7 गिनी के अनुसार समाज में जनसंख्या वृद्धि की अवस्थाएँ

7.8 आहार सिद्धान्त की आलोचना

7.9 सारांश

7.10 सन्दर्भ ग्रन्थ

7.11 बोध के प्रश्न

7.11.1 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

7.11.2 लघु उत्तरीय प्रश्न

7.11.3 वस्तुनिष्ठ प्रश्न

7.12 वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर

7.13 पारिभाषिक शब्दावली

7.1 उद्देश्य

इस अध्याय के अध्ययन के पश्चात आप मुख्यतः निम्न बिन्दुओं को बेहतर ढंग से समझ पायेंगे –

1. हर्बर्ट स्पेंसर का प्रजनन फलन सिद्धांत का परिचय प्राप्त करना।
2. यह जानना कि स्पेंसर के सिद्धांत के प्रमुख तत्व कौन कौन से हैं?
3. स्पेंसर के सिद्धांत की विस्तृत व्याख्या को समझना।
4. स्पेंसर के सिद्धांत की कमियों से परिचित होना।
5. कोराडो गिनी के सिद्धांत से परिचित होना।
6. गिनी के अनुसार समाज में जनसंख्या वृद्धि की अवस्थाएं को समझना।
7. गिनी के सिद्धांत की समीक्षा करना।

7.2 प्रस्तावना

जैसा कि हम जानते हैं की जनसंख्या के प्राणिशास्त्रीय सिद्धान्तों में हम उन सिद्धान्तों को शामिल करते हैं जिनमें यह बताने का प्रयास किया जाता है कि मनुष्य का जन्म और मरण ठीक उसी प्रकार होता जैसा कि जीव–जन्तुओं और पेड़–पौधों में होता है। इन सिद्धान्तों की अगली कड़ी में हरबर्ट स्पेन्सर का जनसंख्या का प्राणिशास्त्रीय सिद्धान्त एवं गिनी का जैविक अवस्था का सिद्धान्त आते हैं। आइए इन्हे समझने का प्रयास करते हैं।

7.3 हरबर्ट स्पेन्सर के प्रजनन फलन सिद्धान्त के मुख्य तत्व

इस सिद्धान्त का प्रतिपादन अंग्रेज समाजशास्त्री एवं दार्शनिक हरबर्ट स्पेन्सर (Herbert Spencer) द्वारा किया गया। इसके अन्तर्गत स्पेन्सर ने प्राकृतिक शक्तियों द्वारा सामाजिक व प्राणीशास्त्रीय विकास की व्याख्या की है। इस सिद्धान्त को स्पेन्सर का प्राणिशास्त्रीय सिद्धान्त (Biological Theory) के साथ साथ उर्वरता एवं जीवन संभावना का जैविक सिद्धांत भी कहा जाता है। इनका सिद्धांत प्रमुख रूप से प्राकृतिक शक्तियों द्वारा सामाजिक तथा प्राणिशास्त्रीय विकास की व्याख्या से सम्बन्धित है।

स्पेंसर ने जनसंख्या के सिद्धांत में विकासवादी सिद्धांत का सहारा लेते हुए कहा है कि समाज विकासशील एवं परिवर्तनशील है। इसमे विकास की मौलिक विशेषता यह है कि 'विकास सरलता से जटिलता की ओर' होता है। जैसे जैसे जीवन भी जटिल होता जाता है और प्रजनन दर घटती जाती है। जिन समाजों में जीवन की जटिलता अधिक है, वहाँ जन्म दर भी कम है। इसके विपरीत जिन समाजों में जटिलता कम है, वहाँ प्रजनन दर अधिक है।

सैडलर व डबलडे की ही भाँति स्पेन्सर भी जनसंख्या वृद्धि की दर को प्रकृति का कार्य मानते थे। उनका विचार था कि प्राकृतिक शक्तियाँ स्वयं मनुष्यों की संख्या निर्धारित करता है, अतः मनुष्यों को अपनी संख्या के बारे में चिन्ता नहीं करनी चाहिए। प्रकृति मनुष्यों की संख्या निर्धारित करने के लिए उनके दृष्टिकोण में परिवर्तन करती है। वह मनुष्यों का ध्यान व्यक्तिगत, वैज्ञानिक तथा आर्थिक विकास की ओर आकर्षित करती है तथा ऐसा वातावरण उत्पन्न करती है ताकि मनुष्य सन्तानोत्पादन में कम रुचि ले।

7.4 स्पेंसर के सिद्धान्त की व्याख्या

स्पेन्सर ने इस सम्बन्ध में दो तत्वों का उल्लेख किया है :

(i) व्यक्तिकरण (Individuation), तथा (ii) उत्पत्ति (Genesis)

व्यक्तिकरण (Individuation) का अर्थ व्यक्तिगत विकास से है। व्यक्तिगत विकास के अन्तर्गत रहन–सहन स्वास्थ्य, शिक्षा, आदि पर ध्यान दिया जाना सम्मिलित होता है।

उत्पत्ति (Genesis) का अर्थ किसी जीव द्वारा नए सदस्यों के उत्पन्न से होता है। उत्पत्ति (Genesis) अधिक होने का अर्थ होता है जन्म–दर का अधिक होना।

स्पेन्सर का मत है कि व्यक्तिकरण तथा उत्पत्ति के मध्य परस्पर विपरीत सम्बन्ध होता है।)"There is antagonism between individuation and Genesis." – Spencer(उसके मतानुसार मनुष्य विशेष कर स्त्री जितनी अधिक रुचि व्यक्तिगत विकास में लेंगी, उतनी ही उनकी सन्तानोत्पादन शक्ति (Genesis) में कमी आएगी क्योंकि व्यक्तिगत विकास में समय एवं शारीरिक श्रम बहुत अधिक लगता है। इस प्रकार सन्तानोत्पादन शक्ति में कमी आने से जनसंख्या वृद्धि नियन्त्रित हो जाती है। उदाहरण के लिए, धनी घर की लड़कियों को निर्धन लड़कियों की अपेक्षा अधिक पौष्टिक भोजन मिलता है और वे शारीरिक रूप से अधिक स्वस्थ एवं मजबूत होती हैं फिर भी उनमें सन्तानोत्पादकता, निर्धन लड़कियों की अपेक्षा कम होती है। इसका कारण यह है कि उनको पढ़ाई आदि के रूप में मानसिक श्रम करना पड़ता है। अन्य शब्दों में धनी घर की स्त्रियों की उत्पादन क्षमता, निर्धनों की स्त्रियों की उत्पादन क्षमता से कम होती है, क्योंकि निर्धनों में उत्पत्ति (Genesis) की अपेक्षा व्यक्तिकरण (Individuation) कम होता है।

स्पेन्सर के शब्दों में, "वे स्त्रियाँ जो मानसिक कार्यों में संलग्न होती हैं, जिनका बौद्धिक विकास हो चुका होता है, उनकी प्रजनन शक्ति घट जाती है। उच्च–वर्ग की लड़कियों का पालन–पोषण अच्छी तरह होने के कारण यद्यपि उनके शारीरिक विकास में विशेष कमी नहीं होती है, परन्तु मस्तिष्क का अधिक उपयोग करने के कारण उनमें सन्तानोत्पादन की क्षमता कम होती है। सन्तानोत्पादन में ह्रास को कई तरह से देखा जा सकता है जैसे उनमें प्रजननहीनता (या बाँझपन) अधिक दिखाई देती है, उनमें बच्चों को जन्म देने की बारम्बारता कम होती है, वे बच्चों को स्तनपान कम समय तक कराती हैं तथा अधिक शिक्षित औरतों के स्तनों का आकार प्रायः छोटा होता है, जो उनकी घटती हुई प्रजननशीलता का द्योतक है।

स्पेन्सर के शब्दों में, "अपने सम्पूर्ण चेतना में पुनरुत्पादन शक्ति से तात्पर्य पूर्णरूपेण विकसित शिशु को जन्म देने तथा उस शिशु को प्राकृतिक समय तक आहार प्रदान करने से है। अधिकांश चपटे स्तन वाली लड़कियाँ जो शिक्षा के अत्यधिक दबाव को सहन कर लेती हैं, वे सर्वथा इसके अयोग्य होती हैं। यदि उनकी प्रजननशीलता को उनकी सन्तानों की संख्या से मापा जाय जिनको उन्होंने बिना किसी कृत्रिम सहायता के जन्म दिया हो, तो वे सापेक्षिक दृष्टि से प्रजननहीन ही सिद्ध होंगी।" "In its full sense the reproductive power means the power to bear a well developed infant and to supply that infant with the natural food for the natural period. Most of the flat chested girl who survived their high pressure education are incompetent to do this If their fertility measured by the number of children they could bear without artificial and they would prove relatively infertile." – Herbert Spencer : The Principles of Biology, New York, p. 485.(

स्पेन्सर का कहना है कि किसी भी वर्ग में व्यक्तिगत विकास एवं सन्तानोत्पादन शक्ति दोनों अधिक नहीं होते हैं। उनके अनुसार,

(i) यदि व्यक्तिगत विकास अधिक है तो उत्पादन शक्ति कम होगी।

(ii) यदि उत्पादन शक्ति अधिक है तो व्यक्तिगत विकास निम्न होगा।

(iii) यदि सन्तानोत्पादन शक्ति अर्थात् जन्म–दर कम है तब व्यक्तिगत विकास अधिक होगा।

(iv) यदि व्यक्तिगत विकास निम्न है अर्थात् मृत्युदर अधिक या जीवनकाल कम है तब स्थानापन्न के लिए बच्चों की उत्पत्ति आवश्यक होगी अर्थात् सन्तानोत्पादन शक्ति अधिक होगी।

स्पेन्सर ने प्रजननक्षमता के आधार पर मनुष्य को तीन भागों में विभाजित किया है। यथा

(i) **गरीब** व सरल जीवन व्यतीत करने वाले,

(ii) **मध्यम** श्रेणी के व्यक्ति, तथा

(iii) **सम्पन्न** व जटिल जीवन व्यतीत करने वाले व्यक्ति।

उनके मतानुसार व्यक्ति जैसे–जैसे आर्थिक एवं सामाजिक दृष्टि से विकसित होता जाता है वैसे–वैसे उसके व्यक्तिगत विकास में भी वृद्धि होती जाती है। इस तरह व्यक्तिगत विकास कम होने से गरीबों की सन्तानोत्पादन शक्ति अधिक होती है, मध्यम श्रेणी के व्यक्तियों की सन्तानोत्पादन शक्ति भी मध्यम होती है तथा सम्पन्न व्यक्तियों का व्यक्तिगत विकास अधिक होने के कारण उनकी सन्तानोत्पादन शक्ति कम होती है।

इसके अतिरिक्त स्पेन्सर ने प्रजनन दर की प्रवृत्तियों की व्याख्या के लिए विकासवादी सिद्धान्त (evolution theory) का भी सहारा लिया है। उनके मतानुसार प्रजनन–दर जीव के आकार से भी सम्बन्धित होती है। जीव के आकार का प्रजनन–दर से उलटा सम्बन्ध है। जो जीव जितना ही छोटा होगा, उसकी प्रजनन दर उतनी ही अधिक होगी क्योंकि बहुत छोटे जीवों की उत्पत्ति नर एवं मादा के संभोग के परिणामस्वरूप न होकर उनके शरीर के कोशिका विभाजन (cell-division) के कारण होती है। इन जीवों के शरीर से कोशिकाओं (cells) को जितने भागों में बाँटा जा सके उतने ही जीवों की उत्पत्ति होगी। इसके विपरीत, जैसे–जैसे जीव के आकार में वृद्धि होती जाती है उनके उत्पत्ति की प्रक्रिया जटिल होती जाती है, गर्भकाल अधिक होता है और सन्तानों की संख्या भी कम हो जाती है।

स्पेंसर जनसंख्या वृद्धि को बुरा या हानिकारक नहीं मानते। उनके अनुसार जनसंख्या वृद्धि के कारण ही प्राकृतिक साधनों का अधिक अधिक प्रयोग हुआ है और सामाजिक सांस्कृतिक स्तर में वृद्धि तथा विकास हुआ। विश्व में अनेक क्रांतिकारी परिवर्तन इसी से संभव हो पाए हैं।

7.5 स्पेन्सर के सिद्धान्त की आलोचना

स्पेन्सर के विचार में सत्यता का कुछ अंश विद्यमान है। अधिक शिक्षित एवं विकसित पश्चिमी देशों की महिलाओं की प्रजननशीलता में पर्याप्त कमी दृष्टिगोचर होती है। परन्तु आंकड़ों के आधार पर अभी तक यह सिद्ध नहीं हो सका है कि बौद्धिक रूप से विकसित परिवारों की सन्तानोत्पादक शक्ति, बौद्धिक रूप से अविकसित परिवारों की अपेक्षा कम है।

सामाजिक जीवन में जटिलता एवं प्रजनन दर से सम्बन्धित जनसंख्या का जो सिद्धान्त स्पेन्सर ने प्रतिपादित किया है, दैनिक जीवन में उसके बहुत से अपवाद दिखाई पड़ते हैं। कभी–कभी धनी, सम्पन्न, कामकाजी एवं सुशिक्षित स्त्रियों के भी अधिक बच्चे पाये जाते हैं जबकि गरीब, सरल एवं कम पढ़ी लिखी स्त्रियों में बांझपन की शिकायत मिलती है। धनी एवं मोटे व्यक्तियों के अधिक बच्चे तथा गरीब एवं शारीरिक रूप से दुबले व्यक्तियों के बच्चे ही नहीं होते। प्रायः धनी एवं सम्पन्न व्यक्ति अपने रहन–सहन के स्तर को बनाए रखने के लिए सन्तति निग्रह के कृत्रिम उपायों का प्रयोग कर परिवार को छोटा रखने का प्रयास करते हैं। इस तरह, यह बात सिद्ध करना कठिन हो जाता है कि व्यक्तित्व विकास और सन्तानोत्पादन क्षमता में विपरीत सम्बन्ध होता है।

इस तरह अन्य प्रकृतिवादी सिद्धान्तों की भांति यह सिद्धान्त भी अवास्तविक है। उपर्युक्त आलोचनाओं के बावजूद भी हमे यह स्वीकार करना होगा की स्पेंसर ने विकासवादी सिद्धांत के आधार पर जनसंख्या में वृद्धि और ह्रास पर महत्वपूर्ण विचार दिए हैं। यथार्थ में कोई भी एक सिद्धांत जनसंख्या वृद्धि को पूरी तरह से समझने में सक्षम नहीं है।

7.6 कोरोडो गिनी का जैविक अवस्था सिद्धान्त

इटली के समाजशास्त्री कोरोडो गिनी ने जनसंख्या वृद्धि के जैविक अवस्था सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। उनके इस सिद्धांत को जनसंख्या के विकासवादी सिद्धांत के नाम से भी जाना जाता है। उन्होंने जनसंख्या विकास को एक सामाजिक व आर्थिक परिवर्तन न मानकर प्राणिशास्त्रीय गुणों में परिवर्तन माना है। जनसंख्या में होने वाला परिवर्तन सामाजिक एवं आर्थिक संगठन को भी प्रभावित करता है। जब किसी देश की जनसंख्या बढ़ती है उस देश का आर्थिक, सामाजिक तथा औद्योगिक एवं व्यापारिक ढांचा भी जटिल हो जाता है तथा समाज में वर्गों का जन्म होता है। इस सामाजिक जटिलता की वृद्धि के साथ साथ प्रजनन दर घटती है। गिनी का मानना है कि राष्ट्र के विकास की प्रक्रिया वास्तव में जनसंख्या के उतार चढ़ाव पर निर्भर करती है।

किसी समाज की जनसंख्या के उद्भव व विकास की व्याख्या करते हुए गिनी अपना मत व्यक्त करते हैं कि समाज में जनसंख्या वृद्धि की दर सदैव एक समान नहीं होती तथा प्रत्येक समाज में प्रायः उसके विभिन्न चरणों में भिन्न–भिन्न दरें रहती हैं, क्योंकि प्रजननशीलता का निर्धारण जैविकीय शक्तियों द्वारा होता है। गिनी ने विभिन्न देशों की जनसंख्या सम्बन्धी आंकड़ों को एकत्र किया और उसका विश्लेषण कर वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि जिस प्रकार किसी व्यक्ति के जीवन काल में अनेक अवस्थाएँ होती हैं ठीक उसी प्रकार एक समाज भी अनेक अवस्थाओं से गुजरता है। जिस प्रकार व्यक्ति के जीवन में प्रारम्भ में तीव्र विकास होता है फिर धीरे धीरे विकसित होता हुआ परिपक्वता की स्थिति प्राप्त करता है और तत्पश्चात ह्रास प्रारंभ होता है और बाद में समाप्ति का काल आ जाता है। ठीक उसी प्रकार किसी देश की जनसंख्या में भी वृद्धि का एक क्रम होता है।

7.7 गिनी के अनुसार समाज में जनसंख्या वृद्धि की अवस्थाएँ

समाज की प्रथम अवस्था में जनसंख्या वृद्धि दर बहुत तीव्र होती है फिर यह वृद्धि दर धीमी होकर परिपक्वता की अवस्था प्राप्त करती है और अन्त में नष्ट होने की अवस्था आती है। नष्टकाल में जनसंख्या की कमी होती है और सभ्यता क्षीण होती जाती है। प्रो. थॉम्पसन एवं लेविस ने गिनी के विचारों की व्याख्या करते हुए लिखा है कि "प्रत्येक राष्ट्र अपने 'यौवन काल'

में सरल तथा एक सी संरचना वाला होता है। इस काल में प्रजनन दर अधिक होती है। परिणामस्वरूप जब ऐसे देश में जनसंख्या बढ़ती है तब उस देश का आर्थिक एवं सामाजिक संगठन भी जटिल हो जाता है। सामाजिक वर्ग बनने लगते हैं, औद्योगिक एवं व्यावसायिक विकास होने लगता है। जनसंख्या का बढ़ता दबाव महसूस होने लगता है और यह दबाव विस्तार के लिए प्रोत्साहित करता है जिसमें युद्ध या उपनिवेशवाद अथवा दोनों का विकास होता है।" ("Every nation in youth is simple and undifferentiated in structure and has a high rate fertility, because each generation springs from the people who are hereditarily most prolific, i.e., highly fecund. As a consequence, such a nation grows rapidly in numbers. This growth in numbers is accompanied by a growing complicity of organisation, as is manifested by the development of social classes and the growth of industrial and commercial activities. With increasing numbers, the pressure of population begins to be felt and expansion takes place through war or colonization or both." – Thompson & Lewis, The Study of Population, p. 43(

इसके उपरान्त दूसरी अवस्था आती है। आर्थिक एवं सामाजिक जटिलताओं से जनसंख्या की प्रजनन दर कम हो जाती है। इस अवस्था में जन्म–दर घटने के कई कारण हो सकते हैं यथा युद्ध एवं उपनिवेश स्थापित करने में बहुत से युवकों का मारा जाना, कुछ वर्गों की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हो जाने के फलस्वरूप उनकी प्रजनन क्षमता का घट जाना आदि। गिनी का विचार है कि जन्म–दर कम होने के कारण मूल रूप से पुनरुत्पादन शक्ति का क्षीण होना है, सामाजिक व आर्थिक कारण तो केवल ऊपरी तौर से जन्म दर के पतन का निर्धारण करते हैं। अन्य शब्दों में, प्रजनन–दर घटने में जैविकीय शक्तियाँ, आर्थिक एवं सामाजिक शक्तियों से अधिक महत्वपूर्ण होती हैं।

परिपक्वता की अवस्था में प्रजनन–दर का ह्रास होता है। समाज में सर्वप्रथम धनी वर्ग की प्रजनन क्षमता घटती है और फिर जैसे–जैसे पहले के निर्धन वर्ग, धनी वर्ग की श्रेणी में आते जाते हैं उनकी भी प्रजनन दर घटती जाती है और फिर नव सम्पूर्ण देश या समाज ही धनी हो जाता है तब सम्पूर्ण देश की प्रजनन–दर घट जाती है।

परिपक्वता की यह अवस्था शीघ्र ही 'नष्ट काल' में बदल जाती है। इस तरह, गिनी के अनुसार, जनसंख्या में वृद्धि तथा कमी चक्रीय आधार पर होती है। पहले जनसंख्या में वृद्धि बहुत तीव्र गति से होती है, फिर यह गति धीमी पड़ जाती है और फिर एक दम कम हो जाती है।

गिनी का विचार है कि कुछ दैवी शक्ति इस प्रकार की है कि जनसंख्या अपने आप अर्थात् स्वमेव बढ़ती है फिर घटती है। इस तरह जनसंख्या के विकास की दर बदलती रहती है। गिनी के शब्दों में, "उपर्युक्त व्यक्त किए गए विचार विभिन्न सामाजिक वर्गों के विकास की दर में भिन्नता की प्राकृतिक घटना पर नवीन रूप में प्रकाश डालते हैं जिसने विगत वर्षो में अनेक विद्यार्थियों को राष्ट्रों के गुणों में क्रमशः तीव्रता से आयी गिरावट के सम्बन्ध में चिन्तित कर रखा है। इसके विपरीत हम यह देखते हैं कि यह सब 'ईश्वरीय प्रक्रिया' (Providential mechanism) उन सब परिवारों को समाप्त करने के लिए है जिन्होंने अपने विकास का चक्र पूरा कर लिया है।"

7.8 आहार सिद्धान्त की आलोचना

गिनी ने मनुष्य का जन्म, जीवन, मरण तथा गुणात्मक विकास सब अनजान जैविक तथ्यों पर आधारित कर दिया है। इस सम्बन्ध में **थॉम्पसन** एवं **लेविस** का कथन है कि "उसने मनुष्य के संख्यात्मक अर्थात उसकी सन्तानोत्पादन शक्ति, प्रजननशीलता तथा अस्तित्व एवं गुणात्मक अर्थात् मनुष्य की सभ्यता की विशिष्ट विशेषताओं के विकास के लिए कुछ आधारभूत रहस्यमय जैविकीय परिवर्तनों के महत्व को स्वीकार किया जिन पर मनुष्य का कोई नियन्त्रण नहीं है।" प्रो. गिनी ने जन्म–दर, मृत्यु क्रम, आदि जनांकिकीय घटकों तथा तथ्यों की वैज्ञानिक व्याख्या प्रस्तुत करने की बजाय इन्हें 'दैवी शक्ति' पर आधारित कर दिया है जो कि उचित नहीं है।

7.9 सारांश

इस अध्याय में हमने देखा की जनसंख्या और समाज के सम्बन्धों के बारे में कई विद्वानों ने अपने विचार व्यक्त किए हैं। इन विद्वानों में मतैक्य का अभाव होते हुए भी इन्होंने समाज को नए नजरिए से देखा है। स्पेंसर अपने प्रजनन फलां सिद्धांत के जरिए ये बताने का प्रयास किया कि जैसे जैसे समाज में व्यक्तिकरण बढ़ेगा उसी अनुपात में प्रजननता में कमी आती जाएगी। यही बात समाज में बढ़ती जटिलता के सन्दर्भ में भी लागू होती है। स्पेंसर ने जनसंख्या को जीव के आकार से भी सम्बन्धित करते हुए कहा की यदि जीव का आकार छोटा है तो उसकी प्रजनन दर अधिक होगी। यह तक कि उन्होंने माना है कि प्रजननता का सम्बन्ध जीवन शैली एवं कार्य की प्रकृति से सम्बन्धित होता है। उनका मानना है की मानसिक कार्यों में अधिक संलग्न एवं जिनका मानसिक विकास हो चुका है, विशेष रूप से महिलाओं में, उनकी सन्तानोत्पादन क्षमता का ह्रास हो जाता है। अन्त में स्पेंसर ये मानते हैं कि जनसंख्या वृद्धि हानिकारक नहीं होती है क्योंकि यह समाज के वृद्धि और विकास के द्वारा मानव को संसाधन के रूप में विकसित होने का अवसर देता है जो अन्ततः प्राकृतिक संसाधनों का उचित उपयोग को सम्भव बनाते हैं। वही कोरोडो गिनी मानते हैं कि इस सामाजिक जटिलता की वृद्धि के साथ साथ प्रजनन दर घटती है। गिनी का मानना है कि राष्ट्र के विकास की प्रक्रिया वास्तव में जनसंख्या के उतार–चढ़ाव पर निर्भर करती है। किसी समाज की जनसंख्या के उद्भव व विकास की व्याख्या करते हुए गिनी अपना मत व्यक्त करते हैं कि समाज में जनसंख्या वृद्धि की दर सदैव एक समान नहीं होती तथा प्रत्येक समाज में प्रायः उसके विभिन्न चरणों में भिन्न–भिन्न दरें रहती हैं, क्योंकि प्रजननशीलता का निर्धारण जैविकीय शक्तियों द्वारा होता है। इस प्रकार हम देखते हैं की जनसंख्या वृद्धि के सन्दर्भ में स्पेंसर ने जहां आशावादी दृष्टिकोण अपनाया है वही गिनी बढ़ती जनसंख्या को देश के आर्थिक विकास से जोड़ते हैं।

7.10 सन्दर्भ ग्रन्थ

- अग्रवाल एस एन, इंडियन पॉपुलेशन प्रॉब्लेम्स, टाटा मैकग्रा हिल, नई दिल्ली, 1977
- इन्द्रदेव सिंह, सामाजिक जनांकिकी, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1986
- Dr. Premi, M.K., Ramanamma, A., Bambawale, Usha,. An Introduction to social demography, Vikas Publishing House, New Delhi.
- Thompson, Warren S. and David T. Lewis: Population Problems; New York: Mc Graw Hill Book Co. 1976.
- डॉ. जे.पी. मिश्र, जनांकिकी, साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा

- डॉ. पन्त, जीवन चन्द्र, जनांकिकी, गोयल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ
- डॉ. मलैया, के.सी., जनसंख्या शिक्षा, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

7.11 बोध के प्रश्न

आइए अब हम इस अध्याय में सीखे गए तथ्यों से प्राप्त अपने ज्ञान परीक्षण करने के लिए वस्तुनिष्ठ एवं लघु तथा प्रश्नों का अभ्यास करें।

7.11.1 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. स्पेंसर के प्रजनन फलन सिद्धांत की आलोचनात्मक व्याख्या कीजिए।
2. स्पेंसर के प्रजनन फलन सिद्धांत की विशेषताओं एवं सिद्धांतों की, सैडलर व डबलडे के सिद्धांतों के मध्य समानता की व्याख्या कीजिए।
3. स्पेंसर के पुनरूत्पादन शक्ति से आपका क्या तात्पर्य है, की विस्तार से व्याख्या कीजिए।
4. गिनी के जैविक अवस्था सिद्धांत की विशेषता एवं व्याख्या विस्तार से कीजिए।
5. गिनी के जैविक अवस्था सिद्धांत की समीक्षात्मक व्याख्या कीजिए।

7.11.2 लघु उत्तरीय प्रश्न

1. स्पेंसर के शब्दों में अपने सम्पूर्ण चेतना में पुनरूत्पादन शक्ति से तात्पर्य तथ्यों की संक्षेप में व्याख्या कीजिए।
2. स्पेंसर ने प्रजनन क्षमता को कितने भागों में विभाजित किया है कि व्याख्या संक्षेप में कीजिए।
3. स्पेंसर के जनसंख्या सिद्धांत की व्याख्या कीजिए।
4. गिनी के जैविक अवस्था सिद्धांत की व्याख्या संक्षेप में कीजिए।
5. जैविक अवस्था सिद्धांत की विशेषताएं बताइए।

7.11.3 वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. स्पेंसर के प्रजनन फलन सिद्धांत को अन्य किस नाम से जाना जाता है –

   अ. प्राणिशास्त्रीय सिद्धांत

   ब. जनसंख्या सिद्धांत

   स. प्राकृतिक शक्तियों का सिद्धांत

   द. सामाजिक सिद्धांत

2. स्पेंसर ने अपने सिद्धांत में कितने तत्वों का उल्लेख किया है?

   अ. व्यक्तिकरण

   ब. उत्पत्ति

   स. दोनों

द. इनमें से कोई नहीं

3. स्पेंसर के अनुसार जैसे–जैसे सामाजिक जीवन की जटिलता बढ़ती जाती है वैसे–वैसे प्रजनन दर में .... होता है।

अ. वृद्धि

ब. स्थिरता

स. कमी

द. जटिलता

4. स्पेंसर ने प्रजनन क्षमता के आधार पर मनुष्य को कितने भागों में विभाजित किया ?

अ. तीन

ब. चार

स. पांच

द. छः

5. जीव के आकार का प्रजनन दर से उल्टा सम्बन्ध हैं। स्पेंसर के अनुसार ये कथन है–

अ. सत्य

ब. असत्य

6. प्रिंसिपल्स ऑफ बायोलॉजी पुस्तक के लेखक हैं–

अ. अगस्त कौंत

ब. हर्बर्ट स्पेंसर

स. कोरोडो गिनी

द. इनमें से कोई नहीं

7. गिनी के अनुसार प्रत्येक समाज में जनसंख्या वृद्धि की दर सदैव कैसी रही है?

अ. एक ही चरण एवं समान

ब. विभिन्न चरणें में परन्तु समान

स. विभिन्न चरणों में एवं असमान

द. उपरोक्त में से कोई नहीं

8. "प्रत्येक राष्ट्र अपने 'यौवन काल' में सरल तथा एक सी संरचना वाला होता है" कथन किसका है?

अ. थाम्पसन एवं लेविस

ब. कोरोडो गिनी

स. स्पेंसर

द. सैडलर

9. गिनी के अनुसार आर्थिक एवं सामाजिक जटिलताओं से जनसंख्या की प्रजनन दर क्या होती है?

अ. कम

ब. तीव्र

स. क्षीण

द. सामान्य

10. गिनी ने मनुष्य का जन्म, मरण तथा गुणात्मक विकास किन तथ्यों पर आधारित कर दिया है –

अ. सामाजिक

ब. अनजान जैविक

स. ईश्वरीय प्रक्रिया

द. दैवी शक्ति

7.12 वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर

1 (स), 2 (स), 3 (स), 4 (अ), 5 (अ), 6 (ब), 7 (स), 8 (ब), 9 (स), 10 (ब).

7.13 पारिभाषिक शब्दावली

- **प्रजननता (फर्टिलिटी)** – प्रजननता एक महत्वपूर्ण शब्द है जो मानव जीवन में जनसंख्या के सम्बन्ध में उपयोग होता है। इसका अर्थ है कि किसी समुदाय, जाति, या व्यक्ति की सन्तानों की उत्पत्ति की क्षमता। सामाजिक और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में प्रजननता को प्रभावित करने वाले कारकों में शिक्षा, धर्म, जाति, और सामाजिक आदर्श शामिल हैं। प्रजननता के निर्धारण में परिवार की आय, जीवन स्तर, व्यवसाय और आहार की प्रकृति आदि आर्थिक कारकों का महत्वपूर्ण योगदान होता है।

- **उर्वरता (फिकन्डिटी)** – यह एक महत्वपूर्ण शब्द है जो जीवों की जनसंख्या के सम्बन्ध में होता है। यह उनकी प्रजनन क्षमता को दर्शाता है, अर्थात् वे कितनी सन्तानें पैदा कर सकते हैं। यह विभिन्न प्रकार के जीवों में अलग–अलग हो सकता है। यह उनकी सन्तानों की संख्या को दर्शाता है। जीवों की प्रजनन क्षमता उनके जीवन चक्र के विभिन्न चरणों में बदल सकती है, जैसे कि युवावस्था, बुढ़ापा, या विभिन्न जीवन परिपर्णता की अवस्थाओं में। इसके माध्यम से हम जीवों की जनसंख्या में वृद्धि की दिशा में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। जीवों की जीवन चक्र में उर्वरता का प्रभाव यह दिखाता है कि जीवों की जीवन चक्र में उपजाऊपन कैसे बदलता है, जैसे कि युवावस्था से बुढ़ापा तक।

- **जनसंख्या वृद्धि** – जनसंख्या के आकार में परिवर्तन को जनसंख्या वृद्धि के नाम से जाना जा सकता है।

- **मानव विकास** – लोगों की आय तथा पूँजी के विस्तार के साथ ही मानव की

कार्यप्रणाली, कार्य करने के तरीके तथा क्षमताओं में उन्नयन की प्रक्रिया को मानव विकास का नाम दिया गया है।

इकाई–8 : हेनरी जॉर्ज का सामाजिक असंतुलन का सिद्धान्त और आर्सेन ड्यूमॉन्ट का सामाजिक केशाकर्षक का सिद्धान्त और फ्रैंक फिटर का जनसंख्या सिद्धान्त

इकाई की रूपरेखा

8.1 उद्देश्य

8.2 प्रस्तावना

8.3 जनसंख्या का अर्थ

8.4 जनांकिकी का क्षेत्र

8.5 जनांकिकी का विषय सामग्री

8.6 समाजशास्त्र एवं जनांकिकी

8.7 हेनरी जार्ज का सामाजिक असुंतलन का सिद्धान्त

8.8 हेनरी जार्ज का सामाजिक असमायोजन का सिद्धांत

8.9 आर्सेन ड्यूमण्ट का सामाजिक केशाकर्षक शक्ति का सिद्धान्त

8.10 फ्रैंक फिटर का जनसंख्या का सिद्धान्त

8.11 सारांश

8.12 सन्दर्भ ग्रन्थ

8.13 बोध के प्रश्न

8.13.1 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

8.13.2 लघु उत्तरीय प्रश्न

8.13.3 वस्तुनिष्ठ प्रश्न

8.14 वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर

8.15 पारिभाषिक शब्दावली

8.1 उद्देश्य

इस इकाई का उद्देश्य निम्न विषय के निम्न बिन्दुओं को समझने में मदद कराना है।

1. जनांकिकी का अर्थ आप जान सकेगे।
2. जनांकिकी का क्षेत्र, विषय सामग्री, के आशय को आप जान सकेगे।
3. हेनरी जॉर्ज का सामाजिक असंतुलन के सिद्धांत को आप समझ सकेगे।
4. आर्सेन ड्यूमॉन्ट का सामाजिक केशाकर्षक का सिद्धांत को आप समझ सकेगे।
5. फ्रैंक फिटर का जनसंख्या सिद्धांत को आप समझ सकेगे।

8.2 प्रस्तावना

समाजशास्त्री की दृष्टि से जनसंख्या के सिद्धान्त अधिक महत्त्वपूर्ण हैं। क्योंकि इन सिद्धान्तों में जनसंख्या की प्रवृत्तियों, जनसंख्या वृद्धि की विवेचना सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक परिस्थितियों तथा घटनाओं के सन्दर्भ में की गई है। इन सिद्धान्तों में इन्हीं परिस्थितियों को जनसंख्या वृद्धि के लिए उत्तरदायी ठहराया गया है। साथ ही मानवीय प्रवृत्तियों को भी पर्याप्त स्थान जनसंख्या वृद्धि या ह्रास के निर्धारण में दिया गया है। समाजवादी व साम्यवादी विचारकों ने अति जनसंख्या के विचारों के प्रति असहमति व्यक्त करते हुए समाज के पुनर्गठन पर विशेष बल दिया है। इन विद्वानों का विचार है कि समाज में धन और आय का असमान वितरण तथा सामाजिक व्यवस्था की अन्य सामाजिक, आर्थिक बुराइयाँ ही मानव के दुःखों का वास्तविक कारण हैं, न कि जनसंख्या। जनसंख्या के इन सिद्धान्तों के अन्तर्गत उन तमाम विचारकों के विचारों को सम्मिलित किया गया है जिन्होंने विविध सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं मनोवैज्ञानिक मान्यताओं के आधार पर जनसंख्या सम्बन्धी विचार प्रस्तुत किये हैं। इन सिद्धान्तों को जनसंख्या के मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त (Psychological Theory of Population) के नाम से भी सम्बोधित किया जा सकता है। उस संदर्भ में निम्न विद्वानों के विचार, जिन्हें जनसंख्या के सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक सिद्धान्त के अन्तर्गत सम्मिलित किया जाता है।

8.3 जनसंख्या का अर्थ

जनसांख्यिकी (demography) जनसंख्या का सुव्यवस्थित अध्ययन है। हिंदी में इसे जनांकिकी भी कहा जाता है। इसका अंग्रेजी पर्याय डेमोग्राफी यूनानी भाषा के दो शब्दों डेमोस (demos) यानी (लोग) और ग्राफीन (graphien) यानी वर्णन से मिलकर बना है, जिसका तात्पर्य है – लोगों का वर्णन जनसांख्यिकी विषय के अंतर्गत जनसंख्या से संबंधित अनेक रुझानों तथा प्रक्रियाओं का अध्ययन किया जाता है, जैसे; जनसंख्या के आकार में परिवर्तन; जन्म, मृत्यु तथा प्रवसन के स्वरूप; और जनसंख्या की संरचना और गठन अर्थात् उसमें स्त्रियों, पुरुषों और विभिन्न आयु वर्ग के लोगों का क्या अनुपात है? जनसांख्यिकी कई प्रकार की होती है जैसे, आकारिक जनसांख्यिकी (formal demography) जिसमें अधिकतर जनसंख्या के आकार यानी मात्रा का अध्ययन किया जाता है और सामाजिक जनसांख्यिकी जिसमें जनसंख्या के सामाजिक, आर्थिक या राजनीतिक पक्षों पर विचार किया जाता है। सभी प्रकार के जनसांख्यिकीय अध्ययन गणना या गिनती की प्रक्रियाओं पर आधारित होते हैं, जैसे कि जनगणना या सर्वेक्षण, जिनके अंतर्गत एक निर्धारित प्रदेश के भीतर रहने वाले लोगों के बारे में सुव्यवस्थित रीति से आँकड़े एकत्र किए जाते हैं।

8.4 जनांकिकी का क्षेत्र

जनांकिकी के क्षेत्र के रूप में इस तथ्य से आप परिचित हैं कि जनांकिकी एक गतिशील विज्ञान है। अतः इसके क्षेत्र में निरन्तर वृद्धि होती जा रही है। प्रसिद्ध अर्थशास्त्री डॉ० जॉन मेनार्ड कीन्स ने कहा है कि क्षेत्र (Scope) के अध्ययन में तीन बातें शामिल होना चाहिए–

- सम्बन्धित शास्त्र (जनांकिकी) की विषय सामग्री
- सम्बन्धित शास्त्र (जनांकिकी) की प्रकृति या स्वभाव

- सम्बन्धित शास्त्र (जनांकिकी) का अन्य शास्त्रों (या विज्ञानों) से सम्बन्ध

8.5 जनांकिकी की विषय सामग्री

जनांकिकी के विषय में अध्ययन करने पर आपको ज्ञात हो गया है कि जनांकिकी की सर्वसम्मत या सर्वमान्य परिभाषा देना बहुत कठिन है। इसके क्षेत्र और विषय सामग्री का कोई सर्वसम्मत तथ्य प्राप्त नहीं है। इस सन्दर्भ में दो दृष्टिकोण है यथा– व्यापक दृष्टिकोण जिसके अन्तर्गत प्रमुख रूप से स्पेग्लर (pangler), वॉन्स (Vance). राइडर (Ryder), लोरिमेर (Lorimer) तथा मूरे (Moore) आदि के विचारों को सम्मिलित किया जा सकता है। दूसरा दृष्टिकोण संकुचित दृष्टिकोण – जिसके अन्तर्गत प्रमुख रूप में हाउजर एवं डंकन (P-H- Houser and D-Duncan), बर्कले (Barclay), थाम्पसन तथा लेविस (Thompson and Lewis) व आइरीन टेउबर (Irene Teauber) आदि के विचारों को सम्मिलित किया जा सकता है।

8.6 समाजशास्त्र एवं जनांकिकी

जनसंख्या एक सामाजिक प्रमेय है। इस दृष्टि से समाजशास्त्र के अन्तर्गत जनसंख्या सम्बन्धी निम्नलिखित तथ्यों का अध्ययन किया जाता है।

- पारिवारिक संरचना
- समाज एवं समुदाय
- धर्म का स्वरूप
- शिक्षा का स्तर
- जाति व्यवस्था
- संस्कृति एवं संस्कार

प्रवास के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण जनांकिकी अध्ययन के समाजशास्त्रीय पहलू को स्पष्ट करते हुए F-W-Notestein ने कहा है कि, जब एक जनसंख्या शास्त्री जन्म दर के आंकड़ों को व्यक्त करता है तब उसकी याद रखना पड़ता है कि प्रत्येक संख्या एक पुत्र/पुत्री की अभिव्यक्ति करती है, जब मृत्यु के आंकड़े सामने आते हैं तब उसे याद रखना पड़ता है कि प्रत्येक संख्या एक दुखद घटना को व्यक्त करती है; जब वह विवाह का अध्ययन करता है तो उसे याद रखना पड़ता है कि उसका सम्बन्ध मानव समाज की एक आधारभूत संस्था से है।

8.7 हेनरी जार्ज का सामाजिक असंतुलन का सिद्धान्त

यह अमेरिका का अर्थशास्त्री और समाज सुधारक था। इसका जन्म 1838 तथा मृत्यु 1897 में हुई। इसके सिद्धान्त को सामाजिक असन्तुलन का सिद्धान्तशास्त्री (Social Maladjusment Theory) और एक कर का सिद्धान्तशास्त्री (Theory of Single Tau) के नाम से भी सम्बोधित किया जाता है। जार्ज का मत था कि सरकार को केवल एक ही कर लेना चाहिए जो जनता द्वारा भूमि के प्रयोग के बदले में दिया जाता है। साथ ही इसे भूमि का सर्वोत्तम प्रयोग करने वालों से सरकार को सीधा कर लेना चाहिए। आपका मत था कि

जनसंख्या वृद्धि तथा जीवन–निर्वाह के साधनों की कमी के प्रति कोई चिन्ता की आवश्यकता न होगी, यदि भूमि पर कुछ विशेष व्यक्तियों का अधिकार न होकर सम्पूर्ण समाज का अधिकार होगा संक्षेप में, जनसंख्या के सम्बन्ध में हेनरी जार्ज निष्कर्ष पर पहुंचे थे।

हेनरी जार्ज ने जनसंख्या के सिद्धान्त के बारे में स्वयं लिखा है– जनसंख्या का नियम मानव जाति के वैदिक विकास के नियम से सम्बन्धित रहता है। यह डर कि विश्व में ऐसे व्यक्ति जन्म लेते रहेंगे, जिन्हें जीवन–यापन के लिए साधन उपलब्ध न हो सकेंगे, प्रकृति की कृ पणता/लालच/कंजूसी आदि के कारण नहीं होंगे वरन् यह तो उस सामाजिक व्यवस्था के कारण होता है जिसमें समृद्धि के बीच में भी मानव जाति की अतृप्त आवश्यकताएँ अतृप्त बनी रहती हैं। इस कथन से स्पष्ट है कि हेनरी जार्ज, बढ़ी हुई जनसंख्या से उत्पन्न खाद्यान्न संकट के लिए प्रकृति को दोषी नहीं मानता, बल्कि सामाजिक अव्यवस्था को ही इसके लिए उत्तरदायी मानता है, जिसमें देश की सम्पत्ति कुछ लोगों के हाथों में ही सीमित हो जाती है। आपका यह दृढ़ विश्वास था कि यदि जमींदारी प्रथा को समाप्त कर कृषकों को भूमि का स्थायी अधिकार दे दिया जाये तो कृषि उत्पादन में पर्याप्त वृद्धि हो सकेगी। फलतः जनसंख्या की समस्या सरलता से हल हो जायेगी। जार्ज इस बात को स्वीकार करते थे कि मानव के बौद्धिक विकास के साथ–साथ प्रजनन क्षमता घटती है फलतः जन्मदर कम हो जाती है। जैसे–जैसे मानव का बौद्धिक विकास होता जायेगा वैसे–वैसे उसकी प्रजनन क्षमता घटती चली जायेगी। अतः जनसंख्या वृद्धि के प्रति चिंतित होने की आवश्यकता नहीं है। जनसंख्या का सिद्धान्त के समान और आधीन है। जार्ज मनुष्य की संख्या में वृद्धि की प्रवृत्ति और जीवन–निर्वाह सामग्री प्रदान करने की क्षमता में कोई विरोध नहीं मानते। सिद्धान्त की समालोचना–हेनरी जार्ज ने अपने सिद्धान्त में यह स्पष्ट नहीं किया है कि बौद्धिक विकास में वृद्धि के साथ जनसंख्या क्यों घटेगी। अर्थात् जनसंख्या में कमी प्रजनन शक्ति के क्षीण होने के कारण होगी या मानव द्वारा स्वेच्छा से परिवार परिसीमन के लिए अपनाये गये प्रतिबंधक उपायों द्वारा होगी। जनसंख्या तथा खाद्य सामग्री के प्रति जार्ज आवश्यकता से अधिक आशावादी प्रतीत होते हैं। जार्ज ने भूमि असमान वितरण और सामाजिक अव्यवस्था को जनसंख्या का निर्णायक कारक मान लिया है जबकि जनसंख्या की समस्या एक बहुकारकीय समस्या है जिसके लिए अनेक कारक उत्तरदायी हैं। इस प्रकार यह सिद्धान्त पूर्ण नहीं माना जा सकता है।

8.8 हेनरी जार्ज का सामाजिक असमायोजन सिद्धान्त

इस सिद्धांत का प्रतिपादन प्रसिद्ध अमेरिकी अर्थशास्त्री हेनरी जार्ज (हेनरी जॉर्ज) ने किया था, उन्होंने अपने सिद्धांत में एक कर (एकल कर) की प्रथा का प्रचार किया था। उनके अनुसार सिद्धांत यह है कि जनसंख्या का नियम मानव जाति के विकास के नियमों से संबंधित है। यह भय है कि विश्व में ऐसे व्यक्ति जन्म लेंगे, जिसे जीवन–यापन के साधन की सुविधा नहीं होगी, प्रकृति की कृपा के कारण नहीं होगा। यह उस सामाजिक व्यवस्था का कारण बनता है जिसमें समृद्धि के मध्य मानव जाति की अतृप्त आवश्यकताएँ संरक्षित रहते हैं। इस सिद्धांत की अद्योलिखित प्रमुख विशेषताएं हैं।

- जार्ज के मत अन्य सन्तानोत्पादन की प्रवृत्ति और जीवन निर्वाह के साधन को क्षमता के मध्य किसी भी प्रकार का विरोध नहीं है। लेकिन यह स्थिति तब उत्पन्न हो सकती है जब इन शिक्षकों पर समाज का अधिकार हो।
- जॉर्ज के विचार प्रस्तावना की समस्या और जीवन निर्वाह के मतदाता के मध्य

समायोजन की समस्या है। इसके लिए सरकार ने भूमि का सर्वोत्तम उपयोग करने वाले से पितृत्व ग्रहण कर लिया। इसके अतिरिक्त किसी अन्य कर को वसूलने के पक्ष में नहीं थे।

- जनसंख्या वृद्धि उच्च मृत्यु दर और अधिक आराम के छात्रों की उपलब्धि के परिणाम है.इसके विपरीत जनसंख्या में कमी, व्यक्तिगत विकास व जाति के भविष्य में रहने की निश्चितता पर आधारित होता है.

आलोचना – इस सिद्धांत की आलोचना का आधार निम्नलिखित है। इस सिद्धांत में साध्य की अधिकतम सीमा का उल्लेख नहीं किया गया है। जिस गति से जनसंख्या में वृद्धि उस गति से जीवन–निर्वाह के प्रेरणा का विकास संभव नहीं है। इस सिद्धांत से यह स्पष्ट नहीं होता कि मानसिक विकास का कारण किस प्रकार संतानोत्पादन शक्ति कम होगी। जनसंख्या वृद्धि की व्याख्या मातृभूमि कर द्वारा ही नहीं हो सकती अन्य प्राकृतिक सामाजिक एवं सांस्कृतिक घटकों को ध्यान में रखकर करना आवश्यक है।

8.9 आर्सेन ड्यूमाण्ट सामाजिक केशाकर्षक शक्ति का सिद्धान्त

1. ड्यूमण्ट जिनका पूरा नाम अरसन ड्यूमण्ट (Arsene Dumont) था, का जन्म 1849 तथा मृत्यु 1902 में हुई। आप स्टेन्सबर्ग (Strasbourg) विश्वविद्यालय में प्रोफेसर थे। आपका सिद्धान्त फ्रांसिसी जनसंख्या के विकास के अध्ययन पर आधारित है, जिसे केशाकर्षण शक्ति का सिद्धान्त का नाम इन्होंने स्वयं दिया था। ड्यूमण्ट ने जनसंख्या के सिद्धान्त को समाज में उन्नति की चाह से सम्बन्धित किया है। उन्हीं के अनुसार, भौतिक जगत में जो स्थान गुरुत्वाकर्षण शक्ति का है। तात्पर्य यह है कि मानव जैसे–जैसे सामाजिक वातावरण में उच्च जीवन स्तर की ओर आगे बढ़ने का प्रयत्न करता है, तब वह परिवार तथा समाज की उन्नति की अपेक्षा स्वयं की उन्नति को अधिक महत्त्व देने लगता है और उसी में व्यस्त रहता है। फलतः सन्तानोत्पादन में उसकी रुचि कम हो जाती है। जैसा कि अति संक्षेप में उसने स्वतः कहा है कि किसी देश में जनसंख्या वृद्धि मनुष्य के विकास के अनुपात में कम होती है। जैसे किसी तरल पदार्थ को केशाकर्षण की शक्ति के सहारे ऊपर चढ़ने के लिए पतला होना चाहिए, ठीक इसी प्रकार सामाजिक सोपान में ऊपर चढ़ने के लिए परिवार का आकार छोटा होना चाहिए। तात्पर्य यह है कि सामाजिक स्तर की उच्चता को प्राप्त करने के लिए परिवार का छोटा होना आवश्यक है। ड्यूमण्ट ने स्पेन्सर की भाँति जनसंख्या में परिवर्तन के प्राणिशास्त्रीय आधार को स्वीकार नहीं करते बल्कि जन्मदर की कमी का कारण सामाजिक केशाकर्षण शक्ति या समाज में उन्नति करने की चाह को मानते हैं।

2. मनुष्य के विकास और जनसंख्या वृद्धि में इस दृष्टि से विपरीत आनुपातिक सम्बन्ध कहा जा सकता है। ड्यूमण्ट के जनसंख्या सिद्धान्त की प्रमुख बातें इस प्रकार हैं– जैसे–जैसे मनुष्य का बौद्धिक विकास होता है, वैसे–वैसे जनसंख्या वृद्धि का अनुपात कम होता जाता है। किसी देश की जनसंख्या वृद्धि मनुष्य के विकास के अनुपात में कम होती जाती है। ड्यूमण्ट के अनुसार माल्थस का यह कथन कि जनसंख्या ज्यामितिक अनुपात से बढ़ती है, फ्रांस के अर्थशास्त्री जोसेफ गार्नर (Joshep Garnier) ने इसे सत्य प्रमाणित कर दिया है। वास्तव में मनुष्य के जीवन स्तर के विकास के साथ–साथ व्यक्ति अपना सामाजिक स्तर बढ़ाने का प्रयत्न करता है और चूंकि यह

उद्देश्य बच्चों की संख्या कम रखकर ही प्राप्त कर सकता है अतः आय और धन के विकास के साथ–साथ बच्चों की संख्या घटती है। ड्यूमण्ट ने जनसंख्या के सिद्धान्तों को तीन प्रमुख भागों में बाँटा है–

3. माल्थस का सिद्धान्त–यह सिद्धान्त उस पिछड़े, असभ्य और जंगली समाजों पर लागू होता है, जहाँ वे जो पाते हैं वही खाते हैं और अपने नियम का पालन करते हैं। ऐसे ही व्यक्तियों के समाज में जनसंख्या ज्यामितिक अनुपात से बढ़ती है। क्लोलार्ड का जनसंख्या सिद्धान्त (Quillared's principle of Population)– जब असभ्य और जंगली समाज सभ्यता की ओर विकसित होता हुआ आगे बढ़ता है, तो वहाँ जहाँ रोटी उत्पन्न होती है, वहाँ मुँह भी उत्पन्न हो जाते हैं और वहाँ नियम क्रियाशील होता है। इन समाजों में जनसंख्या में वृद्धि, खाद्य सामग्री में वृद्धि के अनुपात में होती है। ड्यूमण्ट का कथन है कि ऐसे समाजों में माल्थस के द्वारा बताये गये प्राकृतिक या प्रत्यक्ष अवरोध (Positive Check) के लागू होने का प्रश्न नहीं उठता है। सामाजिक केशाकर्षण शक्ति का सिद्धान्त–ड्यूमण्ट का मत है कि जब समाज पूर्ण विकसित हो जाता है तो ऐसे समाज में प्रत्येक व्यक्ति जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में न केवल आर्थिक, राजनीतिक क्षेत्र में ही आगे बढ़कर प्रतिष्ठा अर्जित करना चाहता है। पर यह तभी सम्भव है जबकि व्यक्ति के आचरण में विवेकपूर्ण चिंतन तथा किसी आदर्श के प्रति गहन लगाव हो। जैसे ही व्यक्ति में इनके प्रति लगाव शुरू हो जाता है, वैसे ही प्रजनन दर घटने लगती है। उसके अनुसार, जिस क्षण से मनुष्य के आचरण में विवेकपूर्ण चिंतन तथा किसी आदर्श के प्रति लगाव शुरू होता है, तब हमको जनसंख्या की एक नयी (घटती हुई प्रजनन–दर) नियम मिलता है वास्तव में बच्चों रूपी समान का भार लेकर कोई व्यक्ति समाज की प्रगति की सीढ़ी में ऊपर नहीं चढ़ सकता।

4. ड्यूमण्ट अपने जनसंख्या सिद्धान्त को समाज के विकास से सीधा सम्बन्धित मानता है। उसका मत है कि प्रजनन दर का सामाजिक केशाकर्षण शक्ति से विपरीत सम्बन्ध है। इन दोनों में एक दूसरे से विपरीत जाने की प्रवृत्ति पायी जाती है। जहां का समाज उन्नत है वहाँ लोगों में ऊपर जाने की चाह बढ़ती है। ऐसे समाज में वर्गीय गतिशीलता खुली होती है। अतः व्यक्तियों में ऊँचे उठने की चाह में वृद्धि के साथ प्रजनन क्षमता घटती है। ड्यूमण्ट के अनुसार, जैसा किसी तरल पदार्थ को ऊपर चढ़ने के लिए पतला होना चाहिए, उसी प्रकार से परिवार को समाज में ऊपर चढ़ने के लिए छोटा होना चाहिए। यही कारण है कि सभ्य व सुसंस्कृत होते जाते हैं तथा समाज में ऊपर उठते जाते हैं। मानव प्रतिष्ठा में जैसे–जैसे वृद्धि होती जाती है। वैसे–वैसे जन्मदर में कमी आती जाती है। ड्यूमण्ट ने फ्रान्स का उदाहरण देते हुए बताया है कि वहाँ सामाजिक व्यवस्था नहीं है, वर्गों में गतिशीलता कम है वहाँ जन्मदर ऊँची है।

5. ड्यूमण्ट का कथन है कि गरीब व्यक्तियों की समाज में अधिक सन्तानें इसीलिए अधिक होती हैं, कि वे अपना समय, धन और शक्ति समाज में ऊपर उठने में न लगाकर बच्चा पैदा करने में ही लगाते हैं। समाज में जो व्यक्ति जितना अधिक गरीब होगा उसे ऊपर उठने के लिए उतना ही अधिक प्रयत्न करना होगा। सामाजिक केशाकर्षण तथा सामाजिक गतिशीलता के लिए आवश्यक है गरीब अपना ध्यान बच्चा पैदा करने से हटाकर ऊपर उठने में लगायें तथा कम बच्चे पैदा करें।

6. ड्यूमण्ट ने नगरों और गाँवों में पाई जाने वाली प्रजननदर की भिन्नता को स्पष्ट करते हुए कहा है कि नगर में प्रजननदर इसलिए कम नहीं कि वहाँ धन या समृद्धि अधिक है,

बल्कि इसलिए है कि नगरवासियों में समाज में ऊपर उठने की चाह अधिक होती है। यहाँ के लोगों में ऊपर उठने की चाह भी है और इस सम्बन्ध में ज्ञान भी उपलब्ध है तथा इनका चिन्तन व आचरण भी विवेकपूर्ण है। नगर का मुक्त वातावरण, सामाजिक–वर्गीय गतिशीलता का खुला अवसर, मध्यम श्रेणी के लोगों में आगे बढ़ने की इच्छा और लगन, ऊँचा रहन–सहन का स्तर तथा ऊँची लागत आदि अनेक कारणों से यहाँ की प्रजननदर कम होती है। जबकि गाँवों में प्रजननदर, उपर्युक्त नगरीय विशेषताओं के अभाव में अधिक रहती है। ड्यूमण्ट का कथन है कि ग्रामीण जनता की दरिद्रता स्वयं में ऊँची जन्मदर का कारण नहीं, बल्कि इसका कारण ग्रामीणों की अज्ञानता, बढ़ने का उत्साह और चाह की कमी का होना, रूढ़ियाँ और रूढ़िवादिता तथा प्रतिबन्धित सामाजिक जीवन व जातिवाद आदि हैं। ड्यूमण्ट अपने उपर्युक्त जनसंख्या सम्बन्धी विचारों के कारण समाजवादी सामाजिक आर्थिक व्यवस्था को अच्छा नहीं मानते। आपका विचार है कि समाजवादी व्यवस्था में व्यक्ति के ऊपर उठने के अवसर सीमित हो जाते हैं, (प्रतिबन्धित होते हैं) अतः व्यक्ति के ऊपर उठने की चाह पर बुरा प्रभाव पड़ता है। साथ ही ऐसी व्यवस्था में रोजगार की सुनिश्चितता होती है फलतः व्यक्ति को प्रजनन दर सीमित रखने की प्रेरणा ही प्राप्त नहीं होती है। तात्पर्य यह है कि ऐसी अर्थ–व्यवस्था में ड्यूमण्ट का सिद्धान्त क्रियाशील नहीं होता। इसी तरह आप गलाकाट प्रतियोगिता वाले समाज को भी अच्छा नहीं मानते क्योंकि ऐसे समाज में सामान्य और गरीब व्यक्ति को ऊपर उठने का अवसर नहीं मिलता तथा अवसर भी कम होते हैं। इस प्रकार की सामाजिक आर्थिक व्यवस्था को भी जनसंख्या की दृष्टि से आपने ठीक नहीं माना है। समालोचना ड्यूमण्ट ने निश्चय ही बड़े बुद्धिमत्तापूर्ण ढंग से अपने सिद्धान्त को प्रतिपादित किया है। उनका यह कथन भी काफी सत्यता रखता है कि नगर में जन्म–दर, गाँव की तुलना में कम होती है। इस सिद्धान्त को स्पेन्सर के सिद्धान्त पर सुधार भी माना जा सकता है पर इन तथ्यों के बावजूद भी इसे दोष–रहित कहा जा सकता है। संक्षेप में इस सिद्धान्त में निम्न कमियाँ हैं :

- ड्यूमण्ट के जनसंख्या सिद्धान्त को जनसंख्या के नियम के रूप में कदापि स्वीकार इस बात से नहीं किया जा सकता।

- यह कथन कि नगर की जन्मदर गाँव से कम होती है, सार्वभौमिक रूप में स्वीकार नहीं किया जा सकता। यदि भारतीय औद्योगिक नगरों पर नजर डालें तो यह कहना गलत न होगा कि यदि यहाँ के श्रमिक जो गाँव से आये हैं, अपनी पत्नी के साथ नगर में रहें तो यहाँ की जन्मदर शायद गाँव से कम न होगी।

- समाज में ऊपर उठना बच्चों की संख्या पर निर्भर होता, तो इसमें दो मत नहीं जाती कि समाज के वे लोग जो सन्तानहीन हैं, समाज में सबसे ऊपर होते।

- समाज में ऊपर उठना मात्र बच्चों पर निर्भर नहीं करता, बल्कि देश की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक तथा औद्योगिक परिस्थितियों पर निर्भर करता है।

- यदि हम समाज को देखें तो ऐसे व्यक्तियों की कमी नहीं है जो समाज में ऊपर भी उठे हैं लेकिन अधिक बच्चे वाले भी हैं और अधिक बच्चे पैदा करते हैं। इसके विपरीत समाज में ऐसे लोगों की कमी नहीं जो नीचे हैं, गरीब हैं, पर उनके कम बच्चे हैं और कम बच्चे पैदा करते हैं। इस आधार पर भी यह सिद्धान्त सत्य प्रमाणित नहीं होता है।

- ड्यूमण्ट का यह कथन है कि प्रजननदर ऊपर उठने की चाह से निश्चित व प्रभावित होती है, एक–पक्षीय दृष्टिकोण का परिचायक है। प्रजननदर वास्तव में इससे भी कहीं अधिक अन्य कारकों से प्रभावित व निश्चित होती है।

इस सिद्धांत के प्रतिपादक आर्मेन ड्यूमैण्ट (Arsene Dumont) थे। उन्होंने फ्रांस की जनसंख्या का अध्ययन कर इस सिद्धांत का प्रतिपादन किया है। इस सिद्धांत में उन्होंने सामाजिक केशाकर्षण शक्ति और सन्तानोत्पादन शक्ति में संबंध स्थापित करने का प्रयास किया है। इस सिद्धांत की प्रमुख विशेषताएं निम्नवत् हैं :

- ड्यूमण्ट के मतानुसार भौतिक जगत में गुरुत्वाकर्षण के नियम का जो महत्व है वही सामाजिक जगत में केशाकर्षण की शक्ति का है। इस शक्ति का अभिप्राय मनुष्य की समाज में उन्नति करने की अभिलाषा से है।
- समाज में व्यक्ति ज्यों–ज्यों उच्च जीवन–स्तर की ओर अग्रसर होता है वैसे–वैसे उसकी संतानोत्पादन प्रक्रिया में रुचि कम होने लगती है। यह कुटुम्ब और समुदाय की बजाय ही अधिक रुचि लेने लगता है। इससे अपकर्षण शक्ति और संतानोत्पादन शक्ति में विपरीतत्मक संबंध है।
- ड्यूमण्ट ने जनसंख्या के विषय में प्रतिपादित सिद्धांतों को तीन वर्गों में विभाजित किया है– (अ) माल्थस का जनसंख्या का सिद्धांत जो जानवरों जैसी स्थिति अथवा असभ्य समाज पर लागू होता है।
- कोलार्ड का सिद्धांत जो विकासशील अर्थ–व्यवस्था अपवर्ट असभ्य समाज पर जहाँ रोटी की सुलभता के साथ जनसंख्या वृद्धि होती है, एवं जनसमाज पूरी तरह विकसित हो जाता है तो सामाजिक केशाकर्षण शक्ति का नियम लागू होता है। ऐसे समाज में प्रस्ताव उपलब्ध व्यक्ति सन्तानोत्पादन की अपेक्षा व्यक्तिगत विकास की ओर अधिक ध्यान देता है।
- प्रजनन–दर नगरों में कम और गांवों में अधिक रहती है। इस कारण नगरों में जन्मदर का कम होना धन और समृद्धि का नहीं बल्कि प्रतिष्ठा की अभिलाषा का प्रतीक है। गांव में सरलता और रुढ़िवादिता के कारण प्रतिष्ठा की कामना नहीं रहती फलतः जन्मदर अधिक होती है।

आलोचना– समाज में उच्चस्तरीय जीवन की कामना के अतिरिक्त अन्य सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक कारक जनसंख्या को प्रभावित करते हैं। इस सिद्धांत में उन सभी कारकों को ध्यान में नहीं रखा गया है। समाज में प्रतिष्ठित स्थान की अभिलाषा का सन्तानोत्पादन शक्ति से विपरीत संबंध नियम के रूप में लागू नहीं हो सकता। उच्च–स्तर के भी अनेक व्यक्ति ऐसे हो सकते हैं जिनका जन्मदर अधिक हो। इसके विपरीत निम्न पदों पर कार्यरत व्यक्तियों के बच्चे कम हो सकते हैं।

8.10 फ्रैंक फिटर का जनसंख्या का सिद्धान्त

फ्रैंक फिटर ने जनसंख्या सिद्धान्त का प्रतिपादन 19वीं शताब्दी के अन्त में किया। इस सिद्धान्त को एच्छिकवाद का सिद्धान्त (Theory of Valuntarism) के नाम से जाना जाता है। फिटर माल्थस के सिद्धान्त से सहमत नहीं है। आपके अनुसार माल्थस का सिद्धान्त एकपक्षीय था, उसकी सबसे बड़ी त्रुटि यह रही है कि उसने प्रजननदर के निर्धारण में मानव की

स्वाभाविक काम प्रवृत्ति तथा सम्भोग क्रिया को महत्त्व दिया है। दूसरे कारकों के प्रभाव की अवहेलना की है। इसी तरह मृत्यु के लिए खाद्यान्न की कमी को ही महत्त्वपूर्ण माना है। फिटर जन्म और मृत्यु के अन्य महत्त्वपूर्ण कारकों पर प्रकाश डालता है। आपके अनुसार जनसंख्या का अभी तक कोई भी एक सिद्धान्त नहीं है, जो जनसंख्या सम्बन्धी विभिन्न घटनाओं को स्पष्ट करता हो। फिटर के जनसंख्या सिद्धान्त की प्रमुख बातें इस प्रकार हैं– धनी व्यक्तियों में प्रजननदर–उसने लिखा कि धनी व्यक्ति जन्मदर को स्वेच्छा से, बुद्धि और समझदारी से नियन्त्रित करते हैं। यही कारण है कि धनी व्यक्तियों में तुलनात्मक दृष्टि से प्रजननदर की मात्रा निम्न होती है। धनी व्यक्तियों में, फिटर के अनुसार, प्रजनन दर कम होने के कारण हैं :

धनी व्यक्तियों का मौलिक उद्देश्य भौतिक सुख साधनों का पर्याप्त मात्रा में उपभोग करता है। उनका विश्वास है कि यदि सन्तानें अधिक होंगी तो उन्हें सुख साधनों के उपभोग में कठिनाई होगी, इसीलिए, भौतिक सुखों के उपभोग के लिए धनी व्यक्ति कम बच्चे पैदा करते हैं।

धनी व्यक्तियों के जीवन का मूल उद्देश्य सम्पत्ति का संचय और एकीकरण होता है। उनका विश्वास है कि यदि सन्तानें अधिक होंगी तो सम्पत्ति का एकीकरण सम्भव नहीं हो सकेगा इसलिए सम्पत्ति के एकीकरण के दृष्टिकोण से भी वे बच्चे कम पैदा करते हैं।

धनी व्यक्तियों को बच्चों के पालन–पोषण में भी तुलनात्मक रूप से अधिक खर्च करना पड़ता है, इसके साथ ही वे किसी प्रकार के उत्पादन सम्बन्धी कार्यों में हाथ नहीं बंटाते हैं। इसलिए एक और प्रति बच्चा अधिक खर्च करना पड़ता है तो दूसरी ओर उनसे किसी प्रकार के आर्थिक लाभ की सम्भावना भी नहीं रहती है। इस दृष्टि से भी धनी व्यक्ति गरीबों की तुलना में कम बच्चे पैदा करते हैं।

निर्धनों में प्रजननदर–फिटर के अनुसार निर्धन व्यक्ति अपनी इच्छा से सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों के कारण अधिक बच्चे पैदा करते हैं। उसके अनुसार निर्धनों में प्रजनन दर ऊँची होने के निम्न कारण हैं :

फिटर के अनुसार निर्धन व्यक्तियों की सन्तानें शीघ्र ही उत्पादक कार्यों में लग जाती हैं अर्थात् वे किसी–न–किसी प्रकार का पारिश्रमिक कार्य करने लगती हैं। इसलिए गरीब व्यक्तियों में तुलनात्मक रूप से प्रजनन दर अधिक पाई जाती है। उसके अनुसार निर्धन व्यक्तियों को अपनी सन्तानों के पालन–पोषण में कम पैसा खर्च करना पड़ता है। इस दृष्टि से भी बच्चे कम पैदा हों या अधिक इसकी इन्हें विशेष चिन्ता नहीं रहती है। फिटर के अनुसार प्रजनन दर की अधिकता या कमी का कारण विवेक या बुद्धि है। उसने लिखा है कि तुलनात्मक दृष्टि से गरीब व्यक्ति कम विवेकशील होते हैं इससे उनमें प्रजननदर अधिक रहती है। अन्त में, उसके अनुसार निर्धन में उत्तराधिकार की समस्या भी जटिल नहीं होती है, इसके परिणामस्वरूप भी उनमें प्रजनन दर अधिक रहती है। फ्रैंक फिटर ने इस प्रकार के विचार व्यक्त किये हैं कि जैसे–जैसे ही समाज की आर्थिक स्थिति ऊंची होती जाएगी जन्मदर उसी मात्रा में नीचे गिरती जायेगी।

इस सिद्धांत का प्रतिपादन फ्रेंक फेटर (Frank Feter's) ने किया। उन्होंने माल्थस के सिद्धांत की कटु आलोचना करते हुए उसे एकपक्षीय सिद्धांत की संज्ञा प्रदान की। उन्होंने कहा कि माल्थस के जन्मदर के सन्दर्भ में मनुष्य की काम प्रवृत्ति को सर्वोपरि महत्व दिया है। उन्होंने मनुष्य को जटिल प्रणाली माना है। इस सिद्धांत की प्रमुख विशेषताएं निम्नवत हैं :

मनुष्य ज्यों–ज्यों प्रगति करता है। उसी के साथ–साथ उसे अधिकाधिक मुक्ति मिलती जाती है। उनका व्यवहार मात्र शारीरिक आवश्यकताओं द्वारा ही नहीं, वरन् उसकी अपनी

अभिलाषाओं, आदर्शों एवं अनुभवों द्वारा भी प्रभावित होता है।

पुनरुत्पादन व्यवहार के अन्तर्गत अनेक प्रकार की मनोवृत्तियां निहित होती हैं। इसके लिए उन्होंने समाज को धनी एवं निर्धन वर्ग में विभाजित किया है। इनका मत था कि धनी तथा गरीब व्यक्तियों के लिये प्रजनन प्रवृत्ति के विश्लेषण की व्याख्या भिन्न–भिन्न होगी।

धनी व्यक्ति अपनी इच्छा से कम बच्चे निम्नलिखित कारणों से उत्पन्न करता है:

- प्रथम, भौतिक सुखों के भोगने की इच्छा एवं अवसर
- द्वितीय, बच्चों के पालनपोषण, शिक्षा आदि पर अपेक्षाकृत ज्यादा व्यय
- तृतीय, सम्पत्ति के विभाजन का भय। इसके विपरीत गरीब व्यक्ति के बच्चे कम उम्र में ही उत्पादन के स्त्रोत बन जाते हैं तथा इनके पालन पोषण का व्यय भी अत्यधिक कम रहता है। इन व्यक्तियों के उत्तराधिकार के झगड़ों का भी भय बना रहता है।

आलोचना– यह सिद्धांत अव्यावहारिक मान्यताओं पर आधारित है। फीटर की ये मान्यताएं है कि हर धनवान व्यक्ति के कम बच्चे होते हैं या गरीब अदूरदर्शी होते हैं या गरीब बच्चों के पालन पोषण की समस्या नहीं रहती, अव्यावहारिक है। इस सिद्धांत में प्रजननता एवं ऐच्छिकवादिता के मध्य संबंध की स्पष्ट व्याख्या नहीं है।

समालोचना यधपि फिटर ने माल्थस के जनसंख्या सिद्धांत की त्रुटियों का उल्लेख करते हुए जन्म और मृत्यु दर के अनेक सामाजिक सांस्कृतिक तथा आर्थिक कारकों का उल्लेख किया है। लेकिन यह कहना गलत होगा कि फिटर का सिद्धांत पूर्णतया दोषरहित नहीं है। इसमें भी वही कमियाँ हैं जो सिद्ध नहीं कि हर धनी व्यक्ति कम बच्चे पैदा करें और गरीब अधिक पैदा करें। इस सिद्धांत में एक कमी यह भी है कि इसको पूर्णता पर निर्भर मान लिया गया है, पर व्यावहारिक जगत् की स्थिति को देखते हुए अभी भी इस तथ्य पर सार्वभौमिक रूप से विश्वास नहीं किया जा सकता है। जिन देशों में जन्म नियन्त्रण के प्रभावशाली कृत्रिम साधन नहीं हैं या उनका प्रयोग उचित नहीं माना जाता, वहीं आज भी जन्म प्राकृतिक एवं स्वाभाविक घटना के रूप में स्वीकार किया जाता है।

8.11 सारांश

इस अध्याय के अन्तर्गत हेनरी जार्ज का सामाजिक असन्तुलन का सिद्धान्त, आर्सेन्ट ड्यूमाण्ट के सामाजिक केशाकर्षक का सिद्धान्त और फ्रैंक फिटर का जनसंख्या सम्बन्धी सिद्धान्त को तथ्यपरक रूप में विश्लेषित करने का प्रयास किया गया है। हेनरी जार्ज के सामाजिक असंतुलन सिद्धान्त के संदर्भ में हम बात करें तो इस धरा पर जनसंख्या का नियम मानव जाति के वैदिक विकास के नियम से सम्बन्धित है जिसमें मानव की जहाँ एक तरफ आकांक्षाएं है तो दूसरी तरफ जीवन यापन करने के लिए विविध उद्यम करता है और उद्यम से उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं होती है तो प्रकृति को दोष देने की बजाए सामाजिक व्यवस्था को ही एक कारक के रूप में स्वीकार करता है। आर्सेण्ट ड्यूमाण्ट के सामाजिक केशाकर्षक का सिद्धान्त फ्रांसीसी जनसंख्या के विकास के अध्ययन पर आधारित है जिसमें मानव की विकासयात्रा में एक ऐसी स्थिति आ जाती है जहाँ वह परिवार एवं समाज को महत्व देने की बजाए स्वयं को ही सर्वोच्च सत्ता के रूप में स्वीकार करता है। ड्यूमण्ट अपने सिद्धान्त में गरीब व्यक्तियों के जीवन स्तर के साथ–साथ गांवों एवं नगरों में पायी जाने वाली दर की भिन्नता को भी स्पष्ट करने का सार्थक प्रयास किया है। वहीं फ्रैंक फिटर अपने जनसंख्या

सम्बन्धी सिद्धान्त में माल्थस के सिद्धान्त से सहमत नहीं हैं। आपका मानना है कि माल्थस एकपक्षीय था। फिटर संतानों की संख्या पर भी अपना मत रखा है जिसमें वह मानता है कि धनी व्यक्तियों के बच्चों के पालन–पोषण में गरीब व्यक्तियों से तुलनात्मक रूप में अधिक खर्च करना पड़ता है। फिटर ने गरीबी और अमीरी और उससे निर्मित वृत्ति को अपने सिद्धान्त में मूल आधार बनाया है।

8.12 सन्दर्भ ग्रन्थ

1. गुप्ता, शिव नारायण : जनांकिकी के मूलतत्त्व' वृंदा पब्लिकेशन्स प्रा.लि., मयूर विहार, दिल्ली, 2009
2. बघेल, डॉ. डी.एस. एवं डॉ. किरण बघेल : 'जनांकिकी', विवेक प्रकाशन, जवाहर नगर, दिल्ली, 2012
3. मिश्र, डॉ. जय प्रकाश : जनांकिकी, साहित्य भवन पब्लिकेशन, 2010.
4. त्रिपाठी, डॉ. रामदेव : जनसंख्या भूगोल, बसुन्धरा प्रकाशन, 2011–12
5. सिंघई, डॉ. जी.सी. एवं डॉ. जे.पी. मिश्र : अर्थशास्त्र, साहित्य भवन, 2012
6. Dr. Premi, M.K., Ramanamma, A., Bambawale, Usha : An Introduction to Social Demography, Vikas Publishing House, New Delhi.
7. Appleman, Philip (ed.) : Thomos Robert Malthus : An Essay on the Principle of Population, New York : W.W. Norton and Co., Inc., 1976.
8. Carr- Saunders, A.M., World Population : Past Growth and Present Trends, Oxford : Clarendon Press, 1936
9. Coale, Ansley J. and Edgar M. Hoover : Populationi Growth and Economic development in low income countries, Princeton University Press, 1958
10. Ross, John : A International Encyclopedia of Population The Free Press. Macmillon Publishing Co., New York. 1982
11. U.N. Determinantes and Consequences of Population Trends, 1953
12. UNFPA : The State of World Population, 1996
13. United Nations Population Division : Word Population 2006

8.13 बोध के प्रश्न

8.13.1 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. हेनरी जॉर्ज के सामाजिक असंतुलन के सिद्धान्त की विस्तृत विवेचना कीजिए।
2. आर्सेन ड्यूमॉण्ट के सामाजिक केशाकर्षक सिद्धान्त की आलोचनात्मक विवेचना कीजिए।

8.13.2 लघु उत्तरीय प्रश्न

1. फ्रैंक फिटर के जनसंख्या सिद्धान्त से आप क्या समझते हैं? विवेचना कीजिए।
2. हेनरी जॉर्ज के सामाजिक असंतुलन के सिद्धान्त का अलोचनात्मक परीक्षण कीजिए।

8.13.3 वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. डेमोग्राफी किन दो शब्दों से मिलकर बनी है?

   (a) Demos एवं Graphien (b) Demo एवं Graphi

   (c) Days एवं Graphy (d) Domos एवं Graphing

2. हेनरी जॉर्ज का जन्म कब हुआ?

   (a) 1840 (b) 1875 (c) 1838 (d) 1897

3. अर्सेन ड्यूमॉण्ट किस विश्वविद्यालय में प्रोफेसर था?

   (a) Strasbourg (b) Oxford (c) Yale (d) Harvard

4. अर्सेन ड्यूमाण्ट का जन्म कब हुआ?

   (a) 1840 (b) 1849 (c) 1838 (d) 1897

8.14 वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर

1. (a)
2. (c)
3. (a)
4. (b)

8.15 पारिभाषिक शब्दावली

जनसांख्यिकी : जनसंख्या का सुव्यवस्थित अध्ययन करने वाला विज्ञान

फॉर्मल डेमोग्राफी : जनसंख्या के आकार अर्थात् मात्रा का अध्ययन करने वाला विज्ञान।

प्रजनन दर : जनसंख्या का कम या अधिक होना।

केशाकर्षण की शक्ति : इस शक्ति का आशय मनुष्य की समाज में उन्नति करने की अभिलाषा से है।

इकाई–9 : आर्थर हैंडले और एडन वेबर का सिद्धांत और निटिस का जनसंख्या सिद्धांत और ब्रेंटो की जनसंख्या

इकाई की रूपरेखा

9.1 उद्देश्य

9.2 प्रस्तावना

9.3 जनांकिकी : अर्थ, क्षेत्र एवं महत्व

9.4 जनांकिकी का अर्थ एवं परिभाषाएं

9.5 आर्थर हैण्डली एवं एडन वेबर का सिद्धान्त

9.6 एडन वेबर का सिद्धान्त

9.7 निटिस का जनसंख्या का सिद्धान्त

9.8 एल. ब्रेंटो का जनसंख्या का सिद्धांत

9.9 सारांश

9.10 सन्दर्भ ग्रन्थ

9.11 बोध के प्रश्न

9.11.1 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

9.11.2 लघु उत्तरीय प्रश्न

9.11.3 वस्तुनिष्ठ प्रश्न

9.12 वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर

9.13 पारिभाषिक शब्दावली

9.1 उद्देश्य

इस अध्ययन से हम आर्थर हैंडले और एडन वेबर का सिद्धांत और निटिस का जनसंख्या सिद्धांत और ब्रेंटो की जनसंख्या। आदि विचारको को समझेगे जिसमे :

1. जनांकिकी : अर्थ, क्षेत्र एवं महत्व का अध्ययन करेगे।
2. जनांकिकी का अर्थ एवं परिभाषाएं समझेंगे।
3. आर्थर हैण्डली एवं एडन वेबर का सिद्धान्त को संक्षिप्त मे समझ सकेंगे।
4. आर्थर हैण्डली एवं एडन वेबर का सिद्धान्त को समझेंगे।
5. निटिस का जनसंख्या के सिद्धान्त का अध्ययन करेंगे।

6. एल. ब्रेंटो का जनसंख्या के सिद्धांत का अध्ययन करेंगे।

9.2 प्रस्तावना

आधुनिक युग में तीव्र जनसंख्या वृद्धि (Rapid population growth) विश्व की एक गम्भीर समस्या है। समष्टि स्तर (macro level) पर यह अर्थव्यवस्था को संरचना और अनुपात में असन्तुलन उत्पन्न करता है और व्यष्टि स्तर (micro level) पर यह प्रति व्यक्ति आय (Per capita income) को संस्थिति जाल में (equilibrium trap) उन्मुखी करता है। जनसंख्या एक जनांकिकीय चर (demographic variable) है। यह परिवार के आकार तथा अर्थव्यवस्था के विकास–दोनों को प्रभावित करता है। वर्ल्ड डेवलपमेंट रिपोर्ट (World Development Report), 1984 के अनुसार जनसंख्या में होने वाली वृद्धि यदि प्रतिशत वार्षिक अथवा इससे कम है तो जनसंख्या में धीमी गति से वृद्धि होगी और यह अर्थव्यवस्था के उत्पादन और विकास की दृष्टि से सहायता प्रदान करेगी। इस सन्दर्भ में जनसंख्या का अर्थव्यवस्था पर विस्तारक प्रभाव (Expansion Effect) पड़ेगा। किन्तु यदि जनसंख्या में होने वाली वृद्धि वार्षिक 2 प्रतिशत अथवा इससे अधिक है तो जनसंख्या में यह तीव्र वृद्धि, अर्थव्यवस्था के उत्पादन और विकास की दृष्टि से बाधा उत्पन्न करेगी। इस संदर्भ में जनसंख्या का अर्थव्यवस्था पर संकोचक प्रभाव (Contraction or Backwash Effect) पड़ेगा। जनसंख्या का यह संकोचक प्रभाव वर्तमान युग में अल्पविकसित एवं विकासशील देशों के संदर्भ में अधिक प्रभावी है। इन देशों में तीव्र जनसंख्या वृद्धि से विकास में गतिरोध उत्पन्न होता है जिससे व्यक्ति और समाज दोनों ही स्तरों पर जनसंख्या एक निषेध (Taboo) बन जाती है।

9.3 जनांकिकी : अर्थ, क्षेत्र एवं महत्व

साामाजिक विज्ञानों में जनांकिकी (Demography) एक Systematic– विज्ञान है जिसमें जनसंख्या का आकार (Size) संरचना एवं संघटन (Structure and Composition), वितरण, जनसंख्या परिवर्तन को प्रभावित करने वाले निर्धारक (determinant) जनसंख्या नीति (policy) के सैद्धांतिक पक्षों का अध्ययन किया जाता है। अतः साहित्य में जो स्थान प्रेम (love) का है, अर्थात् जो आय (income) का है, सामाजिक विज्ञानों में वही स्थान जनसंख्या (Population) का है। जनसंख्या, जनांकिकी (Demography) का आंगिक अवयव (Organic Component) तथा सामाजिक विज्ञानों (Social Sciences) की आत्मा (Soul) है।

9.4 जनांकिकी का अर्थ एवं परिभाषाएं

जनांकिकी अथवा डेमोग्राफी (Demography) भाषा के दो शब्दों Demo (जनता) एवं Graphy (लिखना) से मिलकर बना है। इस तरह, डेमोग्राफी या जनांकिकी का आशय जनता के विषय में लिखना होता है। इस शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग सन् 1955 में अचिले गिलार्ड (Achille Guillard) ने किया था। अचिले गिलार्ड के अनुसार,जनांकिकी (डेमोग्राफी) एक ऐसा विज्ञान है जो मनुष्यों की संख्या के बारे में अध्ययन करता है। जनांकिकी या डेमोग्राफी शब्द का उपयोग सबसे पहले गिलार्ड (Guillard) के द्वारा 1855 में किया गया। लेकिन जनांकिकी के अध्ययन का प्रारंभ 1662 में जॉन ग्रांट (John Graunt) के लेख Natural and Political Observations & made upon the Bills of Mortality के प्रकाशन से माना जाता है। जान ग्रांट जनांकिकी के विश्लेषण उपागम (Technical & Demography Analytical & approach) या जनांकिकीय विश्लेषण की तकनीकों (techniques of demographic analysis) का सूत्रधार

था। कालांतर में, तकनीकी जनांकिकी के साथ–साथ जनसंख्या और दूसरे सामाजिक विज्ञानों से अंतर्संबंधित समस्या– अनुस्थापन करने वाले अध्ययनों का भी विकास हुआ। थॉमस राबर्ट माल्थस को जनांकिकी में समस्या उपागम (Problem & approach) का अग्रणी कहा जाता है। वास्तव में जनांकिकी के ये दोनों पहलू यद्यपि एक–दूसरे से भिन्न हैं तथापि जनांकिकी के क्षेत्र (scope) का निर्धारण करते हैं।

जनांकिकी का समस्या–उपागम जनसंख्या–अध्ययन (Population Study) कहलाता है। इसी समस्या–उपागम से प्रेरणा पाकर जनांकिकी (Demography) का एक व्यवस्थित विज्ञान (Systematic Science) के रूप में आज से लगभग दो सौ वर्ष (सन् 1855) पहले जन्म हुआ। हाल के वर्षों में जनांकिकी के गत्यात्मक (Dynamic) पहलू को जनसंख्या गतिकी (Population Dynamics) के नाम से जाना जाता है। प्रारंभ में यह विज्ञान केवल जनगणना (Census) द्वारा एकत्रित जनसंख्या का साधारण रूप में अध्ययन करता था। किन्तु आधुनिककाल में जनसंख्या के विभिन्न पहलुओं का आनुभविक (Empirical), सांख्यिकीय (Statistical) और गणितीय (Mathematical) विश्लेषण किया जाने लगा है, तब से इस विज्ञान को जनांकिकी (Demog raphy) कहने लगे हैं। जनांकिकी जनसंख्या का अध्ययन है। इसमें जनसांख्यिकी (Population Statistics) के आधार पर किसी देश या क्षेत्र की जनसंख्या के आकार, संरचना तथा वितरण का सांख्यिकीय एवं गणितीय उपकरणों एवं तकनीक द्वारा विश्लेषण एवं निर्वचन किया जाता है। इसी आधार पर भविष्य संबंधी अनुमान लगाये जाते हैं। जनांकिकी की संकुचित एवं व्यापक दृष्टिकोण से अनेक परिभाषाएं दी गयी हैं जिनमें से कुछ प्रमुख परिभाषायें निम्नलिखित हैं :

- अचिले गिलार्ड (Achille Guillard) के शब्दों में यह (जनांकिकी) जनसंख्या की सामान्य गति और भौतिक, सामाजिक, नैतिक तथा बौद्धिक दशाओं का गणितीय ज्ञान है।

- फ्रांसीसी विद्वान लिवासियर (Levasseur) के अनुसार, जनांकिकी मात्र जनसंख्या का विज्ञान है जो प्रमुखतः जनसंख्या के जन्म, विवाह, मृत्यु या गतिशीलता की गति को सुनिश्चित करने के साथ–ही–साथ उन सिद्धांतों की खोज करने का प्रयास भी करता है, जो इन गतियों (movements) का नियंत्रण करते हैं।

- पीटर आर. काक्स के अनुसार जनांकिकी मानवीय जनसंख्या का सांख्यिकीय अध्ययन है जिसमें मुख्यतः किसी क्षेत्र विशेष में रहने वाले जनसंख्या के आकार, उनके विकास अथवा ह्रास, अन्य भरण अनुपात तथा उनसे संबंधित प्रीतम एवं विचार के घटकों को भापर किया जाता है।

- डब्ल्यू जी बार्कले (W-G- Barcley) के अनुसार, जनसंख्या का संख्यात्मक चित्रण (Numerical Potrayal) जनांकिकी के नाम से जाना जाता है। इसके अंतर्गत जनसंख्या को व्यक्तियों के समग्रों (Aggregates of Persons) के रूप में कुछ विशिष्ट प्रकार के समंकों के रूप में प्रदर्शित किया जाता है। जनांकिकी जनसंख्या के समग्रों के व्यवहार से संबंधित है, न कि किसी विशिष्ट व्यक्ति के व्यवहार से।

- संयुक्त राष्ट्र संघ के अनुसार, मूलरूप से मानवीय जनसंख्या के आकार, गठन एवं विकास का वैज्ञानिक अध्ययन जनांकिकी है।

- हाउजर एवं डंकन (Houser and Duncan) के अनुसार, जनांकिकी जनसंख्याओं के आकार, प्रादेशिक वितरण, गठन तथा उसमें होने वाले परिवर्तन तथा इन परिवर्तनों के वे भाग जो जन्म, मृत्यु, क्षेत्रीय गतिशीलता एवं सामाजिक गतिशीलता (सामाजिक स्तर में परिवर्तन) है, का अध्ययन करता है।

- डोनाल्ड जे. बोग (Donald J- Bogue) के अनुसार, जनांकिकी मानव जनसंख्या के आकार, गठन और स्थानिक वितरण तथा उसमें प्रजनन, मृत्यु, विवाह, प्रवास व सामाजिक गतिशीलता की पांच प्रक्रियाओं द्वारा समय–समय पर होने वाले परिवर्तन का सांख्यिकीय एवं गणितीय अध्ययन है।

- थोम्पसन एवं लेविस (Thompson and Lewis) इसकी (जनांकिकी) रुचि वर्तमान अपच की जनसंख्या के आकार, संरचना तथा वितरण में ही नहीं बल्कि समय–समय पर इन पक्षों में हो रहे परिवर्तनों एवं परिवर्तनों के कारणों में भी है।

उपर्युक्त सभी परिभाषाओं के अवलोकन से यह स्पष्ट हो जाता है कि विभिन्न अर्थशास्त्रियों, समाजशास्त्रियों एवं जनांकिकीविदों ने अपने–अपने दृष्टिकोण से जनांकिकी (Demography) को परिभाषित किया है। इन परिभाषाओं में गुइलार्ड, लिवासियर, पीटर आर, काक्स, डब्ल्यू, जी बर्कले तथा संयुक्त राष्ट्रसंघ द्वारा दी गई परिभाषाएं संकुचित दृष्टिकोण (Narrow view) पर आधारित हैं और जनांकिकी के मात्रात्मक पहलू (Quantitative aspect) को प्रकट करती हैं। किन्तु हाउजर एवं डंकन, थाम्पसन एवं लेविस तथा डोनाल्ड जे. बोग द्वारा दी गई परिभाषाएं व्यापक दृष्टिकोण (Broad view) पर आधारित हैं और जनांकिकी के मात्रात्मक एवं गुणात्मक दोनों पहलुओं (Quantitative and Qualitative Aspects) को प्रकट करती हैं। व्यापक (विस्तृत) दृष्टिकोण वाली परिभाषाओं से जनांकिकी के समस्या–उपागम उन्मुखी होने का संकेत मिलता है जो अधिक व्यावहारिक है। व्यापक (विस्तृत) दृष्टिकोण रखने वाले विद्वानों का मत है कि जनांकिकी एक मानव विज्ञान है जिसमें जनसंख्या विश्लेषण एवं जनसंख्या अध्ययन दोनों का ही विस्तृत अध्ययन किया जाना चाहिए। इसके अंतर्गत आर्थिक, सामाजिक, भौगोलिक, तथा जैविकीय स्थिति आदि अन्य पहलुओं का भी अध्ययन आ जाता है क्योंकि इसमें (जनांकिकी में) हम जनसंख्या के गुणात्मक एवं मात्रात्मक (संख्यात्मक) दोनों पहलुओं सहित समस्त जनसंख्या–परिवर्तनों का अध्ययन करते हैं।

यहां जनांकिकी (Demography) की परिभाषा देने का उद्देश्य यह बताना है कि यह विषय क्या है और क्या नहीं है? किसी भी परिभाषा के लिए यह आवश्यक है कि वह जनांकिकी की विषय–सामग्री (Subject matter) को पूर्णरूप से स्पष्ट करे और उसकी अन्य विज्ञानों एवं कलाओं से भिन्नता दिखाए। जब हम किसी को मनुष्य कहते हैं, तो हमारा उद्देश्य उसके और अन्य प्राणियों एवं वस्तुओं के गुणों और लक्षणों में भिन्नता दिखाना है। किसी मनुष्य को कोई विशेष नाम देने में हमारा उद्देश्य उसे अन्य समान मनुष्यों से अलग करना है ताकि जब हम उस नाम को लेते हैं तब हमारे मस्तिष्क में उसकी आकृति, गुण–दोष और विशेषताएं आती हैं। इसी प्रकार जब हम जनांकिकी की परिभाषा देते हैं तब हमें उसके स्वभाव (Nature), क्षेत्र (Scope) और विशेषताओं (feature) के बारे में ज्ञान होना चाहिए और उसे अन्य विज्ञानों और कलाओं से अलग कर सकना आना चाहिए।

9.5 आर्थर हैण्डली का सिद्धान्त

अमेरिका में हैंडली ने 1896 में 1899 में एडन वेबर के साथ फिटर से मिलते–जुलते सिद्धांत का प्रतिपादन किया। हैडली ने सुखी जीवन और निम्न दर का सह–सम्बन्ध स्पष्ट करते हुए बताया है कि वास्तव में सुखी जीवन उन्हीं व्यक्तियों को प्राप्त होता है जो समझदार हैं तथा यही व्यक्ति परिवार नियोजन को भी अपनाते हैं। खाद्य सामग्री की कमी ही जनसंख्या परिसीमन का एकमात्र व मुख्य कारण नहीं है, अनेक कारण होते हैं जिससे समाज में उन्नति करने व ऊपर उठने की इच्छा भी महत्त्वपूर्ण कारण है। बुद्धिजीवी तथा समझदार व्यक्ति परिवार नियोजन को शीघ्र अपनाकर परिवार को छोटा से छोटा रखने का प्रयत्न करते हैं। आगे हैडली ने यह भी कहा है, जो व्यक्ति बुद्धिजीवी व बुद्धिमान नहीं होते उनमें जन्म–दर प्राकृतिक अर्थात् प्रत्यक्ष अवरोध (Positive checks) द्वारा ही रुकती है। संक्षेप में इनके सिद्धान्त का यही सार है। इनके सिद्धान्त में भी वही कमियाँ हैं जो फिटर तथा अन्य विचारकों के सिद्धान्तों में हैं।

9.6 एडन वेबर का सिद्धान्त

एडन फेरिन वेबर का जन्म 14 जुलाई, 1870 को न्यूयॉर्क के एरी काउंटी के स्प्रिंगविले गांव के पास कॉनकॉर्ड शहर में एक खेत में हुआ था और वह बफ़ेलो से लगभग साठ मील दक्षिण में, 3,500 लोगों की आबादी वाले गांव सलामांका में पली–बढ़ीं। वह ब्लैंचर्ड बी और फिलेना फेरिन वेबर के सात बच्चों में से एक थे। बीस साल की उम्र में उन्होंने बैचलर ऑफ फिलॉसफी डिग्री की पढ़ाई शुरू करने के लिए कॉर्नेल विश्वविद्यालय में प्रवेश किया। अपने स्नातक के सभी चार वर्षों में वेबर ने गणित के लिए दर्शनशास्त्र में प्रतिस्पर्धी मैकग्रा छात्रवृत्ति में से एक का आयोजन किया। वेबर अपनी स्नातक गतिविधियों के माध्यम से कॉर्नेल के कई उत्कृष्ट शिक्षकों से अच्छी तरह परिचित हो गए। ग्रीक और तुलनात्मक भाषाशास्त्र के प्रोफेसर और बाद में कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के अध्यक्ष बेंजामिन आइड व्हीलर और कानून के प्रोफेसर और बाद में संयुक्त राज्य अमेरिका के मुख्य न्यायाधीश चार्ल्स इवांस ह्यूजेस के साथ उनके संपर्क विशेष महत्व के थे। वेबर ने बाद में ह्यूज़ के अधीन कार्य किया जब ह्यूज़ न्यूयॉर्क के गवर्नर थे। हालाँकि, द ग्रोथ ऑफ़ सिटीज़ के विकास पर संभवतः जिस विद्वान का सबसे अधिक प्रभाव था, वह वाल्टर फ्रांसिस विलकॉक्स थे, जो उस समय सामाजिक विज्ञान और सांख्यिकी और राजनीतिक अर्थव्यवस्था के एक युवा सहायक प्रोफेसर थे, जो अब अर्थशास्त्र और सांख्यिकी के प्रोफेसर, एमेरिटस हैं।

किसी देश की ग्रामीण और शहरी आबादी के बीच का अनुपात उसकी आंतरिक अर्थव्यवस्था और स्थिति में एक महत्वपूर्ण तथ्य है। यह काफी हद तक इसकी विनिर्माण क्षमता, इसके वाणिज्य की सीमा और इसकी संपत्ति की मात्रा को निर्धारित करता है। विकास शहरों की संख्या आम तौर पर बुद्धि और कला की प्रगति को दर्शाती है, सामाजिक आनंद के योग को मापती है, और हमेशा अत्यधिक मानसिक गतिविधि को दर्शाती है, जो कभी–कभी स्वस्थ और उपयोगी होती है, कभी–कभी व्यर्थ और हानिकारक होती है। यदि पुरुषों की ये मंडलियां जीवन की कुछ सुख–सुविधाओं को कम कर देती हैं वे दूसरों को बढ़ावा देते हैं; यदि वे देश की तुलना में स्वास्थ्य के लिए कम अनुकूल हैं, तो वे बीमारी के खिलाफ बेहतर सुरक्षा और इलाज के बेहतर साधन भी प्रदान करते हैं। राजनीतिक और नैतिक दोनों कारणों से, वे प्रजातियों के गुणन के लिए कम अनुकूल हैं। नज़र में नैतिकतावादियों के अनुसार, शहर गुण और दोष दोनों के लिए एक व्यापक क्षेत्र रखते हैं; और वे नवाचार के प्रति अधिक प्रवृत्त होते हैं, चाहे अच्छे या बुरे के लिए। नागरिक स्वतंत्रता का प्यार, शायद, शहर की तुलना में देश में अधिक मजबूत और स्थिर दोनों है; और यदि शहरों में अधिक पैनी निगरानी और अधिक

दूरदर्शी ईर्ष्या द्वारा इसकी रक्षा की जाती है, फिर भी उनमें कानून, व्यवस्था और सुरक्षा भी अधिक खतरे में होती है, जिस बड़ी सुविधा से साज़िश और महत्वाकांक्षाएं हो सकती हैं। अज्ञानता और चाहत पर काम करो। घनी आबादी वाले शहरों की जो भी अच्छी या बुरी प्रवृत्ति हो, उसका परिणाम सभी देश होते हैं।

9.7 निटिस का जनसंख्या का सिद्धान्त

फ्रांसिस्को एस. निटिस इटली का अर्थशास्त्री एवं सामाजिक विचारक था। निटिस ने अपनी पुस्तक 'Population and The Social System' में जनसंख्या सम्बन्धी विचार दिये हैं उसे व्यक्तित्व का सिद्धान्त (Principle of Individuality) भी कहा जाता है। आपने सर्वप्रथम जनसंख्या के अन्य तमाम सिद्धांतों की समीक्षा करते हुए माल्थस के जनसंख्या सिद्धांत की अनेक त्रुटियों का विशेष रूप से उल्लेख किया है और कहा है कि जनसंख्या की वृद्धि दर आवश्यक नहीं कि, खाद्य सामग्री से अधिक ही हो। जहाँ तक स्पेन्सर के विचारों का प्रश्न है, निटिस उनसे पूर्ण सहमत है कि– जनसंख्या की वृद्धि सदा खराब ही सिद्ध नहीं हुई है, जनसंख्या वृद्धि से सभ्यता का भी विकास हुआ है। निटिस ने अपनी पुस्तक में जनसंख्या सम्बन्धी जो विचार दिये हैं, वे इस प्रकार हैं–

- निटिस का दावा है कि माल्थस का सिद्धांत उसके द्वारा की गई आलोचनाओं एवं विचारों से अस्तित्वहीन हो जायेगा। आप इस विचार से पूर्ण असहमत हैं कि जनसंख्या में होने वाली वृद्धि अनिवार्य रूप से खाद्य सामग्री से अधिक ही होती है।

- निटिस ने माल्थस के इस कथन का भी विरोध किया है कि जनसंख्या वृद्धि से समाज के सामने भीषण समस्याएँ उत्पन्न हो जायेंगी। आपका विचार है कि जनसंख्या वृद्धि के सिर्फ बुरे ही परिणाम नहीं होते बल्कि अच्छे भी होते हैं। इस सन्दर्भ में उसने स्पेन्सर के विचार का समर्थन करते हुए लिखा है कि जनसंख्या वृद्धि से मानव की सभ्यता और संस्कृति का भी विकास होता है।

- निटिस का कथन है कि जनसंख्या तथा उसकी प्रजनन दर के निर्धारक कारकों के रूप में नैतिक, मनोवैज्ञानिक, राजनीतिक व सामाजिक और आर्थिक तत्त्वों का भी महत्त्वपूर्ण योगदान है। पर इन सबमें आर्थिक तत्त्वों का प्रभाव सर्वाधिक होता है।

- निटिस जनसंख्या व उसकी प्रजनन दर के निर्धारक कारक के रूप में अन्य प्राणिशास्त्री विद्वानों की तरह प्राणिशास्त्रीय तत्त्वों के प्रभाव को भी विशेष महत्त्व देता है।

- अन्त में निटिस का निष्कर्ष है कि जब समाज में व्यक्ति का व्यक्तित्व उन्नत हो जायेगा तो धन की असमानताएँ कम हो जायेगी और असमानताओं को उन्नत करने वाले कारण समाप्त हो जायेंगे। तब समाज में सहयोग और सहयोगी भावनाओं में वृद्धि होगी। ऐसी स्थिति में जनसंख्या, खाद्य–सामग्री अनुपात से अधिक नहीं बढ़ेगी अर्थात् यह समाज के लिए समस्या नहीं होगी और तब जनसंख्या को भूतकाल की तरह भय और आतंक उत्पन्न करने वाला नहीं माना

जायेगा।

निटिस का सिद्धांत : इस सिद्धांत का प्रतिपादन इटली के प्रसिद्ध अर्थशास्त्री नित्ती (Francesco S-Nitti) ने किया था। उनका विश्वास था कि जनसंख्या में होने वाली प्रत्येक वृद्धि हानिकारक नहीं होती। माल्थस के सिद्धांत की कटु आलोचना करते हुए उन्होने माल्थस के सिद्धांत को समाप्त करने के लिए अपने सिद्धांत का प्रतिपादन किया। इस सिद्धांत की प्रमुख विशेषताएं निम्नवत है :

(क) निटिस ने अपने सिद्धांत में आर्थिक एवं सामाजिक कारकों के अतिरिक्त जैविकीय तत्वों की महत्व दिया। उन्होंने प्रजनन दर के निर्धारक तत्वों में इन सभी तत्वों के प्रभाव की स्वीकृति प्रदान की।

(ख) निटिस का विचार था कि व्यक्तिगत विकास से धन एवं संपत्ति की असमानताएं कम हो जाएगी। इन असमानताओं के कम होने से पारस्परिक सहयोग की वृद्धि होगी जो खाद्यान्न उत्पादन में वृद्धि करेगी। इस प्रकार अति जनसंख्या की समस्या स्वतः समाप्त हो जायेगी।

(ग) जनसंख्या वृद्धि सभ्यता का विकास करेगी।

आलोचना– इस सिद्धांत में व्यक्तिवाद का संबंध प्रजननता के साथ स्पष्ट नहीं हो सका है। व्यक्तिगत विकास से आर्थिक विशेषताएं कम होने की बात भी तर्कसंगत नहीं लगती। जनसंख्या वृद्धि के संबंध में ऐसी व्याख्या एकपक्षीय ही मानी जा सकती है।

9.8 एल. ब्रेंटो का जनसंख्या का सिद्धांत

ब्रेन्टो द्वारा प्रतिपादित जनसंख्या का सिद्धांत बढ़ती सम्पन्नता और सुख का सिद्धांत (Theory of Increasing Prosperity and Pleasure) के नाम से जाना जाता है। ब्रेन्टो ने इस सिद्धांत में जनसंख्या और उसकी प्रजनन दर को मानव के मौलिक लक्ष्य, सुख भोग और सम्पन्नता पर आधारित माना है। ब्रेन्टो के प्रमुख जनसंख्या सम्बन्धी विचार इस प्रकार हैं :

1. ब्रेन्टो का विचार है कि प्रत्येक मनुष्य के जीवन का एक निश्चित उद्देश्य होता है। वह अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने का प्रयास करता है।

2. बेन्थम और बंकेरिया की भाँति ब्रेन्टो ने भी स्वीकार किया है कि मानव जीवन का मौलिक उद्देश्य अधिक–से–अधिक सुख की प्राप्ति करना है। उसके अनुसार सुख–समृद्धि के साधन समाज में प्रजनन दर को निश्चित करते हैं।

3. जिन व्यक्तियों को जिस प्रकार के सुख के साधन प्राप्त होंगे वैसे ही उन व्यक्तियों की प्रजननदर होगी। उसका विचार है कि गरीब लोगों के पास सुख के साधन बहुत ही कम होते हैं। वे दिन भर कड़ी मेहनत करने के बाद गन्दे आवासों में अस्वस्थ जीवन व्यतीत करते हैं और वे मनोरंजन के साधनों से दूर रहते हैं।

4. परिणामस्वरूप गरीब व्यक्तियों की सन्तानें अधिक होती हैं। मनोरंजन के साधनों तथा अन्य सुख–सुविधाओं के अभाव में निर्धन व्यक्ति सम्भोग क्रिया को ही मनोरंजन के साधन के रूप में प्रयोग करता है फलतः प्रजनन–दर ऊँची होती है। इसके विपरीत धनी व्यक्ति का काफी समय सिनेमा, क्लब, नृत्य गृह, प्रदर्शनी और अन्य भौतिक सुखों को प्राप्त करने में व्यतीत होता है फलतः सन्तानोत्पादन की ओर ध्यान नहीं जाते हैं।

5. बेन्टी का यह भी विचार है कि धनी व्यक्तियों के पास वैकल्पिक सुख के साधन अधिक रहते हैं। इसके परिणामस्वरूप धनी व्यक्तियों में प्रजनन दर की मात्रा कम रहती है।

6. गरीब व्यक्तियों को विवाह करना भी एक समस्या होती है। परिणामस्वरूप वे इस समस्या से जल्दी ही मुक्ति पाना चाहते हैं और कम आयु में ही विवाह कर देते हैं। इसमें प्रजननदर में वृद्धि होती है।

7. इसके विपरीत धनी व्यक्तियों में विवाह किसी समस्या के रूप में नहीं होता; इससे अधिक उम्र में विवाह किये जाते हैं। अधिक उम्र में विवाह करने से प्रजननदर कम रहती है।

8. समीक्षा–यद्यपि ब्रेन्टो ने अपने सुखवादी सिद्धांत द्वारा मानव में सुख प्राप्ति और सम्पन्नता तथा जनसंख्या के मध्य सुन्दर सम्बन्ध स्पष्ट किया है तो भी इसे दोष–रहित नहीं कहा जा सकता है। इस सिद्धांत में भी लगभग वही कमियाँ हैं जो अन्य सिद्धांतों में पाई जाती हैं। संक्षेप में, इस सिद्धांत की त्रुटियाँ हैं।

9. मानव की सुखवादी–धारणा मात्र के द्वारा ही जनसंख्या और जन्मदर की प्रवृत्तियों को स्पष्ट नहीं किया जा सकता। गरीबों में उच्च प्रजननदर का कारण उनके पास वैकल्पिक सुख–साधनों की कमी ही नहीं है, बल्कि अन्य बहुत से कारण हैं। यदि गम्भीरता से विचार करें तो यह कहना गलत नहीं होगा कि गरीबों को आवास–समस्या, घर में स्थान की कमी और परिवार के सदस्यों की अधिकता के कारण उन्हें स्वच्छन्द प्रेम और सहवास के अवसर ही नहीं मिलते जबकि अमीरों को इसके पर्याप्त अवसर रहते हैं।

10. हम ब्रेन्टो के इस तथ्य से भी सहमत नहीं हो सकते कि गरीबों में कामुकता सर्वथा अधिक होती है। वास्तव में गरीबों की तुलना में अमीरों में ही कामुकता अधिक होती है। क्योंकि अच्छा वातावरण, बेफिक्री तथा अन्य सुविधाएँ व साधन इसकी प्रेरणा प्रदान करते हैं। अन्त में, यह कहा जा सकता है कि यह सिद्धांत भी अन्य सिद्धांतों की तरह सर्वमान्य नहीं है।

9.9 एल. ब्रेन्टो का सिद्धांत

इस सिद्धांत के प्रतिपादक एल. बैण्टो (L- Brento's) हैं। उन्होंने जनसंख्या वृद्धि को व्यक्तियों को प्राप्त होने वाले सुखों एवं मनोरंजन के साधनों से संबंधित कर अपना सिद्धांत प्रतिपादित किया। इस सिद्धांत की प्रमुख विशेषताएं निम्नवत हैं :

1. मानवीय सुख में वृद्धि या कमी के अनुसार ही प्रजनन दर में भी क्रमशः कमी या वृद्धि होती है। अन्य शब्दों में प्रजनन दर एवं सुख समृद्धि के मध्य विपरीत संबंध होता है।

2. गरीबों के पास मनोरंजन के साधनों की कमी होती है। वे भोजन के लिए मुहताज रहते हैं। उनके लिये चलचित्र, नाच, रेडियो, संगीत आदि व्ययकारी मनोरंजन के साधन स्वप्नवत होते हैं। वे सुबह से शाम तक जीवन–निर्वाह के साधनों की ही तलाश करते हैं। उनके लिये सहवास ही एक मनोरंजन का सस्ता साधन हैं जिसके कारण प्रजनन दर ऊंची हो जाती है।

3. इसके विपरीत धनी व्यक्तियों को मनोरंजन के सभी साधन सुलभ रहते हैं। ये सहवास को मनोरंजन का साधन न मान कर शारीरिक आवश्यकता के रूप में देखते हैं। इससे प्रजननता घट जाती है।

आलोचना– ब्रैण्टो ने इस सिद्धांत का प्रतिपादन करते समय इस बात को विस्मृत कर

दिया था कि गरीबों की आवास की समस्या जटिल होती है। वे एक कमरे में गुजारा करते हैं। इन कमरों में उन्हें सहवास के उपयुक्त अवसर ही नहीं मिल पाते। गरीबों की शारीरिक क्षमता भी इस दृष्टिकोण से अधिक सशक्त नहीं रहती है। दूसरी ओर अमीरों में उत्तम भोजन एवं स्वास्थ्य की सुविधाओं के कारण कामुकता अधिक पाई जाती है जो प्रजननता बढ़ाने में सहायक हो सकती है।

जनसंख्या अध्ययनों (Population Studies) की प्रकृति मूलतः समस्या–प्रधान एवं आर्थिक (Problem&oriented and economic) है। इसका कारण यह है कि वर्तमान कल– युग कल–कारखानों का युग में हमारी समस्याओं का मूल आर्थिक अधिक है और सामाजिक–सांस्कृतिक दृष्टि से कम। अर्थ (वित्तीय साधन) सम्पूर्ण भौतिक व्यवस्था की धुरी है तथा संसार के अधिकतर देश, चाहे वे पूंजीवादी हैं या समाजवादी या मिश्रित अर्थव्यवस्था वाले, अथवा चाहे वे विकसित देश हैं या अल्पविकसित या विकासशील, सभी का झुकाव भौतिक कल्याण एवं विकास (आर्थिक विकास) की ओर है।

9.10 सारांश

वर्तमान परिदृश्य की बात की जाए तो जनसंख्या वृद्धि विश्व में एक गम्भीर समस्या के रूप में परिणित हो चुका है। विभिन्न जनांकिकीविदियों ने अपने–अपने दृष्टिकोणों से जनांकिकी को परिभाषित कर उसके मात्रात्मक एवं गुणात्मक पहलुओं पर विस्तृत अध्ययन कर इनको समझाने का प्रयास किया और आर्थर हैडली एवं रुडन वेबर ने बताया कि बुद्धजीवी तथा समझदार व्यक्ति परिवार नियोजन को शीघ्र अपनाकर परिवार छोटा से छोटा रखने का प्रयत्न करते हैं तथा निटिस का मानना है कि जनसंख्या तथा उसकी प्रजनन दर के निर्धारक कारकों के रूप में नैतिक, मनोवैज्ञानिक, राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक तत्वों का भी पूर्ण योगदान है जिसमें आर्थिक तत्वों का प्रभाव सर्वाधिक होता है और समाज में व्यक्तिगत विकास से धन एवं संपत्ति की असमानताएं कम हो जाएंगी। ब्रेन्टो ने जनसंख्या और उसकी प्रजनन दर को मानव के मौलिक लक्ष्य, सुख, भोग और सम्पन्नता पर आधारित माना है।

9.11 सन्दर्भ ग्रन्थ

1. शिव नारायण गुप्ता' जनांकिकी के मूलतत्त्व' वृंदा पब्लिकेशन्स प्रा.लि. मयूर विहार, दिल्ली (2009)
2. डॉ. डी.एस. बघेल, डॉ. किरण बघेल, 'जनांकिकी' विवेक प्रकाशन जवाहर नगर, दिल्ली (2012)
3. डॉ. जय प्रकाश मिश्रः जनांकिकी, साहित्य भवन पब्लिकेशन 2010.
4. डॉ. रामदेव त्रिपाठीः जनसंख्या भूगोल, बसुन्धरा प्रकाशन, 2011–12
5. डॉ. जी.सी. सिंघई एवं डॉ. जे.पी. मिश्र अर्थशास्त्र ,साहित्य भवन 2012
6. Appleman, Philip (ed.) Thomos Robert Malthus : An Essay on the Principle of Population, New York : W.W. Norton and Co., Inc., 1976.
7. Carr- Saunders, A.M., World Population: Past Growth and Present Trends, Oxford : Clarendon Press, 1936.
8. Coale, Ansley J. and Edgar M. Hoover, Populationi Growth and Economic development in low income countries, Princeton University Press, 1958.
9. Ross, John, A International Encyclopedia of Population The Free Press. Macmillon Publishing co.New York. (1982):

9.12 बोध के प्रश्न

9.12.1 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. जनांकिकी का अर्थ एवं परिभाषाएं की व्याख्या कीजिए।
2. निटिस एवं ब्रेन्टो के जनसंख्या का सिद्धान्त की तुलनात्मक अध्ययन कीजिए।

9.12.2 लघु उत्तरीय प्रश्न

1. आर्थर हैण्डली एवं रूडन वेबर के सिद्धान्त की व्याख्या कीजिए।
2. एल. ब्रेन्टो का जनसंख्या का सिद्धान्त की विवेचना कीजिए।
3. भारत में जनांकिकी के विकास पर एक निबंध लिखिए।

9.12.3 वस्तुनिष्ठ उत्तरीय प्रश्न

1. जनांकिकी शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम किसने दिया?

   (क) अचिले गिलार्ड (ख) जॉन ग्रांट (ग) ब्रैण्टो

2. "The Poverty and Population in India (1936) पुस्तक के लेखक कौन हैं?

   (क) ब्रैण्टो (ख) D.G. Karve (ग) मैक्स वेवर

3. "Population and The Social System" पुस्तक के लेखक कौन हैं?

   (क) पारसन्स (ख) मैक्स वेवर (ग) फ्रांसिस्को एस. निटिस

4. "Theory of Increasing Prosperity and Pleasure" सिद्धान्त किसने दिया?

   (क) एल. ब्रेन्टो (ख) फ्रांसिस्को एस. निटिस (ग) पारसन्स

9.13 वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर

1. (क) 2. (ख) 3. (ग) 4. एल. ब्रेन्टो

9.14 पारिभाषिक शब्दावली

समष्टि स्तर : अति सूक्ष्म स्तर पर

व्यष्टि स्तर : सूक्ष्म स्तर पर

जनांकिकी : जनांकिकी जन समंक का अध्ययन करने वाला विज्ञान है।

इकाई–10 : हेनरिक मेरकर, ईस्टेनबर्ग, लीबिन्सटीन और एलेक्जेण्डर मोरिस कार–साउण्डर्स का सिद्धान्त का जनसंख्या सिद्धांत

इकाई की रूपरेखा

10.1 उद्देश्य

10.2 प्रस्तावना

10.3 जनसंख्या अध्ययन के जनक माल्थस के योगदान

10.4 हेनरिक मेरकर का जनसंख्या का सिद्धांत

10.5 अनगर्न–स्टर्नबर्ग का जनसंख्या का सिद्धांत

10.6 लीबिन्सटीन का जनसंख्या का सिद्धान्त

10.7 एलेक्जेण्डर मोरिस कार–साउण्डर्स का सिद्धान्त

10.8 जनांकिकी एवं समाजशास्त्र

10.9 सारांश

10.10 सन्दर्भ–ग्रन्थ

10.11 बोध के प्रश्न

10.11.1 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

10.11.2 लघु उत्तरीय प्रश्न

10.11.3 वस्तुनिष्ठ प्रश्न

10.12 वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर

10.13 पारिभाषिक शब्दावली

10.1 उद्देश्य

इस अध्याय मे विभिन्न विचारकों के जनसंख्या सम्बन्धी सिद्धांत एवं विषय की चर्चा के उपरान्त आप समझ सकेंगे–

1. जनसंख्या अध्ययन के जनक माल्थस के योगदान को आप समझ सकेगे।
2. हेनरिक मेरकर का जनसंख्या का सिद्धांत को आप समझ सकेगे।
3. अनगर्न–स्टर्नबर्ग का जनसंख्या का सिद्धांत को आप समझ सकेगे।
4. लीबिन्सटीन का जनसंख्या का सिद्धान्त को आप समझ सकेगे।
5. एलेक्जेण्डर मोरिस कार–साउण्डर्स का सिद्धान्त को आप समझ सकेगे।

10.2 प्रस्तावना

जनसंख्या अध्ययनों (Population Studies) की प्रकृति मूलतः समस्या–प्रधान एवं आर्थिक (Problem oriented and economic) है। इसका कारण यह है कि वर्तमान कल–युग हमारी समस्याओं का मूल आर्थिक अधिक है और सामाजिक–सांस्कृतिक दृष्टि से कम। अर्थ सम्पूर्ण भौतिक व्यवस्था की धुरी है तथा संसार के अधिकतर देश, चाहे वे पूंजीवादी हैं या समाजवादी या मिश्रित अर्थव्यवस्था वाले, अथवा चाहे वे विकसित देश हैं या अल्पविकसित या विकासशील, सभी का झुकाव भौतिक कल्याण एवं विकास आर्थिक विकास की ओर है।

10.3 जनसंख्या अध्ययन के जनक माल्थस का योगदान

जनसंख्या के समस्या–प्रधान उपागम (Problem-oriented approach) की सर्वप्रथम प्रस्तुति विश्व प्रसिद्ध अर्थशास्त्री थामस राबर्ट माल्थस (Thomas Robert Malthus) की लेख in Essay on the Principle of Population as it affects the Future Improvement of Society' में है। यद्यपि इसके पूर्व जॉन ग्रांट (John Graunt) ने जनसंख्या–अध्ययनों के विश्लेषण उपागम (Analytical Approach) की आधारशिला Natural and Political Observations made upon the Bills of Mortality नामक पुस्तक में रख दी थी। किन्तु इसका महत्व तब समझा गया जब माल्थस ने जनसंख्या–समस्या की तीव्रता को विश्व पटल पर रखा। इस तरह, समस्या–प्रधान जनसंख्या–अध्ययनों का जनक (Father of population & studies) थामस राबर्ट माल्थस को तथा विश्लेषण– प्रधान जनांकिकी का जनक (Father of Demography) जॉन ग्रांट को समझा जाता है किन्तु जनांकिकी विषय के लिए 'Demography' नामकरण 1955 में सर्वप्रथम फ्रेंच गणितज्ञ अचिल गुइलार्ड (Achille Guillard) ने किया।

जनांकिकी (Demography) नामक इस नवीन विषय में जनसंख्या के जैविक घटकों (Biological component) जन्म (Birth) एवं मृत्यु (Death) तथा सांस्कृतिक घटकों (Cultural components) आवास (In & migration) एवं प्रवास (Out & migration) के निर्धारक तत्वों एवं उनकी माप का विश्लेषण किया जाता है जिससे यह जाना जा सके कि वर्तमान जनसंख्या की भावी–प्रवृत्ति क्या होगी? क्या वर्तमान जनसंख्या देश के आर्थिक विकास के अनुकूल अथवा प्रतिकूल है? क्या जनसंख्या का वर्तमान–आकार देश के लिए वांछित (Desirable) अथवा अनुकूलतम (Optimum) है? जनसंख्या की ये समस्याएं–विकसित अल्पविकसित, पूंजीवादी, समाजवादी एवं मिश्रित सभी तरह की अर्थव्यवस्थाओं में महत्वपूर्ण हैं।

10.4 कार्ल हेनरिक मार्क्स का जनसंख्या का सिद्धांत

कार्ल मार्क्स का जन्म 1818 और मृत्यु 1893 में हुई। यह एक प्रख्यात साम्यवादी विचारक था। उसका जनसंख्या का सिद्धांत साम्यवादी विचारों पर ही आधारित है जिसे जनसंख्या का अतिरेक सिद्धान्त (Theory of Surplus Population) के नाम से जाना जाता है। मार्क्स ने माल्थस के सिद्धांत की कटु आलोचना की है। उसकी आलोचना करते हुए मार्क्स ने अति कटु शब्दों में माल्थस को गालियाँ तक दे डाली हैं। मार्क्स ने माल्थस के सिद्धांत के सम्बन्ध में स्वयं लिखा है, माल्थस का कार्य स्कूल के बच्चों के कार्य जैसा था जो सर्वथा आडम्बर पूर्ण और एक पादरी की अतिशयोक्तिपूर्ण चोरी थी। माल्थस का स्वयं का उसमें एक वाक्य भी नहीं था पर संकुचित राष्ट्रवाद की धारणा के कारण ब्रिटिश लेखकों ने माल्थस के सिद्धांत की प्रशंसा की, यद्यपि वह किसी योग्य नहीं था। मार्क्स ने लिखा है– जब माल्थस को

आशा से अधिक सफलता मिली तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ और उसने बहुत सी अन्य अधकचरी सामग्री उसमें जोड़ दी यह ध्यान देने योग्य बात है कि माल्थस एक चर्च का पादरी था। इस प्रकार मार्क्स माल्थस के विचारों का कटु आलोचक और विरोधी था। मार्क्स का कहना था कि आज तक कोई भी जनसंख्या का सिद्धान्त नहीं दिया गया जिसे सार्वभौमिक माना जा सके। उसके अनुसार जनसंख्या का प्राणीशास्त्र से भी कोई सम्बन्ध नहीं है। संक्षेप में, मार्क्स के जनसंख्या सम्बन्धी विचार इस प्रकार हैं :

- उसके अनुसार वर्तमान समय में अधिक जनसंख्या की समस्या और बेरोजगारी पूँजीवादी उत्पादन के अनोखे तथा असम्भावी परिणाम हैं। अपने इस कथन को उसने निम्न तथ्यों से स्पष्ट किया है :

- आधुनिक अर्थ–व्यवस्था का आधार पूँजीवाद है, जिसमें धन और पूँजी का संचय कुछ लोगों के हाथ में केन्द्रित हो जाता है। फलतः मजदूरों की संस्था में जितनी वृद्धि होती है, उसकी माँग में उतनी वृद्धि नहीं हो पाती। यही कारण है कि अतिरिक्त जनसंख्या के रूप में बेरोजगारों की संख्या बढ़ती है अर्थात् निर्धनों की संख्या में वृद्धि होती है।

- पूँजीवाद का उद्देश्य अधिकतम लाभ कमाना होता है। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए पूँजीपति श्रमिकों के कार्य के मूल्य के बराबर उन्हें मजदूरी न देकर न्यूनतम मजदूरी देता है और वस्तु से प्राप्त अतिरिक्त मूल्य को स्वयं हड़प जाता है। इस कारण भी निर्धनों की संख्या दिनों–दिन अतिरेक जनसंख्या के रूप में बढ़ती जाती है।

- मार्क्स का कथन है कि पूँजीपति अधिकतम लाभ प्राप्त करने के लिए अधिकाधिक मशीनों, स्वचालित यन्त्रों और विवेकीकरण का उद्योग में प्रयोग करता है जिससे मजबूरी में बेरोजगारी फैलती है साथ ही मजदूरी की दर गिरती है और गरीबी में वृद्धि होती है। देश में उपर्युक्त कारणों से बढ़ती हुई गरीबी और बेरोजगारी अतिरेक जनसंख्या की संज्ञा प्राप्त करती है।

- मार्क्स कहता है कि यह कथन सारहीन है कि जनसंख्या की अधिकता का कारण गरीबों की विवेकहीनता व जीवशास्त्रीय तथ्य है जबकि वास्तविकता यह है कि इसका और कोई कारण न होकर पूँजीवादी अर्थव्यवस्था ही है। यह जनसंख्या का नियम पूंजीवादी उत्पादन प्रणाली का ही अनोखा नियम है, और वास्तव में प्रत्येक उत्पादन प्रणाली में ऐतिहासिक घटना क्रम में उत्पन्न होती है, उसके जनसंख्या के अपने विशेष नियम होते हैं।

- मार्क्स के अनुसार खाद्यान्नों की उपज कम होने का मूल कारण भूमि का असमान वितरण, जमींदारी प्रथा, वास्तविक कृषक के पास भूमि का कम होना तथा भूस्वामित्व के जनसंख्या का यह नियम उत्पादन की पूंजीवादी पद्धति के लिए विशिष्ट है और वास्तव में उत्पादन की प्रत्येक विधि जो इतिहास के दौरान उत्पन्न होती है, उसके जनसंख्या के अपने विशिष्ट, ऐतिहासिक रूप से मान्य कानून होते हैं। प्रति अनिश्चितता का होना ही है। इसके कारण खाद्यान्न की उपज कम होती है और अनिर जनसंख्या की समस्या उत्पन्न होती है।

- मार्क्स का मत है कि देश की मेहनतकश जनसंख्या ही अपनी मेहनत से कम मजदूरी दर पर उद्योगों में कार्य कर पूँजीपतियों की पूँजी को जहाँ एक तरफ और अधिक बढ़ा देती है, वहीं दूसरी तरफ स्वयं शोषण का शिकार बनकर अपने आपको अतिरेक जनसंख्या बना लेती है। वास्तव में पूँजीवादी देश के लिए जनसंख्या का यही सही सिद्धान्त है।

- उसके अनुसार जनसंख्या का कोई एक सार्वभौमिक व सार्वकालिक सिद्धान्त नहीं हो सकता। उत्पादन के प्रत्येक काल में चूंकि उत्पादन का पृथक्–पृथक् स्वरूप रहा है, अतः प्रत्येक काल के लिए पृथक्–पृथक् जनसंख्या का नियम होता है। यह नियम केवल उसी अवस्था विशेष के लिए ही सत्य होता है। पूँजीवाद में तो दूसरे सिद्धान्त लागू नहीं होते। इसमें केवल सापेक्षिक अतिरेक जनसंख्या का सिद्धांत ही लागू होता है।

- मार्क्स बेरोजगारी को पूँजीवादी अर्थ–व्यवस्था की एक आवश्यक विशेषता मानता है। उसका मत है कि जैसे–जैसे पूँजीवाद का पतन होता जायेगा, समाजवाद (साम्यवाद) और सामूहिक उत्पादन पद्धति का विकास होगा, ऐसी स्थिति में सभी को पूर्ण रोजगार के अवसर मिलेंगे, न्यायोचित वितरण होगा, आय और सम्पत्ति की असमानता दूर होगी, रहन–सहन के स्तर में सुधार होगा तथा शोषण के अन्त के साथ–साथ अतिरेक जनसंख्या की समस्या समाप्त हो जायेगी। फलतः मृत्यु–दर में भी कमी आयेगी।

- मार्क्स का कथन है कि जनसंख्या वृद्धि की दर में कमी पूँजीपतियों के लाभों को कम कर पूँजीवाद के विनाश में सहायक हो सकती है।

- समाजवादी देशों में रोजगार के पूर्ण अवसर उपलब्ध होने के कारण कोई अतिरेक जनसंख्या की न तो समस्या होगी, न ही वहाँ जन्म–दर को कम करने की आवश्यकता ही होगी।

सिद्धान्त की आलोचनात्मक समीक्षा (Critical Review of the Theory) निश्चय ही मार्क्स तथा उसके अनुयायियों का यह कथन पूर्ण सत्य है कि पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में मशीनीकरण, विवेकीकरण, अधिकतम लाभ का कटु उद्देश्य धन और आय की असमानता व शोषण आदि के कारण बेरोजगारी और निर्धनता भीषण रूप में बनी रहती है अतः इसके कारण देश में अतिरिक्त जनसंख्या बनी रहती है। पर इनके सभी निष्कर्ष सत्य ही हैं ऐसा नहीं है। संक्षेप में, मार्क्स के सिद्धान्त की कमियों को इस प्रकार रखा जा सकता है :

- मार्क्स पूँजीवाद का प्रबल विरोधी था। अतः उसने अधिक जनसंख्या के सभी परिणामों का दोष पूँजीवादी अर्थ–व्यवस्था पर थोपने का प्रयास किया है।

- मार्क्स हर प्रकार की समस्या का हल समाजवादी (साम्यवादी) अर्थ–व्यवस्था को मानता है, पर उसने यह कहीं नहीं स्पष्ट किया कि इस व्यवस्था में प्रजनन व्यवहार कैसा तथा जनसंख्या वृद्धि की क्या प्रवृत्ति या स्थिति होगी?

- उनका यह कथन भी यथार्थ से परे ही है कि समाजवादी व्यवस्था में जनसंख्या की कोई समस्या ही नहीं होगी चाहे उसमें किसी भी दर से वृद्धि हो।

- जबकि साम्यवादी देशों में आय की असमानता समाप्त हो गई है तो क्या कारण है कि इन देशों की जन्म–दर से समानता न होकर काफी भिन्नता है यदि हम साम्यवादी देशों पर दृष्टिपात करें तो हम देखेंगे कि इन देशों में भी नियोजन अपनाया जा रहा है। वहाँ भी इसकी आवश्यकता है।

- मार्क्स के जनसंख्या सम्बन्धी विचारों की एक कमी यह भी है कि उसने जनसंख्या और जन्म तथा मृत्यु–दर को प्रभावित करने वाले अन्य कारकों की पूर्ण उपेक्षा की है जो उचित नहीं है।

मार्क्स ने माल्थस के सिद्धान्त की जिन कटु शब्दों में आलोचना की है तथा माल्थस पर जो अशोभनीय शब्दों के साथ आरोप लगाये हैं वे सर्वथा उचित नही हैं। साथ ही ऐसा लगता है कि मार्क्स ने माल्थस के श्जनसंख्या निबन्ध, का न तो पूर्ण अध्ययन किया है, न उसे समझा। शायद उसको पता नहीं था, उस निबन्ध के अन्य संशोधित संस्करण भी निकल चुके हैं जिसमें माल्थस ने अपने विचारों को और अधिक पूर्ण व निखारने का प्रयत्ल किया है।

अन्त में, यह कहना गलत न होगा कि मार्क्स की विचारधारा पूँजीवाद के प्रबल विरोध और साम्यवाद के अन्धे आकर्षण के मध्य उलझकर व्यावहारिकता के पथ से भटक गई है।

10.5 अनगर्न–स्टर्नबर्ग का जनसंख्या का सिद्धांत

स्टर्नबर्ग ने जनसंख्या के जिस सिद्धान्त का प्रतिपादन किया है, उसका पूरा नाम प्रजनन–दर घटने का तर्कवाद का सिद्धान्त (Theory of Rationalism as the Cause of the Fertility Decline) या तर्कवाद का सिद्धान्त (Theory of Rationalism) है। इसके अनुसार, जनसंख्या का सिद्धान्त ऐसा होना चाहिए जो न केवल अमीरों की गिरती हुई या अधिक प्रजनन दर का कारण बता सके बल्कि उसे गरीबों की भी घटी हुई या सामान्यतः अधिक प्रजनन दर के बारे में सही कारणों का विश्लेषण कर सके। स्टर्नबर्ग ने प्रजनन दर में कमी का मूल कारण तर्क एवं बुद्धि को माना है। इस प्रकार उसने प्रजनन दर में कमी के कारण के रूप में मानसिक कारक को ज्यादा महत्त्व दिया है न कि भौतिक या जैविकीय कारकों को। यही वह विद्वान् है जिसने पहली बार इस वास्तविकता को स्वीकार किया है कि गरीबों में भी प्रजनन दर कम होती है या हो सकती है तथा अमीरों में भी प्रजनन दर अधिक हो सकती है या होती है। इसके सिद्धान्त की प्रमुख बातें इस प्रकार हैं :

स्टर्नबर्ग का कथन है कि, प्रजनन दर में कमी का सम्बन्ध भौतिक या प्राणिशास्त्रीय कारकों से नहीं है बल्कि इसका सीधा सम्बन्ध मानसिक कारणों से है।

स्टर्नबर्ग ने इस्टोनिया (Estoni), नार्वे, फिनलैण्ड तथा लाटिया (Latia) के उदाहरण देते हुए कहा है कि अमीरों में स्वयं ही जन्म–दर कम नहीं हो जाती और न ही गरीबों में स्वयं जन्म–दर अधिक ही हो जाती है। अपने इस कथन के प्रमाण के रूप में उसने अन्य भी अनेक गरीब देशों में निम्न जन्म–दर का तथा अमीर देशों में ऊँची जन्म–दर का उदाहरण दिया है।

इसी तरह इनका कहना है कि यह सदा आवश्यक नहीं कि नगरों में गाँव की अपेक्षा जन्म–दर निम्न रहती है। साथ ही नगर में स्वयं ही जन्म दर कम नहीं हो जाती न गाँवों में स्वयं ही जन्म–दर ऊँची हो जाती, बल्कि इसका मूल कारण नगर और गाँवों के निवासियों की मनोवृत्तियाँ हैं।

अमीरों में जन्म–दर कम होने का तथा गरीबों में जन्म–दर अधिक होने का कारण

उनकी भिन्न–भिन्न मनोवृत्तियाँ हैं।

आपका कथन है कि पूँजीवादी मनोवृत्ति से जन्म–दर घटता है। कारण यह है कि जब मनुष्य आर्थिक सामाजिक व राजनीतिक शक्ति की चाह करने लगता है, तो वह हर कार्य सम्पादित करने के पूर्व ही यह सोचता है कि कार्य उसके लिए लाभदायक होगा या हानिकारक। इससे वह अपने उद्देश्य या स्वार्थ की पूर्ति कर सकेगा या नहीं। यह दृष्टिकोण बताता है कि इस स्थिति में मनुष्य स्वार्थी हो जाता है और स्वावलम्बी होना चाहता है। यह प्रवृत्ति मात्र पुरुषों में ही नहीं बल्कि स्त्रियों में भी होती है। स्टर्नवर्ग का मत है कि यही प्रवृत्ति सन्तानोत्पादन के प्रति भी आ जाती है। यह सन्तान उत्पत्ति से प्राप्त लाभ और हानि पर विचार करता है तथा ऐसी मनोवृत्ति बन जाती है कि अधिक सन्तान होने से सुख–समृद्धि और धन का बँटवारा हो जायेगा तथा इसमें कमी आ जायेगी। यही मनोवृत्ति ही अमीरों में जन्म–दर के कम होने का कारण है। अमीरों तथा नगरवासियों की उपर्युक्त मनोवृत्ति जब गाँवों में पहुँच जाती है या पहुँच जायेगी तब जन्म–दर इसके प्रभाव के कारण घटने लगती है तथा बटने लगेगी। जन्म–दर और आर्थिक विकास का सम्बन्ध स्पष्ट करते हुए स्टर्नबर्ग ने लिखा है कि आर्थिक विकास से जन्म–दर में कमी आती है और जन्म–दर में होने वाली कमी आर्थिक विकास को तीव्रता प्रदान करती है। स्पष्ट है कि स्टर्नबर्ग का सिद्धान्त मानसिक, सामाजिक तथा आर्थिक कारकों के जन्म–दर पर प्रभाव का एक समन्वित तथा संतुलित विश्लेषण है।

अन्जर्न स्टर्नबर्ग (Ungern Sternberg) के जनसंख्या संबंधी विचार समाज विज्ञानी कहे जा सकते हैं। इस सिद्धांत में उन्होंने जन्मदर को प्रभावित करने वाले आर्थिक कारकों को मात्र मान्यता न देकर, सामाजिक कारकों को भी महत्वपूर्ण बतलाया। इस सिद्धांत में प्रथम बार लोगों का ध्यान इस ओर आकर्षित किया गया कि गरीबों के भी कम सन्तानें हो सकती हैं। इस सिद्धांत की प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित है। प्रजननता का संबंध जैविकीय और आर्थिक कारकों से न होकर, व्यक्ति की मानसिक स्थिति या विवेक से होता है।

प्रत्येक मनुष्य अपने आर्थिक, सामाजिक एव राजनीतिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिये, अपनी क्रियाओं का विवेकपूर्ण साधनों से मूल्यांकन करता है। जो क्रिया उसके लक्ष्यों या आदर्शों को प्राप्त करने के लिए उपयोगी है, उसी का वह प्रयोग करता है। जो क्रिया इस दिशा में अवरोधक है, उसे वह प्रयुक्त नहीं करता। प्रजननता यदि उसके लक्ष्यों को प्राप्त करने में अवरोध उत्पन्न करती है, तो वह उसको कम करने का प्रयत्न करता है।

पूंजीवादी मनोवृत्ति और प्रजनन दर में घनिष्ठ संबंध है। दोनों एक दूसरे को परस्पर प्रभावित करते हैं। पूंजीवादी मनोवृत्ति अर्थात् अधिकाधिक भौतिक सुख प्राप्त करने की अभिलाषा के लिये, मनुष्य प्रत्येक कार्य विवेक से करता है। यहां तक कि परिवार का स्वरूप एवं आकार क्या होगा– इसे भी वह पूर्व ही निश्चित कर लेता है। उसके परिवार के लोग भी सभी सुखों को भोग कर सकें, इसके लिए जन्म दर कम रखने की प्रवृत्ति उसमें हमेशा रहती है। यह प्रवृत्ति स्त्रियों में भी पाई जाती है जिसके कारण वे अपने अधिकारों एवं उत्तरदायित्वों के प्रति सचेत रहकर, जन्म दर नियंत्रण हेतु विवेक का प्रयोग करती हैं।

आलोचना : गरीबों में भी प्रजननता कम पाई जाती है। इस तथ्य के प्रमाण नार्वे एवं फिनलैण्ड में उपलब्ध हैं। इसके उपरान्त भी यह सिद्धांत मनुष्य की मनोवृत्ति को पूर्णतया ध्यान में नहीं रखती। मनुष्य बहुत से कार्य विवेक से न करके, आवेश, आक्रोश, आपसी संबंध आदि के कारण भी करता है बहुत सी सामाजिक एवं धार्मिक परंपराएं भी उसके व्यवहार को प्रभावित करती है यह सिद्धांत इन बातों को ध्यान में रखे बिना जनसंख्या नियंत्रण की समस्या पर

विचार करता है।

10.6 लीबेनस्टिन का जनसंख्या का सिद्धांत

लीबिन्सटीन का जनसंख्या का यह सिद्धान्त जनसंख्या नियम का आर्थिक विश्लेषण (Economic Euplanation of the Population), या आर्थिक विकास का जनसंख्या नियम के नाम से जाना जाता है। इस सिद्धान्त में जनसंख्या और आर्थिक विकास के सम्बन्ध को स्पष्ट किया गया है। लीबिन्सटीन के सिद्धान्त की प्रमुख बातें इस प्रकार हैं. जिस देश की जनसंख्या जितनी ही अधिक होगी, उस देश को उतना ही अधिक प्रबल निम्न जीवन–स्तर के फन्दे से निकलने के लिए करना पड़ेगा। जनसंख्या का घनत्व और आर्थिक विकास लीबिन्सटीन का विचार है कि जनसंख्या का अधिक घनत्व आर्थिक विकास में बाधक नहीं है, न ही कम घनत्व को आर्थिक विकास का कारक कहा जा सकता है।

जन्म–दर और आर्थिक विकास : लीविन्सटीन जन्म–दर में कमी विकास का ही परिणाम मानते हैं। अतः आपका विचार है कि सबसे पहले आर्थिक विकास में कार्यक्रम प्रारम्भ करना चाहिए। साथ ही जन्म–दर पर नियन्त्रण करने के लिए अनेक तरीके अपनाने चाहिए। जब तक विकास नहीं होगा तब तक नागरिक विवेकशील नहीं होंगे और उन्हें जन्म निरोध के साधनों की सही जानकारी भी नहीं मिल सकेगी। इस तरह आप इस मत से सहमत नहीं हैं कि जब तक जन्म–दर घटेगी नहीं तब तक विकास नहीं हो सकता। जनसंख्या की अवस्था तथा आवश्यक प्रयत्न–लीबिन्सटीन ने उन तमाम विचारकों का अध्ययन किया जिनका विचार है कि जन्म–दर सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक व तकनीकी उन्नति के साथ घटती है। इन विचारकों में प्रमुख सी. पी. ब्लैक, डब्ल्यू. एस. थाम्पसन व एफ. डब्ल्यू. नोटेस्टीन हैं। उसने अर्द्ध विकसित और पिछड़े हुए देशों की जनसंख्या सम्बन्धी अवस्थाओं का भी अध्ययन कर जनसंख्या, उसकी अवस्था व आर्थिक विकास के सम्बन्ध में इस प्रकार अपना मत व्यक्त किया है कि–

1. वास्तव में कम विकसित व पिछड़े देश के निवासी उन्नत देश के निवासियों की तुलना में कम विवेकशील होते हैं या विवेकी होते ही नहीं। उनके पास न तो गर्भ निरोध के आधुनिक साधन होते हैं, न ही वे यह जानते हैं कि गर्भ धारण को किस प्रकार रोका जाय। प्रायः वे इस पर ध्यान भी नहीं देते। सही तो यह है कि वे सहवास क्रिया और प्रजनन क्रिया को एक ही समझते हैं।
2. चूँकि कम विकसित देशों में मृत्यु दर ऊँची रहती है अतः जन्मदर भी ऊँची होती है क्योंकि इन्हें इसका डर बना रहता है कि वे कहीं बुढ़ापे में सहारा न रह जायें।
3. उन्नत देशों की तुलना में कम विकसित देशों के निवासियों को सन्तान के पालन–पोषण में बहुत कम व्यय करना पड़ता है। अतः इस दृष्टि से बच्चों के पालन–पोषण में किया गया व्यय अर्थात् लागत, बच्चों से प्राप्त होने वाला लाभ या उपयोगिता से कम होता है।

लीबिन्सटीन के अनुसार माता–पिता को अपने बच्चे से उपयोगिता मिलती है: बच्चा माता–पिता को वात्सल्य, स्नेह, प्यार का सुख प्रदान करता है। अतः बच्चा एक उपभोग वस्तु है (Consumption Good)। इन देशों में बच्चा कम आयु से ही माता–पिता के काम में हाथ बँटाना प्रारम्भ कर देता है और स्वयं कमाकर माता–पिता को खिला सकता है या खिलाता है। अतः बच्चा उत्पादक अभिकर्ता भी है (Productive Agent) बच्चा अपने माता–पिता को सहारा

तथा बुढ़ापे में संरक्षण प्रदान करता है। अतः वह वृद्धावस्था का सहारा है (Source of Security)। लीविन्सटीन के कम विकसित देशों के सम्बन्ध में व्याप्त ऊँची जन्म दर का कारण बच्चों के पालन–पोषण में व्यय यानी लागत की कमी तथा उनसे प्राप्त अधिक उपयोगिता अर्थात् लाभ को चित्र के सहयोग से इस प्रकार दर्शाया जा सकता है :

उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर लीविन्सटीन का निष्कर्ष है कि–इन दो देशों में प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि होने पर ही जन्म दर घटेगी। अतः पहले विकास होना चाहिए, इसके लिए इन देशों में महत्वपूर्ण न्यूनतम प्रयास (Critical minimum efforts) जरूरी है, तभी विकास होगा, प्रति व्यक्ति आय बढ़ेगी और जन्मदर घटेगी। आय में वृद्धि–जन्मदर में हास, मृत्यु व जनसंख्या वृद्धि दर के सम्बन्ध में लीबिन्सटीन के विचार संक्षेप में इस प्रकार हैं :

जब प्रति व्यक्ति आय कम होती है तो मृत्युदर भी अधिक होती है। अतः ऐसी स्थिति में बच्चों से प्राप्त उपर्युक्त तीन प्रकार की उपयोगिताएँ बढ़ जाती हैं। मृत्यु अधिक होने पर पालन–पोषण लागत भी कम पड़ती है अतः जन्मदर अधिक होती है क्योंकि अधिक बच्चे पैदा करने की प्रेरणाएँ रहती हैं।

जब प्रति व्यक्ति आय अधिक रहती है तब मृत्युदर भी घट जाती है। पर जन्मदर में ह्रास तत्काल नहीं होता है। इसमें समय लगता है। बच्चे से प्राप्त होने वाली उपयोगिता में होने वाले ह्रास का प्रभाव एकदम कम नहीं हो पाता अतः जन्मदर कम करने की प्रेरणा तत्काल नहीं मिल पाती। पर जब आय बढ़ती जाती है तथा जीवित रहने वाले बच्चों की संख्या में वृद्धि हो जाती है, वैसे–वैसे उनसे मिलने वाली उपयोगिता घटने लगती है, क्योंकि सम्पन्नता की अवस्था में बुढ़ापे का सहारा एवं संरक्षण की इतनी अधिक आवश्यकता भी नहीं रह जाती है और दूसरी तरफ पालन–पोषण शिक्षा, स्वास्थ्य व कपड़े आदि का व्यय यानी लागत भी बढ़ जाती है। अतः इस स्थिति में जन्मदर कम करने की भावना प्रबल होने लगती है फलतः जन्मदर घटती है।

यदि लोगों की आय बहुत अधिक बढ़ जाती है तब इस स्थिति में जन्म और मृत्युदर दोनों ही काफी कम हो जाती है। स्पष्ट है कि लीबिन्सटीन के अनुसार भले ही प्रारम्भ में आय बढ़ने के साथ जनसंख्या में थोड़ी–बहुत वृद्धि हो और होगी भी पर एक सीमा के बाद आय वृद्धि के साथ–साथ जन्मदर घट जाती है, इतना ही नहीं इसके साथ मृत्युदर भी कम हो जाती है।

इस प्रकार जब प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि होती है तो मृत्युदर में भी कमी आ जाती है। मृत्युदर में कमी आने से पुनः जन्मदर में वृद्धि होती है और जन्म–मृत्युदर का यह चक्र निरन्तर चलता रहता है फलतः जनसंख्या में सन्तुलन बना रहता है।

10.7 एलेक्जेण्डर मोरिस कार–साउण्डर्स का सिद्धान्त

इस स्थिति में देश स्थायी विकास की अवस्था को प्राप्त कर लेता है। (Aleuander Morris Carr & Saunders's Theory of Population) कार साउण्डर्स ब्रिटिश अर्थशास्त्री व जनसंख्याशास्त्री हैं। आपके जनसंख्या सम्बन्धी विचारों को जनसंख्या का अनुकूलतम सिद्धान्त (Optimum theory of population) के नाम से जनसंख्या के सामाजिक–सांस्कृतिक तथा आर्थिक सिद्धान्त जाना जाता है। यद्यपि अधिकांश विद्वान् इसे सिद्धान्त के रूप में स्वीकार नहीं करते। पर उनका यह विचार कि समाज में प्रजनन दर इस प्रकार रहेगी कि जनसंख्या अनुकूलतम स्तर पर बनी रहेगी जनसंख्या के सिद्धान्त की श्रेणी में लाकर खड़ा कर देता है। वैसे इनके अधिकांश विचार जनसंख्या की नीति का ही एक स्वरूप है। संक्षेप में, इसके

जनसंख्या सम्बन्धी विचार इस प्रकार हैं :

समाज में प्रजननदर इस प्रकार रहेगी कि जनसंख्या स्वभावतः अनुकूलतम स्तर पर बनी रहेगी। यदि जनसंख्या एक सीमा से ऊपर बढ़ जायेगी तो अन्य बातें यथावत् रहने पर प्रति व्यक्ति आय घट जायेगी। अतः एक सीमा से ऊपर जनसंख्या को नहीं बढ़ने देना चाहिए क्योंकि उससे हानिकारक प्रभाव होंगे।

यदि जनसंख्या वृद्धि से देश के प्राकृतिक साधनों का विदोहन अनुकूलतम हो और प्रति व्यक्ति आय बढ़ रही हो तो जनसंख्या का बढ़ना लाभदायक तथा उचित होगा।

कार–साउण्डर्स जनसंख्या की प्रत्येक वृद्धि को हानिकारक नहीं मानता यदि यह जनसंख्या साधनों के अधिकतम एवं अनुकूलतम प्रयोग की पूर्व स्थिति में बढ़ रही हो। क्योंकि ऐसी स्थिति में जैसे–जैसे संख्या बढ़ेगी साधनों का अधिकतम प्रयोग सम्भव होगा और प्रति व्यक्ति आय भी बढ़ेगी।

कार–साउण्डर्स ने अनुकूलतम जनसंख्या को निर्धारित करते हुए कहा है कि अनुकूलतम जनसंख्या वह है जो अधिकतम आर्थिक कल्याण उत्पन्न करती है। स्पष्ट है कि इसने जनसंख्या की आदर्श स्थिति का निर्धारण आर्थिक कल्याण के आधार पर किया है।

समीक्षा– इस सिद्धान्त की निम्न आधारों पर आलोचना की जाती है वास्तव में यह जनसंख्या का सिद्धान्त न होकर, जनसंख्या की नीति का एक अंग मात्र है।

कार–साउण्डर्स ने नैसर्गिक शक्तियों के प्रभावों की पूर्ण उपेक्षा करते हुए यह मान लिया है कि जन्मदर पूर्णतया मनुष्य के नियन्त्रण में है जिसे पूर्ण सत्य नहीं माना जा सकता।

इनका निष्कर्ष है कि अनुकूलतम जनसंख्या (आदर्श–जनसंख्या) का निर्धारण अधिकतम आर्थिक कल्याण एवं अधिकतम प्रति व्यक्ति आय से किया जा सकता है पर व्यवहार में अनुकूलतम जनसंख्या का निर्धारण यदि असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है।

आर्थिक कल्याण और प्रति व्यक्ति आय दोनों को समान मानना गलत है। साथ ही यह आवश्यक नहीं कि अधिकतम प्रति व्यक्ति आय से आर्थिक कल्याण में वृद्धि हो। इनके अतिरिक्त वे तमाम कमियाँ इस सिद्धान्त में भी मौजूद हैं जिनका उल्लेख आदर्श जनसंख्या सिद्धान्त की आलोचना में किया गया है।

10.8 जनांकिकी एवं समाजशास्त्र

जनांकिकी में जनसंख्या के आकार, वितरण, प्रवास, जन्मदर, मृत्युदर, जनसंख्या–वृद्धि दर आदि का अध्ययन किया जाता है। समाजशास्त्र में भी विभिन्न जनांकिकीय विशेषताओं जैसे– जनसंख्या का आकार, संरचना, वृद्धि, वितरण, आयु वर्गीकरण, लिंग वर्गीकरण आदि का अध्ययन किया जाता है। विभिन्न सामाजिक प्रक्रियाओं तथा घटनाओं, जैसे–जन्म, मृत्यु, विवाह, विवाह की आयु, विवाह की पद्धति, विभिन्न सामाजिक रीति–रिवाज, विवाह–विच्छेद (तलाक) आदि घटनाएं समाजशास्त्र के महत्वपूर्ण अंग हैं। इस घटनाओं और इनसे संबंधित समंकों का जनांकिकी में भी महत्वपूर्ण स्थान है। वस्तुतः समाज का निर्माण तो जनसंख्या से ही होता है, जिसके अन्तर्गत जनसंख्या के विभिन्न जनांकिकीय पहलुओं का अध्ययन किया जाता है। इसी तरह सामाजिक परिवर्तन (Social Change) एवं सामाजिक गतिशीलता (Social Mobiliy) भी जनसंख्या के आकार, उसकी संरचना तथा वितरण से प्रभावित होते हैं। इसी तरह, विभिन्न जनांकिकीय शक्तियां सामाजिक व्यवस्था के अंतर्गत क्रियाशील होती हैं। उदाहरणार्थ–

प्रजननशीलता, विवाह व्यवस्था से संबंधित है। विवाह से संबंधित पहलुओं, जैसे–विवाह के अवसर, विवाह की अनिवार्यता, विवाह की आयु, विवाह पद्धति, एक पत्नी एवं बहुपत्नी विवाह–प्रथा, विधवा विवाह आदि का अध्ययन समाजशास्त्र के अन्तर्गत होता है तथा ये सभी पहलू प्रजननता को प्रभावित करते हैं।

10.9 सारांश

जनसंख्या अध्ययन मुख्यतः समस्या केन्द्रित होता है जिसके अन्तर्गत जनसंख्या के विभिन्न वर्गों के मध्य मौजूद समस्याएँ मुख्यतः आर्थिक समस्याएं क्या है एवं उन्हें कैसे दूर किया जा सकता है? वर्तमान उपभोक्तावादी समय में सामाजिक–सांस्कृतिक परिवर्तन, उत्पन्न समस्याओं की भूमिका द्वितीयक हो गई है।

माल्थस मार्क्स एवं लीबिसीनन, साउण्डर्स आदि विचारकों ने जनसंख्या एवं उन्हें उपलब्ध संसाधनों के बीच सम्बन्धों की विभिन्न दृष्टिकोण से देखने के साथ आर्थिक–राजनीतिक एवं सांस्कृतिक व्यवस्थाओं के कटघरे में खड़ा किया तथा जन्म एवं मृत्युदर आदि का जनसंख्या एवं आर्थिक विकास के साथ सम्बन्ध जोड़ा। विभिन्न सामाजिक–सांस्कृतिक कारण भी जनसंख्या वृद्धि एवं गरीबी की संस्कृति के कारण होते हैं।

10.10 सन्दर्भ ग्रन्थ

1. शिव नारायण गुप्ता : जनांकिकी के मूलतत्त्व' वृंदा पब्लिकेशन्स प्रा0 लि0 मयूर विहार, दिल्ली, 2009
2. डॉ. डी.एस. बघेल एवं डॉ. किरण बघेल : 'जनांकिकी' विवेक प्रकाशन जवाहर नगर, दिल्ली 2012
3. डॉ. जय प्रकाश मिश्र : जनांकिकी, साहित्य भवन पब्लिकेशन, 2010
4. डॉ. रामदेव त्रिपाठी : जनसंख्या भूगोल, बसुन्धरा प्रकाशन, 2011–12
5. डॉ. जी.सी. सिंघई एवं डॉ. जे.पी. मिश्र : अर्थशास्त्र, साहित्य भवन, 2012
6. Dr. Premi, M.K., Ramanamma, A., Bambawale, Usha : An Introduction to social demography, Vikas Publishing House, New Delhi.
7. Appleman, Philip (ed.) Thomos Robert Malthus : An Essay on the Principle of Population, New York : W.W. Norton and Co., Inc., 1976.
8. Carr- Saunders, A.M., World Population : Past Growth and Present Trends, Oxford: Clarendon Press, 1936.
9. Coale, Ansley J. and Edgar M. Hoover : Populationi Growth and Economic development in low income countries, Princeton University Press, 1958.
10. Ross, John : A International Encyclopedia of Population The Free Press. Macmillon Publishing Co., New York, 1982

10.11 बोध के प्रश्न

10.11.1 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. हेनरिक मेरकर के जनसंख्या सिद्धांत की विवेचना कीजिये।
2. अनगर्न–स्टर्नबर्ग एवं लीबिन्सटीन का जनसंख्या सिद्धांत का तुलनात्मक विवेचन कीजिये।
3. एलेक्जेण्डर मोरिस कार–साउण्डर्स का सिद्धान्त की विवेचना कीजिए।

10.11.2 लघु उत्तरीय प्रश्न

1. जनसंख्या अध्ययन से आप क्या समझते हैं?
2. जनसंख्या का अतिरेक सिद्धान्त क्या है?
3. अन्जर्न स्टर्नबर्ग के जनसंख्या विषयक विचार लिखें।

10.11.3 वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. अतिरेक सिद्धान्त किसने दिया?
   (a) कार्ल हेनरिक मार्क्स (b) मैक्स वेबर
   (c) दुर्खीम (d) कार्ल पापर
2. स्टर्नबर्ग ने अपने जनसंख्या सम्बन्धी सिद्धान्त में किस देश का उदाहरण दिया?
   (a) श्री लंका (b) सूडान
   (c) नार्वे (d) इथोपिया
3. कार साउण्डर्स कहाँ के जनसंख्या शास्त्री थे?
   (a) श्री लंका (b) ब्रिटिश
   (c) भारत (d) नेपाल

10.12 वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर

1. (a)
2. (c)
3. (b)

10.13 पारिभाषिक शब्दावली

जनसंख्या आधिक्य : एक ऐसी स्थिति जब मानव जनसंख्या किसी क्षेत्र की पारिस्थितिकीय वहन क्षमता से अधिक हो जाए।

जनांकिकी : जनांकिकी के अन्तर्गत जनसंख्या के समस्त निर्धारक तत्वों तथा उनके परिणामों का अध्ययन किया जाता है।

पूँजीवाद : ऐसी आर्थिक व्यवस्था जिसमें किसी समाज के उत्पादन के साधन निजी व्यक्तियों या संगठनों के पास होते हें तथा कीमतों का निर्धारण मुक्त बाजार में प्रतिस्पर्धा द्वारा निर्धारित होता है।

इकाई–11 : अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धान्त का उद्भव एवं विकास, अनुकूलतम जनसंख्या के मापदण्ड, अनुकूलतम सिद्धान्त की विशेषताएं

इकाई की रूपरेखा

11.1 उद्देश्य

11.2 प्रस्तावना

11.3 अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धान्त : उद्भव एवं विकास

11.4 अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धान्त : मान्यताएं

11.5 अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धान्त : अर्थ एवं परिभाषा

11.6 अनुकूलतम जनसंख्या के मानदण्ड

11.7 अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धान्त : महत्वपूर्ण विशेषताएं

11.8 अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धान्त : व्याख्या

11.9 सारांश

11.10 संदर्भ–ग्रन्थ

11.11 बोध के प्रश्न

11.11.1 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

11.11.2 लघु उत्तरीय प्रश्न

11.11.3 वस्तुनिष्ठ प्रश्न

11.12 वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर

11.13 पारिभाषिक शब्दावली

11.1 उद्देश्य

प्रस्तुत इस इकाई के उद्देश्य को निम्नलिखित बिन्दुओं पर स्पष्ट किया गया है :

1. अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धान्त के उद्भव एवं विकास की विवेचना करना।
2. अनुकूलतम जनसंख्या के मान्यताओं का तथ्यपरक विवेचना करना।
3. अनुकूलतम जनसंख्या के अर्थ एवं परिभाषा को प्रस्तुत करना।
4. अनुकूलतम जनसंख्या के मानदण्डों को प्रस्तुत करना।
5. अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धान्त की व्याख्या करना।

11.2 प्रस्तावना

जनसंख्या के इस सिद्धान्त को अनुकूलतम, आदर्श एवं सर्वोत्तम जनसंख्या सिद्धान्त के नाम से भी जाना जाता है। इस सिद्धान्त में राष्ट्र के खाद्यान्न सहित समस्त आर्थिक उत्पादनों अर्थात् आर्थिक परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए इस बात के निर्धारण का प्रयत्न किया गया है कि किसी राष्ट्र की बढ़ती हुई जनसंख्या लाभदायक है या हानिकारक। सर्वोत्तम जनसंख्या से आशय किसी राष्ट्र की उस जनसंख्या से है जो न तो अधिक हो और न कम हो। जनसंख्या की जिस मात्रा से प्रतिव्यक्ति आय या राष्ट्रीय आय या कुल उत्पादन या राष्ट्र में उपलब्ध आर्थिक साधनों का उपयोग अधिकतम हो। वही अनुकूलतम जनसंख्या कहलाती है।

11.3 अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धान्तः उद्भव एवं विकास

माल्थस के जनसंख्या सिद्धान्त के प्रकाशित होते ही उसे कटु आलोचना का शिकार होना पड़ा। इन आलोचनाओं ने अन्य विद्वानों को इस समस्या पर एक नवीन विशिष्ट दृष्टिकोण से अध्ययन करने की प्रेरणा प्रदान किया। अनेक विद्वान इस बात से सहमत नहीं थे कि जनसंख्या में वृद्धि हर हाल में समाज के लिए नकारात्मक अथवा हानिकारक होते है। अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धान्त में किसी देश की आर्थिक परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए इस बात का अध्ययन किया जाता है कि उस देश की बढ़ती हुई जनसंख्या लाभदायक है या हानिकारक? **प्रोफेसर सालिगमैन** के अनुसार जनसंख्या की समस्या केवल संख्या अथवा आकार की समस्या नहीं है बल्कि यह कुशल उत्पादन और न्यायपूर्ण वितरण की समस्या है। यह सिद्धान्त किसी देश की राष्ट्रीय आय या उत्पादन को जनसंख्या वृद्धि से सम्बन्धित कर यह पता लगाने का प्रयास करता है कि अधिकतम आय या उत्पादन की दृष्टि से जनसंख्या का आकार अनुकूलतम है अथवा नहीं। यह सिद्धान्त जनसंख्या में वृद्धि की दर अथवा कारणों पर प्रकाश नहीं डालता।

इस सम्बन्ध में जननांकिकीविदों ने उसी दिन से चिन्तन एवं मन्थन करना शुरू कर दिया था। जिस दिन माल्थस ने संपूर्ण दुनिया को चेतावनी स्वरूप बताया था कि बढ़ती जनसंख्या हानिकारक है। यद्यपि इस सिद्धान्त के प्रतिपादन की कोई निश्चित तिथि निर्धारित नहीं की जा सकती परन्तु आर्थिक विचारों के इतिहास के आधार पर यह कहा जा सकता है कि सर्वप्रथम एडवर्ड वेस्ट (Edward West) ने सन् 1815 ई0 में अपने निबन्ध लेख "Essay On The Application Of The Capital To Land" में यह विचार प्रतिपादित किया है कि जनसंख्या के बढ़ने के साथ–साथ श्रम में विशिष्टता आ जाती है जिससे उत्पादन में वृद्धि होती है। इस विचार को इस सिद्धान्त का संकेत मात्र कहा जा सकता है। इसके बाद 19वीं सदी के अन्त में

(Henry Sidgwick) **हेनरी सिजविक** ने अनुकूलतम जनसंख्या के विचार की नींव रखी। सिजविक ने अपनी पुस्तक Principles Of Political Economy में इस प्रकार विचार व्यक्त किये है, ''एक व्यक्तिगत फर्म में एक ऐसा बिन्दु आता है जो अधिकतम प्रतिफल प्रदान करता है, यह उस समय होता है जब फर्म के अन्दर एक उचित अनुपात में सभी साधनों को लगाया जाये। यही बात सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था में लागू होती है ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार फर्म या व्यक्तिगत अर्थव्यवस्था पर। उन्होंने बताया कि एक अनुपात में यदि सभी साधनों को लगाया जाये तो एक ऐसा बिन्दु आता है कि जिसमें उत्पादन अधिकतम होगा।'' यद्यपि उन्होंने अनुकूलतम शब्द का प्रयोग नहीं किया लेकिन उनका संकेत उसी तरफ था। इस कथन का सहारा लेकर एडविन कैनन (Edwin Cannon) ने सन् 1924 में प्रकाशित अपनी पुस्तक 'Wealth' में सर्वप्रथम अनुकूलतम शब्द का प्रयोग करके अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धान्त की एक क्रमबद्ध व वैज्ञानिक व्याख्या करते हुए सिद्धान्त को प्रतिपादित किया। बाद में इस सिद्धान्त को व्यापक रूप प्रदान करने वाले विद्वानों में प्रो0 डाल्टन (Dalton), प्रो0 राबिन्स (Robbins) एवं प्रो. कार–साण्डर्स (Car-Saunders) की भूमिका उल्लेखनीय रही।

11.4 अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धान्तः मान्यताएं

जनांकिकीविदों ने अपने इस सिद्धान्त को निम्न प्रमुख मान्यताओं के साथ प्रस्तुत किया है।

1. एक समय विशेष पर जनसंख्या में वृद्धि के साथ प्राकृतिक साधनों, तकनीकी ज्ञान, पूँजी इत्यादि में कोई परिवर्तन नहीं होता, अर्थात् जनसंख्या में वृद्धि होने पर प्रारम्भ में उत्पत्ति वृद्धि नियम कार्यशील होता है लेकिन एक सीमा के उपरान्त उत्पत्ति ह्रास नियम क्रियाशील होने लगता है।
2. जनसंख्या में वृद्धि के साथ कुल जनसंख्या में कार्यशील जनसंख्या का अनुपात समान रहता है। जनसंख्या बढ़ती है तो कार्यशील जनसंख्या भी उसी अनुपात में बढ़ती है।
3. कार्यशील जनसंख्या के प्रत्येक सदस्य द्वारा किया जाने वाला प्रति घण्टा काम तथा उसके काम करने के घण्टे यथास्थित रहते हैं।

11.5 अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धान्तः अर्थ एवं परिभाषाएं

अनुकूलतम जनसंख्या से अभिप्राय उस जनसंख्या से है जो किसी देश में एक निश्चित समय पर दिये हुए साधनों का अधिकतम उपयोग तथा उत्पादन के लिए आवश्यक है। जब देश की जनसंख्या का आकार आदर्श रहता है तो प्रति व्यक्ति आय अधिकतम होती है। इस प्रकार एक विशेष समय तथा परिस्थितियों में वही जनसंख्या सर्वोत्तम होती है जिसमें प्रति व्यक्ति आय अधिकतम होती है। सिद्धान्त की अवधारणा को स्पष्ट करने के लिए विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषाओं को समझना आवश्यक है। यथा–

1. **डाल्टन (Dalton)–** ''अनुकूलतम जनसंख्या वह होती है जो प्रति व्यक्ति अधिकतम आय प्रदान करती है।'' (Optimum population is that which gives the maximum income per head)
2. **बोल्डिंग (Boulding)–** ''वह जनसंख्या जिस पर जीवन स्तर अधिकतम होता है अनुकूलतम जनसंख्या कहलाती है।'' (The population at which the standard of life is

maximum is called the optimum population-Economic Analysis, p. 658)

3. **वोल्फ (Wolf)–** "वह जनसंख्या जो अधिकतम उत्पादन सम्भव बनाती है अनुकूलतम जनसंख्या अथवा सबसे अच्छी जनसंख्या है।"

4. **राबिन्स (Robbins)–** "अनुकूलतम जनसंख्या वह है जिसमें अधिकतम उत्पादन सम्भव होता है।" (Optimum population is the population which just makes the maximum returns possible)

5. **कार साण्डर्स (Car Saunders)–** "अनुकूलतम जनसंख्या वह है जो अधिकतम आर्थिक कल्याण उत्पन्न करती है।" (Optimum population is that which produce maximum economic welfare)

6. **जे.आर. हिक्स (J.R. Hicks)–** "अनुकूलतम जनसंख्या, जनसंख्या का वह स्तर है जिस पर प्रति व्यक्ति उत्पादन अधिकतम होता है।" (Optimum population is that level of population which would make output per head maximum - Social Framework, p. 271)

7. **एरिक रोल (Eric Roll)–** "अनुकूलतम जनसंख्या किसी देश की वह जनसंख्या है जो साधनों की दी हुई मात्रा के सहयोग से अधिकतम उत्पादन कर सके।"

8. **एडविन कैनन (Edwin Canon)–** "किसी दिये हुए समय पर किसी देश में उत्पादन का एक अधिकतम बिन्दु होता है जहां पहुंचने पर जनसंख्या तथा प्राकृतिक साधनों का पूर्ण समन्वय हो जाता है, इस स्थिति में श्रम की मात्रा ऐसी होती है कि उसमें वृद्धि तथा कमी दोनों की उत्पत्ति में कमी लाती है।"

अपने कथन को प्रो. कैनन ने और स्पष्ट करते हुए लिखा है कि, "प्रत्येक उद्योग में अधिकतम उत्पादन का एक बिन्दु होता है, इसी प्रकार सभी उद्योगों को मिलाकर भी उत्पादन का एक अधिकतम बिन्दु होता है। यदि सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था के उत्पादन को इस बिन्दु तक लाने के लिए जनसंख्या कम हो तो यह स्थिति जनाभाव की है, अतः जनसंख्या की वृद्धि करनी होगी। इसके विपरीत यदि जनसंख्या इतनी अधिक है कि वह उस बिन्दु से आगे बढ़ गई है तो इसका तात्पर्य यह है कि देश में जनाधिक्य की स्थिति है और जनसंख्या में कमी द्वारा इसे दूर किया जा सकता है।"

यदि आप अनुकूलतम जनसंख्या के सम्बन्ध में व्यक्त किये गये विभिन्न विद्वानों के विचारों पर चिन्तन मनन करें तो निष्कर्षतः आप समझ गये होंगे कि डॉल्टन की परिभाषा अधिक सरल, वैज्ञानिक एवं यथार्थपरक है। राबिन्स का दृष्टिकोण अधिक विस्तृत है। उनके अनुसार अनुकूलतम जनसंख्या वह होगी जहाँ कुल उत्पादन अधिकतम होगा। इस प्रकार वे अर्थव्यवस्था की समस्त उत्पादक सेवा को लेकर चलते है। यद्यपि राबिन्स, डाल्टन की भांति धन या कुल उत्पादन के वितरण पर बल नहीं देते परन्तु उन्होंने अनुकूलतम जनसंख्या के विचार में उपभोग को सम्मिलित करके उसे विस्तृत रूप प्रदान कर दिया। इस प्रकार रॉबिन्स का विचार जहाँ अधिक विस्तृत है वहीं डाल्टन का विचार सरल तथा व्यवहारिक है। डाल्टन की परिभाषा इस दृष्टिकोण से वैज्ञानिक है कि जनसंख्या के अनुकूलतम स्तर के लिए उत्पादन को अधिकतम बनाना ही पर्याप्त नहीं है। वरन् इस बात की भी आवश्यकता है कि इसका न्यायोचित वितरण भी हो। कार साण्डर्स की भी परिभाषा सर्वस्वीकार नहीं है, क्योंकि कल्याण के फलस्वरूप अन्य वितरण तथा निर्गत की संरचना के सम्बन्ध में मूल्य निर्णय लेने पड़ते हैं। इस प्रकार डाल्टन की

परिभाषा सर्वग्राह्य है।

11.6 अनुकूलतम जनसंख्या के मापदण्ड

1. जनसंख्या की संरचना (Composition) – सर्वोत्तम जनसंख्या को निश्चित करते समय हम जनसंख्या के परिमाणात्मक व गुणात्मक दोनों पहलुओं को देखते हैं। अर्थात् हम केवल लोगों की कुल संख्या को ही ध्यान में नहीं रखते बल्कि यह भी देखते हैं कि यह जनसंख्या श्रम के दृष्टिकोण से, आयु तथा यौन के बँटवारे, शिक्षा व तकनीकी योग्यता आदि की दृष्टि से किस प्रकार भिन्न है।
2. प्राकृतिक संसाधन (Natural Resources) – इसमें हम भूमि तथा भूमि से उत्पन्न होने वाले समस्त पदार्थों को शामिल करते हैं। इसके अन्तर्गत उन चीजों को भी सम्मिलित किया जाता है जो विदेश से विनिमय करके प्राप्त होती है।
3. प्रौद्योगिकी (Technology) – सर्वोत्तम जनसंख्या की दृष्टि से प्रविधि के अन्तर्गत तकनीकी की कुल व्यवस्था, उत्पादन कला की स्थिति, उत्पादन के यन्त्र, उपलब्ध पूँजी की मात्रा, वर्तमान साधनों का नियन्त्रण तथा उपयोग आदि सम्मिलित किया जाता है। कभी–कभी प्रविधि के अन्तर्गत उपभोग वाली और व्यक्तियों द्वारा उपभोक्ता वस्तुओं को काम लाने की तकनीकी क्षमता का भी समावेश कर लिया जाता है।
4. उत्पादन की विधियाँ (Production method) – इसके अन्तर्गत बहुत से विचारों को सम्मिलित किया जाता है जैसे– विभिन्न उत्पत्ति के साधनों को किस अनुपात में मिलाया जाए, राष्ट्रीय उत्पादन के साधनों में किस प्रकार वितरण किया जाए, विद्यमान उत्पादन पद्धति में अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार कहाँ तक उचित होगा और उसको किस सीमा तक बढ़ाया जाए, यातायात के साधनों की क्या प्रणाली हो, आर्थिक प्रणाली कौन सी हो, बिक्री का ढंग क्या हो, करारोपण की क्या व्यवस्था हो, इत्यादि।
5. मानवीय सुख (Human happiness) – अनुकूलतम जनसंख्या एक गुणात्मक विचार है, अतः सर्वोत्तम जनसंख्या निर्धारित करने के लिए हमको सामाजिक आर्थिक कल्याण तथा मानवीय सुख को भी ध्यान में रखना चाहिए।
6. व्यक्तिगत अवसर तथा सुरक्षा की उपलब्धि (Opportunity & Security)
7. प्रकृति के साथ सामंजस्य
8. पर्यावरण संरक्षण (Protection of Ecology)
9. आध्यात्मिक कार्य की स्वतन्त्रता

इन सब बातों पर विद्वानों का एक मत नहीं है।

11.7 अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धान्तः महत्वपूर्ण विशेषताएं

अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धान्त की महत्वपूर्ण विशेषताएँ निम्नलिखित है :

1. उत्पत्ति ह्रास नियम आधारित यह सिद्धान्त परिवर्तनशील अनुपात या उत्पत्ति ह्रास नियम पर आधारित है।
2. अनुकूलतम जनसंख्या का बिन्दु गतिशील होता है। जिन साधनों को मान लिया गया है उसमें से किसी में भी परिवर्तन होने पर, यह अनुकूलतम बिन्दु या स्तर बदल जाता है।

उदाहरणार्थ, देश में वैज्ञानिक प्रगति, तकनीकी विकास, प्राकृतिक साधनों की खोज, उत्पादन की नई रीतियों के अनुसंधान से प्रति व्यक्ति उत्पादन में वृद्धि होगी और अनुकूलतम बिन्दु ऊपर को खिसक जायेगा। अनुकूलतम जनसंख्या के बिन्दु की गतिशील प्रकृति को चित्र द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है।

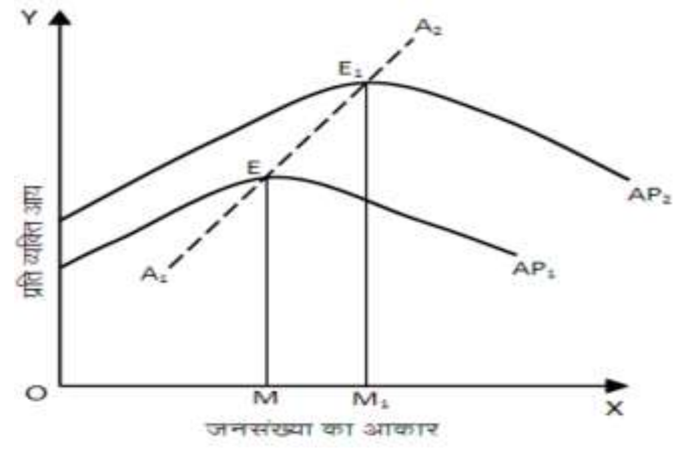

उत्पादन की तकनीक तथा वैज्ञानिक विकास की एक दी हुई स्थिति में AP1 औसत उत्पाद वक्र अथवा प्रति व्यक्ति आय वक्र है जिस पर अनुकूलतम जनसंख्या स्तर OM है। उत्पादन की विधियों में सुधार तथा अनुसन्धान के फलस्वरूप उत्पादन वृद्धि होती है और प्रति व्यक्ति आय EM से बढ़कर E1, M1 हो जाती है क्योंकि अब नई औसत उत्पादन रेखा ऊपर उठकर AP, हो जाती है। फलस्वरूप, अनुकूलतम जनसंख्या का बिन्दु M से बढ़कर M1 हो जाता है। OM जनसंख्या जो पहलु अनुकूलतम थी अब अल्प–जनसंख्या हो चुकी है। चित्र में A1A, रेखा जनसंख्या के प्रावैगिक स्वरूप (Dynamic Nature) को प्रकट करती है।

3. अनुकूलतम जनसंख्या परिमाणात्मक ही नहीं गुणात्मक विचार भी है– कुछ आधुनिक विद्वानों जिनमें प्रो. बोल्डिंग, प्रो. टी.आर.बाई, प्रो. पेनरोज प्रमुख हैं, की यह धारणा है कि अनुकूलतम जनसंख्या एक परिमाणात्मक विचार ही नहीं बल्कि गुणात्मक विचार भी है। यही कारण है कि बोल्डिंग प्रति व्यक्ति 'आय के स्थान' पर 'जीवन स्तर' शब्द का प्रयोग करते हैं। प्रो. बाई जनसंख्या के उस आकार को अनुकूलतम मानते हैं जो (प्रति व्यक्ति अधिकतम आय के अतिरिक्त) सामाजिक एवं आर्थिक जीवन को भी उच्चतम बना सके। स्वभावतः जब उत्पादन या आय बढ़ती है तो लोगों के आर्थिक कल्याण में भी वृद्धि होती है जिससे उनका जीवन स्तर ऊँचा उठने लगता है, परन्तु चरित्र, स्वास्थ्य, आदि गुणात्मक बातों को सम्मिलित करने से किसी समय पर एक देश के लिए सही रूप से अनुकूलतम जनसंख्या को ज्ञात करना अत्यन्त कठिन हो जाता है।

11.8 अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धान्तः व्याख्या

सिद्धान्त को जानने से पहले सिद्धान्त का आधार जानने का प्रयास करते हैं। अनुकूलतम या ईष्टतम (Optimum) का विचार सर्वत्र स्वीकार किया जाता है। एक कक्षा में कितने छात्र होना चाहिए, पहनने के लिए कितने कपड़े होने चाहिए, या कमरे में पढ़ने के लिए कितनी रोशनी होनी चाहिए, आदि प्रश्न ईष्टतम के विचार से ही सम्बन्धित है। ध्यातव्य है कि ईष्टतम सर्वोत्तम तो है लेकिन अधिकतम नहीं है। उदाहरण के लिए एक श्रमिक अधिकतम मजदूरी अर्जित करने का प्रयत्न तो कर सकता है लेकिन अधिकतम मजदूरी के लिए अन्य तत्वों को ध्यान में रखना होगा जैसे रोजगार की सुरक्षा, कार्य की दशायें, धन प्राप्ति के स्रोत

की वैधानिकता आदि। अतः ऊँची मजदूरी मिलने पर वह ऐसे स्थान पर भी रोजगार स्वीकार ही करेगा जहाँ असुरक्षा हो। इस प्रकार वह एक अनुकूलतम स्थिति वह है जहाँ पर किसी लक्ष्य विशेष की पूर्ति सर्वोत्तम ढंग से की जा रही है। इसी परिप्रेक्ष्य में ईष्टतम या अनुकूलतम जनसंख्या की बात भी की जा सकती है। एलफ्रेड सौवे ने इसीलिए लिखा है– "An optimum population is the one that achieves a given aim to the most satisfactory way." अब आपके सम्मुख प्रश्न उठता है कि कौन से लक्ष्य हैं जिन्हें हम अधिकतम करना चाहते हैं। व्यक्तिगत कल्याण, सम्पत्ति में वृद्धि, रोजगार, शक्ति, जनस्वास्थ्य एवं आय–प्रत्याशा, जीवनस्तर, राष्ट्रीय उत्पादन, राष्ट्रीय आय, प्रति व्यक्ति आय, प्रति व्यक्ति उपभोग आदि। इन विभिन्न घटकों में आर्थिक आधार पर सर्वाधिक स्वीकार्य आधार हो सकता है। अतः जब भी अनुकूलतम का उल्लेख होता है हम आर्थिक ईष्टतम को लेते हैं। सौवे ने लिखा है, "The optimum population is only a convenient phrase. When we say that, a country is economically over populated, we mean that its populations is higher than its economic optimum at the present moment."

यहाँ प्रश्न उठता है कि आर्थिक ईष्टतम या अनुकूलतम का आधार क्या हो? उत्पत्ति के नियमों से यह स्पष्ट है कि साधनों का एक ऐसा संयोग होता है जिस पर मूल्य लागतें न्यूनतम होती हैं। यदि उत्पत्ति के प्रत्येक साधन को आदर्श अनुपात में नहीं मिलाया जायेगा तब प्रत्येक साधन का पूरा–पूरा प्रयोग उत्पादन के क्षेत्र में नहीं किया जा सकेगा। सभी साधनों के आदर्श अनुपात में होते ही अधिकतम उत्पादन की सीमा आ जायेगी। अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धान्त उत्पत्ति के नियमों (Law of Returns) पर आधारित है। जनसंख्या में वृद्धि तथा कार्यकारी जनसंख्या के मध्य फलनात्मक सम्बन्ध होता है। किसी देश के प्राकृतिक साधनों का समुचित ढंग से विदोहन करने के लिए यह आवश्यक होता है कि जनशक्ति का अन्य उत्पादन साधनों से एक निश्चित अनुपात बना रहे। यदि किसी देश की जनसंख्या कम है तो कार्यशील जनसंख्या भी कम होगी। अतः उत्पादन के साधनों का समुचित रूप से प्रयोग न हो पाने के कारण औसत उत्पादन एवं प्रति व्यक्ति आय (Per Capita Income) कम होगी। जब जनसंख्या बढ़ती है और कार्यशील जनसंख्या बढ़ती है तो श्रम विभाजन के लाभ के फलस्वरूप देश के साधनों का अच्छी तरह से प्रयोग के साथ प्रति व्यक्ति आय भी बढ़ने लगता है। इस तरह आप समझ गये होंगे कि प्रारम्भ में जनसंख्या वृद्धि के साथ श्रम की सीमान्त उत्पादकता तथा औसत उत्पादकता बढ़ेगी अर्थात् उत्पत्ति वृद्धि नियम (Laws of Increasing Returns) लागू होगा। उसके बाद एक ऐसा बिन्दु प्राप्त होगा जिस पर जनसंख्या उत्पत्ति के अन्य साधनों के साथ इष्टतम सम्बन्ध स्थापित हो जायेगा। यहाँ औसत उत्पादन अधिकतम एवं अनुकूलतम होगी। यह अनुकूलतम जनसंख्या का बिन्दु होगा। यह उत्पत्ति समता नियम (Law of Constant Returns) की अवस्था है। यदि जनसंख्या वृद्धि इसके बाद भी होती है तो यह अनुकूलतम संयोग भंग हो जायेगा। फलतः सीमान्त एवं औसत उत्पादन घटने से उत्पत्ति ह्रास नियम (Law of Decreasing Return) क्रियाशील हो जायेगा, प्रति व्यक्ति आय घटने लगेगी।

अब आप समझ गये होंगे कि अनुकूलतम जनसंख्या का स्तर या बिन्दु वह है जहाँ प्रति व्यक्ति औसत आय अधिकतम होगी। यदि जनसंख्या का आकार इस स्तर से कम है तो इसे न्यून जनसंख्या (Under Population) कहा जायेगा और जनसंख्या के आकार का इस बिन्दु से अधिक होने पर देश में अति जनसंख्या (Over Population) समझी जायेगी।

अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धान्त को निम्न चित्र से भी आप समझ सकते हैं :

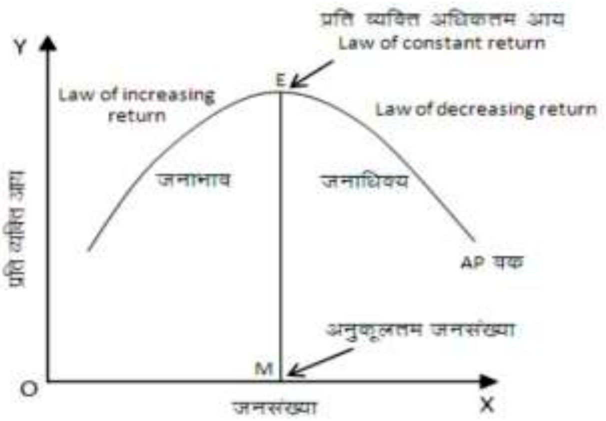

चित्र में AP प्रति व्यक्ति औसत आय अथवा औसत उत्पादन का वक्र है। प्रारम्भ में OM तक जनसंख्या में वृद्धि होने पर प्रति व्यक्ति वास्तविक आय तथा उत्पादकता बढ़ती है अर्थात् उत्पत्ति वृद्धि नियम (Law of Increasing Return) लागू होता है। OM जनसंख्या पर प्रति व्यक्ति आय ME होती है जो अधिकतम है। इसके उपरान्त प्रति व्यक्ति आय घटने लगती है यहां उत्पत्ति ह्रास नियम (Law of Decreasing Return) लागू हो जाता है। अतः OM अनुकूलतम जनसंख्या है। चित्र से स्पष्ट है कि OM तक जनसंख्या वांछनीय है किन्तु M बिन्दु के बाद यह अवांछित है और इस पर रोक न लगने पर जनाधिक्य की समस्या उत्पन्न हो जायेगी।

प्रो. माल्थस का मानना था कि यदि देश में नैसर्गिक प्रतिबन्ध लागू हो जाय तो यह स्थिति अतिजनसंख्या या जनाधिक्य (Over Population) की स्थिति का सूचक है, परन्तु यह विचार वास्तविक नहीं है। अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धान्त के अनुसार यदि किसी देश में अनुकूलतम से कम जनसंख्या है तो जनाभाव अन्यथा अनुकूलतम से अधिक है तो जनाधिक्य की स्थिति मानी जायेगी।

डाल्टन का सूत्र– अनुकूलतम आकार से जनसंख्या की न्यूनता या आधिक्य मापने के लिए प्रसिद्ध अर्थशास्त्री डाल्टन ने एक सूत्र की स्थापना की जो निम्नलिखित है :

$$M = \frac{A - O}{O}$$

जहाँ, M = समायोजन अभाव की मात्रा (Degree of Maladjustment)

A = वास्तविक जनसंख्या (Actual Population)

O = अनुकूलतम जनसंख्या (Optimum Population)

समायोजन अभाव से तात्पर्य है कि वास्तविक जनसंख्या अनुकूलतम जनसंख्या से कितनी कम या अधिक है। यदि M धनात्मक (Positive) है तो यह जनाधिक्य को, M ऋणात्मक है तो कम जनसंख्या अथवा जनाभाव का द्योतक है। यदि M शून्य है तो वास्तविक एवं अनुकूलतम जनसंख्या बराबर होगी।

संक्षेप में यह सिद्धान्त इस तथ्य को स्पष्ट करता है कि किसी देश के प्राकृतिक साधनों का समुचित दोहन करने के लिए एक निश्चित मात्र में उत्पत्ति साधनों की आवश्यकता पड़ती है। चूँकि श्रम भी उत्पत्ति का एक महत्वपूर्ण साधन है, इसलिए प्राकृतिक साधनों के समुचित उपयोग के लिए उचित मात्रा में जनसंख्या का होना भी आवश्यक है। अतः सर्वोत्तम जनसंख्या,

जनसंख्या की वह संख्या है जिससे किसी देश का एक समय में, विशेषकर प्राकृतिक साधनों का समुचित, न कि अधिकतम दोहन हो सके तथा प्रति व्यक्ति आय अधिकतम हो सके। इसे निम्न सारणी के द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है–

जनसंख्या (करोड़ में)	कुल वास्तविक आय	प्रति व्यक्ति आय
40	800	20
50 (आदर्श जनसंख्या)	1,250	25(अधिकतम प्रतिव्यक्ति आय)
60	1,312	22

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि प्राकृतिक साधनों का अधिकतम दोहन उसी समय होता है जबकि जनसंख्या 50 करोड़ है क्योंकि इस जनसंख्या पर ही प्रति व्यक्ति आय अधिकतम है। यदि जनसंख्या उससे कम है अर्थात् 40 करोड़ है तब प्रतिव्यक्ति आय केवल 20 ही है। परन्तु यदि जनसंख्या बढ़ भी जाती है तो भी प्रति व्यक्ति आय घटकर 22 रह जाती है।

11.9 सारांश

अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धान्त के अन्तर्गत माल्थस ने सम्पूर्ण दुनियां को चेतावनी स्वरुप बताया है कि अधिकतम जनसंख्या हानिकारक है। इस विचार को आर्थिक दृष्टिकोण की स्थिति के स्वरूप में एक आधार व्यक्त किया गया था। एडवर्ड वेस्ट ने भी 1815 ई. में अपने निबन्ध "Essay on the application of the capital to land" में बताया है कि, ''जनसंख्या के बढ़ने के साथ–साथ श्रम में भी विशिष्टता आ जाती है तथा हेनरी सिजविज ने भी अपनी पुस्तक "Principles of Political Economy" में अपने विचार को व्यक्त किये हैं। एडविन कैनन ने सन् 1924 में अपनी पुस्तक "Wealth" में अनुकूलतम शब्द का प्रयोग करके जनसंख्या सिद्धान्त की क्रमगत व्याख्या करते हुए अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धान्त को प्रतिपादित किया है। अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धान्त की मान्यताएँ भी इस अध्याय में प्रस्तुत किया है तथा बताया है कि देश की जनसंख्या बढ़ने के बावजूद भी एक विशेष उस देश के प्राकृतिक साधन, पूँजी की मात्रा व प्राविधिक अवस्था में कोई परिवर्तन नहीं होता है।

अनुकूलतम जनसंख्या उस सर्वोत्तम जनसंख्या है जो किसी देश में एक निश्चित समय पर उपलबध साधनों का अधिकतम उपयोग करने अथवा अधिकतम उत्पादन करने के लिए आवश्यकताएं होती हैं। प्रति व्यक्ति आय समुचित हो, सर्वत्र सम्पन्नता हो तथा जनसंख्या एवं संसाधनों में अनुकूलतम सन्तुलन हो और देश की सम्पूर्ण जहाँ कृषि, उद्योग, फर्म, संचार, साधन, व्यापार, वाणिज्य और सामाजिक सेवाएँ सभी पूर्ण विकसित हो और देश की सभी संसाधनों को पूर्णतः और अपने स्वयं सक्षम समझ–बुझ कर उपयोग में लाया जाता है। नवीन संसाधनों के अनुसंधान और उसके दोहन में सुधार और वैज्ञानिक प्रगति के कारण अनुकूलतम जनसंख्या की मात्रा में चढ़ाव व उतार लगा रहता है।

इस प्रकार जहाँ माल्थस का सिद्धान्त एक सामान्य सिद्धान्त है जो हर देश पर समान रूप से लागू होता है, जबकि अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धान्त एक विशिष्ट सिद्धान्त है जो किसी देश की आर्थिक परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए उसकी जनसंख्या सम्बन्धित समस्या का अध्ययन करता है अतः यह माल्थस के सिद्धान्त की तुलना अधिक यथार्थपरक है।

11.10 संदर्भ सूची

1. Edward West (1818), Eassy on the Application of the Capital to land : The Lord Baltimore press.

2. Henri Sidgwike (1887), Principles of Political Economy : Cambridge University press.
3. Adwin Cannon (1924), Wealth : UNKNO.
4. K. E. Boulding (1955), Economic Analysis : Harper and Row.
5. J.R. Hicks (1971), The Social Framework : Oxford University press.
6. Alfred Sauvy (1969), General Theory of Population : George Weidenfeld & Nicholson.
7. डॉ. मिश्रा, जे.पी., जनांकिकी, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स आगरा।
8. डॉ. बघेल. डी.एस., जनांकिकी, विवेक प्रकाशन, दिल्ली।
9. डॉ. पन्त, जीवन चन्द्र, जनांकिकी, गोयल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ।
10. डॉ सिन्हा वी.सी., जनांकिकी के सिद्धांत , मयूर बुक्स , दिल्ली ।

11.11 बोध के प्रश्न

11.11.1 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. जनसंख्या के अनुकूलतम सिद्धान्त की आलोचनात्मक व्याख्या कीजिए।
2. अनुकूलतम या सर्वोत्तम जनसंख्या सिद्धान्त की व्याख्या कीजिए।
3. अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धान्त को समझाइए। यह माल्थस के सिद्धान्त से किन बातों में भिन्न है।

11.11.2 लघु उत्तरीय प्रश्न

1. अनुकूलतम जनसंख्या के मापदण्ड पर एक टिप्पणी कीजिए।
2. सर्वोत्तम जनसंख्या सिद्धान्त की मान्यताएँ से आप क्या समझते हैं?
3. अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धान्त की उत्पत्ति के नियमों को बताइए।

11.11.3 वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. "Essay on the application of capital to land" कब प्रकाशित हुआ?

   (a) 1815 (b) 1920 (c) 1950 (d) 2024

2. हेनरी सिजविक की पुस्तक कौन सी है जिसमें व्यक्तिगत अर्थव्यवस्था की बात की है?

   (a) The Society (b) Principle of Sociology

   (c) Principle of Political Economy (d) Das Capital

3. एडविन कैनन की "Wealth" पुस्तक कब प्रकाशित हुई?

   (a) 1950 (b) 1924 (c) 1975 (d) 1999

4. अनुकूलतम जनसंख्या से सम्बन्धित डॉल्टन का सूत्र क्या है?

   (a) $M=\frac{A-0}{0}$ (b) $M=\frac{A-0}{3}$ (c) $M=\frac{A-4}{0}$ (d) $M=\frac{0-A}{0}$

11.12 वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर

1. (a)
2. (c)
3. (b)
4. (a)

11.13 पारिभाषिक शब्दावली

अनुकूलतम जनसंख्या : उस सर्वोत्तम जनसंख्या जो किसी देश में एक निश्चित समय पर उपलब्ध साधनों का अधिकतम उपयोग करने अथवा अधिकतम उत्पादन करने के लिए आवश्यक होती है।

अर्थव्यवस्था : उत्पादन, वितरण एवं खपत की एक सामाजिक व्यवस्था है।

संसाधन : मानव उपयोग की वस्तुओं से है। ये प्राकृतिक और सांस्कृतिक दोनों है। प्रकृति के अपने अनुरूप उपयोग के लिए तकनीकों का विकास करता है। प्राकृतिक तंत्र में किसी तकनीक का जनप्रिय प्रयोग उसे एक सभ्यता में परिणित करता है।

प्रति व्यक्ति आय– किसी देश या भौगोलिक क्षेत्र में प्रति व्यक्ति अर्जित धन की मात्रा को प्रति व्यक्ति आय कहते हैं। इसका उपयोग किसी क्षेत्र की औसत प्रति व्यक्ति आय तय करने और आबादी के जीवन स्तर और जीवन की गुणवत्ता का आकलन करने के लिए किया जाता है। किसी देश की प्रति व्यक्ति आय की गणना करने के लिए, देश की राष्ट्रीय आय को उसकी जनसंख्या से भाग दिया जाता है।

उत्पत्ति वृद्धि नियम– एक या एक से अधिक उत्पत्ति के साधनों को स्थिर रखते हुए अन्य साधनों की मात्रा बढ़ाने पर जब उत्पादन परिवर्तनशील साधनों की बढ़ायी गयी मात्रा से अधिक बढ़ता है तो इसे उत्पत्ति वृद्धि नियम कहा जाता है।

उत्पत्ति समता नियम– जब सभी उत्पादन सेवाओं को एक दिये हुए अनुपात में बढ़ाया जाता है तो उत्पादन भी उसी अनुपात में बढ़ता है।

उत्पत्ति ह्रास नियम– उत्पादन के किसी भी एक साधन को स्थिर रखते हुए अन्य साधनों की मात्रा में वृद्धि किया जाय या एक साधन को परिवर्तनशील रखते हुए अन्य साधनों को स्थिर रखा जाये तो एक बिन्दु के पश्चात् सीमान्त और औसत उत्पादन घटता जायेगा।

इकाई–12 : डाल्टन तथा राबिन्स के विचारों तुलना व कार साउडर्स के विचार, अनुकूलतम जनसंख्या की आलोचनाएं

इकाई की रूपरेखा

12.1 उद्देश्य

12.2 प्रस्तावना

12.3 अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धान्त के संबंध में डाल्टन एवं राबिन्स के विचार

12.4 डाल्टन एवं राबिन्स के दृष्टिकोण में अंतर

12.5 कार साउडर्स एवं अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धान्त

12.6 अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धान्त : आलोचनाएं

12.7 सारांश

12.8 संदर्भ ग्रन्थ

12.9 बोध के प्रश्न

12.9.1 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

12.9.2 लघु उत्तरीय प्रश्न

12.9.3 वस्तुनिष्ठ प्रश्न

12.10 वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर

12.11 पारिभाषिक शब्दावली

12.1 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई का उद्देश्य निम्नलिखित है :

1. अनुकूलतम सिद्धान्त के सम्बन्ध में डाल्टन के विचारों को ज्ञात करना।
2. अनुकूलतम सिद्धान्त के सम्बन्ध में राबिन्स के विचारों को ज्ञात करना।
3. डाल्टन एवं राबिन्स के दृष्टिकोण में अंतर्संबंधी तथ्यों की विवेचना करना।
4. कार साउडर्स के अनुकुलतम जनसंख्या सिद्धान्त की विवेचना करना।
5. अनुकूलतम सिद्धान्त के संदर्भ में विविध समाज वैज्ञानिकों की आलोचनाओं को प्रस्तुत करना।

12.2 प्रस्तावना

किसी भी देश की समृद्धि एवं विकास का निर्धारण वहां की जनसंख्या के माध्यम से ही सम्भव होता है। प्रत्येक देश के पास सीमित मात्रा में भूमि, जल, जंगल, खनिज और अन्य प्राकृतिक संसाधन होते हैं। किसी देश द्वारा प्रदान की जा सकने वाली नौकरियों, भोजन और बुनियादी ढाँचे की भी सीमाएँ हैं। इन सीमाओं को देखते हुए, जनसंख्या का एक इष्टतम स्तर है जिसे कोई भी देश पोषित कर सकता है। जनसंख्या के इस स्तर को इष्टतम जनसंख्या के रूप में जाना होता है। विभिन्न समाजविदों ने जनसंख्या सम्बंधित अनेक सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया है। इन सिद्धान्तों के अंतर्गत जनसंख्या वृद्धि अथवा कमी का प्रभाव समाज के विभिन्न भागों पर किस प्रकार पड़ता है, के बारे में विस्तृत रूप से वर्णन किया है। एक ओर जहां माल्थस एवं उनके समर्थक जनसंख्या वृद्धि का समाज पर पड़ने वाले नकारात्मक परिणामों की चर्चा की है, तो वहीं दूसरी ओर डाल्टन, राबिन्स एवं कार–साण्डर्स जैसे विद्वानों ने अनुकूलतम जनसंख्या के सिद्धान्त के माध्यम से जनसंख्या वृद्धि के सकारात्मक परिणामों की चर्चा की है। अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धान्त के अंतर्गत उन्होनें यह स्पष्ट करने का प्रयास किया कि किसी देश में उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग के लिए अनुकूलतम जनसंख्या का होना अनिवार्य है, क्योंकि प्राकृतिक संसाधन उन्हीं के उपयोग के लिए है।

आदर्श जनसंख्या वह जनसंख्या है जो उत्पादनकर्ता के रूप में प्राकृतिक संसाधनों के उपभोग एवं वितरण के माध्यम से प्रति व्यक्ति आय का अधिकतम अर्जन करती हो। अनुकूलतम जनसंख्या के सिद्धान्त के सम्बन्ध में डाल्टन एवं राबिन्स के विचार को अधोलिखित बिन्दुओं पर स्पष्ट किया गया है :

12.3 अनुकूलतम जनसंख्या के सम्बन्ध में डाल्टन एवं राबिन्स के विचार

अनुकूलतम जनसंख्या के सम्बन्ध में डाल्टन एवं राबिन्स के विचार विशेष रूप से उल्लेखनीय है। डाल्टन के इष्टतम जनसंख्या सिद्धान्त के अनुसार किसी भी देश के लिए सर्वोत्तम या इष्टतम जनसंख्या का आकार तब होता है, जब भूमि, भोजन और नौकरियाँ वहाँ रहने वाले लोगों की जरूरतों को पूरा करती हैं। डाल्टन ने सोचा कि मानव आबादी के लिए वह सबसे अच्छा आकार है जो लोगों के लिए अधिकतम खुशी और समृद्धि लाता है। उन्होंने कहा कि किसी देश या स्थान के लिए सबसे अधिक सम्पत्ति और विकास के लिए उसकी जनसंख्या एक निश्चित आकार होनी चाहिए। उसका आकार न ज्यादा बड़ा और न ही ज्यादा छोटा होना चाहिए।

अपने अध्ययन में उन्होंने जो देखा उसके आधार पर डाल्टन ने निर्णय लिया कि सर्वोत्तम जनसंख्या आकार तब प्राप्त होता है, जब भूमि, भोजन और नौकरियाँ वहाँ रहने वाले लोगों की जरूरतों के लिए पूरी तरह से उपलब्ध हो जाती हैं, जब जनसंख्या उस सर्वोत्तम स्तर से ऊपर चली जाती है तो कम संसाधनों के कारण गरीबी और बेरोजगारी शुरू हो जाती है।

डाल्टन 1700 और 1800 के दशक में इंग्लैण्ड के कस्बों और गाँवों का अध्ययन करके इस नतीजे पर पहुँचे। उन्होंने देखा बहुत कम लोगों को छोटे गाँवों में अक्सर पर्याप्त चीजों और सेवाओं का अभाव होता है। लेकिन बहुत अधिक लोगों वाले स्थानों में बेरोजगारी, ऊँची कीमतें और आवास की स्थिति खराब होने लगी।

डाल्टन के सिद्धान्त के अनुसार, छोटी आबादी में अच्छे विकास के लिए आवश्यक चीजों का अभाव होता है, जैसे– विशिष्ट श्रमिक, पूँजी और उत्पादों के लिए बड़ा बाजार। लेकिन जब जनसंख्या सर्वोत्तम स्तर पर बढ़ती है तो भूमि, नौकरियाँ और भोजन जैसे आवश्यक संसाधन कम हो जाते हैं।

जब कोई आबादी इन तीन कारकों– भूमि, श्रम और पूँजी का पूरी तरह से उपयोग करती है तो वह आबादी सर्वोत्तम आकार तक पहुँच जाती है जिससे अधिकतम धन और समृद्धि सुनिश्चित होती है। लेकिन यदि जनसंख्या और बढ़ती है और इनमें से एक भी कारक का अत्यधिक उपयोग करना शुरू कर देती है तो गरीबी आनी शुरू हो जाती है।

डाल्टन ने उस समय के ब्रिटेन की सर्वोत्तम जनसंख्या की गणना करने के लिए इस सिद्धान्त को लागू किया। उन्होंने सोचा कि ब्रिटेन में उपलब्ध खेती योग्य भूमि 22 मिलियन लोगों का भरण–पोषण कर सकती है। साथ ही उस समय ब्रिटेन के पास 70 लाख मजदूर थे, जो उपलब्ध भूमि पर काम कर सकते थे। इसलिए उन्होंने अनुमान लगाया कि ब्रिटेन की सबसे अच्छी आबादी लगभग 20 से 22 मिलियन के बीच रही होगी।

दरअसल उस समय ब्रिटेन की आबादी करीब 16 मिलियन थी। इसलिए डाल्टन ने भविष्यवाणी की कि ब्रिटेन सभी के लिए समृद्धि और विकास प्रदान करते हुए लगभग 5 से 6 मिलियन अतिरिक्त अधिक लोगों को शामिल कर सकता है। हालाँकि उन्होंने चेतावनी दी कि 22 मिलियन से अधिक की अत्यधिक जनसंख्या वृद्धि से भीड़भाड़ गरीबी और कठिनाई होगी।

डाल्टन का सर्वोत्तम जनसंख्या का सिद्धान्त जनसंख्या के आकार उपलब्ध संसाधनों और जीवन स्तर के बीच महत्वपूर्ण सम्बन्ध पर प्रकाश डालता है। इससे पता चलता है कि किसी स्थान को समृद्ध बनाने के लिए उसकी जनसंख्या का वहाँ उपलब्ध भूमि पूँजी और नौकरियों के साथ सन्तुलन होना जरूरी है। अधिक जनसंख्या बेरोजगारी को जन्म देती है, जबकि बहुत कम जनसंख्या में वृद्धि का अभाव होता है।

सामाजिक आर्थिक प्रगति के साथ जनसंख्या वृद्धि को सन्तुलित करने के लिए यह सिद्धान्त आज भी महत्वपूर्ण है। अधिकांश विद्वान स्वीकार करते हैं कि सबसे अच्छा जनसंख्या स्तर उन स्थानों के लिए मौजूद है जहाँ से आगे जनसंख्या का दबाव जीवन स्तर को गिराना शुरू कर देता है। हालाँकि अर्थव्यवस्थाओं में जटिलताओं के कारण गतिशील रूप से सर्वोत्तम आकार का निर्णय करना कठिन बना हुआ है।

इस प्रकार डाल्टन ने अनुकूलतम जनसंख्या के सिद्धान्त को प्रति व्यक्ति अधिकतम आय से सम्बद्ध किया है। उसके अनुसार अनुकूलतम जनसंख्या वह है, जो प्रतिव्यक्ति अधिकतम आय प्रदान करती है। (Optimum population is that which gives maximum

income per head)। इससे स्पष्ट होता है कि डाल्टन ने जनसंख्या का अध्ययन प्रतिव्यक्ति आय के दृष्टिकोण से किया है और अपने अध्ययन में व्यक्ति तथा आय दोनों को ही महत्व प्रदान किया है। डाल्टन के अनुसार जनसंख्या अनुकूलतम बिन्दु पर उसी समय पहुँची हुई समझी जायेगी, जबकि वह देश में उपलब्ध प्राकृतिक साधनों, उत्पादन तकनीकी और पूंजी की सहायता से प्रति व्यक्ति अधिकतम आय अर्जित कर सके। यदि देश की जनसंख्या इस अनुकूलतम स्तर से कम होगी तो इसका अर्थ है साधनों की समुचित उपयोग नहीं हो पाया है। इसके विपरीत यदि जनसंख्या अनुकूलतम बिन्दु से अधिक होगी तब अन्य साधनों की प्रत्येक इकाई उत्पादन के क्षेत्र में कम काम करने के कारण औसत आय कम हो जायेगी। इस प्रकार आप समझ गये होंगे कि अधिकतम औसत आय तभी प्राप्त होगी, जब उत्पादन के साधनों का संयोजन अनुकूलतम अनुपात में हो। इस बिन्दु से किसी भी दिशा में विचलन औसत आय में कभी ला देगा। इसे निम्न चित्र के माध्यम से समझा जा सकता है :

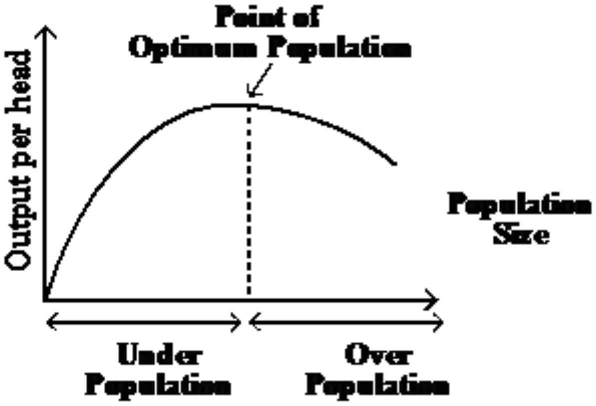

डाल्टन का सूत्र– अनुकूलतम आकार से जनसंख्या की न्यूनता या आधिक्य मापने के लिए प्रसिद्ध अर्थशास्त्री डाल्टन ने एक सूत्र की स्थापना की जो निम्नलिखित है :

$$M=(A-O)/O$$

जहाँ,

M = समायोजन अभाव (कुसमायोजन) की मात्रा (Degree of Maladjustment)

A = वास्तविक जनसंख्या (Actual Population)

O = अनुकूलतम जनसंख्या (Optimum Population)

समायोजन अभाव से तात्पर्य है कि वास्तविक जनसंख्या अनुकूलतम जनसंख्या से कितनी कम या अधिक है। यदि M धनात्मक (Positive) है तो यह जनाधिक्य को, M ऋणात्मक है तो कम जनसंख्या अथवा जनाभाव का द्योतक है। यदि M शून्य है तो वास्तविक एवं अनुकूलतम जनसंख्या बराबर होगी।

प्रो. राबिन्स के विचार डाल्टन से भिन्न है। उनके अनुसार, अनुकूलतम जनसंख्या वह है जिसमें अधिकतम उत्पादन सम्भव होता है (The population which just makes the maximum returns possible is the optimum or best population) इस तरह राबिन्स ने अपने विश्लेषण में प्रति व्यक्ति आय के स्थान पर अधिकतम कुल उत्पादन को विशेष महत्व दिया है। राबिन्स का दृष्टिकोण इसलिए थोड़ा महत्वपूर्ण हो जाता है, क्योंकि डाल्टन की तुलना में उन्होंने प्रति व्यक्ति औसत आय के स्थान पर सामाजिक उत्पादन को महत्व दिया है। रॉबिन्स के अनुसार जनसंख्या में वृद्धि उस सीमा तक उचित है जिस सीमा तक कुल उत्पादन में वृद्धि

पायी जाती हो। यह तभी हो सकता है जब प्रति व्यक्ति आय अधिकतम न हो। अनुकूलतम जनसंख्या तभी होगी जब प्रत्येक व्यक्ति को जीवन निर्वाह के लिए पर्याप्त आय प्राप्त होती है। दूसरे शब्दों में रॉबिन्स का मत है कि किसी देश की जनसंख्या की उस सीमा तक वृद्धि प्राप्त करना हितकर है, जब तक देश का प्रत्येक व्यक्ति नौकरी एवं लाभदायक उद्योगों में लगा हुआ है। जब तक कि वह व्यक्ति समाज के लिए उतना उत्पादन करने में सहायता देता है, जितना कि समाज के समाज के उस व्यक्ति के भरण पोषण पर व्यय करना पड़ता है, तब तक देश में जनसंख्या की वृद्धि से कोई भी नहीं है।

12.4 डॉल्टन एवं रॉबिन्स के दृष्टिकोण में अन्तर

प्रो. डॉल्टन एवं प्रो. रॉबिन्स के दृष्टिकोणों में तुलनात्मक अध्ययन करने पर उनके दृष्टिकोण में जो अन्तर पाया जाता है, निम्नवत् प्रस्तुत है :

1. प्रो. डॉल्टन आदर्श जनसंख्या के निर्धारण का आधार प्रति व्यक्ति आय को मानते हैं। उनके अनुसार आदर्श जनसंख्या वह जनसंख्या है, जिसमें देश के प्राकृतिक साधनों, पूँजी, उत्पादन कला का उपयुक्त व पूर्ण विदोहन हो सके और प्रति व्यक्ति आय अधिकतम प्राप्त की जा सके, जबकि रॉबिन्स, आदर्श जनसंख्या का आधार अधिकतम कुल उत्पादन को मानते हैं। डॉल्टन के अनुसार– ''अनुकूलतम जनसंख्या वह जनसंख्या है, जो उत्पादन को अधिकतम बनाती है।''

2. प्रो. डॉल्टन के अनुसार जनसंख्या की वृद्धि उस मात्रा तक अच्छी है, जब तक प्रति व्यक्ति आय अधिकतम बिन्दु में नहीं पहुँच जाती, जबकि रॉबिन्स के अनुसार यह वृद्धि तब तक अच्छी है, जब तक अधिकतम उत्पत्ति का बिन्दु नहीं आ जाता।

3. इस दृष्टि से रॉबिन्स के अनुसार जनसंख्या का अनुकूलतम बिन्दु डाल्टन की अनुकूलतम जनसंख्या बिन्दु से कुछ आगे होगा, क्योंकि रॉबिन्स की दृष्टि से जनसंख्या का वही स्तर अनुकूलतम है जहाँ पर उत्पादन तथा उपभोग दोनों बराबर हों।

4. डॉल्टन का मत है कि जनसंख्या यदि अनुकूलतम बिन्दु पर पहुँच चुकी है तो जन्म–दर की मात्रा इतनी उपयुक्त होगी, उसे मृत्युदर को, अर्थात् जनसंख्या के ह्रास को प्रतिस्थापित किया जा सके। परन्तु रॉबिन्स का कहना है कि यह कुछ अधिक भी हो सकती है।

5. दोनों विद्वानों के विचारों कि तुलना की जाय तो यह स्पष्ट है कि प्रो. डॉल्टन ने इस सिद्धान्त में केवल देश की उत्पत्ति को ही ध्यान में नहीं रखा, बल्कि देश में धन (उत्पादन) के उचित वितरण पर भी पर्याप्त बल दिया है, जबकि रॉबिन्स ने केवल उत्पत्ति और उपभोग में ही अधिक ध्यान केन्द्रित किया है, उत्पत्ति और वितरण के सम्बन्ध पर नहीं।

6. रॉबिन्स का विश्लेषण सैद्धान्तिक तथा डाल्टन का विचार व्यवहारिक है। रॉबिन्स के अनुसार, ''यदि देश में प्रति व्यक्ति लाभपूर्वक ढंग से रोजगार में लगा है, तब अति–जनसंख्या का कोई भय नहीं है। (If every person in the country is gainfully employed, there is no fear of over population)

7. इस प्रकार रॉबिन्स का दृष्टिकोण अधिक उदार व विस्तृत प्रतीत होता है। परन्तु जब हम न्यायोचित वितरण के आधार पर सोचते हैं तो डॉल्टन का विचार ही ज्यादा उदार और

उनकी परिभाषा अधिक श्रेष्ठ व व्यवहारिक दिखती है, जबकि रॉबिन्स की परिभाषा संकीर्ण प्रतीत होने लगती है। यदि गहनता से विचार किया जाये तो यह कहा जा सकता है कि इन दोनों विद्वानों में कोई वास्तविक अन्तर नहीं है, मात्र उनके दृष्टिकोणों में ही भिन्नता है।

12.5 कार साण्डर्स एवं अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धान्त

कार साण्डर्स का मानना है कि वह जनसंख्या जो प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि करे, आदर्श जनसंख्या कहलाती है। साण्डर्स के अनुसार जब किसी देश की जनसंख्या में वृद्धि होती है, तो इससे श्रम विभाजन और विशिष्टीकरण को बल मिलता है, जिससे प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि होती है। जनसंख्या में यह वृद्धि एक स्थिति को जन्म देती है, जिससे प्रति व्यक्ति आय अधिक हो जाती है और जनसंख्या की इस मात्रा को जो प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि करें, अनुकूलतम कहते हैं। इस बिन्दु को जो व्यक्ति की आय को अधिकतम करे, आदर्श या अनुकूलतम जनसंख्या के नाम से जाना जाता है। इस प्रकार अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धान्त की सहायता से हम किसी देश की जनसंख्या के उस आकार के बारे में पता लगा सकते है, जो देश के लिए आर्थिक दृष्टि से उपयुक्त होती है। संक्षेप में जनसंख्या का वह आकार अनुकूलतम होगा, जो प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि करें।

जब किसी देश की जनसंख्या इस आदर्श बिन्दु से ऊपर बढ़ती है, तो इससे प्रति व्यक्ति आय कम हो जाती है। जैसे–जैसे जनसंख्या बढ़ती जाती है, प्रति व्यक्ति आय वैसे–वैसे कम होती जाती है। इसके साथ ही जब किसी देश की जनसंख्या बढ़ती है, तो इससे भी प्रति व्यक्ति प्राकृतिक साधन और उपलब्ध पूँजी घटने लगती है, बेरोजगारी बढ़ जाती है और प्रति व्यक्ति आय कम हो जाती है। साण्डर्स ने इस स्थिति को जनाधिक्य (Over Population) की स्थिति कहा है।

12.6 अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धान्त : आलोचनाएँ

अनुकूलतम जनसंख्या का सिद्धान्त समाज के लिए अत्यधिक उपयोगी है, लेकिन इसका तात्पर्य यह नहीं है कि यह पूर्णतया दोषमुक्त है। अनेक विद्वानों ने निम्न आधारों पर इसकी आलोचनाएँ की हैं :

1. इस सिद्धान्त की मान्यताएँ यथार्थ नहीं है

(क) यह मान्यता कि जनसंख्या वृद्धि के बावजूद जनसंख्या में कार्यशील जनसंख्या का अनुपात अपरिवर्तित रहता है, सही नहीं है।

(ख) यह मान्यता भी त्रुटिपूर्ण है कि जनसंख्या में वृद्धि होने पर भी देश के प्राकृतिक साधन, पूँजी की मात्रा व उत्पादन प्रविधियाँ अपरिवर्तित रहती है। आज के इस प्रौद्योगिक समाज में इनके अपरिवर्तित रहने की कल्पना यथार्थ से परे है।

(ग) यह कहना भी कि कार्यशील जनसंख्या के कार्य के घण्टे तथा उनके द्वारा किया जाने वाला प्रति घण्टा कार्य स्थिर रहता है, व्यवहारिक प्रतीत नहीं होता।

2. यह सिद्धान्त व्यावहारिक नहीं है

इसमें जिस अनुकूलतम या आदर्श जनसंख्या की बात की गई है उसकी माप करना

यथार्थ जगत में अत्यन्त ही कठिन है। जैसा कि चटर्जी ने लिखा है– ''इस आकस्मिक और प्रतिक्षण परिवर्तित संसार में वस्तुतः अनुकूलतम जनसंख्या की खोज मृगतृष्णा की भाँति है।''

3. जनसंख्या का सिद्धान्त मानना ही अनुचित हैं

आलोचकों का मत है कि अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धान्त को जनसंख्या का सिद्धान्त मानना ही अनुचित है, क्योंकि यह सिद्धान्त 'कारण एवं परिणाम' के सम्बन्धों पर समुचित प्रकाश नहीं डालता। यह इस सन्दर्भ में मौन है कि जनसंख्या किस प्रकार और क्यों बढ़ती है अथवा उसके बढ़ने का नियम क्या है? इस सिद्धान्त के निर्माण के लिए यह आवश्यक है कि कारण एवं परिणाम में सम्बन्ध हो। यह सिद्धान्त वस्तुतः जनसंख्या विवेचन में 'अनुकूलतम' के प्रत्यय का प्रयोग मात्र है। यही कारण है कि जहाँ (Benay K. Sarkar) ने 'इसे स्वभाव से अवैज्ञानिक कहा है।' वहीं सोरोकिन जैसे समाजशास्त्री यह कहने को मजबूर हुए हैं कि ''यह कुतर्कों का दुष्चक्र है।''

4. यह सिद्धान्त आधुनिक परिवर्तनशील जगत के लिए अत्यन्त स्थैतिक है

अनेक विद्वानों ने सिद्धान्त की स्थिर प्रकृति के कारण इसे आधुनिक प्रगतिशील जगत के लिए अनुपयुक्त और स्थैतिक कहा है। Alva Myrdal के अनुसार– यह सिद्धान्त एक ''पुराना स्थैतिक विश्लेषण'' है। आज की दुनिया में तकनीकी, सामाजिक संस्थाएँ व आर्थिक संगठन एक समान स्थिति में नहीं रहते हैं। इतना ही नहीं उत्पादन फलन में परिवर्तन होने के कारण उत्पत्ति के नियमों में परिवर्तन होता रहता है। अतः इन तथ्यों को स्थिर मान लेना अवैज्ञानिक होगा। यही कारण है कि Paul Mombert ने कहा है कि यह सिद्धान्त आधुनिक जगत के लिए केवल सैद्धान्तिक महत्व का है। अपनी स्थिर प्रकृति के कारण यह सिद्धान्त अपनी उपयोगिता को ही खो बैठता है। Hauser and Duncan के अनुसार, "It is static and also volatile".

5. यह सिद्धान्त मात्र भौतिकवादी दृष्टिकोण पर आधारित है

इस सिद्धान्त में आदर्श जनसंख्या का माप करने के लिए भौतिक आधारों का ही अवलम्बन लिया गया है। जनसंख्या के गुणात्मक व अन्य पक्षों पर ध्यान नहीं दिया गया है। इस प्रकार यह सिद्धान्त केवल प्रति व्यक्ति आय और उत्पादन पर ध्यान देता है जो कि अपने आप में संकुचित दृष्टिकोण का परिचायक है। वास्तव में जनसंख्या केवल आर्थिक आधारों से ही प्रभावित नहीं होती, बल्कि देश की सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक व सैनिक शक्तियों से भी प्रभावित होती है। अतः जनसंख्या के निर्धारण में इन तथ्यों पर ध्यान दिया जाना चाहिए था।

6. यह सिद्धान्त आय के वितरण पक्ष पर ध्यान नहीं देता

इस सिद्धान्त की इस बात पर भी आलोचना की जाती है कि यह राष्ट्रीय आय के वितरण पक्ष की उपेक्षा करता है। केवल उत्पादन पक्ष पर ही ध्यान देता है। 'प्रति व्यक्ति अधिकतम औसत आय का तब तक कोई महत्व नहीं, जब तक कि राष्ट्रीय आय का समान वितरण नहीं होता। यदि कुल राष्ट्रीय आय कुछ गिने–चुने धनी व्यक्तियों के हाथों में ही केन्द्रित हो जाये तो समाज के आर्थिक कल्याण में वृद्धि नहीं हो सकती। इस प्रकार, यह सिद्धान्त राष्ट्रीय आय के समान वितरण जैसे महत्वपूर्ण पक्ष की उपेक्षा करता है।

7. अनुकूलतम जनसंख्या ज्ञात करना कठिन

अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धान्त की एक महत्वपूर्ण आलोचना यह है कि किसी निश्चित

अवधि में अनुकूलतम जनसंख्या का पता लगाना ही कठिन है। किसी देश में अनुकूलतम जनसंख्या स्तर के बारे मे कोई प्रमाण नहीं मिलता। उसकी माप करना इसलिए सम्भव नहीं है, क्योंकि अनुकूलतम जनसंख्या से तात्पर्य देश के लिए परिमाणात्मक (Quantitative) तथा गुणात्मक (Qualitative) आदर्श जनसंख्या। गुणात्मक–आदर्श जनसंख्या में जनसंख्या का न केवल शारीरिक गठन, ज्ञान तथा प्रज्ञान, बल्कि उसकी श्रेष्ठतम आयु–संरचना (Age-Composition) भी सम्मिलित रहती है। ये चर (Variable) परिवर्तित होते रहते हैं और वातावरण से सम्बद्ध है। इस प्रकार जनसंख्या के अनुकूलतम स्तर की अवधारणा अस्पष्ट रहती है।

8. यह सिद्धान्त आर्थिक नीति के निर्धारण में सहायक नहीं

यह सिद्धान्त आर्थिक नीति (Economic Policy) के मार्ग प्रदर्शन की दृष्टि से व्यर्थ साबित होता है। जब वित्तीय नीति का उद्देश्य देश में रोजगार, उत्पादन तथा आय के स्तर को बढ़ाना है या स्थिर करना है तो जनसंख्या के अनुकूलतम स्तर की बात ही नहीं होती है। अतः इस सिद्धान्त का कोई व्यवहारिक उपयोग नहीं है और इसे व्यर्थ समझा जाता है।

9. सिद्धान्त का दृष्टिकोण संकुचित है

यह सिद्धान्त जनसंख्या के प्रश्न पर संकुचित दृष्टि से विचार करता है। मात्र प्रति व्यक्ति आय ही प्रगति का सूचक नहीं है। नागरिकों का स्वास्थ्य, शिक्षा, सभ्यता, निर्माण कौशल तथा नैतिक दृष्टि से उन्नत होना भी आवश्यक है। इस प्रकार आदर्श जनसंख्या के आकार पर विचार करते समय केवल आर्थिक उन्नति पर ही ध्यान देना पर्याप्त नहीं है, बल्कि सामाजिक, राजनीतिक, नैतिक तथा सैनिक परिस्थितियों पर भी ध्यान देना चाहिए।

10. प्रति व्यक्ति आय का ठीक–ठाक माप सम्भव नहीं

प्रति व्यक्ति आय की माप में कठिनाई होती है। इस सम्बन्ध में आंकड़े प्रायः गलत, भ्रमोत्पादक तथा अविश्वसनीय होते हैं, जो अनुकूलतम जनसंख्या की धारणा के प्रति सन्देह उत्पन्न करते हैं। शायद इसीलिए Brinley Thomas ने कहा है, ''यह धुंधला पकड़ में न आने वाला विचार है।''

उपर्युक्त आलोचनाओं के बावजूद अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धान्त की जनांकिकी के क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान है। इस सिद्धान्त के प्रतिपादन से लोगों में सामान्य 'माल्थूसियन भूत' (Malthusian Devil) का डर कम हो गया। इस सिद्धान्त ने यह स्पष्ट किया कि जनसंख्या की प्रत्येक वृद्धि हानिकारक नहीं होती। यदि जनसंख्या वृद्धि के साथ प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि होती है तो उसका बढ़ना हितकर नहीं होता। अतः इस सिद्धान्त को ध्यान में रखकर जनसंख्या वृद्धि को प्रोत्साहित अथवा हतोत्साहित किया जा सकता है।

12.7 सारांश

प्रत्येक देश की प्राकृतिक एवं मानवनिर्मित संसाधनों की सीमा निश्चित होती है, जो एक निश्चित मानव समुदाय की ही आवश्यकता पूर्ति कर सकती है, किन्तु प्रवसन, जन्म, मृत्यृ आदि के माध्यम से जनसंख्या की संरचना बदलती रहती है। अतः जनसंख्या नीति के माध्यम से उचित नियोजन आवश्यक हो जाता है। इस विषयक विभिन्न विद्वानों के भिन्न मत हैं, जहाँ माल्थस जनसंख्या वृद्धि के नकारात्मक प्रभावों की चर्चा करते हैं, वहीं डॉल्टन, साउण्डर्स

सकारात्मक प्रभावों की तरफ ध्यानाकर्षण करते हैं। इन सबके इतर अनुकूलतम जनसंख्या विषयक अनेक वाद–विवाद हैं, जो निश्चित समय पर अनुकूलतम जनसंख्या की स्थिति पर प्रश्न खड़ा करते हैं।

12.8 सन्दर्भ सूची

1. Car- Saunders (1922): The Populations Problems : Oxford, Clarendon Press.
2. Alva Myrdal (1978): An International Economy : Greenwood press.
3. World Development Report, 2023
4. World Development Report, 2023
5. Benjamin, B. (1959): Elements of Vital Statistics, George Allen & Unwin Publication, London.
6. Bhende A A and Kanitkar T (2010): Principles of Population Studies, Himalaya Publishing House, New Delhi.
7. Jhingan M L, Bhatt B K and Desai J N (2006): Demography, Vrinda Publications (P) Ltd, Delhi.
8. डॉ. मिश्रा, जे.पी.: जनांकिकी, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा।
9. डॉ. बघेल. डी.एस.: जनांकिकी, विवेक प्रकाशन, दिल्ली।
10. डॉ. पन्त, जीवन चन्द्रः जनांकिकी, गोयल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ।
11. डॉ. सिन्हा वी.सी.: जनांकिकी के सिद्धांत, मयूर बुक्स, दिल्ली।

12.9 बोध के प्रश्न

12.9.1 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. कार साउण्डर्स के जनसंख्या सिद्धान्त की विवेचना कीजिए।
2. डॉल्टन एवं रॉबिन्स के जनसंख्या विषयक दृष्टिकोण में अंतर स्पष्ट कीजिए।

12.9.2 लघु उत्तरीय प्रश्न

1. अनुकूलतम जनसंख्या से क्या तात्पर्य है?
2. प्रति व्यक्ति आय से क्या समझते हैं?

12.9.3 वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. कार साण्डर्स का मानना है कि वह जनसंख्या जो प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि करे, आदर्श जनसंख्या कहलाती है।

   (a) सत्य (b) असत्य

2. साण्डर्स के अनुसार जब किसी देश की जनसंख्या में वृद्धि होती है, तो इससे श्रम विभाजन और विशिष्टीकरण को बल मिलता है, जिससे प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि होती है।

   (a) असत्य (b) सत्य

3. अनुकूलतम जनसंख्या तभी होगी, जब प्रत्येक व्यक्ति को जीवन निर्वाह के लिए पर्याप्त आय प्राप्त होती है।

(a) सत्य (b) असत्य

4. क्या अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धान्त का जनांकिकी के क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान हैं?

(a) सत्य (b) असत्य

12.10 वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर

1. (a)
2. (b)
3. (a)
4. (a)

12.11 पारिभाषिक शब्दावली

अनुकूलतम जनसंख्या : किसी देश में निश्चित समय पर उपलब्ध साधनों का अधिकतम उपयोग करने अथवा अधिकतम उत्पादन करने के लिए आवश्यक जनसंख्या। अर्थात इष्टतम जनसंख्या वह जनसंख्या है जो राष्ट्र के विकास और खुशहाली में सहायक है। कार सॉन्डर्स ने उसे 'इष्टतम जनसंख्या' माना जो अधिकतम कल्याण उत्पन्न करता है।

सिद्धान्त : सिद्धान्त से आशय नियमों से है। किसी कार्य को करने के नियम उसके सिद्धान्त कहलाते हैं।

संसाधन : पर्यावरण में उपलब्ध प्रत्येक वस्तु जो हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु प्रयुक्त की जा सकती है।

जनाभाव : यदि किसी देश में वास्तविक जनसंख्या, इष्टतम या आदर्श जनसंख्या से कम है तो इसे जनाभाव माना जाता है। ऐसी स्थिति में प्रति व्यक्ति आय कम होती है।

जनाधिक्य : यदि किसी देश में वास्तविक जनसंख्या इष्टतम या आदर्श जनसंख्या से अधिक है तो इसे जनाधिक्य माना जाता है। ऐसी स्थिति में अत्यधिक जनसंख्या के कारण प्रति व्यक्ति आय कम होती है।

इकाई–13 : अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धान्त का महत्व एवं माल्थस के जनसंख्या सिद्धान्त से तुलना एवं श्रेष्ठता

इकाई की रूपरेखा

13.1 उद्देश्य

13.2 प्रस्तावना

13.3 अनुकूलतम जनसंख्या का सिद्धान्त के प्रमुख तत्व

13.4 अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धान्त : आलोचनाएं

13.5 अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धान्त का महत्व

13.6 माल्थस के सिद्धान्त से तुलना एवं श्रेष्ठता

13.7 सारांश

13.8 सन्दर्भ ग्रन्थ

13.9 बोध के प्रश्न

13.9.1 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

13.9.2 लघु उत्तरीय प्रश्न

13.9.3 वस्तुनिष्ठ प्रश्न

13.10 वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर

13.11 पारिभाषिक शब्दावली

13.1 उद्देश्य

इस इकाई के उद्देश्यों को अधोलिखित बिन्दुओं पर स्पष्ट किया गया है :

1. अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धान्त के महत्व की तथ्यपरक विवेचना करना।
2. अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धान्त एवं माल्थस के सिद्धान्त से तुलना संबंधी तथ्यों की विवेचना करना।
3. अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धान्त एवं माल्थस के सिद्धान्त से श्रेष्ठता संबंधी तथ्यों की विवेचना करना।
4. अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धान्त के महत्व के साथ–साथ माल्थस के जनसंख्या सम्बन्धी सिद्धान्त के निष्कर्षगत विषयवस्तु को रखना।

13.2 प्रस्तावना

जनसंख्या वृद्धि के सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों ही परिणाम समाज को प्रभावित करते है। परन्तु यह प्रभाव उस समाज अथवा देश की प्राकृतिक अथवा भौगोलिक दशाओं पर भी निर्भर करता है। इस दृष्टि से किसी भी जनसंख्या के सिद्धान्त को उचित या अनुचित नहीं कहा जा सकता है। समय की बाध्यता से परे इन सिद्धान्तों की अपनी अलग उपयोगिता है, जिन्हें किसी विशिष्ट परिस्थितियों में लागू किया जा सकता है। अनुकूलतम जनसंख्या का सिद्धान्त प्रकृति और जनसंख्या के बीच सामंजस्य स्थापित करने के लिए विशेष रूप से जाना जाता है। इस सिद्धान्त के अनुसार प्राकृतिक संसाधनों का प्रयोग कर उत्पादनकर्ता आय में वृद्धि कर सकता है। इसके साथ ही अनुकूलतम जनसंख्या का सिद्धान्त श्रम विभाजन तथा विशिष्टीकरण के प्रोत्साहन पर बल देता है तथा देश के नागरिकों की सुख–समृद्धि के लिए विकल्प प्रस्तुत करता है। वास्तव में देखा जाए तो अनुकूलतम जनसंख्या का सिद्धान्त पर्यावरण और जनसंख्या के बीच उचित वितरण व उपभोग की बात करता है। इस कारण इस सिद्धान्त का महत्व और भी अधिक बढ़ जाता है।

इस प्रकार अब तक हमने देखा है कि अनुकूलतम, आदर्श एवं सर्वोत्तम जनसंख्या सिद्धान्त के नाम से भी सम्बोधित किया जाता है। अनेक अर्थों में इस सिद्धान्त का जन्म और विकास कहीं न कहीं माल्थस के जनसंख्या सिद्धान्त में महत्वपूर्ण संशोधन के रूप में हुआ है। इस सिद्धान्त में राष्ट्र के खाद्यान्न सहित समस्त आर्थिक उत्पादनों अर्थात् आर्थिक परिस्थितियों को ध्यान में रखकर इस बात के निर्धारण का प्रयत्न किया गया है कि किसी राष्ट्र की बढ़ती हुई जनसंख्या लाभदायक है या हानिकारक। सर्वोत्तम जनसंख्या से तात्पर्य किसी राष्ट्र की उस जनसंख्या से है जो न तो अधिक हो और न ही कम हो। इस बारे में अलग अलग विद्वानों ने अपने अपने मतानुसार व्याख्या किया है। एडविन कैनन का अनुकूलतम जनसंख्या के बारे में मत है कि किसी दिए हुए समय पर किसी देश में उत्पादन का एक अधिकतम बिन्दु होता है, जहाँ पहुँचने पर जनसंख्या तथा प्राकृतिक संसाधनों का पूर्ण समन्वय हो जाता है। इस बिन्दु से जनसंख्या के कम या अधिक होने पर कुल राष्ट्रीय उत्पादन में कमी आ जाती है। डाल्टन का मत है कि अनुकूलतम जनसंख्या वह जनसंख्या होती है जो प्रतिव्यक्ति आय अधिकतम करने में सहायक होती है। यहाँ रॉबिन्स का उल्लेख करना भी समीचीन होगा। रॉबिन्स का मानना है कि अनुकूलतम जनसंख्या तब माना जाना चाहिए, जब वो किसी देश में अधिकतम उत्पादन को सम्भव बनाए। कार सॉण्डर्स ने अनुकूलतम जनसंख्या की परिभाषा को और अधिक विस्तृत करते हुए कहा है कि अनुकूलतम जनसंख्या वह जनसंख्या है, जो अधिकतम आर्थिक कल्याण उत्पन्न

करती हो। अधिकतम आर्थिक कल्याण, प्रति व्यक्ति अधकतम आय नहीं है, पर व्यावहारिक दृष्टि से इसे उसके समान माना जा सकता है।

13.3 अनुकूलतम जनसंख्या का सिद्धान्त के प्रमुख तत्व

अनुकूलतम जनसंख्या का सिद्धान्त के प्रमुख तत्वों को निम्न बिन्दुओं के माध्यम से स्पष्ट किया गया है :

1. इस सिद्धान्त में जनसंख्या के केवल परिमाणात्मक पक्ष पर ही विचार नहीं किया गया है, बल्कि गुणात्मक पहलू को भी सम्मिलित किया गया है।
2. इस सिद्धान्त में किसी देश के लिए किसी समय विशेष में जनसंख्या के आदर्श बिन्दु का निर्धारण किया गया है।
3. यह सिद्धान्त जनसंख्या को देश के कुल उत्पादन से सम्बन्धित करता है।
4. इस सिद्धान्त में अनुकूलतम जनसंख्या जनसंख्या के उस बिन्दु को माना गया है, जिसमें देश में उपलब्ध अन्य उत्पत्ति के साधनों का अधिकतम विदोहन कर उत्पादन और प्रति व्यक्ति आय अधिकतम उपलब्ध कराए।
5. इस दृष्टि से अनुकूलतम जनसंख्या बिन्दु हमेशा के लिए कोई स्थिर बिन्दु नहीं होता, बल्कि उत्पादन के साधनों, उनकी कार्यक्षमता, प्राविधिक और वैज्ञानिक ज्ञान व उत्पादन में सुधार आदि के परिवर्तन के साथ साथ बदलता रहता है।
6. इस सिद्धान्त में केवल आदर्श जनसंख्या बिन्दु का ही निर्धारण नहीं किया गया है, बल्कि जनाभव और जनाधिक्य की स्थिति को भी स्पष्ट किया गया है। आदर्श जनसंख्या बिन्दु से कोई भी विचलन देश में जनाभव या जनाधिक्य को प्रतिबिम्बित करता है।
7. यह सिद्धान्त उत्पत्ति के नियमों पर आधारित है।
8. यह सिद्धान्त यह स्पष्ट करता है कि जनाभव तथा जनाधिक्य सापेक्षिक शब्द हैं, क्योंकि इसका सम्बन्ध देश के आर्थिक साधनों से होता है।

13.4 अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धान्त : आलोचनाएँ

अनुकूलतम जनसंख्या का सिद्धान्त समाज के लिए अत्यधिक उपयोगी है, लेकिन इसका तात्पर्य यह नहीं है कि यह पूर्णतया दोषमुक्त है। अनेक विद्वानों ने निम्न आधारों पर इसकी आलोचनाएँ की हैं :

1. इस सिद्धान्त की मान्यताएँ यथार्थ नहीं है

(क) यह मान्यता कि जनसंख्या वृद्धि के बावजूद जनसंख्या में कार्यशील जनसंख्या का अनुपात अपरिवर्तित रहता है, सही नहीं है।

(ख) यह मान्यता भी त्रुटिपूर्ण है कि जनसंख्या में वृद्धि होने पर भी देश के प्राकृतिक साधन, पूँजी की मात्रा व उत्पादन प्रविधियाँ अपरिवर्तित रहती है। आज के इस प्रौद्योगिक समाज में इनके अपरिवर्तित रहने की कल्पना यथार्थ से परे है।

(ग) यह कहना भी कि कार्यशील जनसंख्या के कार्य के घण्टे तथा उनके द्वारा किया जाने वाला प्रति घण्टा कार्य स्थिर रहता है, व्यवहारिक प्रतीत नहीं होता।

2. यह सिद्धान्त व्यवहारिक नहीं है

इसमें जिस अनुकूलतम या आदर्श जनसंख्या की बात की गई है। उसकी माप करना यथार्थ जगत में अत्यन्त ही कठिन है। जैसा कि चटर्जी ने लिखा है– ''इस आकस्मिक और प्रतिक्षण परिवर्तित संसार में वस्तुतः अनुकूलतम जनसंख्या की खोज मृगतृष्णा की भाँति है।''

3. जनसंख्या का सिद्धान्त मानना ही अनुचित हैं

आलोचकों का मत है कि अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धान्त को जनसंख्या का सिद्धान्त मानना ही अनुचित है, क्योंकि यह सिद्धान्त 'कारण एवं परिणाम' के सम्बन्धों पर समुचित प्रकाश नहीं डालता। यह इस सन्दर्भ में मौन है कि जनसंख्या किस प्रकार और क्यों बढ़ती है अथवा उसके बढ़ने का नियम क्या है? इस सिद्धान्त के निर्माण के लिए यह आवश्यक है कि कारण एवं परिणाम में सम्बन्ध हो। यह सिद्धान्त वस्तुतः जनसंख्या विवेचन में 'अनुकूलतम' के प्रत्यय का प्रयोग मात्र है। यही कारण है कि जहाँ Benay K. Sarkar ने ''इसे स्वभाव से अवैज्ञानिक कहा है,'' वहीं सोरोकिन जैसे समाजशास्त्री यह कहने को मजबूर हुए हैं कि ''यह कुतर्कों का दुष्चक्र है।''

4. यह सिद्धान्त आधुनिक परिवर्तनशील जगत के लिए अत्यन्त स्थैतिक है

अनेक विद्वानों ने सिद्धान्त की स्थिर प्रकृति के कारण इसे आधुनिक प्रगतिशील जगत के लिए अनुपयुक्त और स्थैतिक कहा है। Alva Myrdal के अनुसार– यह सिद्धान्त एक ''पुराना स्थैतिक विश्लेषण'' है। आज की दुनिया में तकनीकी, सामाजिक संस्थाएँ व आर्थिक संगठन एक समान स्थिति में नहीं रहते हैं। इतना ही नहीं उत्पादन फलन में परिवर्तन होने के कारण उत्पत्ति के नियमों में परिवर्तन होता रहता है। अतः इन तथ्यों को स्थिर मान लेना अवैज्ञानिक होगा। यही कारण है कि Paul Mombert ने कहा है कि यह सिद्धान्त आधुनिक जगत के लिए केवल सैद्धान्तिक महत्व का है। अपनी स्थिर प्रकृति के कारण यह सिद्धान्त अपनी उपयोगिता को ही खो बैठता है। Hauser and Duncan के अनुसार– "It is static and also volatile".

5. यह सिद्धान्त मात्र भौतिकवादी दृष्टिकोण पर आधारित है

इस सिद्धान्त में आदर्श जनसंख्या का माप करने के लिए भौतिक आधारों का ही अवलम्बन लिया गया है। जनसंख्या के गुणात्मक व अन्य पक्षों पर ध्यान नहीं दिया गया है। इस प्रकार यह सिद्धान्त केवल प्रति व्यक्ति आय और उत्पादन पर ध्यान देता है, जो अपने आप में संकुचित दृष्टिकोण का परिचायक है। वास्तव में जनसंख्या केवल आर्थिक आधारों से ही प्रभावित नहीं होती, बल्कि देश की सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक व सैनिक शक्तियों से भी प्रभावित होती है। अतः जनसंख्या के निर्धारण में इन तथ्यों पर ध्यान दिया जाना चाहिए था।

6. यह सिद्धान्त आय के वितरण पक्ष पर ध्यान नहीं देता

इस सिद्धान्त की इस बात पर भी आलोचना की जाती है कि यह राष्ट्रीय आय के वितरण पक्ष की उपेक्षा करता है। केवल उत्पादन पक्ष पर ही ध्यान देता है। 'प्रति व्यक्ति अधिकतम औसत आय' का तब तक कोई महत्व नहीं, जब तक कि राष्ट्रीय आय का समान वितरण नहीं होता। यदि कुल राष्ट्रीय आय कुछ गिने–चुने धनी व्यक्तियों के हाथों में ही केन्द्रित हो जाये तो समाज के आर्थिक कल्याण में वृद्धि नहीं हो सकती। इस प्रकार यह सिद्धान्त राष्ट्रीय आय के समान वितरण जैसे महत्वपूर्ण पक्ष की उपेक्षा करता है।

7. अनुकूलतम जनसंख्या ज्ञात करना कठिन

अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धान्त की एक महत्वपूर्ण आलोचना यह है कि किसी निश्चित अवधि में अनुकूलतम जनसंख्या का पता लगाना ही कठिन है। किसी देश में अनुकूलतम जनसंख्या स्तर के बारे मे कोई प्रमाण नहीं मिलता। उसकी माप करना इसलिए सम्भव नहीं है, क्योंकि अनुकूलतम जनसंख्या से तात्पर्य देश के लिए परिमाणात्मक (Quantitative) तथा गुणात्मक (Qualitative) आदर्श जनसंख्या। गुणात्मक–आदर्श जनसंख्या में जनसंख्या का न केवल शारीरिक गठन, ज्ञान तथा प्रज्ञान, बल्कि उसकी श्रेष्ठतम आयु–संरचना (Age-Composition) भी सम्मिलित रहती है। ये चर (Variable) परिवर्तित होते रहते हैं और वातावरण से सम्बद्ध है। इस प्रकार जनसंख्या के अनुकूलतम स्तर की अवधारणा अस्पष्ट रहती है।

8. यह सिद्धान्त आर्थिक नीति के निर्धारण में सहायक नहीं

यह सिद्धान्त आर्थिक नीति (Economic Policy) के मार्ग प्रदर्शन की दृष्टि से व्यर्थ साबित होता है। जब वित्तीय नीति का उद्देश्य देश में रोजगार, उत्पादन तथा आय के स्तर को बढ़ाना है या स्थिर करना है, तो जनसंख्या के अनुकूलतम स्तर की बात ही नहीं होती है। अतः इस सिद्धान्त का कोई व्यवहारिक उपयोग नहीं है और इसे व्यर्थ समझा जाता है।

9. सिद्धान्त का दृष्टिकोण संकुचित है

यह सिद्धान्त जनसंख्या के प्रश्न पर संकुचित दृष्टि से विचार करता है। मात्र प्रति व्यक्ति आय ही प्रगति का सूचक नहीं है। नागरिकों का स्वास्थ्य, शिक्षा, सभ्यता, निर्माण कौशल तथा नैतिक दृष्टि से उन्नत होना भी आवश्यक है। इस प्रकार आदर्श जनसंख्या के आकार पर विचार करते समय केवल आर्थिक उन्नति पर ही ध्यान देना पर्याप्त नहीं है, बल्कि सामाजिक, राजनीतिक, नैतिक तथा सैनिक परिस्थितियों पर भी ध्यान देना चाहिए।

10. प्रति व्यक्ति आय का ठीक–ठाक माप सम्भव नहीं

प्रति व्यक्ति आय की माप में कठिनाई होती है। इस सम्बन्ध में आंकड़े प्रायः गलत, भ्रमोत्पादक तथा अविश्वसनीय होते हैं, जो अनुकूलतम जनसंख्या की धारणा के प्रति सन्देह उत्पन्न करते हैं। शायद इसीलिए Brinley Thomas ने कहा है– ''यह धुंधला पकड़ में न आने वाला विचार है।''

13.5 अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धान्त : महत्व

अनेक आधारों पर इस सिद्धान्त की आलोचनाएँ की गई हैं, पर इसका यह अर्थ कदापि नहीं है कि इस सिद्धान्त की कोई उपयोगिता या महत्व ही नहीं है। सक्षेप में सिद्धान्त के महत्व को निम्न बिन्दुओं के माध्यम से स्पष्ट किया जा सकता है :

1. आदर्श जनसंख्या के सिद्धान्त का महत्व इसलिए है, क्योंकि इसने जनसंख्या का खाद्य सामग्री के बीच कोई सम्बन्ध स्थापित नहीं किया है। इसके विपरीत इस सिद्धान्त में जनसंख्या को पूंजी, उत्पादन प्रविधि और प्राकृतिक साधनों से सम्बन्धित करने का प्रयास किया है।

2. जनसंख्या के अन्य सिद्धान्तों की तुलना में आदर्श जनसंख्या का सिद्धान्त अधिक वैज्ञानिक, वास्तविक और न्यायसंगत प्रतीत होता है। इस प्रकार राष्ट्र के दृष्टिकोण से भी आदर्श जनसंख्या का सिद्धान्त सत्य के अधिक नजदीक प्रतीत होता हैं।

3. आदर्श जनसंख्या का सिद्धान्त समाज में श्रम विभाजन तथा विशिष्टीकरण को प्रोत्साहित करता है, उत्पादन वृद्धि को बढ़ाता है, आविष्कारों एवं वैज्ञानिक अन्वेषणों को मान्यता प्रदान करता है और इस प्रकार औद्योगीकरण का मार्ग प्रशस्त करता है।

4. आदर्श जनसंख्या का सिद्धान्त मानव समाज के नैराश्यों का मात्र दस्तावेज नहीं है। इस सिद्धान्त में जनसंख्या की वृद्धि को भावी सुख और समृद्धि के साथ जोड़ा गया है।

5. आदर्श जनसंख्या सिद्धान्त के समर्थकों का विचार है कि जनसंख्या कम करने की अपेक्षा यह अधिक सरल है कि समाज को अति जनसंख्या की स्थिति में पहुँचने से रोका जाये।

6. यह सिद्धान्त जनसंख्या को नियन्त्रित कर कम करने पर बल देता है। इस प्रकार परिवार नियोजन की सफलता के लिए यह सिद्धान्त उपयोगी है।

7. यह सिद्धान्त प्रति व्यक्ति आय की वृद्धि पर भी बल देता है, क्योंकि प्रति व्यक्ति आय वृद्धि से ही किसी देश के नागरिकों की समृद्धि और सुख सम्भव है।

8. यह सिद्धान्त अपने वातावरण में परिवर्तन पर भी बल देता है। समय और परिस्थिति के अनुसार अपने वातावरण में परिवर्तन करने से समाज और राष्ट्र का सन्तुलन बना रहता है।

9. अनुकूलतम जनसंख्या का सिद्धान्त जनसंख्या वृद्धि को आर्थिक वृद्धि के साथ सम्बन्धित करता है।

10. इस सिद्धान्त में जनसंख्या को उत्पादनकर्ता के रूप में देखा गया है और स्पष्ट किया गया है कि किसी देश के लिए न तो जनसंख्या की कमी ही अच्छी होती है न ही इसकी वृद्धि।

11. इस सिद्धान्त के समर्थकों ने प्रति व्यक्ति आय को ही जनसंख्या निर्धारण का आधार माना है, जो अधिक उचित है।

12. यह सिद्धान्त इस बात का भी खण्डन करता है कि मानव परिस्थितियों का दास नहीं है, वरन् परिस्थितियों को भी अपना दास बना सकता है।

13.6 माल्थस के सिद्धान्त से तुलना एवं श्रेष्ठता

अनेक आलोचनाओं के बावजूद अनुकूलतम जनसंख्या के सिद्धान्त को माल्थस के जनसंख्या सिद्धान्त से श्रेष्ठतर समझा जाता है। इसका कारण अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धान्त की अपनी कुछ विशेषताएं हैं जिन्हें निम्नवत् वर्णित किया जा सकता है।

1. माल्थस का जनसंख्या सिद्धान्त मानव समाज को एक नैराष्य जीवन एवं नैराष्य चिन्तन की ओर अग्रसर करता है। साथ ही दुखद भविष्य की चेतावनी भी देता है। इस विपरीत आदर्श जनसंख्या का सिद्धान्त सुखद भविष्य का संकेत देता है तथा मानव समाज मे ंआशावादी चिन्तन प्रदान करता है।

2. माल्थस के सिद्धान्त में जड़ता एवं स्थायित्व है। माल्थस का यह सिद्धान्त गतिशील चिन्तन से परे है। इसके विपरीत आदर्श जनसंख्या सिद्धान्त में गतिशीलता को महत्व प्रदान करता है।

3. माल्थस के जनसंख्या के सिद्धान्त में देश की भावी प्रगति की रूपरेखा नहीं है, जबकि

आदर्श जनसंख्या का सिद्धान्त देश की भावी प्रगति पर आधारित है।

4. माल्थस के जनसंख्या सिद्धान्त में देश की भावी प्रगति की रूपरेखा नहीं है, जबकि आदर्श जनसंख्या का सिद्धान्त देश की भावी प्रगति पर आधारित है।

5. माल्थस अपने सिद्धान्त में जनसंख्या को केवल खाद्य–पूर्ति से सम्बन्धित करता है, जबकि अनुकूलतम जनसंख्या के सिद्धान्त में जनसंख्या को देश के समस्त साधनों, कुल उत्पादन तथा राष्ट्रीय आय से सम्बन्धित किया गया है, जो अधिक उपयुक्त है। माल्थस जनसंख्या की हर एक वृद्धि को सदैव हानिकारक मानता है। अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धान्त में भी प्रत्येक वृद्धि को हानिकारक नहीं माना गया है, केवल वही जनसंख्या की वृद्धि व स्थिति हानिकारक है, जो आदर्श जनसंख्या बिन्दु से अधिक हो।

6. माल्थस अपने सिद्धान्त में यह नहीं बताते है कि एक समय विशेष में किसी देश में वास्तव में कितनी जनसंख्या होनी चाहिए, जबकि अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धान्त आदर्श जनसंख्या की मात्रा को निश्चित करता है, जो अधिक उपयुक्त है।

7. माल्थस का सिद्धान्त अपने आप में निराशावाद को लिये हुए है, जबकि अनुकूलतम सिद्धान्त जनसंख्या की प्रत्येक वृद्धि को चिन्ताजनक न मानते हुए आशावादी है।

8. माल्थस ने किसी भी देश मे ंप्राकृतिक प्रकोपों जैसे– अकाल, अनावृष्टि, अतिवृष्टि, भूकम्प, महामारी आदि जिन्हें उसने नैसर्गिक अवरोध कहा है। साथ ही क्रियाशीलता को जनाधिक्य का प्रतीक माना है, जब अनुकूलतम सिद्धान्त इन्हें जनाधिक्य के प्रतीक के रूप में नहीं मानता, बल्कि यह तो प्रति व्यक्ति आय को ही वास्तविक कसौटी मानता है।

9. माल्थस का सिद्धान्त केवल पिछड़े तथा अति जनसंख्या वाले देशों में ही लागू होता है, जबकि अनुकूलतम सिद्धान्त हर स्थिति व जनसंख्या वाले देशों पर लागू होता है।

10. माल्थस का सिद्धान्त जनसंख्या का मात्र संख्यात्मक विश्लेषण ही करता है गुणात्मक नहीं, जबकि अनुकूलतम सिद्धान्त माल्थस की तरह जनसंख्या के गुणात्मक पहलू की पूर्णतया अवहेलना नहीं करता।

11. माल्थस ने जनसंख्या को प्रमुख रूप से उपभोक्ता के रूप में ही देखा है, जबकि अनुकूलतम सिद्धान्त उसे उत्पादनकर्ता के रूप में भी देखता है।

12. माल्थस का सिद्धान्त जहाँ पूर्णतया स्थैतिक है, वहीं अनुकूलतम सिद्धान्त स्थैतिक ही नहीं प्रावैगिक भी है।

13. माल्थस का सिद्धान्त वैज्ञानिक नहीं है, क्योंकि वह जनसंख्या की मात्रा को भी निश्चित नहीं करता, साथ ही इसमें अनेक नैतिक और धार्मिक बातों का उल्लेख करता है, परन्तु अनुकूलतम सिद्धान्त इन दोषों से मुक्त है।

14. माल्थस का सिद्धान्त सैद्धान्तिक अधिक और व्यावहारिक कम है। वह जनसंख्या में होने वाली प्रत्येक वृद्धि को अवांछनीय मानते थे, क्योंकि वे लोगों पर कठिन विपत्तियां लाती है। माल्थस लिखते हैं कि– ''प्रकृति की मेज कुछ गिन–चुने अतिथियों के लिए बिछाई गयी है और वे जो बिना बुलाए आते हैं, उन्हें भूखे रहना पड़ेगा।'' (The table of nature is laid for a limited number of guests and those who come uninvited must starve)। दूसरी ओर अनुकूलतम सिद्धान्त यह मानता है कि देश के प्राकृतिक

साधनों का अधिकतम विदोहन करने के लिए जनसंख्या में वृद्धि केवल वांछित ही नहीं आवश्यक भी है।

15. माल्थस का सिद्धान्त इस अवास्तविक अवधारणा पर आधारित है कि प्रकृति कृपण है, क्योंकि कृषि मे घटते प्रतिफल का नियम कार्यशील रहता है। परन्तु इस दृष्टि से अनुकूलतम सिद्धान्त की अवधारणा वास्तविक है, क्योंकि यह सिद्धान्त मानता है कि पहले अनुकूलतम बिन्दु तक बढ़ते प्रतिफल का नियम कार्य करता है और उसके उपरान्त घटते प्रतिफल का नियम। उपर्युक्त तथ्यों की विवेचना से यह निष्कर्ष निकलता है कि अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धान्त माल्थस के सिद्धान्त से श्रेष्ठतर है।

13.7 सारांश

अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धान्त को एक उत्कृष्ट सिद्धान्त के रूप में विद्वानों द्वारा स्थापित किया गया है। इस सिद्धान्त के द्वारा जनसंख्या को उत्पादन प्रक्रिया के आधार पर कार्यशील जनसंख्या के रूप में विशेष महत्व दिया गया है। इस सिद्धान्त के अनुसार जनसंख्या में वृद्धि प्रायः हानिकारक नहीं होता है। जनसंख्या वृद्धि से देश में औद्योगीकरण को बढ़ावा मिलता है। उत्पादन प्रक्रिया में वृद्धि होती है जिससे उस देश की सामाजिक–आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होती है। इस सिद्धान्त की अनेक अच्छी विशेषताएं होते हुए भी विभिन्न त्रुटिओं से परिपूर्ण है। यह सिद्धान्त अनेक देश व उनकी प्राकृतिक परिवेश से सामंजस्य नहीं कर सकती है। उदाहरणार्थ– टुड्रा प्रदेश अथवा ध्रुवीय प्रदेश में जनसंख्या व प्राकृतिक परिवेश दोनों ही निम्न है। इसके विपरित भारत एवं चीन जैसे विभिन्न देश जो प्राकृतिक परिवेश से परिपूर्ण है, की जनसंख्या ने प्रकृति का विदोहन इतना अधिक किया गया कि आज इन्हें प्रकृति के संरक्षण के लिए अभियान चलाना पड़ा। इस प्रकार यहां जनसंख्या का माल्थस सिद्धान्त प्रभावी हो रहा है न कि अनुकूलतम सिद्धान्त। इसके अलावा अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धान्त की अपनी कोई विशिष्ट सीमाएं नहीं बताई है, जिससे किसी भी देश की अनुकूलतम जनसंख्या का निर्धारण स्पष्ट हो पाये। इस प्रकार स्पष्ट है कि अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धान्त व माल्थस का जनसंख्या वृद्धि का सिद्धान्त दोनों की ही अपनी अलग विशेषताएं एवं महत्व है।

13.8 सन्दर्भ सूची

1. Malthus (1798): An Essay on the Principle of Population: Oxford World's Classics.
2. गुप्ता, एस.एन. (2009): जनांकिकी के मूल तत्व, वृंदा पब्लिकेशन्स प्रा.लि., दिल्ली।
3. दत्त, रूद्र एवं सुन्दरम, के.पी.एम. (2016): भारतीय अर्थव्यवस्था, एस. चन्द एण्ड कम्पनी, नई दिल्ली।
4. Nussbaum, Martha and Sen, Amartya (ed.) (1993): The Quality of Life, Oxford, Clarendon Press.
5. Thompson, Warren S. and David T. Lewis (1976): Population Problems, McGraw Hill Book Co., New York.
6. Alfred Sauvy (1969): General Theory of Population: George Weidenfeld & Nicholson.
7. डॉ. मिश्रा, जे.पी.: जनांकिकी, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स आगरा।

8. डॉ. बघेल. डी.एस.: जनांकिकी, विवेक प्रकाशन, दिल्ली।
9. डॉ. पन्त, जीवन चन्द्रः जनांकिकी, गोयल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ।
10. डॉ. सिन्हा, वी.सी., जनांकिकी के सिद्धांत, मयूर बुक्स, दिल्ली।

13.9 बोध के प्रश्न

13.9.1 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धान्त की व्याख्या करें।
2. अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धान्त के महत्व की विवेचना कीजिए।

13.9.2 लघु उत्तरीय प्रश्न

1. माल्थस का जनसंख्या सिद्धान्त लिखें।
2. अनुकूलतम जनसंख्या से क्या तात्पर्य है?
3. कार सॉण्डर्स के आदर्श जनसंख्या सिद्धान्त का आलोचनात्मक वर्णन कीजिए।

13.9.3 वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. माल्थस ने जनसंख्या को मुख्यतः किस रूप में देखा है?

   (a) उपभोक्ता (b) व्यवसाय (c) सामग्री (d) धनराशि

2. अनुकूलतम जनसंख्या का सिद्धान्त जनसंख्या वृद्धि को किसके साथ सम्बन्धित करता है?

   (a) उत्पादनकर्ता (b) आर्थिक वृद्धि (c) सामाजिक वृद्धि (d) राजनीतिक वृद्धि

3. माल्थस का सिद्धान्त जनसंख्या का मात्र संख्यात्मक विश्लेषण ही करता है?

   (a) सत्य (b) असत्य

13.10 वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर

1. (a)
2. (b)
3. (a)

13.11 पारिभाषिक शब्दावली

संसाधन : पर्यावरण में उपलब्ध प्रत्येक वस्तु जो हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु प्रयुक्त की जा सकती है।

अनुकूलतम जनसंख्या : किसी देश में निश्चित समय पर उपलब्ध साधनों का अधिकतम उपयोग करने अथवा अधिकतम उत्पादन करने के लिए आवश्यक जनसंख्या।

अल्प जनसंख्या (Under Population) : जब किसी देश के प्राकृतिक संसाधनों के दोहन के लिए आवश्यकता से काम जनसंख्या होती है तो इसे अल्प जनसंख्या कहते हैं।

अत्यधिक जनसंख्या (Over Populated) : जब किसी देश की जनसंख्या बढ़कर वहाँ के अधिकतम उत्पादन की सीमा को पार कर जाती है, तो उसे अत्यधिक जनसंख्या वाला देश कहा जाता है।

जनसंख्या संरचना (Population Structure) : संरचना का तात्पर्य ढाँचा से है, अर्थात् जनसंख्या का ढाँचा। किसी भी देश की जनसंख्या संरचना का तात्पर्य उस देश की जनसंख्या का वितरण, जनसंख्या में वृद्धि तथा ह्रास की दर, जनसंख्या का घनत्व, प्रवासित, साक्षरता, आयु वर्ग, लिंग अनुपात आदि से है। इस प्रकार जनसंख्या संरचना का तात्पर्य जनसंख्या के विविध पहलुओं अथवा उसकी विशेषताओं से लगाया जाता है।

इकाई–14: समाजिक परिवर्तन की अवधारणा और परिभाषा, सामाजिक परिवर्तन की विशेषताएं: परिवर्तन के तीन प्रतिमान

इकाई की रूपरेखा

14.1 उद्देश्य
14.2 प्रस्तावना
14.3 सामाजिक परिवर्तन की अवधारणा
14.3.1 उद्‌विकास
14.3.2 प्रगति
14.3.3 सामाजिक आंदोलन
14.3.4 क्रांति
14.4 सामाजिक परिवर्तन की परिभाषा
14.5 सामाजिक परिवर्तन की विशेषताएं
14.6 सामाजिक परिवर्तन के प्रतिमान
14.6.1 प्रथम प्रतिमान
14.6.2 द्वितीय प्रतिमान
14.6.3 तृतीय प्रतिमान
14.7 सारांश
14.8 संदर्भ ग्रंथ
14.9 बोध के प्रश्न
14.9.1 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न
14.9.2 लघु उत्तरीय प्रश्न
14.9.3 वस्तुनिष्ठ प्रश्न
14.10 वस्तुनिष्ठ प्रश्न के उत्तर
14.11 पारिभाषिक शब्दावली

14.1 उद्देश्य

इस अध्याय के उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

1. सामाजिक परिवर्तन की महत्वपूर्ण अवधारणाओं से परिचित होंगे।
2. सामाजिक परिवर्तन की परिभाषा एवं इसकी विशेषता की तथ्यपरक जानकारी प्राप्त करेंगे।
3. सामाजिक परिवर्तन के प्रतिमानो की गहन विवेचना से परिचित होंगे।
4. समाजिक परिवर्तन की विभिन्न प्रक्रियाओं और उसके प्रभावों के विश्लेषण से भी परिचित होंगे।
5. सामाजिक परिवर्तन से मानव समाज किस प्रकार प्रभावित होता है, आदि जैसे पक्षों

की भी गहन विवेचना इस अध्याय के अंतर्गत की जाएगी।

14.2 प्रस्तावना

सामाजिक परिवर्तन एक गहन और व्यापक अवधारणा है, जो समाज के विभिन्न पहलुओं में स्थायी और महत्वपूर्ण बदलाव लाती है अर्थात् प्रत्येक समाज में परिवर्तन की प्रक्रिया निरंतर चलती रहती है। समाजिक परिवर्तन समाज की संरचना, संस्कृति और न्याय प्रणाली को प्रभावित करता है। परिवर्तन समाज का एक शाश्वत एवं अटल नियम है, सामाजिक परिवर्तन नहीं होता तो शायद हम उत्तर आधुनिकता की पायदान पर पहुंचने की बजाए आदिम अवस्था में रहे होते। अस्तु, मानव धरा का कोई ऐसा भाग नहीं है जो परिवर्तन से अछूता है।

समाज के किसी क्षेत्र में बदलाव को सामाजिक परिवर्तन कहा जा सकता है। अर्थात् समाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक, नैतिक, भौतिकी आदि क्षेत्रों में परिवर्तन अथवा बदलाव को सामाजिक परिवर्तन की संज्ञा दी जा सकती है। अतएव इस अध्याय में वर्णित तथ्य, समाजिक परिवर्तन के मूल सिद्धांतो एवं उसकी प्रक्रियाओं के समझ में मदद करेगा। इस अध्याय का प्रारंभिक बिंदु इस पर केंद्रित है कि समाजिक परिवर्तन क्या है और क्यों महत्वपूर्ण है? तदोपरांत समाजिक परिवर्तन की विशेषताओं से जुड़े पक्ष को गंभीर एवं तथ्यपरक विश्लेषण किया गया है।

यह अध्याय इस बात को भी उद्घाटित करेगा कि सामाजिक परिवर्तन के प्रभावस्वरुप समाज में किस तरह से बदलाव आते हैं। साथ ही यह अध्याय सामाजिक परिवर्तन की व्यापकता और गहराई को समझने में विद्यार्थियों को सक्षम बनाएगा, जिससे वे इसके अवधारणामक समझ के साथ–साथ इसके प्रभाव का मूल्यांकन करने में सक्षम होंगे।

14.3 सामाजिक परिवर्तन की अवधारणा

सामाजिक परिवर्तन शब्द को संकुचित अर्थ में प्रयुक्त किया जाना चाहिए, जो सामाजिक संबंधों के क्षेत्र में परिवर्तनों को सूचित करता है। सामाजिक संबंधों से अभिप्राय सामाजिक प्रक्रियाओं, सामाजिक प्रतिमानों एवं सामाजिक अंतःक्रियाओं से है। इस प्रकार, सामाजिक परिवर्तन का अर्थ होगा– सामाजिक प्रक्रियाओं, सामाजिक प्रतिमानों, सामाजिक अंतःक्रियाओं अथवा सामाजिक संगठन के किसी स्वरूप में अंतर। यह समाज की संस्थागत एवं आचारात्मक संरचना में परिवर्तन है।

सामाजिक परिवर्तन समाज की संरचना, संस्कृति और सामाजिक संबंधों में स्थायी और महत्वपूर्ण बदलाव को संदर्भित करता है। यह परिवर्तन कई कारकों के परिणामस्वरूप हो सकता है। जैसे कि तकनीकी प्रगति, आर्थिक विकास, सांस्कृतिक परिवर्तन और सामाजिक आंदोलनों। सामाजिक परिवर्तन एक सतत प्रक्रिया है, जो समय के साथ समाज के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित करती है। इसका उद्देश्य समाज को अधिक समतामूलक, न्यायपूर्ण और प्रगतिशील बनाना है।

सामाजिक परिवर्तन का प्रभाव समाज के हर क्षेत्र में देखा जा सकता है, चाहे वह आर्थिक, सांस्कृतिक या सामाजिक हो। उदाहरण के लिए, जब किसी समाज में तकनीकी प्रगति होती है, तो वह समाज की उत्पादकता, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं और संचार के तरीकों को बदल सकती है। इसके अलावा, सामाजिक परिवर्तन का प्रभाव समाज के मूल्यों, मान्यताओं और आदर्शों पर भी होता है, जिससे समाज में नए सामाजिक मानदंड स्थापित होते हैं।

सामाजिक परिवर्तन के कई स्रोत हो सकते हैं। इनमें से एक महत्वपूर्ण स्रोत है तकनीकी प्रगति। जब नए तकनीकी नवाचार होते हैं, तो वे समाज के विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण परिवर्तन ला सकते हैं। उदाहरण के लिए, इंटरनेट और सूचना प्रौद्योगिकी के विकास ने समाज में सूचना और संचार के तरीकों को पूरी तरह से बदल दिया है। इसके माध्यम से, लोग अधिक आसानी से और तेजी से जानकारी प्राप्त कर सकते हैं और दुनिया भर के लोगों के साथ संपर्क में रह सकते हैं। इससे समाज में ज्ञान और सूचना का आदान–प्रदान बढ़ा है, जिससे शिक्षा, व्यवसाय और सामाजिक जीवन में महत्वपूर्ण सुधार हुए हैं।

दूसरा महत्वपूर्ण स्रोत है आर्थिक विकास। जब किसी समाज में आर्थिक विकास होता है, तो वह समाज की समृद्धि और जीवन स्तर को बढ़ा सकता है। आर्थिक विकास के माध्यम से, समाज में नए उद्योग और व्यवसाय स्थापित होते हैं, जिससे रोजगार और आय के अवसर बढ़ते हैं। इसके अलावा, आर्थिक विकास के माध्यम से समाज में बुनियादी ढांचे और सेवाओं का विस्तार होता है, जैसे कि सड़क, परिवहन, और संचार सेवाएं। इससे समाज के सभी वर्गों को समान अवसर मिलते हैं और सामाजिक न्याय स्थापित होता है।

सांस्कृतिक परिवर्तन भी सामाजिक परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण स्रोत है। जब किसी समाज में सांस्कृतिक परिवर्तन होते हैं, तो वह समाज की मान्यताओं, मूल्यों और आदर्शों को बदल सकता है। उदाहरण के लिए, जब किसी समाज में शिक्षा और ज्ञान का महत्व बढ़ता है, तो वह समाज के लोगों को अधिक शिक्षित और जागरूक बना सकता है। इससे समाज में सामाजिक न्याय और समानता की स्थापना होती है, जिससे समाज के सभी वर्गों को समान अवसर मिलते हैं। इसके अलावा, सांस्कृतिक परिवर्तन के माध्यम से समाज में नई कला, संगीत और साहित्य की विधाएं उत्पन्न होती हैं, जिससे समाज सांस्कृतिक रूप से समृद्ध होता है।

सामाजिक आंदोलन भी सामाजिक परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण स्रोत है। सामाजिक आंदोलन संगठित और सामूहिक प्रयास होते हैं, जो समाज में विशेष प्रकार के परिवर्तन लाने के लिए किए जाते हैं। यह आंदोलन समाज के किसी विशेष मुद्दे या समस्या पर ध्यान आकर्षित करते हैं और उसके समाधान के लिए दबाव बनाते हैं। सामाजिक आंदोलन का उद्देश्य समाज में सामाजिक न्याय, समानता और अधिकारों की स्थापना करना होता है। उदाहरण के लिए, महिला अधिकार आंदोलन, नागरिक अधिकार आंदोलन, और पर्यावरण संरक्षण आंदोलन समाज में महत्वपूर्ण परिवर्तन लाने के उदाहरण हैं।

सामाजिक आंदोलन की प्रक्रिया विभिन्न चरणों में होती है, जिसमें जागरूकता फैलाना, संगठित करना, और कार्यवाही करना शामिल है। सामाजिक आंदोलन का पहला चरण जागरूकता फैलाना है, जिसमें आंदोलनकर्ता समाज के विभिन्न वर्गों को मुद्दे के बारे में जानकारी प्रदान करते हैं और उन्हें इसके समाधान के लिए संगठित करते हैं। इसके बाद, संगठित करने का चरण आता है, जिसमें आंदोलनकर्ता विभिन्न समूहों और संगठनों को एकजुट करते हैं और उनके माध्यम से दबाव बनाते हैं। अंत में, कार्रवाई का चरण आता है, जिसमें आंदोलनकर्ता विभिन्न प्रकार की गतिविधियों और अभियानों के माध्यम से अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने का प्रयास करते हैं।

सामाजिक परिवर्तन के अंतर्गत विभिन्न प्रक्रियाएं आती हैं, जिनमें से प्रत्येक का समाज पर विशेष प्रकार का प्रभाव होता है। इनमें से कुछ प्रमुख प्रक्रियाएं हैंः उद्विकास, प्रगति, विकास, सामाजिक आंदोलन और क्रांति। इन प्रक्रियाओं को विस्तार से समझते हैं।

14.3.1 उद्विकास

उद्विकास के सिद्धांत के प्रतिपादक डार्विन है जिन्होंने शरीर में होने वाले जैविक परिवर्तनों के लिए इस प्रक्रिया को लागू किया। मानवशास्त्र एवं समाजशास्त्र में इसे हरबर्ट स्पेंसर मॉर्गन तथा टॉयलर जैसे विद्वानों ने समाज के संदर्भ में इस सिद्धांत को लागू किया है। उद्विकास अंग्रेजी भाषा के 'म्अवसनजपवद' शब्द का हिंदी रूपान्तर है जिसे लैटिन भाषा के शब्द 'म्अवसअमतम' से लिया गया है जिसका अर्थ विकास अथवा किसी वस्तु का आन्तरिक विकास।

उद्विकास समाज में धीमी और सतत परिवर्तन की प्रक्रिया है। यह परिवर्तन धीरे–धीरे और प्राकृतिक रूप से होता है, जिसके माध्यम से समाज की संरचना और सांस्कृतिक तत्व समय के साथ विकसित होते हैं। उद्विकास का सिद्धांत यह मानता है कि समाज में परिवर्तन एक क्रमिक प्रक्रिया है, जिसमें विभिन्न तत्व धीरे–धीरे परिवर्तित होकर अधिक जटिल और संगठित होते जाते हैं। उदाहरण के लिए, कृषि समाज से औद्योगिक समाज में परिवर्तन एक उद्विकासी प्रक्रिया है, जिसमें सामाजिक, आर्थिक, और तकनीकी बदलाव धीरे–धीरे और सतत रूप से होते हैं। ऑगबर्न एवं निमकाफ के अनुसार "उद्विकास एक निश्चित दिशा में होने वाले परिवर्तन मात्र है।"

उद्विकास की प्रक्रिया प्राकृतिक चयन और अनुकूलन के सिद्धांतों पर आधारित होती है। यह प्रक्रिया समाज के भीतर उत्पन्न होने वाले छोटे–छोटे बदलावों के माध्यम से होती है, जो समय के साथ बड़े और महत्वपूर्ण परिवर्तनों में बदल जाती है। उदाहरण के लिए, पारंपरिक कृ षि तकनीकों से आधुनिक मशीनरी और उन्नत कृषि पद्धतियों की ओर परिवर्तन एक उद्विकास का उदाहरण है। इसमें समाज की आवश्यकता और संसाधनों के अनुसार परिवर्तन होते हैं, जो समाज को अधिक उत्पादक और कुशल बनाते हैं।

उद्विकास का प्रभाव समाज के सभी क्षेत्रों में देखा जा सकता है, जैसे कि शिक्षा, स्वास्थ्य, और संचार। शिक्षा में, पारंपरिक गुरुकुल प्रणाली से आधुनिक स्कूल और विश्वविद्यालय प्रणाली में परिवर्तन एक उद्विकासी प्रक्रिया है। स्वास्थ्य के क्षेत्र में, पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों से आधुनिक चिकित्सा विज्ञान और तकनीकों की ओर परिवर्तन भी उद्विकास का परिणाम है। इस प्रकार, उद्विकास समाज को धीरे–धीरे और सतत रूप से बदलता है, जिससे समाज की संरचना और कार्यप्रणाली में सुधार होता है।

14.3.2 प्रगति

प्रगति शब्द अंग्रेजी के 'प्रोग्रेस' (Progress) शब्द का हिंदी रूपांतर है जो की लैटिन भाषा के प्रो–ग्रीडियर (Pro-Gredior) शब्द से बना है। इसका अर्थ है आगे बढ़ना। संस्कृत में प्रगति शब्द का अर्थ उपयुक्त लक्ष्य की ओर आगे बढ़ाना है तथा जितने प्रकार के लक्ष्य होंगे उतनी ही प्रकार की प्रगति होगी।

प्रगति का अर्थ है समाज में सकारात्मक और उन्नतिशील परिवर्तन। यह परिवर्तन समाज को बेहतर बनाता है, जिससे समाज के विभिन्न पहलुओं में सुधार होता है। प्रगति का संबंध मुख्य रूप से तकनीकी, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में होता है, जहां नए आविष्कार और नवाचार समाज को अधिक विकसित और उन्नत बनाते हैं। उदाहरण के लिए, चिकित्सा विज्ञान में प्रगति ने मानव जीवन की गुणवत्ता और आयु को बढ़ाया है, जिससे समाज में स्वास्थ्य और कल्याण में सुधार हुआ है। गिन्सबर्ग के अनुसार "प्रगति का अर्थ उस दिशा में होने वाला विकास है जो सामाजिक मूल्योंका विवेकयुक्त हल प्रस्तुतकरता हो।"

प्रगति का सिद्धांत यह मानता है कि समाज लगातार बेहतर हो रहा है और यह सुधार एक दिशा में होता है जो समाज को अधिक उन्नत और समृद्ध बनाता है। प्रगति के माध्यम से समाज में वैज्ञानिक और तकनीकी विकास होता है, जो समाज के विभिन्न क्षेत्रों में सुधार लाता है। उदाहरण के लिए, इंटरनेट और सूचना प्रौद्योगिकी के विकास ने समाज को सूचना और संचार के क्षेत्र में व्यापक प्रगति दी है। इसके माध्यम से, ज्ञान और सूचना का आदान–प्रदान अधिक तेज और सुलभ हो गया है, जिससे समाज में शिक्षा और व्यवसायिक क्षेत्रों में महत्वपूर्ण सुधार हुआ है।

प्रगति का प्रभाव समाज के सांस्कृतिक क्षेत्रों में भी देखा जा सकता है। उदाहरण के लिए, कला, संगीत, और साहित्य में नवाचार और रचनात्मकता के माध्यम से सांस्कृतिक प्रगति होती है। इस प्रकार की प्रगति समाज को सांस्कृतिक रूप से समृद्ध और विविध बनाती है। इसके अलावा, सामाजिक मान्यताओं और मूल्यों में परिवर्तन के माध्यम से समाज में सामाजिक न्याय और समानता की स्थापना होती है, जो प्रगति का महत्वपूर्ण पहलू है।

14.3.3 विकास

विकास एक व्यापक अवधारणा है, जिसमें आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक सुधार शामिल होते हैं। यह परिवर्तन समाज की समग्र विकास को संदर्भित करता है, जिसमें आर्थिक विकास, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाएं और जीवन स्तर में सुधार शामिल होता है। विकास की प्रक्रिया समाज को अधिक समृद्ध और सक्षम बनाती है, जिससे समाज के सभी वर्गों को समान अवसर मिलते हैं और सामाजिक न्याय स्थापित होता है। उदाहरण के लिए, किसी देश का आर्थिक विकास उसके नागरिकों के जीवन स्तर को ऊंचा उठाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

विकास का सिद्धांत यह मानता है कि समाज की प्रगति का मुख्य आधार आर्थिक और सामाजिक सुधार है। आर्थिक विकास के माध्यम से, समाज के उत्पादन और वितरण के साधनों में सुधार होता है, जिससे समाज की समृद्धि और धन में वृद्धि होती है। उदाहरण के लिए, औद्योगिक विकास और नवाचार के माध्यम से नए उद्योग और व्यवसाय स्थापित होते हैं, जो रोजगार और आय के अवसर पैदा करते हैं। इसके अलावा, आर्थिक विकास के माध्यम से समाज में बुनियादी ढांचे और सेवाओं का विस्तार होता है, जैसे कि सड़क, परिवहन, और संचार सेवाएं।

विकास का प्रभाव सामाजिक सुधार के क्षेत्रों में भी देखा जा सकता है। उदाहरण के लिए, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार के माध्यम से समाज के सभी वर्गों को समान अवसर मिलते हैं। विकास के माध्यम से, शिक्षा के क्षेत्र में स्कूल, कॉलेज और विश्वविद्यालय स्थापित होते हैं, जो समाज के सभी वर्गों को शिक्षा का अवसर प्रदान करते हैं। इसके अलावा, स्वास्थ्य सेवाओं के क्षेत्र में अस्पताल और चिकित्सा सुविधाओं का विस्तार होता है, जिससे समाज के सभी वर्गों को स्वास्थ्य सेवाएं मिलती हैं।

14.3.4 सामाजिक आंदोलन

सामाजिक आंदोलन संगठित और सामूहिक प्रयास होते हैं, जो समाज में विशेष प्रकार के परिवर्तन लाने के लिए किए जाते हैं। यह आंदोलन समाज के किसी विशेष मुद्दे या समस्या पर ध्यान आकर्षित करते हैं और उसके समाधान के लिए दबाव बनाते हैं। सामाजिक आंदोलन का उद्देश्य समाज में सामाजिक न्याय, समानता, और अधिकारों की स्थापना करना होता है। उदाहरण के लिए, महिला अधिकार आंदोलन, नागरिक अधिकार आंदोलन, और पर्यावरण संरक्षण

आंदोलन समाज में महत्वपूर्ण परिवर्तन लाने के उदाहरण हैं।

सामाजिक आंदोलन की प्रक्रिया विभिन्न चरणों में होती है, जिसमें जागरूकता फैलाना, संगठित करना और कार्यवाही करना शामिल है। सामाजिक आंदोलन का पहला चरण जागरूकता फैलाना है, जिसमें आंदोलनकर्ता समाज के विभिन्न वर्गों को मुद्दे के बारे में जानकारी प्रदान करते हैं और उन्हें इसके समाधान के लिए संगठित करते हैं। इसके बाद, संगठित करने का चरण आता है, जिसमें आंदोलनकर्ता विभिन्न समूहों और संगठनों को एकजुट करते हैं और उनके माध्यम से दबाव बनाते हैं। अंत में, कार्रवाई का चरण आता है, जिसमें आंदोलनकर्ता विभिन्न प्रकार की गतिविधियों और अभियानों के माध्यम से अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने का प्रयास करते हैं।

सामाजिक आंदोलन का प्रभाव समाज के विभिन्न क्षेत्रों में देखा जा सकता है। उदाहरण के लिए, महिला अधिकार आंदोलन ने समाज में महिलाओं के अधिकारों और समानता की स्थापना की है, जिससे महिलाओं को शिक्षा, रोजगार, और राजनीतिक क्षेत्रों में समान अवसर मिले हैं। इसी प्रकार, नागरिक अधिकार आंदोलन ने समाज में जाति, धर्म, और नस्ल के आधार पर भेदभाव के खिलाफ लड़ाई लड़ी है और समाज में समानता और न्याय की स्थापना की है। इसके अलावा, पर्यावरण संरक्षण आंदोलन ने समाज में पर्यावरण की सुरक्षा और संरक्षण के महत्व को समझाया है और इसके लिए विभिन्न प्रकार के उपाय और नीतियां अपनाई हैं।

14.3.5 क्रांति

क्रांति समाज में तीव्र, व्यापक और गहन परिवर्तन की प्रक्रिया है। यह परिवर्तन सामान्यतः राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक संरचनाओं में होता है और यह अचानक और व्यापक रूप से होता है। क्रांति का उद्देश्य समाज में मौजूदा व्यवस्था को पूरी तरह से बदलना और एक नई व्यवस्था स्थापित करना होता है। उदाहरण के लिए फ्रांसीसी क्रांति और रूसी क्रांति ने समाज में व्यापक और गहन परिवर्तन लाए, जिससे नई राजनीतिक और सामाजिक व्यवस्थाएं स्थापित हुईं। सोरोकिन का मत है की जब समाज में सामाजिक लक्ष्यों एवं मूल्यों में अत्यधिक गड़बड़ी,अस्थिरता और अनिश्चितता पैदा ही जाती है और इसके परिणामस्वरूप समाज में अशांति तथा समाज व सांस्कृतिक व्यवस्था में अस्थिरता पैदा हो जाती हो तो उसे क्रांति कहते है।

क्रांति की प्रक्रिया सामान्यतः समाज में असंतोष और अस्थिरता के परिणामस्वरूप होती है, जिसमें समाज के विभिन्न वर्गों के बीच संघर्ष और विवाद उत्पन्न होते हैं। क्रांति का पहला चरण असंतोष और विरोध का होता है, जिसमें समाज के विभिन्न वर्ग मौजूदा व्यवस्था के खिलाफ विरोध प्रकट करते हैं। इसके बाद, क्रांति का दूसरा चरण संघर्ष और विवाद का होता है, जिसमें विभिन्न समूह और संगठन मौजूदा व्यवस्था को बदलने के लिए संघर्ष करते हैं। अंत में, क्रांति का तीसरा चरण परिवर्तन और पुनर्निर्माण का होता है, जिसमें नई व्यवस्था की स्थापना होती है और समाज में नए कानून और नीतियां लागू होती हैं।

क्रांति का प्रभाव समाज के विभिन्न क्षेत्रों में देखा जा सकता है। उदाहरण के लिए, फ्रांसीसी क्रांति ने समाज में लोकतंत्र और समानता की स्थापना की है, जिससे समाज के सभी वर्गों को समान अवसर और अधिकार मिले हैं।

14.4 सामाजिक परिर्वतन की परिभाषा

सामाजिक परिवर्तन एक महत्वपूर्ण और गहरा विषय है, जो समाजशास्त्र के अध्ययन में

विशेष महत्व रखता है। यह समाज की संरचना, संस्कृति और सामाजिक संबंधों में स्थायी और महत्वपूर्ण बदलावों को संदर्भित करता है, जो समय के साथ आते हैं और विभिन्न पहलुओं पर प्रभाव डालते हैं।

सामाजिक परिवर्तन का मतलब बस एक साधारण बदलाव नहीं है। यह बदलाव एक गहरे स्तर पर समाज की संरचना और सांस्कृतिक मूल्यों में परिवर्तन को दर्शाता है। यह समाजिक संस्थाओं, सामाजिक प्रक्रियाओं और सामाजिक व्यवहार में देखा जा सकता है। इस प्रक्रिया में समाज के विभिन्न वर्ग, समुदाय, और संस्कृतियों के साथ जुड़े लोगों का सामाजिक और सांस्कृतिक सम्बन्ध बदलता है।

एंथोनी गिडिंग्स–''प्रत्येक सामाजिक संरचना में एक अंतर्निहित संरचना होती है। इस अंतनिर्हित संरचना में जब परिवर्तन आता है तो इसे सामजिक परिवर्तन कहते है।''

मैकाइवर व पेज– ''सामाजशास्त्री होने के नाते हमाराप्रत्यक्ष संबंध केवल सामाजिक संबंधों से हैं। और उसमें आए हुए परिवर्तन को हम सामाजिक परिवर्तन कहते हैं''

किंग्सले डेविस– ''सामाजिक परिवर्तन से हमारा अभिप्राय उन परिवर्तनों से है जो सामाजिक संगठन अर्थात् समाज की संरचना और कार्यों में उत्पन्न होते हैं।''

डासन एवं गेटिस के अनुसार– ''सांस्कृतिक परिवर्तन ही सामाजिक परिवर्तन है।''

जिन्सबर्ग के अनुसार– ''सामाजिक परिवर्तन का अभिप्राय सामाजिक ढाँचे में परिवर्तन अर्थात् समाज के आकार, इसके विभिन्न अंगों अथवा इसके संगठन की प्रकृति और संतुलन में होने वाले परिवर्तन से है।''

बोटोमोर के शब्दों में ''सामाजिक परिवर्तन में हम उन परिवर्तनों को सम्मिलित करते हैं जो सामाजिक संरचना, सामाजिक संस्थाओं अथवा उनके पारस्परिक संबंधों में घटित होता है।''

गिलिन व गिलिन के शब्दों में– ''सामाजिक परिवर्तन का अर्थ जीवन की स्वीकृत विधियों में परिवर्तन से है। चाहे ये परिवर्तन भौगोलिक दशाओं के कारण हों, सांस्कृतिक उपकरणों, जनसंख्या के रूप में अथवा विचारों के कारण हो अथवा समूह में आविष्कार या संस्कृति के प्रसार से उत्पन्न हों।''

मैरिल तथा एल्ड्रिज– मानव क्रियाओं में परिवर्तन को सामाजिक परिवर्तन कहते हैं। आपके अनुसार– ''जब मानव व्यवहार में बदलाव की प्रक्रिया में होता है तब हम उसी को दूसरे रूप में सामाजिक परिवर्तन कहते हैं।''

जोन्स के अनुसार– 'सामाजिक परिवर्तन' वह शब्द है जोकि सामाजिक क्रियाओं, सामाजिक प्रतिमानों, सामाजिक अंतक्रियाओ या सामाजिक संगठन के किसी भाग में घटित होने वाले हेरदृफेर या संशोधन के लिए प्रयोग किया जाता है।''

एच. टी. मजूमदार के अनुसार– ''सामाजिक परिवर्तन समाज की क्रिया अथवा लोगों के जीवन में प्राचीन ढंग को विस्थापित अथवा परिवर्तित करने वाला नवीन शोभाचार अथवा ढंग है।''

लुंडबर्ग एवं अन्य के अनुसार– ''सामाजिक परिवर्तन अंतः मानवीय संबंधों एवं आचरण के स्थापित मानकों में किसी परिवर्तन को निर्दिष्ट करता है।''

उपर्युक्त परिभाषाओं के अनुसार इस प्रकार का परिवर्तन सामाजिक न्याय,

समतामूलकता, और प्रगतिशीलता को बढ़ाने का उद्देश्य रखता है। यह विभिन्न कारकों के संयोग से होता है, जैसे कि तकनीकी प्रगति, आर्थिक विकास, सांस्कृतिक परिवर्तन और सामाजिक आंदोलन। इन सभी कारकों का संयोग अक्सर सामाजिक बदलाव के लिए प्रेरणा स्थल बनता है।

सामाजिक परिवर्तन एक सतत प्रक्रिया है जो समाज को बेहतर बनाने का प्रयास करती है। यह प्रक्रिया समय–समय पर विभिन्न चरणों में विकसित होती है और समाज के विभिन्न स्तरों पर अपना प्रभाव डालती है। यह न केवल व्यक्तियों और समुदायों के जीवन में परिवर्तन लाती है, बल्कि बड़े पैमाने पर समाज के सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक संरचना पर भी गहरा प्रभाव डालती है।

इसके अलावा, सामाजिक परिवर्तन का अध्ययन समाजशास्त्र के अध्ययन का एक महत्वपूर्ण पहलू है। इसमें विशेष ध्यान दिया जाता है कि कैसे और क्यों समाज में बदलाव होते हैं, उनके कारण और उनके परिणाम क्या हो सकते हैं। यह अध्ययन समाज की गहराईयों में विशेष रूप से प्रभावी होता है और समाज के विभिन्न पहलुओं को समझने में मदद करता है।

सामाजिक परिवर्तन के कई रूप होते हैं, जैसे कि राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सामाजिक आंदोलन, सामाजिक न्याय की मांग, समाज के विभिन्न वर्गों के बीच समानता की बढ़ती जिम्मेदारी, और समाजिक संघर्ष। इन सभी पहलुओं का संयोग सामाजिक परिवर्तन की दिशा और गति को निर्धारित करता है और समाज के विभिन्न पहलुओं में समानता और न्याय की ओर प्रेरित करता है।

इस प्रकार, सामाजिक परिवर्तन एक समाजशास्त्रीय मुद्दा है जो हमें यह समझने में मदद करता है कि समाज कैसे बदलता है? इसके प्रकार, कारण और परिणाम। यह हमें समाज के विभिन्न पहलुओं के मध्य गहरे सम्बन्धों को समझने में मदद करता है और एक समझौते की दिशा में अध्ययन को निरंतर चालाता है कि कैसे सामाजिक परिवर्तन होता है और उसके प्रभाव क्या होते हैं।

सामाजिक परिवर्तन का अध्ययन समाजशास्त्र के अध्ययन के एक महत्वपूर्ण पहलू है, जो समाज की गहराईयों में विशेष रूप से प्रभावी होता है। इसमें विशेष ध्यान दिया जाता है कि समाज में बदलाव कैसे होते हैं? इन बदलावों के क्या कारण होते हैं और उनके परिणाम क्या हो सकते हैं।

सामाजिक परिवर्तन का मतलब बस एक साधारण बदलाव नहीं है। यह बदलाव समाज की संरचना, संस्कृति और सांस्कृतिक मूल्यों में एक गहरे स्तर पर परिवर्तन को दर्शाता है। यह समाजिक संस्थाओं, सामाजिक प्रक्रियाओं और सामाजिक व्यवहार में देखा जा सकता है।

सामाजिक परिवर्तन के विभिन्न पहलुओं में विशेष रूप से गहराई से प्रकाश डालने का प्रयास करते हैं, ताकि हम समझ सकें कि इन परिवर्तनों के क्या कारण हो सकते हैं और ये समाज के विभिन्न स्तरों पर कैसे प्रभाव डालते हैं।

सामाजिक परिवर्तन के अंतर्गत विभिन्न प्रक्रियाएं आती हैं, जिनमें से प्रत्येक का समाज पर विशेष प्रकार का प्रभाव होता है। इनमें से कुछ प्रमुख प्रक्रियाएं हैंः उद्विकास, प्रगति, विकास, सामाजिक आंदोलन, और क्रांति। इन प्रक्रियाओं के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन विभिन्न रूपों में हो सकता है, जैसे कि राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिवर्तन। इन परिवर्तनों का संयोग एक समाज के विभिन्न पहलुओं पर समान रूप से प्रभाव डाल सकता है

और उसके विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

14.5 सामाजिक परिवर्तन की विशेषताएं

सामाजिक परिवर्तन की प्रमुख विशेषताओं को निम्नलिखित बिन्दुओं पर स्पष्ट किया गया है :

1. सामाजिक परिवर्तन एक सार्वभौमिक प्रकिया है, अर्थात् सामाजिक परिवर्तन आदिम समाज से लेकर उत्तर आधुनिक समाज तक अनेक परिवर्तन हुए और आगे होते रहेंगे। मानव धरा की बात की जाए ऐसा कोई समाज नहीं है जो दीर्घ काल तक स्थिर रहा। यह सम्भव है कि परिवर्तन की धारा कभी धीमी और कभी तीव्र रहीं, लेकिन सामाजिक परिवर्तन एक सतत प्रक्रिया है।

2. सामाजिक परिवर्तन की गति असमान तथा तुलनात्मक होती है, आदिम समाजो की तुलना में उत्तर आधुनिक समाजो में परिवर्तन की गति तीव्र होती है और एक ही समाज के अनेक अंगो में कभी–कभीं परिवर्तन की गति में असमानता पाया जाता है, जैसे ग्रामीण समाजों की तुलना में नगरीय समाजों में परिवर्तन तीव्र होते है।

3. सामाजिक परिवर्तन कभी एकरेखीय तो कभी बहुरेखीय होता है। अर्थात् परिवर्तन कभी समस्यामूलक होता है, तो कभी कल्याणकारी। परिवर्तन कभी चक्रीय होता है, तो कभी उद्दविकासीय।

4. सामाजिक परिवर्तन की प्रकृति सामाजिक होती है, इसका तात्पर्य यह है कि सामाजिक परिवर्तन का मुख्य लक्ष्य समाज को अधिक समतामूलक और प्रगतिशील बनाना होता है, यह समाज के भेदभाव,असमानता और अन्याय को कम करने का प्रयास करता है और सभी व्यक्तियों को समान अवसर प्रदान करने की कोशिश करता है। इस प्रकार का परिवर्तन व्यक्तिवादी प्रकृति का होता है।

5. सामाजिक परिवर्तन एक अनिवार्य घटना है, क्योंकि समाज निरंतर बदलते समय और परिस्थितियों के अनुसार विकसित होता है। परिवर्तन प्रकृति का नियम है यह शास्वत है, यह प्रक्रिया समाज को अधिक प्रगतिशील और समावेशी बनाती है।

6. सामाजिक परिवर्तन की भविष्यवाणी निश्चित रूप से नहीं की जा सकती है क्योंकि सामाजिक परिवर्तन का प्रक्रियात्मक और अनियमित स्वभाव होता है। यह विभिन्न समाजों, संस्कृतियों और स्थितियों के आधार पर अलग–अलग होता है। कभी–कभी अनेक आकस्मिक कारक भी सामाजिक परिवर्तन की स्थिति उत्पन्न करते हैं। उदाहरणार्थ– कार्लमार्क्स ने पूंजीवाद के अंत में समाजवाद के उत्थान की भविष्यवाणी की थी, परन्तु अब तक साकार नहीं हो पाया और भविष्य में न होने की सम्भावना है। लेकिन हम यह नही कह सकते कि भविष्य में सामाजिक सम्बन्धों का निश्चित स्वरूप क्या होगा। इसी तरह हम सामाजिक सम्बन्धों, विचारो, मनोवृतियो, आदर्शो एवं मूल्यों में परिवर्तन की निश्चित भविष्यवाणी नहीं कर सकते हैं।

7. सामाजिक परिवर्तन एक जटिल तथ्य है, सामाजिक परिवर्तन व्यक्तिगत और सामूहिक व्यवहार, संस्थागत संरचनाओं और सामाजिक मान्यताओं में बदलाव को प्रभावित करता है। सामाजिक परिवर्तन का सम्बंध गुणात्मक परिवर्तनों से है,

जिनकी माप–तौल सम्भव नहीं है, क्योंकि हम किसी भौतिक संस्कृति में होने वाले परिवर्तनों को मीटर, किलोग्राम की भाषा में माप नही सकते।

8. सामाजिक परिवर्तन प्रमुखतया प्रतिस्थापन अथवा रूपांतरण प्रकार के होते है, सामाजिक परिवर्तन को हम व्यापक रूप में प्रतिस्थापनों अथवा रूपान्तरों में वर्गीकृत किया जा सकता है। इसी प्रकार, सामाजिक सम्बंधों का रूपांतरण हो सकता है। उदाहरणार्थ– प्राचीन सत्ता प्रधान परिवार अब छोटा समानाधिकृत परिवार बन गया है, स्त्रियों के अधिकारों, धर्म, सरकार एवं सहशिक्षा के बारे में हमारे विचार रूपांतरित हो गये है।

14.6 सामाजिक परिर्वतन के प्रतिमान

समाज हमारे जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसमें होने वाले बदलाव और परिर्वतन न केवल हमारे व्यक्तिगत जीवन को प्रभावित करते हैं, बल्कि ये समाज के संरचना और संस्कृति को भी प्रभावित करते हैं। समाज में होने वाले बदलावों को समझने और उनके विश्लेषण के लिए हमें एक संवेगनी प्रणाली या आधार की आवश्यकता होती है, जिसे हम "सामाजिक परिर्वतन के प्रतिमान" के रूप में जानते हैं। इन प्रतिमानों के माध्यम से हम समझ सकते हैं कि समाज में कैसे बड़े–बड़े बदलाव आते हैं, और उनके प्रभाव क्या हो सकते हैं?

14.6.1 प्रथम प्रतिमानः रेखीय परिवर्तन

प्रथम प्रतिमान का मुख्य उद्देश्य है सामाजिक परिवर्तन के कारकों को पहचानना और समझना है। यह प्रतिमान हमें वह संकल्पना करने में मदद करता है, जो समाज में बदलाव को उत्पन्न करती हैं। रेखीय परिवर्तन में सामाजिक परिवर्तनों को एक निश्चित पूर्व निर्धारित रूप में देखा जा सकता है। इसकी प्रकृति सदैव एक दिशा में ऊपर की तरफ जाती हुई प्रकट होती है। रेखीय परिवर्तन कभी–कभी आकस्मिक रूप से हमारे सामने प्रत्यक्ष रूप में आ जाते है। इस श्रेणी में हम औद्योगिक परिवर्तन एवं वैज्ञानिक उन्नति से उत्पन्न अविष्कारों को परिवर्तन के रूप में देख सकते है, क्योंकि इन अविष्कारों में समयानुसार कई लोगों द्वारा सुधार किये जाते है।

रेखीय परिवर्तन या एक सीधी और निरंतर प्रगति की धारणा, समाजशास्त्र में एक महत्वपूर्ण अवधारणा है। यह विचारधारा मानती है कि समाज और संस्कृति समय के साथ एक निश्चित दिशा में विकसित होते हैं, जहाँ वे सतत सुधार और उन्नति की ओर अग्रसर रहते हैं। आगस्त कॉम्त, स्पेंसर, हॉबहाउस, मार्क्स रेखीय सिद्धांतों के समर्थक माने जाते हैं।अधिकांश उद्‌विकासीय समाजशास्त्री एक रेखीय सामाजिक परिवर्तन में विश्वास करते हैं।

आगस्त कॉम्ट ने समाज के विकास को तीन अवस्थाओं में विभाजित किया: थियोलॉजिकल, मेटाफिजिकल, और पोजिटिविस्टिक। उनके अनुसार– समाज पहले धार्मिक दृष्टिकोण से संचालित होता है, फिर दार्शनिक और विचारात्मक विश्लेषण की ओर बढ़ता है, और अंततः वैज्ञानिक और अनुभवजन्य समझ की ओर अग्रसर होता है। कॉम्त का यह दृष्टिकोण रेखीय परिवर्तन की अवधारणा को दर्शाता है, जहाँ समाज एक क्रमिक और निरंतर सुधार की दिशा में बढ़ता है।

हरबर्ट स्पेंसर ने समाज को जीवित प्राणी की तरह देखा और इसे विकासवादी प्रक्रिया के माध्यम से उन्नति की दिशा में बढ़ते हुए माना। उनका सिद्धांत, जिसे 'सामाजिक विकासवाद' के नाम से जाना जाता है, मानता है कि समाज की संरचनाएँ और संस्थाएँ भी उसी तरह विकास करती हैं जैसे जैविक प्राणियाँ करती हैं। इस प्रकार, समाज तकनीकी,

औद्योगिक, और वैज्ञानिक उन्नति के माध्यम से सुधार और परिष्करण की प्रक्रिया से गुजरता है।

हॉबहाउस का दृष्टिकोण भी रेखीय परिवर्तन पर आधारित था। उन्होंने समाज के विकास को एक निरंतर प्रक्रिया माना, जिसमें समाज पूर्ववर्ती अवस्थाओं से निकलकर उच्चतम स्तर की ओर बढ़ता है। हॉबहाउस ने यह भी तर्क किया कि यह परिवर्तन सामाजिक और सांस्कृतिक पहलुओं के समन्वय के माध्यम से होता है, जो एक निर्धारित दिशा में आगे बढ़ता है।

कार्ल मार्क्स का दृष्टिकोण रेखीय परिवर्तन के सिद्धांत का एक समाजवादी संस्करण था। मार्क्स ने सामाजिक परिवर्तन को वर्ग संघर्ष और आर्थिक विकास की प्रक्रिया के रूप में देखा। उनके अनुसार, समाज की आर्थिक संरचना में बदलाव से सामाजिक और राजनीतिक संरचनाओं में भी बदलाव आता है, जो एक सुसंगठित और क्रमिक सुधार की दिशा में अग्रसर होता है।

मानव धरा में देखा जाए तो समाज धीरे–धीरे सभ्यता के नवीन से नवीनतम अवस्था की तरफ अग्रसर बढ़ता जा रहा है, तथा यह सदैव उन्नति की दिशा में अग्रसर होता है। यह जहाँ से प्रारम्भ होता है, वहीं से आगे बढ़ता है। अतीत की तरफ मुड़कर उस स्थान पर कभी नही आता।

रेखीय परिवर्तन के मुख्य कारक तकनीकी विकास, औद्योगिक परिवर्तन एवं वैज्ञानिक उन्नति हो सकते हैं। इन कारकों ने समाज में गहरे परिवर्तन को लाया है और उसे नई दिशाओं में ले जाने में मदद की है।

तकनीकी विकास ने विश्व भर में संचार के तरीके बदल दिए हैं। इंटरनेट और सोशल मीडिया के आगमन ने व्यक्तिगत और सामाजिक संबंधों को परिवर्तित किया है। इससे लोगों के बीच संवाद और सहयोग की नई दिशाएं खुली हैं। रेडियो,टेलीफोन,वायुयान और मोटर आदि के अविष्कारों के कारण उत्पन्न परिवर्तन केवल आकस्मिक न होकर गुणात्मक रूप से अनेक परिवर्तनों को जन्म देने वाले भी है। इन प्रक्रियाओं ने समाज में नए सोच और विचार को प्रेरित किया है और उसे बदलाव की दिशा में अग्रसर किया है।

14.6.2 द्वितीय प्रतिमानः उतार–चढ़ाव परिवर्तन

द्वितीय प्रतिमान में हम सामाजिक परिवर्तन के प्रभावों पर ध्यान केंद्रित करते हैं। इस प्रतिमान में हम विश्लेषण करते हैं कि इन कारकों का समाज पर कैसा प्रभाव पड़ता है और समाज के आर्थिक क्रिया व जनसँख्या के क्षेत्र में विभिन्न सदस्यों पर इसका क्या असर होता है।

सामाजिक परिवर्तन में उतार–चढ़ाव या तरंगीय परिवर्तन की प्रकृति समय–समय पर परिवर्तित होती रहती है यह थोड़े समय ऊपर की ओर थोड़े समय नीचे की ओर होती है। इसलिए इसे उतार–चढ़ाव परिवर्तन कहा जाता है। साधारण शब्दों में कहा जाए तो परिवर्तन कुछ समय प्रगति की ओर होता है, तो कुछ समय उपरांत पुनः ह्रास की ओर अग्रसारित होता है। इसमें परिवर्तन की दिशा निश्चित नही होती है। आदिम समाज में लोग अध्यात्मवाद की तरफ बढ़ रहे थे, जबकि आज वे उसके विपरीत भौतिकवाद की तरफ अग्रसर हो रहे है। इस प्रतिरूप से यह प्रतीत होता है कि परिवर्तन निश्चित नही होता कि परिवर्तन कब और किस दिशा की ओर अग्रसर होगा।

सामाजिक परिवर्तन एक अवश्यम्भावी तथा स्वभाविक प्रक्रिया है, जो समाज एवं संस्कृति

में अंतर्निहित शक्तियों के कारण होती है। सोरोकिन का मानना है की सामाजिक परिवर्तन संस्कृति में उतार–चढ़ाव आने के कारण होता है। सोरोकिन ने उतार–चढ़ाव के आधार पर सामाजिक परिवर्तन की व्याख्या की है। इनके अनुसार संस्कृति के तीन रूप है– भावात्मक संस्कृति, संवेदनात्मक संस्कृति, आदर्शात्मक संस्कृति इन तीनो रूपों में उतार–चढ़ाव होता रहता है।

भावात्मक संस्कृति, जो मुख्य रूप से व्यक्ति की भावनाओं और संवेदनाओं पर आधारित होती है, में उतार–चढ़ाव के परिणामस्वरूप कभी समाज अधिक भावनात्मक होता है, तो कभी ठोस और व्यावहारिक। संवेदनात्मक संस्कृति, जो भौतिक वस्तुओं और संवेदनाओं की ओर केंद्रित होती है, में भी इसी तरह के उतार–चढ़ाव देखे जाते हैं। आदर्शात्मक संस्कृति, जो नैतिक और दार्शनिक मान्यताओं पर आधारित होती है, में भी इस प्रकार के परिवर्तन होते हैं, जहाँ समाज कभी आदर्शवादी दृष्टिकोण को अपनाता है और कभी यथार्थवादी दृष्टिकोण को।

सामाजिक परिवर्तन में उतार–चढ़ाव का प्रभाव धर्म और सांस्कृतिक प्रथाओं पर भी पड़ता है। आदिम समाज में धार्मिक और आध्यात्मिक मूल्य समाज की सांस्कृतिक पहचान का हिस्सा थे। समय के साथ, जैसे–जैसे समाज आधुनिकता की ओर बढ़ा, भौतिकवाद और वैज्ञानिक दृष्टिकोण ने धार्मिक विश्वासों को चुनौती दी। यह संक्रमण एक प्रकार का उतार–चढ़ाव था, जहाँ धार्मिक प्रथाएँ एक ओर बढ़ रही थीं, वहीं दूसरी ओर भौतिकवाद और वैज्ञानिक दृष्टिकोण समाज में प्रमुख हो गए।

आर्थिक क्रियाओं और जनसंख्या की संरचना पर भी उतार–चढ़ाव परिवर्तन का प्रभाव देखा जा सकता है। जब समाज तकनीकी और औद्योगिक उन्नति की दिशा में बढ़ता है, तो यह आर्थिक समृद्धि और जनसंख्या वृद्धि का कारण बन सकता है। दूसरी ओर, आर्थिक संकट और प्राकृतिक आपदाएँ समाज में ह्रास का कारण बन सकती हैं, जिससे जनसंख्या की वृद्धि पर असर पड़ता है और आर्थिक अस्थिरता उत्पन्न होती है।

14.6.3 तृतीय प्रतिमानः चक्रीय परिवर्तन

तृतीय प्रतिमान में हम सामाजिक परिवर्तन के परिणाम पर विचार करते हैं। इस प्रतिमान में हम देखते हैं कि सामाजिक परिवर्तन के बाद समाज की स्थिति में कैसे परिवर्तन होता है और इसके परिणाम समाज के भविष्य में कैसे प्रभाव डाल सकते हैं।

चक्रीय परिवर्तन से तात्पर्य है समय के साथ होने वाले निरंतर और पुनरावृत्ति बदलावों का। यह एक प्राकृतिक प्रक्रिया है जिसमें विभिन्न क्षेत्र, जैसे कि संस्कृति, फैशन, सामाजिक मूल्य, और अलंकरण, समय के साथ बदलते और पुनरावृत्त होते हैं। संस्कृति में पारंपरिक और आधुनिक तत्वों का मिश्रण होता है, जो समय के साथ बदलता रहता है। फैशन में ट्रेंड्स आते और जाते हैं, जो समाज की सोच और प्राथमिकताओं को दर्शाते हैं। सामाजिक मूल्य भी समय के साथ विकसित होते हैं, नई मान्यताएँ और नैतिकताएँ उभरती हैं। अलंकरण के तरीके भी बदलते हैं, जो व्यक्तियों की पहचान और सामाजिक स्थिति को प्रभावित करते हैं। अंततः नियंत्रण और स्वतंत्रता के बीच संतुलन भी समय के साथ बदलता है, जिससे समाज के नियम और स्वीकृतियाँ विकसित होती हैं। इन सभी पहलुओं का चक्रीय परिवर्तन समाज को निरंतर रूप से आकार देता है और उसकी दिशा निर्धारित करता है।

स्पेंगलर, पैरेटो, सोरोकिन, टायनबी, क्रोबर चक्रीय सिद्धांत के समर्थक है। पैरेटों ने सामाजिक परिवर्तन के चक्र को समझाने के लिए 'सामान्य वर्ग' अथवा 'गैर–विशिष्टजन वर्ग'

एवं 'उच्च वर्ग'अथवा 'विशिष्टजन वर्ग' का वर्णन किया। तो टायनबी ने 'चुनौती' और 'प्रत्युतर' की धारणाओं का विकास किया। स्पेंगलर ने सभ्यता के जीवन चक्र की अवधारणा प्रस्तुत की, जिसमें सभ्यता का विकास एक जैविक जीवन चक्र की तरह होता है– उद्भव, विकास और अंत। उन्होंने इसे एक चक्रीय प्रक्रिया के रूप में देखा, जिसमें सभ्यता अपने जीवनकाल में विभिन्न अवस्थाओं से गुजरती है। हीगल ने समाजों में वाद ,प्रतिवाद तथा संवाद का चक्र देखा है। यह एक प्रक्रिया है जिसमे स्तरों की पुनरावृत्ति एक निश्चित क्रम से होती ही रहेगी।

चक्रीय परिवर्तन के अंतर्गत संस्कृति, फैशन, और सामाजिक मूल्य समय के साथ पुनरावृत्ति और परिवर्तनों का अनुभव करते हैं। संस्कृति और फैशन में नए रुझान और परंपराएं उभरती हैं, जो सामाजिक मूल्य और मानदंडों को प्रभावित करती हैं। अलंकरण की प्रवृत्तियां भी बदलती रहती हैं, जिससे व्यक्तिगत और सामाजिक पहचान का स्वरूप बदलता है। नियंत्रण और स्वतंत्रता के संदर्भ में, समाज के नियम और स्वीकृतियाँ भी समय के साथ विकसित होती हैं, जो व्यक्ति की स्वतंत्रता और सामाजिक व्यवस्था के बीच संतुलन को प्रभावित करती हैं। इस तरह, चक्रीय परिवर्तन समाज के विभिन्न पहलुओं को निरंतर रूप से बदलता और आकार देता है। प्राकृतिक चक्रीय परिवर्तन का एक स्पष्ट उदाहरण ऋतु चक्र है। सर्दी, गर्मी, और वर्षा का चक्रीय परिवर्तन प्राकृतिक दुनिया में एक नियमित चक्र का हिस्सा है। जैसे–जैसे ऋतुएँ बदलती हैं, वे पर्यावरण को बदलती हैं और इसके साथ–साथ मानव समाज भी इन बदलावों के अनुसार अनुकूलित होता है। इस प्रकार, प्राकृतिक चक्रीय परिवर्तन समाज के जीवन और उसकी गतिविधियों को भी प्रभावित करता है।

14.7 सारांश

सामाजिक परिवर्तन समाज की संरचना, संस्कृति और सामाजिक संबंधों में होने वाले स्थायी और महत्वपूर्ण बदलावों को संदर्भित करता है। यह परिवर्तन समय के साथ समाज के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित करता है और विभिन्न कारकों के परिणामस्वरूप होता है, जैसे कि तकनीकी प्रगति, आर्थिक विकास, सांस्कृतिक परिवर्तन और सामाजिक आंदोलनों। सामाजिक परिवर्तन एक सतत प्रक्रिया है जिसका उद्देश्य समाज को अधिक समतामूलक, न्यायपूर्ण और प्रगतिशील बनाना है।

सामाजिक परिवर्तन की अवधारणा और परिभाषा को समझना महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह हमें यह जानने में मदद करता है कि समाज में किस प्रकार की प्रक्रियाएँ और घटनाएँ समाज की संरचना और संस्कृति को बदलती हैं। सामाजिक परिवर्तन केवल एक साधारण बदलाव नहीं है, बल्कि यह गहरे और व्यापक स्तर पर समाज की संरचना और सांस्कृतिक मूल्यों में परिवर्तन को दर्शाता है। यह बदलाव सामाजिक संस्थाओं, सामाजिक प्रक्रियाओं और सामाजिक व्यवहार में देखा जा सकता है।

सामाजिक परिवर्तन के अध्ययन का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य यह समझना है कि कैसे और क्यों समाज में बदलाव होते हैं और उनके परिणाम क्या होते हैं। यह अध्ययन हमें यह जानने में मदद करता है कि समाज के विभिन्न अंगों में परिवर्तन कैसे और क्यों हो रहे हैं, और ये परिवर्तन समाज के विभिन्न वर्गों पर किस प्रकार का प्रभाव डाल रहे हैं।

सामाजिक परिवर्तन का विश्लेषण करना महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह हमें यह समझने में मदद करता है कि समाज में हो रहे बदलावों के पीछे क्या कारण हैं और इन बदलावों का समाज पर क्या प्रभाव पड़ता है। सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रियाओं और उनके प्रभावों का विश्लेषण करने से हम यह जान सकते हैं कि विभिन्न कारक और घटनाएँ समाज में कैसे

परिवर्तन लाती हैं और ये परिवर्तन समाज के विभिन्न वर्गों पर कैसे प्रभाव डालते हैं? यह विश्लेषण हमें यह समझने में मदद करता है कि समाज में परिवर्तन किस प्रकार से हो रहा है और इसका समाज के विभिन्न वर्गों पर क्या प्रभाव पड़ रहा है?

सामाजिक परिवर्तन के अध्ययन से हमें यह भी पता चलता है कि समाज में विभिन्न कारक कैसे मिलकर सामाजिक संरचना और संस्कृति को प्रभावित करते हैं। यह अध्ययन हमें यह समझने में मदद करता है कि कैसे विभिन्न कारक और घटनाएँ समाज में परिवर्तन लाती हैं और ये परिवर्तन समाज के विभिन्न वर्गों पर कैसे प्रभाव डालते हैं। उदाहरण के लिए, तकनीकी प्रगति ने समाज में संचार के तरीकों को बदल दिया है, जिससे समाज में जानकारी का आदान–प्रदान तेजी से और प्रभावी ढंग से हो रहा है। इसी प्रकार, आर्थिक विकास ने समाज में रोजगार के अवसरों को बढ़ावा दिया है, जिससे समाज के विभिन्न वर्गों की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है।

इस प्रकार, सामाजिक परिवर्तन का अध्ययन हमें समाज की संरचना और संस्कृति में हो रहे बदलावों को समझने में मदद करता है। यह अध्ययन हमें यह जानने में मदद करता है कि विभिन्न कारक और घटनाएँ समाज में कैसे परिवर्तन लाती हैं और ये परिवर्तन समाज के विभिन्न वर्गों पर कैसे प्रभाव डालते हैं। सामाजिक परिवर्तन के अध्ययन से हमें यह समझने में मदद मिलती है कि समाज में परिवर्तन किस प्रकार से हो रहा है और इसका समाज के विभिन्न वर्गों पर क्या प्रभाव पड़ रहा है।

इस प्रकार, सामाजिक परिवर्तन का अध्ययन हमें समाज की संरचना और संस्कृति में हो रहे बदलावों को समझने में मदद करता है। यह अध्ययन हमें यह जानने में मदद करता है कि विभिन्न कारक और घटनाएँ समाज में कैसे परिवर्तन लाती हैं और ये परिवर्तन समाज के विभिन्न वर्गों पर कैसे प्रभाव डालते हैं। सामाजिक परिवर्तन के अध्ययन से हमें यह समझने में मदद मिलती है कि समाज में परिवर्तन किस प्रकार से हो रहा है और इसका समाज के विभिन्न वर्गों पर क्या प्रभाव पड़ रहा है।

अंततः, सामाजिक परिवर्तन का अध्ययन हमें समाज के भविष्य को समझने और उसे सुधारने के लिए आवश्यक ज्ञान और उपकरण प्रदान करता है। इससे हम यह जान सकते हैं कि समाज में बदलाव कैसे और क्यों हो रहे हैं? और इन बदलावों का समाज पर क्या प्रभाव पड़ रहा है। यह अध्ययन हमें समाज को अधिक समतामूलक, न्यायपूर्ण और प्रगतिशील बनाने के लिए प्रेरित करता है, जिससे समाज के सभी वर्गों को समान अवसर और अधिकार मिल सकें।

14.8 संदर्भ ग्रंथ

1. महाजन, धर्मवीर, महाजन, कमलेश (2017): समाजशास्त्र का परिचय, विवेक प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 233
2. वही, पृ. 242
3. वही, पृ. 262
4. विद्याभूषण, सचदेव, आर. (2014): समाजशास्त्र के सिद्धांत, किताब महल, इलाहाबाद, पृ. 687

5. वही, पृ. 688

6. विद्यालंकार, सत्यकेतु (1997): समाजशास्त्र, श्री सरस्वती सदन, नई दिल्ली

7. मदान, जी. आर. (2009): राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली

8. सिंह, जे.पी. (2023); समाजशास्त्र– अवधारणाएं एवं सिद्धांत, पी.एच.आई लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, पृ.346

9. गुप्ता, एम.एल, शर्मा, डी.डी,(2014): समाजशात्र,साहित्य भवन,आगरा, पृ.596

10. वही, पृ. 575

11. वही, पृ. 577

12. देसाई, आई.पी. (2007): भारत में सामाजिक परिवर्तन, रावत पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली

13. ओम, ह. (2010): सामाजिक संरचना और परिवर्तन, अंशिका पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली

14. चौधरी, पी. (2005): भारतीय समाज और सामाजिक परिवर्तन, साहित्य भवन, आगरा

15. यादव, एस. (2008): समाजशास्त्र: सिद्धांत और परिवर्तन, भारतीय प्रकाशन, जयपुर

16. सिंह, एस. (2011): आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन, यूनिवर्सिटी पब्लिशिंग हाउस, लखनऊ

17. वर्मा, जी. (2006): सामाजिक गतिशीलता और परिवर्तन, ज्ञान गंगा पब्लिकेशन्स, पटना

18. शुक्ला, आर. (2009): भारतीय समाज में परिवर्तन और विकास, सागर पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली

14.9 बोध के प्रश्न

14.9.1 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. सामाजिक परिवर्तन से आप क्या समझते है? इसकी विशेषताओं की विवेचना कीजिए।
2. सामाजिक परिवर्तन के प्रतिमानों की विवेचना कीजिए।

14.9.2 लघु उत्तरीय प्रश्न

1. क्रांति से आप क्या समझते है ?
2. उद्विकास एवं प्रगति में अंतर स्पष्ट कीजिए ।

14.9.3 वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. एक निश्चित दिशा में होने वाले निरंतर परिवर्तन को क्या कहते है?

   (A) उद्विकास (B) विकास (C) प्रगति (D) क्रांति

2. उद्विकास के जनक कौन माने जाते है?

(A) विलबर्ट ई. मूर (B) मैकाइवर एवं पेज (C) चार्ल्स डार्विन (D) पिटरिम सोरोकिन

3. 'सोशियोलॉजी ऑफ रेवोलूशन' नामक पुस्तक के लेखक कौन है?

(A) हरबर्ट स्पेंसर (B) मैकाइवर एवं पेज (C) चार्ल्स डार्विन (D) पिटरिम सोरोकिन

4. सोशल डिवेलपमेंट 'ैवबपंस क्मअमसवचउमदज) नामक पुस्तक के लेखक कौन है?

(A) वेबलन (B) कॉम्ट (C) सोरोकिन (D) एल. टी. हॉबहाउस

5. 'सोशल एण्ड कल्चरल डायनामिक्स' नामक पुस्तक के लेखक कौन है?

(A) आर. के. मर्टन (B) ईमाईल दुर्खीम (C) कार्ल मार्क्स (D) सोरोकिन

14.10 वस्तुनिष्ठ प्रश्न के उत्तर

1. A

2. C

3. D

4. D

5. D

14.11 पारिभाषिक शब्दावली

क्रांति– पूर्ण परिवर्तन, उलट दिया जाना (जैसे– पूँजीवादी या जनवादी क्रांति, समाजवादी क्रांति)।

प्रतिमान– विश्वासों, मान्यताओं और अवधारणाओं का एक ढांचा है, जो वास्तविकता पर एक लेंस प्रदान करता है।

उद्विकास– जीवित जनसंख्या में हमेशा अनुकूलनता के द्वारा संचित परिवर्तन जो पीढ़ी दर पीढ़ी स्थानान्तरित होते हैं।

आंदोलन– स्थिति या स्थान का परिवर्तन, परिवर्तन को प्रभावित करने या किसी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए किया गया अभियान।

संस्कृति– परिष्कृत संस्कार, संस्कृति वह जटिल समग्रता है जिसमें ज्ञान, विश्वास, कला, नैतिकता, कानून, रीति–रिवाज तथा समाज के सदस्य के रूप में मनुष्य द्वारा अर्जित अन्य क्षमताएं और आदतें सम्मिलित हैं।

इकाई–15: सामाजिक परिवर्तन के सिद्धान्त और कारक, जनसंख्यात्मक कारक और सामाजिक परिवर्तन

इकाई की रूपरेखा

15.1 उद्देश्य

15.2 प्रस्तावना

15.3 सामाजिक परिवर्तन : अवधारणा एवं अर्थ

15.4 सामाजिक परिवर्तन : परिभाषा तथा विशेषताएँ

15.5 सामाजिक परिवर्तन और सांस्कृतिक परिवर्तन

15.6 सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रियाएं

15.7 परिवर्तन के प्रतिमान

15.8 सामाजिक परिवर्तन के सिद्धान्त

15.9 सामाजिक परिवर्तन के कारक

15.10 सामाजिक परिवर्तन के जनसंख्यात्मक कारक

15.11 माल्थस का जनसंख्या का सिद्धांत

15.12 जनसंख्यात्मक कारक और सामाजिक परिवर्तन

15.13 सारांश

15.14 संदर्भ ग्रंथ

15.15 बोध के प्रश्न

15.15.1 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

15.15.2 लघु उत्तरीय प्रश्न

15.15.3 वस्तुनिष्ठ प्रश्न

15.16 वस्तुनिष्ठ प्रश्न के उत्तर

15.17 पारिभाषिक शब्दावली

15.1 उद्देश्य

इस अध्याय में निम्न बिन्दुओं को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है :

1. परिवर्तन की अवधारणा एवं सामाजिक परिवर्तन को स्पष्ट करना।
2. सामाजिक परिवर्तन की परिभाषा को प्रस्तुत करना।

3. सामाजिक परिवर्तन की विशेषताओं की विवेचना करना।
4. परिवर्तन के प्रतिमानों की व्याख्या करना।
5. सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन के अन्तर को स्पष्ट करना।
6. सामाजिक परिवर्तन के सिद्धांत की व्याख्या करना।
7. सामाजिक परिवर्तन के कारकों को स्पष्ट करना।
8. माल्थस के जनसंख्या सिद्धांत की व्याख्या करना।
9. सामाजिक परिवर्तन के जनसंख्यात्मक कारक की व्याख्या करना।

15.2 प्रस्तावना

सामाज एक परिवर्तनशील व्यवस्था है। प्रत्येक समाज में चाहे अनचाहे परिवर्तन की प्रक्रिया चलती रहती है। समाज सदैव परिवर्तनशील परिघटना है जिसका विकास, ह्रास एवं नवीनीकरण होता रहता है। सामाजिक परिवर्तन के अन्य कारकों जैसे सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक तथा राजनीतिक के अलावा जनसंख्यात्मक कारक भी महत्वपूर्ण होता है।

जनसंख्यात्मक कारक और सामाजिक परिवर्तन एक दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं। जनसंख्या में वृद्धि उसके घटाव और संरचना में बदलाव समाज में महत्वपूर्ण परिवर्तन लाते हैं। जब जनसंख्या में परिवर्तन होता है तो यह समाज के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित करता है और सामाजिक परिवर्तन भी जनसंख्या पर प्रभाव डालता है। जनसंख्या की वृद्धि कई सामाजिक घटनाओं को जन्म देती है। आर्थिक विकास, शहरीकरण, परिवार नियोजन, आयु संरचना, लिंग अनुपात प्रत्येक समाज के सामाजिक संरचना को स्पष्ट करता है। हम किसी समाज की उम्र संरचना को देखकर पता कर सकते हैं कि यह समाज विश्व में कितनी उत्पादक क्षमता रखता है। जनसंख्या में होने वाले बदलाव से सामाजिक परिवर्तन उत्पन्न होते हैं। किसी समाज में जन्मदर–मृत्युदर प्रवसन के बढ़ने तथा घटने से वहाँ का सामाजिक ढाँचा भी बदलता है। अधिक जनसंख्या वाले समाज आर्थिक एवं स्वास्थ्य सम्बन्धित समस्याओं से जूझते हैं वही सीमित जनसंख्या वाला समाज आर्थिक प्रगति एवं स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहता है। किसी भी समाज में जनसंख्या का बहुत अधिक कम होना या ज्यादा होना अनेक प्रकार की समस्याओं को जन्म देता है। इस प्रकार जनसंख्या और सामाजिक परिवर्तन घनिष्ठ रूप से अन्तःसम्बन्धित हैं। अत्यन्त प्राचीन काल से ही जनसंख्यात्मक कारक या जनसंख्या की विशेषताएँ सामाजिक परिवर्तन की गति और दिशा का निर्धारण करते रहे हैं, किन्तु वर्तमान युग में इन दोनों के बीच सम्बन्ध और भी घनिष्ठ हो गये हैं। आज दुनिया की चिन्तनधारा में जनसंख्या केन्द्र बिन्दु है, जो समस्त प्रकार के सामाजिक परिवर्तनों के लिए उत्तरदायी है। जनसंख्यात्मक कारक किस प्रकार से सामाजिक परिवर्तन लाते हैं, इसकी विवेचना करने से पहले यह जानना आवश्यक है कि सामाजिक परिवर्तन क्या है?

15.3 सामाजिक परिवर्तन की अवधारणा तथा अर्थ

गति और जीवन परस्पर अन्तःसम्बन्धित है, जीवन और समाज गतिशील है, परिवर्तनशील है, परिवर्तन ही प्रकृति है, प्रकृति का नियम ही परिवर्तन है, समाज इसी विशाल प्रकृति का एक अंग है। आज कोई भी ऐसा समाज नहीं है, जो परिवर्तन से प्रभावित न हो। सामाजिक परिवर्तन जैसा कि इसके नाम से स्पष्ट होता है, वह परिवर्तन है, जिसका सम्बन्ध

समाज और सामाजिक व्यवस्था में होने वाले परिवर्तन से है। परिवर्तन समाज और जीवन का आधार है। यदि दिन और रात के रूप में परिवर्तन नहीं होता, ऋतुओं में परिवर्तन नहीं होता, जीवन में बचपन, यौवनावस्था, बुढ़ापा और मृत्यु के रूप में परिवर्तन नहीं होता, तो क्या समाज सुचारू रूप से चल सकता था? किन्तु ऐसा नहीं होता है, इसका कारण यह है कि परिवर्तन प्रकृति का आधारभूत नियम है।

समाज नदी के प्रवाह की भाँति गतिमान है, आगे बढ़ता रहता है। जिस प्रकार नदी का पानी उद्गम–स्थान से निकलकर कहीं भी किसी भी अवस्था में नहीं रुकता है ठीक उसी प्रकार समाज भी सतत परिवर्तित होता रहता है। यदि समाज में परिवर्तन न होते, तो आज भी मानव–समाज आखेट अवस्था में ही पड़ा रहता। यह सामाजिक परिवर्तन ही है, जिसके कारण आज हम आखेट अवस्था में नहीं हैं। साथ ही आज जिस अवस्था में हैं, भविष्य में भी उसी में नहीं रहेंगे, अपितु और आगे जाएंगे।

परिवर्तन का अर्थ

सामाजिक परिवर्तन दो शब्दों से मिलकर बना है, सामाजिक और परिवर्तन। संक्षेप में सामाजिक का अर्थ है–समाज से सम्बन्धित, मैकाइवर ने समाज की परिभाषा करते हुए लिखा है कि समाज सामाजिक सम्बन्धों का जाल है। मैकाइवर ने समाज को वृहद् अर्थों में प्रयुक्त किया है। समाज के निर्माण में अनेक छोटी–बड़ी संस्थाओं का महत्त्व होता है और इन्हीं के योग से समाज निर्मित होता है। सामाजिक सन्तुलन बना रहे, इसलिए सामाजिक संस्थाओं की एक व्यवस्था होती है। यह संस्थाएँ और व्यवस्था परस्पर अन्तःसम्बन्धित तथा अन्तःनिर्भर होती हैं।

परिवर्तन 'भिन्नता' (Variation) की ओर संकेत करता है। यह भिन्नता किसी भी प्रकार की और किसी भी क्षेत्र में हो सकती है। उदाहरण के लिए चौड़ी मोहरी के पैंट का स्थान सँकरी मोहरी के द्वारा लिया जाना भी परिवर्तन है। लिखने में कलम का स्थान पेन के द्वारा लिया जाना परिवर्तन है। जूतों की बनावट में परिवर्तन हो जाना व साइकिल के प्रारूप में अन्तर आ जाना, ये सब परिवर्तन हैं। प्रत्येक वस्तु का एक स्वरूप होता है। इस स्वरूप का निर्माण तत्कालीन परिस्थितियाँ एवं आवश्यकताएँ करती हैं। यदि समय, परिस्थितियों और आवश्यकता में परिवर्तन हो जाने से उस वस्तु का स्वरूप परिवर्तित हो जाय, तो इसे भी परितर्वन कहा जायेगा। फिचर ने सामाजिक परिवर्तन की परिभाषा करते हुए लिखा है कि "परिवर्तन को संक्षेप में पहले ही अवस्था या अस्तित्व के प्रकरण में अन्तर के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।" (Fitcher : 'Sociology' p. 340)

परिवर्तन की विशेषताएँ

परिवर्तन की जो विवेचना और परिभाषा दी गई है, इसके अनुसार परिवर्तन की निम्न विशेषताएँ निर्धारित की जा सकती हैं :

(1) परिवर्तन का तात्पर्य भिन्नता से है,

(2) यह भिंन्नता आकार–प्रकार से सम्बन्धित हो सकती है,

(3) इस भिन्नता में वस्तु का पिछला आकार परिवर्तित हो जाता है,

(4) वस्तु का जो नया आकार पिछले को बदल कर देता है, परिवर्तन है।

15.4 सामाजिक परिवर्तन की परिभाषा

विभिन्न विद्वानों ने सामाजिक परिवर्तन का प्रयोग भिन्न–भिन्न अर्थों में किया है। कुछ विद्वानों के अनुसार सामाजिक ढाँचे में होने वाला परिवर्तन ही सामाजिक परिवर्तन है। कुछ विद्वानों ने सामाजिक सम्बन्धों और सामाजिक व्यवहार में होने वाले परिवर्तन को ही सामाजिक परिवर्तन माना है। कुछ भी हो "सामाजिक परिवर्तन समाज से सम्बन्धित है। समाज सामाजिक संगठन, सामाजिक सम्बन्ध और सामाजिक ढाँचे का सम्मिलित रूप है। समाज का इन भागों में परिवर्तन होता है, तो इसे भी सामाजिक परिवर्तन कहा जाता है।" विभिन्न समाजशास्त्रियों ने सामाजिक परिवर्तन की जो परिभाषाएँ दी हैं, वे निम्नलिखित हैं :

(1) **डेविस–** "सामाजिक परिवर्तन से हम केवल उन्हीं परिवर्तनों को समझते हैं, जो सामाजिक संगठन अर्थात् समाज की संरचना और कार्यों में घटित होता है।" (Kingsley Davis, 'Human-Society' p. 622)

(2) **गिन्सबर्ग–** "सामाजिक परिवर्तन से मैं सामाजिक संरचना में परिवर्तन समझता हूँ।" (Ginsberg, Social Change, an article in British Journal of Sociology, Sept. 1958, p. 205)

(3) **गिलिन तथा गिलिन–** "सामाजिक परिवर्तन जीवन की स्वीकृत विधियों में परिवर्तन को कहते हैं।" (Gillin and Gillin, 'Cultural Sociology' 1950)

(4) **जेन्सन–** "व्यक्तियों के कार्य करने और विचार करने के तरीकों में होने वाले संशोधनों को सामाजिक परिवर्तन के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।" (Jenson, 'Introduction to Sociology and Social problems.')

(5) **गर्थ तथा मिल्स–** "सामाजिक परिवर्तन हम उस संकेत को कहते हैं, जो समय के साथ कार्यों, संस्थाओं अथवा उन व्यवस्थाओं में होता है, जो सामाजिक संरचना एवं उनकी उत्पत्ति, विकास एवं पतन से सम्बन्धित होता है।" (H. Girth and C.W. Mills, 'Character and Social Structure', p. 398)

(6) **जान्सन–** "अपने मौलिक अर्थ में, सामाजिक परिवर्तन का तात्पर्य समाज की संरचना में होने वाले परिवर्तन से है।" (H.M. Johnson, 'Sociology', p. 626)

(7) **डासन और गेटिस–** "सांस्कृतिक परिवर्तन सामाजिक परिवर्तन है, क्योंकि समस्त संस्कृति अपनी उत्पत्ति, अर्थ और प्रयोग में सामाजिक है।" (Dawson and Gettys, 'Introduction to Sociology', p. 580)

(8) **मैकाइवर और पेज–** "समाजशास्त्री होने के नाते हमारी विशेष रुचि प्रत्यक्ष रूप में सामाजिक सम्बन्ध से है। केवल इन सामाजिक सम्बन्धों में होने वाले परिवर्तन को ही हम सामाजिक परिवर्तन कहते हैं।"[9] (R.M. MacIver & C.H. Page, 'Society', p. 511)

"सामाजिक परिवर्तन की परिभाषा उन अन्तरों (Variations) और रूपान्तरों (Modifications) के रूप में की जा सकती है, जो सामाजिक संरचना में घटित होते हैं।"

सामाजिक परिवर्तन की विशेषताएँ

समाज परिवर्तनशील है किन्तु परिवर्तन की गति में अन्तर होता है। कुछ समाज शीघ्रता से परिवर्तित हो जाते हैं, जबकि कुछ समाजों को परिवर्तित होने में पर्याप्त समय लगता है। यह सामाजिक मूल्य और मान्यताओं पर निर्भर करता है कि समाज किस गति से परिवर्तित होगा। उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर सामाजिक परिवर्तन की निम्न विशेषताएँ निर्धारित की जा

सकती हैं।

(1) परिवर्तन समाज की प्रकृति में है अर्थात् यह **समाज का मौलिक तत्त्व** है, जिस प्रकार दिन के बाद रात्रि और रात्रि के बाद दिन का होना अनिवार्य है, उसी प्रकार समाज के विभिन्न पहलुओं में परिवर्तन होना अनिवार्य है। यदि समाज में परिवर्तन अनिवार्य रूप से न होता तो हम आज भी उसी आखेट अवस्था में होते जहाँ शताब्दियों पहले थे। व्यक्ति की आवश्यकताएँ, उसके विचार और उसकी मनोवृत्तियों में निरन्तर परिवर्तन होता रहता है और इन्हीं के परिणामस्वरूप समाज में भी परिवर्तन होते रहते हैं।

(2) "परिवर्तन अनिवार्य होते हुए भी इसकी **गति में भिन्नता** होती है" अर्थात् एक समाज में परिवर्तन की गति तेज हो सकती है, जबकि दूसरे समाज में परिवर्तन की गति धीमी हो सकती है किन्तु ऐसा कोई भी समाज नहीं है जहाँ परिवर्तन ही न होते हों। समाज में परिवर्तन किस गति से होंगे, यह उस समाज के संगठन और ढाँचे पर निर्भर करता है।

(3) "सामाजिक परिवर्तन की गति चाहे जो भी हो, यह **सार्वभौमिक** है।" प्रत्येक देश, काल और परिस्थितियों में इसका अस्तित्व रहा है और भविष्य में भी रहेगा। चाहे आदिम समाज हो या आधुनिक सभ्य समाज हो या असभ्य, शिक्षित समाज हो या अशिक्षित, परिवर्तन सभी जगह पाया जाता है। यह प्रकृति का नियम है।

(4) "सामाजिक परिवर्तन का सीधा सम्बन्ध समाज में आने वाले अन्तर से है" अर्थात् जो कल रहता है, वह आज नहीं है। सामाजिक संगठन, परिवार, विचार–प्रथा, परम्परा, रीति–रिवाज और रहन–सहन में आने वाले **भिन्नता का नाम ही सामाजिक परिवर्तन** है।

(5) "सामाजिक परिवर्तन अनिश्चित होता है।" दूसरे शब्दों में इसकी **भविष्यवाणी नहीं** की जा सकती है। परिवर्तन कब और किस दिशा में होगा? इसके क्या परिणाम होंगे? इसका कौन–सा रूप अधिक प्रभावपूर्ण होगा? इस सम्बन्ध में निश्चित रूप से कुछ भी नहीं कहा जा सकता है, क्योंकि परिवर्तन निरन्तर और अनिश्चित होता है।

(6) "परिवर्तन **चक्रिक या एक रैखिक** हो सकता है।" चक्रिक का तात्पर्य उस प्रकार के परिवर्तन से है, जिनकी पुनरावृत्ति हो सकती है। जैसे पैंट की मोहरी–पहले चौड़ी, फिर सँकरी और इसके बाद पुनः सँकरी। एक रैखिक परिवर्तन वह है जिसकी पुनरावृत्ति नहीं होती है, जैसे कुदाली से खेती (Hoe Culture) करना फिर हल–बैल और ट्रैक्टर से खेती करना। ट्रैक्टर से खेती करने के बाद फिर कुदाली से खेती करना सम्भव नहीं है। यह परिवर्तन एक रेखा की तरफ आगे बढ़ता जाता है।

(7) "सामाजिक परिवर्तन को नापा नहीं जा सकता है।" परिवर्तन भौतिक और अभौतिक दोनों वस्तुओं में होता है। भौतिक वस्तुओं में होने वाले परिवर्तन को नापा जा सकता है, किन्तु अभौतिक वस्तुओं में जो परिवर्तन होता है, उसे नापा नहीं जा सकता है। व्यक्ति के आचार–विचार, रीति–रिवाज, मनोवृत्तियों आदि में किस मात्रा में परिवर्तन हो गया है, इसकी **माप सम्भव नहीं** है।

(8) "सामाजिक परिवर्तन समाज को संगठित भी करता है और समाज को विघटित भी।" यह परिवर्तन की प्रकृति पर निर्भर करता है। इसीलिए यह समाज को उन्नति और अवनति दोनों की ओर ले जा सकता है। अर्थात् परिवर्तन का **परिणाम संगठनात्मक और विघटनात्मक,** दोनों ही प्रकार का हो सकता है।

15.5 सामाजिक परिवर्तन और सांस्कृतिक परिवर्तन

प्रायः विद्वान सामाजिक परिवर्तन और सांस्कृतिक परिवर्तन में कोई अन्तर नहीं मानते हैं। डासन और गेटिस ने सामाजिक परिवर्तन और सांस्कृतिक परिवर्तन में कोई भेद नहीं किया है। उसने लिखा है कि– "सांस्कृतिक परिवर्तन सामाजिक परिवर्तन है क्योंकि सम्पूर्ण संस्कृति अपनी उत्पत्ति, अर्थ और प्रयोग में सामाजिक है।" (Dawson and Gettys 'Introduction to Sociology', p. 580) किन्तु सामाजिक परिवर्तन सांस्कृतिक परिवर्तन से भिन्न हैं। मेरिल ने ठीक ही लिखा है कि ""सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन एक ही वस्तु नहीं है।" (Merrill, 'Society and Culture', p. 460) मैकाइवर ने तो बिल्कुल ही स्पष्ट कहा है कि सिर्फ उस परिवर्तन को सामाजिक परिवर्तन कहेंगे, जो सामाजिक सम्बन्धों में होता है, क्योंकि मैकाइवर मानता है कि समाज सामाजिक सम्बन्धों का जाल है। सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन में निम्न भेद हैं–

(1) संस्कृति शब्द अत्यन्त ही व्यापक है। इससे भौतिक और अभौतिक सभी वस्तुओं का समन्वय होता है। सांस्कृतिक परिवर्तन का सम्बन्ध इन्हीं भौतिक और अभौतिक वस्तुओं के परिवर्तन से है, जबकि सामाजिक परिवर्तन का सम्बन्ध सामाजिक ढाँचे या सामाजिक सम्बन्धों में होने वाले परिवर्तन से है।

(2) संस्कृति में होने वाले परिवर्तन को देखा जा सकता है, जबकि सामाजिक परिवर्तन को देखा नहीं जा सकता। इसका सिर्फ अनुभव किया जा सकता है।

(3) सामाजिक परिवर्तन सांस्कृतिक परिवर्तन का एक भाग है, क्योंकि संस्कृति के अन्तर्गत जीवन के सम्पूर्ण कला–विन्यास सम्मिलित रहते हैं। संस्कृति जीवन की सम्पूर्ण पद्धति है।

(4) जहाँ तक प्रभाव का प्रश्न है सांस्कृतिक परिवर्तनों का जीवन पर न्यून मात्रा में प्रभाव पड़ता है जबकि सामाजिक परिवर्तन जीवन को अधिक प्रभावशाली ढंग से प्रभावित करता है।

15.6 सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया

सामाजिक परिवर्तन सामाजिक सम्बन्धों में आने वाले अन्तर की ओर संकेत करता है यह अन्तर गुण और मात्रा से सम्बन्धित हो सकता है अतः इसके नाम भिन्न–भिन्न हो सकते हैं। वे शब्द जिनका सामाजिक परिवर्तन से सम्बन्ध है या सामाजिक परिवर्तन की ओर संकेत करते हैं, उन्हें निम्न भागों में बाँट सकते हैं :

(1) सामाजिक प्रक्रिया (Social Processes)

(2) सामाजिक उद्विकास (Social Evolution)

(3) सामाजिक प्रगति (Social Progress)

(4) वृद्धि (Growth)

(5) क्रान्ति (Revolution)

(6) सुधार (Reformation)

(7) सामाजिक नियोजन (Social Planning)

- **वृद्धि** (Growth)– वृद्धि की निम्न विशेषताएँ हैं–

  (अ) परिवर्तन होना चाहिए, परिवर्तन के अभाव में वृद्धि की कल्पना सम्भव नहीं है।

  (आ) यह परिवर्तन निरन्तर होना चाहिए।

  (इ) इस परिवर्तन की दिशा निश्चित होनी चाहिए अर्थात् एक ही दिशा में परिवर्तन हो।

  (ई) यह परिवर्तन मात्रा (Quantity) और आकार (Size) पर आधारित होना चाहिए, अर्थात् मात्रा और आकार में वृद्धि होना चाहिए।

- **क्रान्ति** (Revolution)– इनमें निम्न तत्त्व हैं :

  (अ) क्रान्ति का भी सम्बन्ध परिवर्तन से है।

  (आ) यह परिवर्तन अचानक होता है और इसकी गति अत्यन्त ही तीव्र रहती है।

  (इ) क्रान्ति नया जीवन और समाज व्यवस्था को जन्म देती है।

  (ई) क्रान्ति शान्त, उग्र और अहिंसात्मक दोनों प्रकार की हो सकती है।

- **सुधार** (Reformation)– इसमें निम्न तत्त्व सम्मिलित होते हैं :

  (अ) परिवर्तन सुधार के मूल में है।

  (आ) यह परिवर्तन खास लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए किया जाता है, अर्थात् सुधार के पीछे कोई न कोई लक्ष्य होना चाहिए,

  (इ) इसमें समाज की कमियों या कुरीतियों को समाप्त किया जाता है और नये आदर्श स्थापित किये जाते हैं।

  (ई) सुधार से सम्बन्धित जितने भी परिवर्तन किये जाते हैं, उनमें गुण–दोष का विचार रखा जाता है।

  (उ) सुधार का सम्बन्ध मात्रा (Quantity) और गुण (Quality) दोनों से होता है।

- **सामाजिक नियोजन** (Social Planning)– इनमें निम्न तत्त्व पाये जाते हैं :

  (अ) नियोजन के लिए परिवर्तन का होना अनिवार्य है।

  (आ) नियोजन क्रमबद्ध और योजनाबद्ध सुधार है।

  (इ) इसका एक निश्चित उद्देश्य होता है।

  (ई) इसी उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए निश्चित दिशा में पूर्व योजना के अनुसार जो कार्य किया जाता है, उसे नियोजन कहते हैं।

  (उ) नियोजन से सम्बन्धित परिवर्तन शान्त तरीकों से किया जाता है।

  (ऊ) नियोजन का उद्देश्य सामाजिक और आर्थिक कुरीतियों को समाप्त कर समाज का बहुमुखी विकास करना।

सामाजिक परिवर्तन से सम्बन्धित शब्दों की संक्षिप्त व्याख्या **मैकाइवर और पेज** ने एक तालिका द्वारा प्रस्तुत की है। उसी तालिका से लेकर सामाजिक परिवर्तन से सम्बन्धित शब्दों की निम्न व्याख्या की जा सकती है–

(1)	Change (परिवर्तन)	=	Variation
(2)	Social Change (सामाजिक परिवर्तन)	=	Variation in Social Relations
(3)	Social Process (सामाजिक प्रक्रिया)	=	(i) Change (परिवर्तन)+ (ii) Continuity (निरन्तरता)+ (iii) Direction (दिशा)
(4)	Growth (वृद्धि)	=	(i) Change (परिवर्तन)+ (ii) Direction (दिशा)+ (iii) Relating to (a) Quantity (मात्रा) (b) Size (आकार) से सम्बन्धित
(5)	Evolution उद्‌विकास	=	(i) Change (परिवर्तन)+ (ii) Direction (दिशा)+ (iii) Qualitative (गुणात्मक)+ (iv) Structural & functional differentiation (ढाँचे और कार्यों में अन्तर)
(6)	Progress प्रगति	=	(i) Change (परिवर्तन)+ (ii) Direction (दिशा)+ (iii) Evolution (मूल्यांकन)

15.7 परिवर्तन के तीन प्रतिमान

समाज अनेक संस्थाओं का योग है। इन संस्थाओं और सम्बन्धित व्यक्तियों में समायोजन और संघर्ष होता रहता है। आज समाज में इतनी तीव्रता से परिवर्तन हो रहे हैं कि परिवर्तन की दिशा का अनुमान लगाना प्रायः असम्भव–सा हो गया है। मैकाइवर और पेज ने परिवर्तन के तीन प्रतिमान बतलाये हैं। (MacIver & Page, 'Society', p. 519-530)

(1) **औद्योगिक प्रतिमान–** मैकाइवर और पेज के अनुसार परिवर्तन के तीन प्रतिमानों में पहला औद्योगिक है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह होती है कि इसमें परिवर्तन की दिशा सदैव ऊपर रहती है। आज जो आविष्कार हुआ है, कल उससे अच्छा ही आविष्कार होगा। जैसे बैलगाड़ी, साइकिल और मोटरकार। मोटरकार में भी 1968 का मॉडल 1960 का मॉडल से अच्छा ही होगा। औद्योगिकी और सामाजिक परिवर्तन के सम्बन्ध की व्याख्या अगले अध्याय में की गई है। मैकाइवर ने प्रौद्योगिक प्रतिमान को निम्न उदाहरण द्वारा समझाया है–

रेखाचित्र 10 : परिवर्तन का पहला प्रतिमान

(2) **उत्थान और पतन–** औद्योगिक परिवर्तन में उत्थान ही उत्थान होता है। विकास की रेखा निरन्तर ऊपर की ही ओर जाती है। किन्तु दूसरे प्रतिमान में परिवर्तन की रेखा ऊपर जाती है, किन्तु फिर नीचे भी गिर जाती है। इस परिवर्तन में चरम विकास के बाद अवनति भी हो जाती है। उदाहरण के लिए आर्थिक क्रियाओं और जनसंख्या में जिस गति से उन्नति होती है, उसी गति से अवनति भी हो जाती है। इसे मैकाइवर और पेज ने निम्न चित्र द्वारा प्रदर्शित किया है–

रेखाचित्र 11 : परिवर्तन का दूसरा प्रतिमान

(3) **चक्रिक परिवर्तन–** मैकाइवर और पेज के अनुसार परिवर्तन का तीसरा प्रतिमान चक्रिक है। अर्थात् यह परितर्वन चक्र की भाँति होता है। जिस प्रकार घड़ी का काँटा एक से चलता हुआ बाहर तक पहुँचता है और पुनः एक में पहुँच जाता है। इसी प्रकार इस परिवर्तन में चक्र की भाँति परिवर्तन होते हैं। उदाहरण के लिए पैंट चौड़ी मोहरी से सँकरी मोहरी के बने, फिर सँकरी के बाद चौड़ी मोहरी के इस प्रकार के परिवर्तन फैशन संस्कृतियों में होते हैं। मैकाइवर ने इसे निम्न चित्र द्वारा प्रदर्शित किया है।

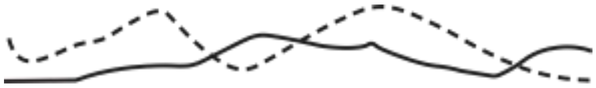

रेखाचित्र 12 : परिवर्तन का तीसरा प्रतिमान

15.8 सामाजिक परिवर्तन के सिद्धान्त

सामाजिक सम्बन्धों, सामाजिक संरचना और कार्यों में जो परिवर्तन होते हैं, उसे सामाजिक परिवर्तन कहा जाता है। समाज में परिवर्तन की यह प्रक्रिया निरन्तर गतिशील रहती है। इसके परिणामस्वरूप समाज में अनेक प्रकार के परिवर्तन होते रहते हैं। मौलिक प्रश्न यह है कि समाज में परिवर्तन क्यों होते हैं? ऐसी कौन सी परिस्थितियाँ हैं जो समाज में परिवर्तन उपस्थित करती हैं? परिवर्तन के कारणों के सम्बन्ध में विद्वान एकमत नहीं हैं। इस सम्बन्ध में विद्वानों ने भिन्न–भिन्न प्रकार के विचारों का प्रतिपादन किया है। विद्वानों ने परिवर्तन के सम्बन्ध में जिन विचारों का प्रतिपादन किया है, उसे "सामाजिक परिवर्तन के सिद्धान्त" (Theories of Social Change) के नाम से जाना जाता है। यहाँ सामाजिक परिवर्तन से सम्बन्धित इन्हीं प्रमुख कारकों की विवेचना की जायेगी।

चक्रिक सिद्धान्त

जैसा कि इसके नाम से स्पष्ट होता है यह परिवर्तन चक्र की भाँति होता है। इस परिवर्तन में पुनरावृत्ति का महत्त्व है, अर्थात् परिवर्तन में पुरानी घटनाओं की पुनरावृत्ति होती है। उदाहरण के लिए भारतीय दर्शन में कर्म का सिद्धान्त। व्यक्ति जैसे कर्म करता है, उस प्रकार कर्मों का उसे फल (Result) मिलता है और उस फल का भोग करता है। फिर जिस प्रकार के

कर्मों कां फल भोगता है उसी के अनुसार पुनः कर्म बनता है। अर्थात् कर्म और फल चक्र की भाँति चलते रहते हैं—कर्म भोग और पुनः कर्म।

चक्रिक परिवर्तन को दो भागों में बाँटा जा सकता है—

(अ) पूर्ण चक्र— पूर्ण चक्र का तात्पर्य यह है कि परिवर्तन एक बिन्दु या स्तर से चलता हुआ अनेक. स्तरों को पार करता हुआ फिर उसी स्तर में आ जाता है। अर्थात् परिवर्तन एक चक्र की भाँति चलता है। जैसे गर्मी, बरसात, सर्दी और बसन्त ऋतुओं में परिवर्तन होता है, किन्तु यह परिवर्तन एक क्रम के अनुसार होता है, एक व्यवस्था के अनुसार होता है। गर्मी के बाद बरसात ही आयेगी। गर्मी के बाद सर्दी नहीं आ सकती।

रेखाचित्र 13 : चक्रिक सिद्धान्त पूर्ण चक्र

(आ) अर्द्धचक्र— यह परिवर्तन घड़ी के पेण्डुलम की भाँति होता है। इसमें परिवर्तन एक स्तर के बाद फिर उसी स्तर पर आ जाता है और इस स्तर के बाद पुनः दूसरे स्तर पर आ जाता है। उदाहरण के लिए रात के बाद दिन और दिन के बाद पुनः रात्रि।

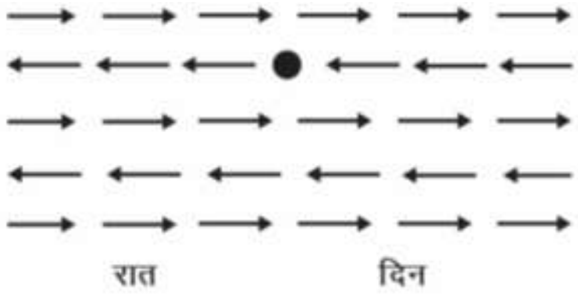

रेखाचित्र 14 : चक्रिक सिद्धान्त अर्द्धचक्र

चक्रिक परिवर्तन से सम्बन्धित प्रमुख सिद्धान्त निम्न हैं—

(i) सोरोकिन का सिद्धान्त

सोरोकिन के अनुसार परिवर्तन न तो चक्रिक होता है और न एक रैखिक। उसके अनुसार परिवर्तन इन दोनों समन्वय के अनुसार होता है। उसने अपनी पुस्तक Social and Cultural Dyamics (1937-1941) में संस्कृति में होने वाले परिवर्तनों का उदाहरण दिया है। उसके अनुसार संस्कृति को तीन स्वरूपों में वर्गीकृत किया जा सकता है—

(a) आदर्शात्मक संस्कृति (Ideational)

(b) विचारात्मक संस्कृति, और (Idealistic)

(c) ऐन्द्रिक संस्कृति (Sensate)

संस्कृति में परिवर्तन सोरोकिन के अनुसार निम्न गति से होता है। संस्कृति का विकास होता है, यह आवश्यक नहीं है कि यह विकास एक ही सीधी रेखा में हो। प्रत्येक संस्कृति की कुछ आन्तरिक शक्तियाँ होती हैं। इनके कारण से कभी–कभी संस्कृति अपने विकास की दिशा से थोड़ा हट जाती है। इस प्रकार एक सीधी रेखा में चलने के पश्चात् वह अपने मार्ग से विचलित हो जाती है। विचलित होने पर वह अपनी पुरानी अवस्था में भी जा सकती है और नहीं भी जा सकती है। अनेक सभ्यताओं का उत्थान और पतन इन्हीं रूपों में होता है। निम्न चित्र में सोरोकिन की धारणा अधिक स्पष्ट हो जायेगी–

रेखाचित्र 15 : सोरोकिन का सिद्धान्त

(ii) टॉयनबी का सिद्धान्त

टॉयनबी ने अपनी पुस्तक A Study of History में परिवर्तन के सम्बन्ध में दो प्रमुख तत्त्वों का उल्लेख किया है–

(अ) चुनौती (Challenge)

(आ) प्रति उत्तर (Response)।

विकास का क्रम इन्हीं दोनों में से होकर गुजरता है। उसने अपने सिद्धान्त की पुष्टि के लिए अनेक सभ्यताओं के विकास का उदाहरण दिया है। उसके अनुसार विकास की तीन अवस्थाएँ होती हैं–

(a) चुनौती को प्रति–उत्तर (Response to challenge) का समय। यह किसी सभ्यता, संस्कृति या समाज व्यवस्था की प्रौढ़ावस्था का समय होता है। जैसे पर्यावरण की चुनौती का प्रति उत्तर। भौगोलिक पर्यावरण भिन्न–भिन्न स्थानों का भिन्न–भिन्न होता है। इन्हें नियन्त्रित नहीं किया जा सकता है। इसके अनुसार अपने को ढालना पड़ता है और अनुकूल करना पड़ता है, तभी व्यक्ति और समाज का अस्तित्व सम्भव है। अनुकूलन के पश्चात् ही सभ्यता का विकास सम्भव होता है।

(b) विकास की दूसरी अवस्था संकट (Time of Trouble) की होती है। वह किसी सभ्यता या संस्कृति की वृद्धावस्था का समय होता है। इसमें संस्कृति के प्रतिमान शिथिल हो जाते हैं। वे प्रति–उत्तर को सहन नहीं कर पाते हैं। यह विकास की परम अवस्था होती है।

(c) तीसरी अवस्था, अन्तिम पतन (Final Downfall) की होती है। यह संस्कृति या सभ्यता की मृत्यु का समय होता है और यहाँ संस्कृति समाप्त हो जाती है। टॉयनवी के सिद्धान्त को निम्न चित्र द्वारा समझाया जा सकता है :

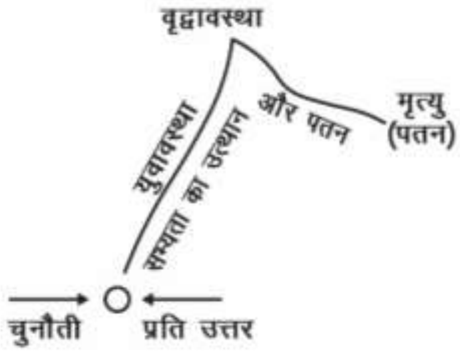

रेखाचित्र 16 : टॉयनबी का सिद्धान्त

(iii) स्पेंगलर का सिद्धान्त

स्पेंगलर ने परिवर्तन के सिद्धान्त को अपनी The Decline of the West नामक पुस्तक में प्रस्तुत किया है। उसके अनुसार सभ्यता का जन्म, उत्थान और पतन समान क्रम से होता है। अपने सिद्धान्त की पुष्टि के लिए उसने **आठ सभ्यताओं** का अध्ययन किया था। उसके अनुसार प्रत्येक समाज या सभ्यता दो क्रमों से गुजरती है–उत्थान और पतन। उसने समाज के उत्कर्ष की अवस्था को संस्कृति कहा है और इसके पतन की अवस्था को सभ्यता कहा है। उसके अनुसार नगर और युद्ध पतन के चिह्न हैं। उसके सिद्धान्त को निम्न चित्र द्वारा प्रस्तुत किया जा सकता है–

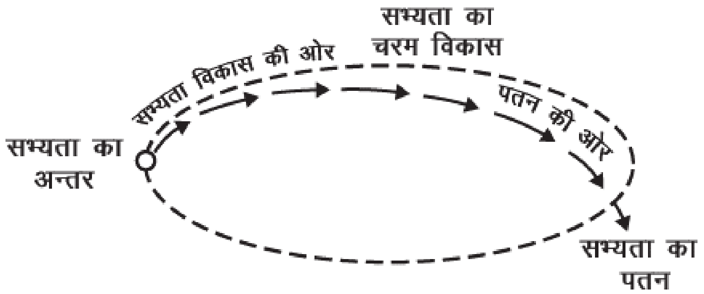

रेखाचित्र 17 : स्पेंगलर का सिद्धान्त

(iv) चैपिन का सिद्धान्त

चैपिन ने भी परिवर्तन के चक्रीय सिद्धान्त का समर्थन किया है। उसके अनुसार समाज अनेक संस्थाओं और समूहों का योग है। अगर संस्थाएँ उन्नति के मार्ग पर हैं तो संस्कृति संगठित अवस्था में रहेगी और यदि संस्थाएँ अवनति की अवस्था में रहेगी तो संस्कृति विघटित अवस्था में रहेगी। चैपिन के अनुसार जिस प्रकार मानव जीवन में जन्म–विकास और मृत्यु का सिद्धान्त लागू होता है, ठीक यही सिद्धान्त सामाजिक परिवर्तन के सम्बन्ध में भी लागू होता है।

सामाजिक परिवर्तन के रेखीय सिद्धान्त

रेखीय सिद्धान्त के अन्तर्गत निम्न तीन प्रकार के सिद्धान्त आते हैं–

(अ) एक रेखीय सिद्धान्त (Unilinear Theory)

(आ) उद्‌विकासवादी सिद्धान्त (Evolutionary Theory)

(इ) प्रगतिवादी सिद्धान्त (Progressive Theory)

एक रेखीय सिद्धान्त के अनुसार परिवर्तन एक सीधी रेखा में होता है और जहाँ से

परिवर्तन होता है, फिर वहाँ कभी भी लौटकर नहीं आता है। इसे निम्न चित्र द्वारा दिखाया जा सकता है।

सभ्यता का जन्म O—— विकास, निरन्तर विकास

→ → → → → →

रेखाचित्र 18 : सामाजिक परिवर्तन के रेखीय सिद्धान्त

सामाजिक परिवर्तन के निर्धारणवादी सिद्धान्त

निर्धारणवादी जैसा कि इनके नाम से स्पष्ट होता है इस सिद्धान्त में एक ही तत्त्व को सामाजिक परिवर्तन का कारण माना जाता है। निर्धारणवादी सिद्धान्तों में विद्वानों द्वारा सामाजिक परिवर्तन की व्याख्या मात्र एक कारक द्वारा की गई है। जैसे वेबलेन एवं मैकाइवर।

15.9 सामाजिक परिवर्तन के कारक

समाज सतत परिवर्तनशील है। यह नदी के प्रवाह की भाँति निरन्तर गतिशील रहता है। समाज की इस गतिशीलता के क्या कारण हैं? सामाजिक परिवर्तन क्यों होता है? ऐसी कौन–सी शक्तियाँ हैं जो समाज में परिवर्तन लाती हैं? इस सम्बन्ध में विद्वानों ने अपने–अपने विचार व्यक्त किये हैं और सामाजिक परिवर्तन के कारणों की खोज की है। सामाजिक परिवर्तन के लिए एक ही कारण उत्तरदायी नहीं हैं। अनेक तत्त्व सामाजिक परिवर्तन में योग देते हैं। संक्षेप में सामाजिक परिवर्तन के लिए निम्न कारक उत्तरदायी हैं–

(1) जनसंख्यात्मक कारक (Demographic Factors),

(2) प्राणिशास्त्रीय कारक (Biological Factors),

(3) प्रौद्योगिकीय कारक (Technological Factors),

(4) आर्थिक कारक (Economic Factors),

(5) सांस्कृतिक कारक (Cultural Factors),

(6) मनोवैज्ञानिक कारक (Psychological Factors),

(7) भौतिक कारक (Physical Factors),

(8) राजनीतिक कारक (Political Factors)।

उपर्युक्त सभी कारक सामाजिक परिवर्तन के लिए उत्तरदायी हैं। यहाँ उपर्युक्त सभी कारकों की विवेचना न आवश्यक है और न ही उपयुक्त। इस अध्याय में मात्र जनसंख्यात्मक कारक किस प्रकार से समाज में परिवर्तन लाते हैं? इस तथ्य की विवेचना की जायेगी, जो निम्न हैं :

15.10 सामाजिक परिवर्तन के जनसंख्यात्मक कारक

जनसंख्यात्मक कारकों का अध्ययन करने से पहले आवश्यक है कि प्रसिद्ध जनसंख्याशास्त्री थामस राबर्ट माल्थस (Thomes Robert Malthus) के जनसंख्या सम्बन्धी सिद्धान्त को समझ लिया जाय। इसका कारण यह है कि माल्थस को 'जनांकिकी का पिता' (Father of Demography) कहकर पुकारा जाता है। माल्थस द्वारा प्रतिपादित जनसंख्या का सिद्धान्त आज भी लोकप्रिय है।

15.11 माल्थस का जनसंख्या का सिद्धान्त

माल्थस ने जनसंख्या के सिद्धान्त को निम्न दो तत्त्वों पर आधारित किया है–

(अ) मनुष्य के जीवन–निर्वाह और अस्तित्व की रक्षा करने के लिए खाद्य–सामग्री अनिवार्य है।

(ब) स्त्री तथा पुरुष दोनों में स्वाभाविक काम प्रवृत्ति पाई जाती है।

इन दो मान्यताओं पर आधारित माल्थस के जनसंख्या सिद्धान्त के प्रमुख तत्व इस प्रकार हैं–

(1) जनसंख्या वृद्धि और खाद्य सामग्री की दर और प्रकृति (Rate & Tendency of growth of population & food material) – माल्थस ने इसे निम्न आधार पर समझने का प्रयास किया है–

यदि जनसंख्या को अनियन्त्रित रूप से छोड़ दिया जाय तो उसमें तीव्र गति से बढ़ने की स्वाभाविक प्रवृत्ति पाई जाती है। इसकी तुलना में खाद्य सामग्री में जो वृद्धि होती है, उसकी गति धीमी होती है।

जनसंख्या में ज्यामितीय अनुपात से वृद्धि होती है, यह ज्यामितीय अनुपात निम्न प्रकार है–

1, 2, 4, 8, 16, 32

खाद्य सामग्री गणितीय अनुपात से बढ़ती है। यह गणितीय अनुपात निम्न है–

1, 2, 3, 4, 5, 6

इससे यह सिद्ध होता है कि खाद्य सामग्री और जनसंख्या दोनों में वृद्धि होती है, किन्तु दोनों की वृद्धि दर में अन्तर है अर्थात् जनसंख्या तीव्र गति से आगे बढ़ती है, जबकि खाद्य सामग्री की गति तुलनात्मक दृष्टि से कम होती है।

(2) जनसंख्या और खाद्य सामग्री के बीच सन्तुलन (Mal-adjustment between population & food materials)– माल्थस के अनुसार पाँच वर्षों में खाद्य सामग्री में सिर्फ पाँच 1, 2, 3, 4, 5 गुना वृद्धि होती है, जबकि जनसंख्या में 16 गुने की वृद्धि होती है। 1, 2, 4, 8, 16 इसका परिणाम यह होता है कि खाद्य सामग्री और जनसंख्या के बीच असन्तुलन की स्थिति पैदा हो जाती है।

(3) जनसंख्या निरोध (Checks of Population) – सामाजिक असन्तुलन को समाप्त करने के लिए माल्थस ने जनसंख्या के निरोधों का भी उल्लेख किया है। इन निरोधों को प्रमुख रूप से दो भागों में विभाजित किया जा सकता है।

(A) सकारात्मक निरोध (Positive checks) – जैसा कि इसके नाम से स्पष्ट है। इन निरोधों का सम्बन्ध स्वयं प्रकृति से है जिसके अन्तर्गत युद्ध, बीमारियाँ, दुर्भिक्ष और प्राकृतिक विपदाएँ सम्मिलित हैं। माल्थस कहता है कि प्राकृतिक विपदाओं के कारण मृत्युदर में वृद्धि होती है और जनसंख्या अपने आप कम हो जाती है, इसके साथ ही माल्थस ने निम्न बातों में भी प्राकृतिक निरोधों के अन्तर्गत सम्मिलित किया है, जैसे–

(अ) अत्यधिक निर्धनता

(ब) बच्चों के समुचित पालन–पोषण में कमी

(स) जनसंख्या द्वारा किया जाने वाला अत्यधिक परिश्रम

(द) नगरीय जीवन और इसकी परिस्थिति शास्त्रीय विशेषताएँ

(इ) अस्वस्थकर व्यवस्था

(B) नकारात्मक निरोध (Preventive Checks) – इस प्रकार के निरोधों का प्रकृति से कोई सम्बन्ध नहीं है। ये निरोध मानव निर्मित हैं और इनसे जन्मदर में कमी आ जाती है। माल्थस ने कृत्रिम निरोधों को निम्न दो भागों में विभाजित किया है–

(i) सामान्य प्रतिरोध (Normal Restraint) – माल्थस ने नैतिक संयम के अन्तर्गत निम्न दो तत्त्वों को सम्मिलित किया है, जिनसे जन्मदर में कमी आती है–

(अ) देर से विवाह करना,

(ब) सन्तानोत्पादन की इच्छा से दूर रहना।

(ii) दुराचार (Vice) – माल्थस के अनुसार कृत्रिम निरोध का दूसरा साधन ऐसे उपायों से परिपूर्ण है जिससे जन्मदर में कमी आ जाती है, पर माल्थस इन्हें पाप व दुराचार मानता था। ये तत्त्व निम्न हैं–

(अ) वेश्यावृत्ति,

(ब) गर्भपात और अनैतिक यौन सम्बन्ध,

(स) समलिंगीय यौन सम्बन्ध।

15.12 जनसंख्यात्मक कारक और सामाजिक परिवर्तन

सोरोकिन ने जनांकिकीय कारक को परिभाषित करते हुए कहा है कि "जनांकिकीय कारक का अर्थ किसी समाज की जनसंख्या के आकार और घनत्व में वृद्धि और ह्रास होना है।" इस प्रकार जनांकिकीय कारक यह स्पष्ट करते हैं कि जनसंख्या के आकार और विशेषताओं में होने वाले परिवर्तन समाज को किस प्रकार प्रभावित करते हैं। सामाजिक परिवर्तन की किसी भी विवेचना में इन कारकों का इतना महत्व है कि संसार की प्राचीनतम वैदिक संस्कृति में किए गए विभिन्न अध्ययनों में इसे शामिल करते हुए महत्वपूर्ण स्थान दिया गया था। अडोल्फ कोस्टे के अनुसार जनसंख्या में वृद्धि और इसके घनत्व के द्वारा सभी सामाजिक दशाओं में होने वाले परिवर्तनों को समझ जा सकता है। आरम्भिक सभ्यताओं का विकास भी उन्ही स्थानों पर हुआ है जहाँ जनसंख्या का केन्द्रीकरण हो गया था। मिस्र, भारत, चीन और रोम की सभ्यताएँ इस कथन को स्पष्ट करती हैं।

जीवशास्त्रियों का मत है कि सामाजिक संरचना और सामाजिक सम्बन्धों में होने वाला परिवर्तन प्रमुख रूप से जनसंख्या सम्बन्धी विशेषताओं पर ही निर्भर करता है। इसका तात्पर्य है कि किसी समाज में जन्म दर और मृत्य दर, आप्रवास और उत्प्रवास, जीवन अवधि, स्त्री–पुरुष अनुपात तथा विवाह की आयु आदि वे महत्वपूर्ण जनसंख्यात्मक दशाएँ हैं जो सामाजिक परिवर्तन के लिए सबसे अधिक उत्तरदायी होती है। इस प्रकार जनसंख्या का प्रत्येक समाज में अपना महत्त्व होता है। जनसंख्या के आधार पर ही किसी देश और राष्ट्र को पहचाना जाता है। जनसंख्या की मात्रा सामाजिक संगठन और सामाजिक व्यवस्था को प्रभावित करती है।

जनसंख्या में जो परिवर्तन होते हैं उसके अनेक कारक हैं। यहाँ सामाजिक परिवर्तन के जनसंख्यात्मक कारकों की विवेचना की जायेगी। निम्न प्रमुख जनसंख्यात्मक कारक समाज में परिवर्तन लाते हैं–

(1) जनसंख्या का आकार (Size of Population) – जनसंख्या का आकार निम्न दो कारकों से प्रभावित होता है–

(अ) जन्मदर और मृत्युदर (Death rate and Birth rate) – प्रति 1000 व्यक्तियों पर पैदा होने वाले और मरने वाले व्यक्तियों के द्वारा जन्मदर और मृत्युदर निम्न प्रकार से जनसंख्या के आकार को प्रभावित करते हैं–

(i) यदि जन्मदर अधिक होती है और मृत्युदर कम होती है, अर्थात् प्रति एक हजार व्यक्तियों के पीछे मरने वाले व्यक्तियों की तुलना में पैदा अधिक होते हैं तो जनसंख्या में वृद्धि होगी।

(ii) इसी प्रकार यदि प्रति एक हजार व्यक्तियों के पीछे कम व्यक्ति पैदा होते हैं और अधिक व्यक्ति मरते हैं तो जनसंख्या में कमी आयेगी।

इस प्रकार जन्म और मृत्युदर में परिवर्तन से जनसंख्या का आकार प्रभावित और परिवर्तित होता है जो अन्ततः समाज में परिवर्तन उत्पन्न करता है, यथा–

(क) अगर जनसंख्या इतनी मात्रा में बढ़ जायेगी, जितनी मात्रा में खाद्य सामग्री नहीं बढ़ती तो उस देश में अनेक सामाजिक समस्याओं का जन्म हो जायेगा। जैसे–बेकारी, निर्धनता, अशिक्षा, स्वास्थ्य और पौष्टिक भोजन का अभाव। देश की प्रगति रुक जायेगी और सारी शक्ति जनसंख्या की वृद्धि रोकने और इसके भरण–पोषण में ही रहेगी। समाज के मूल्य बदल जायेंगे, समाज की रीति–नीतियों, प्रथाओं, परिवार–विवाह और धार्मिक विश्वास में परिवर्तन हो जायेगा।

जनसंख्या की वृद्धि राजनीतिक जीवन में भी प्रभाव डालती है। निवास की समस्या उग्र रूप धारण कर लेती है। राजनीतिक क्षेत्रों में वृद्धि करने के लिए विभिन्न देशों में होड़ लग जाती है। इस प्रकार युद्ध छिड़ते हैं, पहले युद्ध दो देशों की सीमाओं को लेकर होते हैं, किन्तु बाद में वे विश्व युद्ध का रूप धारण कर लेते हैं, जिसके परिणाम भयंकर होते हैं का समाज का ढाँचा अस्त–व्यस्त हो जाता है। अनेक सामाजिक समस्याओं का जन्म होता है।

(ख) यदि किसी देश की जनसंख्या कम हो जाये एवं वहाँ मृत्युदर की मात्रा अत्यन्त ऊँची हो जाय और जन्मदर की मात्रा घट जाये तो ऐसी स्थिति में भी समाज का ढाँचा असन्तुलित हो जाता है। वहाँ की जनशक्ति (Man power) कम हो जाती है। उस देश का सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक विकास नहीं हो पाता है। प्राकृतिक संसाधनों का दोहन नहीं हो पाता है और देश विकास की गति में पीछे रह जाता है। कुल मिलाकर देश को जनाभाव की स्थिति का सामना करना पड़ता है।

(आ) जनसंख्या की गतिशीलता–गतिशीलता भी सामाजिक परिवर्तन को प्रभावित करती है। जनसंख्या में गतिशीलता दो कारणों से होती है।

(i) **देशागमन (Immigration)** का तात्पर्य है, जब दूसरे देश के व्यक्ति अपने देश में आकर निवास करते हैं, तो देश की जनसंख्या बढ़ती है भले ही जनता में कोई परिवर्तन न हो।

(ii) **परदेशागमन (Emigration)** का अर्थ है, जब अपने देश के व्यक्ति दूसरे देश में जाकर निवास करते हैं, तो अपने देश की जनसंख्या घटती है भले ही जन्मदर में कोई परिवर्तन

न हो।

अगर देशागमन की दर परदेशागमन से अधिक होती है तो जनसंख्या में वृद्धि होती है और यदि परदेशागमन की गति देशागमन से अधिक होती है, तो जनसंख्या घटती है। जनसंख्या में वृद्धि हो जाने से अनेक समस्याओं का जन्म होता है। उदाहरण के लिए सांस्कृतिक भिन्नता की समस्या, प्रजातीय भिन्नता की समस्या, सामाजिक और धार्मिक मूल्यों में अन्तर की समस्या, निवास, भोजन, वस्त्र और रोजगार की समस्या। ये सभी समस्याएँ समाज को विघटन की ओर ले जाती हैं। दो संस्कृतियों के मेल से सदा संघर्ष नहीं होता, बल्कि कभी–कभी अनुकूलन और आत्मसात भी होता है, इसके परिणामस्वरूप तीसरी संस्कृति और नवीन सामाजिक मूल्यों का जन्म होता है। इसी प्रकार अगर देशागमन की तुलना में परदेशागमन अधिक होता है, तो जनसंख्या कम हो जाती है। इसके परिणामस्वरूप मानव शक्ति कम हो जाती है और प्राकृतिक शक्तियों का शोषण नहीं हो पाता है। अनेक सेवाओं से सम्बन्धित योग्य व्यक्तियों का अभाव हो जाता है। अधिकांशतः स्त्रियों की तुलना में परदेशागमन पुरुष अधिक करते हैं अतः स्त्रियों और पुरुषों का अनुपात समाप्त हो जाता है। पारिवारिक विघटन और अन्य अनेक समस्याओं का जन्म होता है।

(2) जनसंख्या की संरचना (Composition of Population) – सामाजिक परिवर्तन में जनसंख्या की संरचना का महत्त्वपूर्ण स्थान है। जनसंख्या के निम्न संरचनात्मक कारक समाज में परिवर्तन उत्पन्न करते हैं–

(अ) प्रजाति (Race) – प्रजाति का सामाजिक परिवर्तन से सम्बन्ध है। प्रजाति वह मानव समूह है जो विशिष्ट शारीरिक लक्षणों से युक्त होती हैं। यदि एक देश में एक ही प्रजाति के व्यक्ति निवास करते हैं, तो वहाँ सामाजिक परिवर्तन की गति अत्यन्त ही धीमी होती है क्योंकि सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और राजनीतिक मूल्यों में समानता, विषमता की तुलना में अधिक होगी। जहाँ विभिन्न प्रजातियों के व्यक्ति निवास करते हैं, वहाँ सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों में विषमता होगी और समाज का ढाँचा विघटन की ओर गतिशील रहेगा। अमेरिका में श्वेत और काली प्रजाति में निरन्तर संघर्ष चलते रहते हैं।

(आ) राष्ट्रीयता (Nationality) – राष्ट्रीयता राष्ट्र के प्रति एक भावना है। जिस समाज में अनेक राष्ट्रीयता वाले व्यक्ति निवास करते होंगे वहाँ एकता की तुलना में विविधता अधिक पाई जायेगी। इससे सामाजिक संगठन स्थायी नहीं रह सकेगा। इसी प्रकार जहाँ एक राष्ट्रीय भावना के व्यक्ति निवास करते होंगे, उस समाज का ढाँचा अधिक स्थायी होगा और वहाँ लोगों के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक दृष्टिकोणों में समानता होगी।

(इ) लिंग (sex) – स्त्री और पुरुष समाजरूपी गाड़ी के दो पहिए हैं। इनके अनुपात में समानता का होना आवश्यक है। यौन अनुपात (Sex Proportion) सामाजिक परिवर्तन को प्रभावित करता है। जिस समाज में पुरुषों से स्त्रियों की संख्या अधिक होगी वहाँ के सामाजिक दाँचे में स्त्रियों का महत्त्व अधिक होगा। इसी प्रकार जहाँ स्त्रियों की संख्या अधिक होगी वहाँ पुरुषों का स्त्रियों पर आधिपत्य होगा। उदाहरण के लिए भारतवर्ष में पुरुषों का आधिपत्य है, क्योंकि यहाँ पुरुषों का अनुपात स्त्रियों से अधिक है। अमेरिका और फ्रांस में स्त्रियाँ पुरुषों से अधिक हैं, अतः वहाँ स्त्रियों का पुरुषों पर आधिपत्य है। इसी प्रकार जहाँ पुरुष अधिक होते हैं वहाँ बहुपति विवाह और जहाँ स्त्रियाँ अधिक होती हैं वहाँ बहुपत्नी–विवाह पाए जाते हैं। जहाँ स्त्रियों की संख्या अधिक होती है, वहाँ अनेक स्त्रियों का विवाह नहीं हो पाता है और दहेज की प्रथा का विकास होता है। स्त्रियों के कम होने से समाज में यौन अनैतिकता को बढ़ावा मिलता

है और इसी के आधार पर भावी सामाजिक मूल्यों का निर्धारण होता है।

(ई) वैवाहिक सम्बन्ध (Marital Relation) – वैवाहिक दशाएँ भी सामाजिक परिवर्तन को प्रभावित करती हैं। अगर बाल–विवाह होते हैं तो अधिक बच्चों को जन्म मिलता है, स्त्रियों का स्वास्थ्य खराब रहता है। अनेक सामाजिक समस्याओं का जन्म होता है। बहुपत्नी विवाह होने से भी स्त्रियों की स्थिति निम्न हो जाती है, वे पुरुषों की दासी मात्र रह जाती हैं। देर से विवाह होने पर स्त्रियों की स्थिति ऊँची रहती है, वे अधिक स्वस्थ रहती हैं, कम और स्वस्थ सन्तानों को जन्म देती हैं। इसी प्रकार अशिक्षित समाज में अगर विलम्ब से विवाह किया जायेगा, तो अनैतिकता के बढ़ने की सम्भावना अधिक रहेगी।

(उ) आयु (Age) – आयु का सामाजिक परिवर्तन से सीधा सम्बन्ध है। मुख्य रूप से आयु के अनुसार समाज के व्यक्तियों को तीन भागों में विभाजित कर सकते हैं–बालक, युवक और वृद्ध। जिस समाज में बालकों की संख्या अधिक होगी, उस समाज में समाजीकरण करने वाली शिक्षा संस्थाओं का अधिक महत्त्व होगा। जिस समाज में वृद्धों की संख्या अधिक होगी, उस समाज में परिवर्तन की गति मन्द रहेगी और पुराने मूल्यों का महत्त्व अधिक होगा। जिस समाज में युवकों की संख्या अधिक होगी, वहाँ युवक उत्साही होते हैं, समाज धनधान्य से पूर्ण होगा।

(3) जनसंख्या का घनत्व (Density of Population) – जनसंख्या के घनत्व से तात्पर्य है– प्रतिवर्ग किलोमीटर में व्यक्तियों का निवास। जहाँ अत्यन्त घनी बस्तियाँ होती हैं वहाँ अधिक सामाजिक समस्याएँ पाई जाती हैं, विभिन्न संस्कृतियों के व्यक्ति निवास करते हैं, विचारों में विविधता होती है। अतः परिवर्तन शीघ्रता से होते हैं। जहाँ की जनसंख्या कम घनी होती है, वहाँ सामाजिक परिवर्तन तुलनात्मक दृष्टि से कम होते हैं।

इसी प्रकार जनसंख्या का सामाजिक प्रक्रियाओं (Social Processes) पर भी प्रभाव पड़ता है। अधिक जनसंख्या होने से प्रतिस्पर्धा की भावना में वृद्धि होती है। व्यक्तियों में जागरूकता का विकास होता है। वे अधिक मिलनसार होते हैं और उनका संगठन शक्तिशाली रहता है। इसके विपरीत कम जनसंख्या होने से प्रतिस्पर्धा की भावना का अभाव पाया जाता है। साधन सीमित नहीं होते अतः प्रतिस्पर्धा की भावना का विकास नहीं हो पाता है। उसमें जागरूकता की भावना का उस मात्रा में विकास नहीं हो पाता है और वे तुलनात्मक दृष्टि से कम मिलनसार होते हैं।

15.13 सारांश

सामाजिक परिवर्तन के लिए जनसंख्यात्मक कारक भी महत्वपूर्ण होता है। जनसंख्या के घटने, बढ़ने से समाज पर प्रभाव पड़ता है। बढ़ती हुई जनसंख्या से समाज में नैतिक तथा भौतिक घनत्व में वृद्धि होती है, लोगों की आवश्यकताओं में वृद्धि होता है। परिणामस्वरूप समाज में विशेषीकरण बढ़ता है। माल्थस ने अपने जनसंख्या सिद्धान्त में बताया की जनसंख्या की अधिकता होने पर खाद्य सामग्री का संकट उत्पन्न होता है वही प्रकृति बढ़ी हुई जनसंख्या को प्राकृतिक रूप से सन्तुलित करती है। जीवशास्त्रियों का मत है कि सामाजिक संरचना और सामाजिक सम्बन्धों में होने वाला परिवर्तन प्रमुख रूप से जनसंख्या सम्बन्धी विशेषताओं पर ही निर्भर करता है। इसका तात्पर्य है कि किसी समाज में जन्म दर और मृत्य दर, आप्रवास और उत्प्रवास, जीवन अवधि, स्त्री–पुरुष अनुपात तथा विवाह की आयु आदि वे महत्वपूर्ण जनसंख्यात्मक दशाएँ हैं, जो सामाजिक परिवर्तन के लिए सबसे अधिक उत्तरदायी होती है।

15.14 सन्दर्भ ग्रन्थ

9. Bottomore, T. B., Sociology, Asia Publishing House, Bombay,1978.
10. Davis, Kingsley, Human Society, Macmillan, NewYork, 1959.
11. Ogburn W.F. and Nimkoff, M. F., Sociology, Houhton, Mifflin Company, Boston, 1958,
12. दोषी, एस. एल. एवं जैन, पी.सी., समाजशास्त्र नई दिशाएँ, मालिक बुक कम्पनी, जयपुर, 2020
13. डॉ. जे.पी. मिश्र, जनांकिकी, साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा, 2021
14. डॉ. बघेल. डी.एस., जनांकिकी, विवेक प्रकाशन, दिल्ली।
15. डॉ. सिन्हा वी.सी., जनांकिकी के सिद्धान्त, मयूर बुक्स, दिल्ली।
16. डॉ. मलैया, के.सी., जनसंख्या शिक्षा, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

15.15 बोध के प्रश्न

15.15.1 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. सामाजिक परिवर्तन के चक्रीय सिद्धान्त की व्याख्या करें।
2. सामाजिक परिवर्तन के जनसंख्यात्मक कारक की विवेचना करें।
3. माल्थस के जनसंख्या सिद्धान्त की व्याख्या कीजिए।

15.15.2 लघु उत्तरीय प्रश्न

1. जनसंख्या परिवर्तन के तीन मुख्य कारण कौन से हैं?
2. माल्थस ने कितने प्रकार की जनसंख्या नियंत्रण के उपाय को बताया है?
3. सोरोकिन के सामाजिक परिवर्तन सिद्धान्त पर टिप्पणी लिखिए।
4. सामाजिक परिवर्तन को परिभाषित कीजिए।

15.15.3 वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. "सामाजिक परिवर्तन से मैं सामाजिक संरचना में परिवर्तन समझता हूँ।" यह परिभाषा किसने दी है?

अ. डेविस

ब. मैकाइवर

स. गिन्सबर्ग

द. जान्सन

2. मैकाइवर और पेज ने परिवर्तन के तीन प्रतिमान बताये हैं। इनमें से कौन एक सम्मिलित नहीं है?

अ. प्रौद्योगिक प्रतिमान

ब. उत्थान और पतन

स. चक्रिक परिवर्तन

द. प्राकृतिक प्रतिमान

3. किसने संस्कृति के तीन स्वरूप आदर्शात्मक, विचारात्मक एवं ऐन्द्रिक संस्कृति की चर्चा की है?

अ. मैकाइवर एवं पेज

ब. पी. सोरोकिन

स. ऑगबर्न एवं निमकॉफ

द. बी. मैलिनोवस्की

4. परिवर्तन के "चुनौती एवं प्रत्युत्तर का सिद्धान्त" किसके द्वारा प्रतिपादित किया गया है?

अ. स्पेंगलर

ब. टॉयनबी

स. पी. सोरोकिन

द. मैकाइवर एवं पेज

5. निम्न में से "डिक्लाइन ऑफ द वेस्ट" पुस्तक के लेखक कौन है?

अ. स्पेंगलर

ब. टॉयनबी

स. चैपिन

द. गिन्सबर्ग

6. 'जनांकिकी का पिता' के नाम से किसे पुकारा जाता है?

अ. डबलडे

ब. स्पेंसर

स. सैडलर

द. माल्थस

7. माल्थस द्वारा जनसंख्या निरोधों को कितने भागों में विभाजित किया गया है?

अ. दो

ब. तीन

स. चार

द. पाँच

8. माल्थस के सिद्धांत के अनुसार, प्राकृतिक विपदाओं के कारण मृत्युदर में वृद्धि होती है, जिससे जनसंख्या अपने आप कम हो जाती है, यह किस प्रकार के निरोध के अन्तर्गत आता

है ?

अ. औपचारिक

ब. अनौपचारिक

स. सकारात्मक

द. नकारात्मक

9. "जनसंख्या में ज्यामितीय अनुपात से वृद्धि होती है, जबकि खाद्य सामग्री गणितीय अनुपात में" कथन सम्बन्धित है?

अ. ऑगबर्न एवं निमकॉफ

ब. सैडलर

स. टॉयनबी

द. माल्थस

10. "एन एस्से ऑन द प्रिसिंपल ऑफ पॉपुलेशन" पुस्तक के लेखक है?

अ. माल्थस

ब. सैडलर

स. चैपिन

द. गिन्सबर्ग

15.16 वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर

उत्तर – 1. स 2. द 3. ब 4. ब 5. अ 6. द 7. अ 8. स 9. द 10. अ

15.17 पारिभाषिक शब्दावली

सामाजिक परिवर्तन : किसी समाज की सामाजिक संरचना (सामाजिक सम्बन्धों का ताना–बाना) अथवा सामाजिक संगठन (संस्थानों और सामाजिक भूमिका) अथवा समाज के अन्य उपादानों में समय अन्तराल के साथ होने वाले बदलाव और परिष्करण की प्रक्रिया को सामाजिक परिवर्तन कहते हैं।

सांस्कृतिक परिवर्तन : सांस्कृतिक परिवर्तन से संस्कृति के विभिन्न पक्षों में होने वाले परिवर्तनों का बोध होता है। इसमें धर्म, ज्ञान, विश्वास, कला, साहित्य, प्रथा, कानून आदि सभी क्षेत्रों में होने वाले परिवर्तन होते हैं।

जन्मदर और मृत्युदर : प्रतिवर्ष प्रति 1000 जनसंख्या पर जीवित जन्मों की संख्या। मृत्युदर किसी समुदाय, क्षेत्र या समूह में प्रति हजार जनसंख्या पर प्रति वर्ष मृत्यु की संख्या।

सामाजिक नियोजन : वांछनीय सामाजिक दशाओं, सम्बन्धों एवं मूल्यों को प्राप्त करने के बुद्धिसंगत प्रयास को सामाजिक नियोजन कहते हैं।

देशागमन : जब दूसरे देश के व्यक्ति अपने देश में आकर निवास करते हैं, तो देश की जनसंख्या बढ़ती है भले ही जनता में कोई परिवर्तन न हो।

परदेशागमन : जब अपने देश के व्यक्ति दूसरे देश में जाकर निवास करते हैं, तो अपने देश की

जनसंख्या घटती है भले ही जन्मदर में कोई परिवर्तन न हो।

इकाई–16 : भारत में जनाधिक्य–निराशावादी विचारधारा और आशावादी विचारधारा

इकाई की रूपरेखा

16.1 उद्देश्य

16.2 प्रस्तावना

16.3 भारत में जनाधिक्य

16.4 भारत में जनाधिक्य के दृष्टिकोण

16.5 निराशावादी दृष्टिकोण

- 16.5.1 जनसंख्या वृद्धि की तीव्र दर तथा खाद्य उत्पादन की निम्न दर
- 16.5.2 प्राकृतिक नियंत्रण
- 16.5.3 भूमि पर बढ़ता दबाव
- 16.5.4 बेरोजगारी में वृद्धि
- 16.5.5 उच्च जन्म दर तथा मृत्यु दर

16.6 आशावादी दृष्टिकोण

- 16.6.1 जन्म दर में कमी
- 16.6.2 प्राकृतिक संसाधनों का अपूर्ण दोहन
- 16.6.3 प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि
- 16.6.4 जनसंख्या घनत्व कम होना
- 16.6.5 निराशावादी दृष्टिकोण की अतार्कितता

16.7 सारांश

16.8 संदर्भ–ग्रन्थ

16.9 बोध के प्रश्न

- 16.9.1 लघु उत्तरीय प्रश्न
- 16.9.2 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न
- 16.9.3 वस्तुनिष्ठ प्रश्न

16.10 वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर

16.11 पारिभाषिक शब्दावली

16.1 उद्देश्य

उपरोक्त इकाई के अन्तर्गत विद्यार्थी निम्नलिखित बिन्दुओं को समझ सकेंगे :

1. भारत में जनाधिक्य की स्थिति से परिचित हो सकेंगे।
2. भारत में जनाधिक्य का निराशावादी दृष्टिकोण को जान सकेंगे।
3. जनाधिक्य के निराशावादी दृष्टिकोण के प्रमुख तर्क से परिचित हो सकेंगे।
4. भारत में जनाधिक्य का आशावादी दृष्टिकोण को समझ सकेंगे।
5. जनाधिक्य के आशावादी दृष्टिकोण के प्रमुख तर्क से परिचित हो सकेंगे।

16.2 प्रस्तावना

जनाधिक्य एक व्यापक शब्द है। साधारण भाषा में जनाधिक्य का तात्पर्य किसी राष्ट्र में इतनी जनसंख्या वृद्धि हो कि देश में अनगिनत समस्याऐं उत्पन्न होने लगे तो उसे जनाधिक्य कहते है। 1.3 अरब से अधिक जनसंख्या के साथ भारत दुनिया का सबसे अधिक आबादी वाला देश है। भारत में जनाधिक्य एक बड़ी समस्या है क्योंकि देश की जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है कि 2030 तक भारत की जनसंख्या 1.5 बिलियन अरब और 2050 तक 2 अरब से अधिक हो जाएगी। भारत में जनसंख्या वृद्धि या जनाधिक्य को लेकर दो दृष्टिकोण अपनाये गए है एक के अनुसार भारत में जनाधिक्य है इस पहलू को निराशावादी दृष्टिकोण माना जाता है कि भारत में जनाधिक्य की स्थिति नहीं है जिसे आशावादी दृष्टिकोण माना जाता है।

16.3 भारत में जनाधिक्य

संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष 2023 के अनुसार भारत की जनंसख्या 142.86 करोड़ हो गई है जो चीन की अनुमानित जनसंख्या 142.57 करोड़ से कुछ अधिक है। भारत और चीन के बाद अमेरिका का नम्बर है अमेरिका की आबादी करीब 54 करोड़ है इसके बाद इण्डोनेशिया, पाकिस्तान और ब्राजील का स्थान है।

महत्वपूर्ण बिन्दु यह है कि संयुक्त राष्ट्र अमेरिका जो दुनिया में सबसे अधिक आबादी वाले देशों की सूची में तीसरे स्थान पर है वहाँ भारत की आबादी का 1/4 भाग रहता है जबकि क्षेत्रफल की दृष्टि में अमेरिका भारत से तीन गुना बड़ा है। भारत में जनाधिक्य की स्थिति है।

16.4 भारत में जनाधिक्य के दृष्टिकोण

भारत में जनाधिक्य को लेकर दो दृष्टिकोण प्रचलित है जिसकी विवेचना इस प्रकार है :

16.5 निराशावादी दृष्टिकोण

सन् 1798 में थामस राबर्ट माल्थस ने An Essay on the Principle of Population नामक लेख लिखा था तथा उनके अनुसार ''जनसंख्या वृद्धि ज्यामितीय व खाद्यान्न उत्पादन अंकगणितीय होने के कारण कुछ समय बाद जनसंख्या व खाद्य सामग्री के मध्य असन्तुलन उत्पन्न हो जाता है फलतः इस असन्तुलन से निपटने के लिए जनसंख्या पर नियंत्रण लगते है। इस प्रकार प्राकृतिक नियंत्रण जनाधिक्य के प्रतीक है।''

भारत में जनाधिक्य की स्थिति दशकों से चली आ रही है जिसके फलस्वरूप जनसंख्या व खाद्यान्न के मध्य असन्तुलन उत्पन्न हो गया है। इस असन्तुलन के कारण खाद्यान्न का अभाव, खाद्य पदार्थों के मूल्यों में वृद्धि तथा आयात आदि की समस्या उत्पन्न हो गई है। भारत में जनाधिक्य के निराशावादी दृष्टिकोण के अनुसार निम्नलिखित बिन्दु आते है :

16.5.1 जनसंख्या वृद्धि की तीव्र दर तथा खाद्य उत्पादन की निम्न दर

ग्लोबल हंगर इण्डेक्स 2023 की नवीनतम रिपोर्ट के अनुसार भारत की स्थिति और खराब हुई है। इस बार कुल 125 देशों में भारत 111वें स्थान पर है। पिछले साल यह रैक 107 थी। इसका कारण भारत के जनसंख्या वृद्धि की दर अत्यधिक तीव्र है तथा खाद्य सामग्री का उत्पादन सीमित है। दो बार हरित क्रान्ति होने के बाद भी भारत की कृषि उन्नत नहीं हो पाई। भारत में खाद्य समस्या खाद्य पदार्थों के बढ़ते मूल्य खाद्यानों के आयात आदि ऐसे ज्वलन्त प्रश्न है जो भारत में जनाधिक्य के लक्षण है।

16.5.2 प्राकृतिक नियंत्रण

माल्थस के अनुसार जनसंख्या को प्राकृतिक और कृत्रिम दोनों तरीकों से रोका जा सकता। परन्तु माल्थस प्राकृतिक नियंत्रण पर बल देते है उनका मत है कि जब किसी देश की जनसंख्या व खाद्य सामग्री के मध्य असन्तुलन उत्पन्न हो जाता है तो उस असन्तुलन को रोकने के लिए प्रकृति जनसंख्या पर नियंत्रण लगाती है जिससे जनसंख्या उसी सन्तुलन के बिन्दु पर आ जाती है। भारत में भी जनसंख्या वृद्धि के अनेक प्राकृतिक अवरोध है जैसे बाढ़, युद्ध, सूखा, अतिवृष्टि, महामारी तथा आतंकवादी घटनाएं आदि। ये सभी जनसंख्या वृद्धि को सन्तुलित करती है।

16.5.3 भूमि पर बढ़ता दबाव

भारत की जनंसख्या 142.86 करोड है तथा क्षेत्रफल की दृष्टि से इतनी अधिक जनसंख्या को निवास दे पाना एक जटिल समस्या है। वनों की कटाई बढ़ गई है ताकि नगरीकरण की प्रक्रिया आगे बढ़ पाये साथ ही भारत की 68.84 प्रतिशत जनसंख्या जो ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है। उन्हें कृषि योग्य भूमि की आवश्यकता है। ऐसी स्थिति में भूमि पर दिन प्रतिदिन दबाव बढ़ता जा रहा है।

16.5.4 बेरोजगारी में वृद्धि

सेन्टर फॉर मानिटरिंग इण्डियन इकोनोमी (CMIE) के अनुसार जुलाई 2023 तक भारत में बेरोजगारी की दर 7.95 प्रतिशत थी। भारत में आर्थिक नियोजन में सृजन के भरपूर प्रयास किये जाते है परन्तु उन सृजित अवसरों के अनुपात में बेरोजगारी की संख्या बहुत ज्यादा है ऐसी स्थिति में भारत में बेरोजगारों की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है।

16.5.5 उच्च जन्म दर तथा मृत्यु दर

भारत की मृत्यु दर की तुलना से जन्म दर 3 गुना अधिक है। जन्म दर पर अनेक प्रयासों के पश्चात् भी ज्यादा कमी नहीं लाई जा सकी है वहीं स्वास्थ्य सुविधाओं में सुधार के कारण मृत्यु दर में भी कम हो गई है ऐसी स्थिति में भारत में जनाधिक्य की स्थिति उत्पन्न हो गई है।

16.6 आशावादी दृष्टिकोण

आशावादी विचारकों को अनुकूलतम या इष्टतम जनसंख्यावादी भी कहते है। इनके अनुसार जनाधिक्य केवल जनसंख्या में वृद्धि नहीं है बल्कि ये देश की आर्थिक प्रगति व सूचकांक के अनुसार जनसंख्या का निर्धारण करते है। इस दृष्टिकोण को मानने वालों की ये मान्यता है कि जनसंख्या वृद्धि को होने तक देश के प्राकृतिक साधनों का उचित दोहन न हो पाने तक न्यून जनसंख्या माना जायेगा। परन्तु जब प्राकृतिक संसाधनों का विदोहन पूर्णतः हो जाएगा तो उस स्थान विशेष को आर्थिक विकास सर्वोच्च बिन्दु पर पहुँच जाएगा। इस दशा में कार्यशील जनसंख्या को अनुकूलतम जनसंख्या कहते है। इसके विपरीत अगर राष्ट्र विशेष के प्राकृतिक संसाधनों का पूर्ण विदोहन हो चुका हो तो इसे जनाधिक्य की स्थिति कहेगें क्योंकि प्राकृतिक संसाधनों की अनुपलब्धता में आर्थिक विकास असम्भव है।

भारत में जनाधिक्य के आशावादी दृष्टिकोण के पक्ष भारत में जनाधिक्य के आशावादी दृष्टिाकेण के समर्थन में निम्नलिखित बिन्दू आते है :

16.6.1 जन्म दर में कमी

2023 में भारत की जन्मदर 16.946 है। जो कि धीरे–धीरे कम होती जा रही है। 1901 में भारत की जन्मदर 49.2 थी। परिवार नियोजन, सरकारी नीतियों तथा जन जागरूकता अभियान के कारण भारत में जन्म दर में निरन्तर कमी आ रही है।

16.6.2 प्राकृतिक संसाधनों का अपूर्ण दोहन

भारत एक ऐसा देश है जहाँ प्राकृतिक संसाधनों का भण्डार है। भारत के लगभग 51 प्रतिशत भाग पर कृषि, 4 प्रतिशत भाग पर चारागाह, लगभग 21 प्रतिशत भाग पर वन तथा 24 प्रतिशत भाग बंजर तथा बिना उपयोग का है। अतः हमारे पास काफी मात्रा में प्राकृतिक संसाधन उपलब्ध है जो एक बड़ी जनसंख्या का भरण–पोषण करने के लिए पर्याप्त है।

16.6.3 प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि

आशावादी दृष्टिकोण का मत है कि भारत में प्रति व्यक्ति आय में निरन्तर वृद्धि हो रही है। सरकारी आंकड़ों के अनुसार भारत की प्रति व्यक्ति आय 2022–2023 में 98,374 रूपये है। 2014–15 में भारत की प्रति व्यक्ति आय 72,805 रूपये थी। इसका यह अर्थ है कि प्रति वर्ष भारत की प्रतिवर्ष भारत की प्रति व्यक्ति आय में बढ़ोत्तरी हो रही है। जनाधिक्य के बाद भी भारत प्रगति की ओर अग्रसर है।

16.6.4 जनसंख्या घनत्व कम होना

भारत को जनघनत्व 481 व्यक्ति वर्ग किलोमीटर है। बांग्लादेश, सिंगापुर, साउथ कोरिया आदि देशों को जनघनत्व भारत से बहुत ज्यादा है। ऐसी स्थिति में नियन्त्रित जन्म दर होने की स्थिति में भारत सरलता से अपनी जनसंख्या का भरण–पोषण कर सकता है।

16.6.5 निराशावादी दृष्टिकोण की अतार्किंतता

निराशावादी दृष्टिकोण के अनुसार भारत में केवल जनाधिक्य ही एक मात्र ऐसा कारण है जो देश की प्रगति में बाधक है परन्तु वास्तविकता यह है कि जनाधिक्या के बाद भी भारत एक युवादेश है। यहाँ की ज्यादातर जनसंख्या युवा है। ऐसी स्थिति में जनंसख्या का एक बड़ा भाग कार्यशील है ऐसी स्थिति में भारत बड़ी सरलता से अपने उत्पादन में वृद्धि करके अपनी जनसंख्या का भरण–पोषण कर सकता है।

16.7 सारांश

भारत में जनाधिक्य की समस्या अत्यन्त गम्भीर है। 70 के दशक में प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी के द्वारा पारित आन्तरिक सुरक्षा व्यवस्था अधिनियम (MISA) &1971 के द्वारा एक बार भारत की जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण लाया जा सका था परन्तु उसके पश्चात् भारत की जनसंख्या में निरन्तर वृद्धि होती रही। भारत में जनाधिक्य से सम्बन्धित दो विचारधाराएं प्रचलित है जो इस प्रकार है :

1. निराशावादी दृष्टिकोण
2. आशावादी दृष्टिाकोण

निराशावादी दृष्टिकोण के अनुसार भारत में जनसंख्या वृद्धि का समाज की प्रगति और विकास पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है और यदि नहीं स्थिति रही तो भारत में गरीबी और निधनता बढ़ती जाएगी। इसके ठीक विपरीत भले भारत की जनसंख्या में वृद्धि हो रही है परन्तु ये जनसंख्या युवा है तथा इसके पास भारी मात्रा में संसाधन उपलब्ध है। ऐसी स्थिति में भारत अपनी विकास की गति तीव्र कर सकता है तथा जनाधिक्य उसके लिए कोई बड़ी समस्या नहीं है।

दोनों ही विचार धाराएं आंशिक रूप से रही है तथा इनके मिश्रण से हम भारत में हो रहे जनाधिक्य के प्रतिमान को समझ सकते है।

16.8 संदर्भ–ग्रन्थ

1. Morris, Morris David (January 1980) : The Physical Quality of Life Index (PQLI). Development Digest.
2. Nussbaum, Martha and Sen, Amartya (ed.) (1993) " The Quqlity of Life, Oxford : Clarendon Press.
3. Thompson, Warren S. and David T. Lcwis : Population Problems, New York: Mc Graw Hill Book Co. 1976.
4. डॉ. मिश्रा, जे.पी., जनांकिकी, साहित्य भव पब्लिकेशन्स आगरा।
5. डॉ. बघेल, डी.एस., जनांकिकी, विवेक प्रकाशन, दिल्ली।
6. डॉ. पन्त, जीवन चन्द्र, जनांकिकी, गोयल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ।
7. अशोक कुमार, जनसंख्या, एक समाज वैज्ञानिक अध्ययन, हिन्दी ग्रंथ अकादमी प्रयाग, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ।
8. डॉ. मलैया, के.सी., जनसंख्या शिक्षा, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
9. सिन्हा, बी.सी. एवं पुष्पा सिन्हा (2011), ''जनांकिकी के सिद्धान्त'', मयूर पेपर बैक्स, नई दिल्ली।
10. चौबे, पी.के. (2000), ''भारत में जनसंख्या नीति'', कनिष्ट प्रकाशन, नई दिल्ली।
11. मिश्र, प्रकाश (2012), ''जनांकिकी'', साहित्य भवन पब्लिकेशन, दिल्ली।
12. दत्त, रूद्र एवं के.पी.एम. सुन्दमा (2010), ''भारतीय अर्थव्यवस्था'', एस. चन्द एण्ड

कम्पनी, नई दिल्ली।

13. कुमार, वी. (2007) : जनांकिकी, साहित्य भवन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा.) लि., आगरा।

14. सिन्हा एवं सिन्हा (2005) : जनसंख्या के सिद्धान्त, मयूर पेपरबैक्स, नोएडा।

15. गुप्त, एस.एन. (2009) : जनांकिकी के मूल तत्व, वृंदा पब्लिकेशन्स, प्रा0लि0, दिल्ली।

16.9 बोध के प्रश्न

16.9.1 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. भारत में जनाधिक्य के निराशावादी तथा आशावादी दृष्टिकोण पर विस्तृत निबन्ध लिखिए।

16.9.2 लघु उत्तरीय प्रश्न

1. भारत में जनाधिक्य के निराशावादी दृष्टिकोण पर संक्षिप्त टिप्पणी कीजिए।
2. भारत में जनाधिक्य के आशावादी दृष्टिकोण पर टिप्पणी कीजिए।

16.9.3 वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. निम्नलिखित में से कौन–सा प्राकृतिक संसाधन नहीं है?

   A. वायु B. पूंजी C. कोयला D. सौर ऊर्जा

2. सन् 2023 में भारत की जनंसख्या कितनी है?

   A. 142.57 B. 150.59 C. 125.76 D. 107.9

3. "An essay on the Principal of population" नाम का लेख किसने लिखा?

   A. कार्लमाक्स B. माल्थस C. मैक्स वेबर D. मर्टन

4. ग्लोबल हंगर इण्डेक्स 2023 के अनुसार भारत किस स्थान पर है?

   A. 107 B. 110 C. 130 D. 111

16.10 वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर

प्रश्न 1 – B

प्रश्न 2 – A

प्रश्न 3 – B

प्रश्न 4 – D

16.11 पारिभाषिक शब्दावली

जनाधिक्य : जनाधिक्य ऐसी स्थिति जब मानव जनसंख्या किसी क्षेत्र की परिस्थितिकीय वहन क्षमता से अधिक हो जाए।

नियोजन : वर्तमान परिस्थितियों को ध्यान में रखकर किसी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए भविष्य की रूपरेखा तैयार करना।

संसाधन : एक ऐसा स्रोत जिसका उपयोग मनुष्य अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए करता है।

मृत्युदर : प्रति 1000 जनंसख्या पर एक वर्ष में मरने वाले लोगों की संख्या।

जन्मदर : प्रति 1000 व्यक्तियों में लेने वाले जीवित शिशुओं की संख्या।

इकाई–17: भारत में जनाधिक्य के कारण और भारत में जनाधिक्य के दुष्परिणाम

इकाई की रूपरेखा

17.1 उद्देश्य

17.2 प्रस्तावना

17.3 भारत में जनाधिक्य के कारण

17.3.1 अशिक्षा

17.3.2 परिवार नियोजन के प्रति उदासीनता

17.3.3 अंधविश्वास

17.3.4 मनोरंजन के साधनों की कमी

17.3.5 मत्युदर में गिरावट

17.3.6 शरणार्थियों की समस्या

17.3.7 गर्म जलवायु

17.4 भारत में जनाधिक्य के दुष्परिणाम

17.4.1 बेरोजगारी

17.4.2 गरीबी

17.4.3 प्राकृतिक संसाधनों का ह्रास

17.4.4 पर्यावरण का क्षरण

17.4.5 अर्थव्यवस्था पर विपरीत प्रभाव

17.4.6 स्वास्थ्य पर प्रभाव

17.5 सारांश

17.6 संदर्भ ग्रन्थ

17.7 बोध के प्रश्न

17.7.1 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

17.7.2 लघु उत्तरीय प्रश्न

17.7.3 वस्तुनिष्ठ प्रश्न

17.8 वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर

17.9 पारिभाषिक शब्दावली

17.1 उद्देश्य

उपरोक्त इकाई के अन्तर्गत विद्यार्थी निम्न बिन्दुओं को समझ सकेंगे :

1. भारत में जनसंख्या वृद्धि के मुख्य कारणों को जान सकेंगे।
2. जनसंख्या वृद्धि हेतु उत्तरदायी कारकों को समझ सकेंगे।
3. जनसंख्या वृद्धि के दुष्परिणाम को समझ सकेंगे।

17.2 प्रस्तावना

किसी भी देश की जनसंख्या उसके सामाजिक, आर्थिक और शैक्षणिक विकास में एक महत्वपूर्ण घटक है। 1951 में जहाँ भारत की जनसंख्या 361 मिलियन थी वहीं जनसंख्या 2011 में बढ़कर 1.2 बिलियन से अधिक हो गई। वर्तमान समय में भारत ने जनसंख्या के मामले में चीन को भी पीछे छोड़ दिया है। अब भारत विश्व का सर्वाधिक जनसंख्या वाला देश बन गया है। 1.4 अरब से अधिक लोगों और लगभग एक प्रतिशत की अनुमानित वार्षिक वृद्धि दर के साथ यह एक जटिल समस्या बन गई है। भारत ने सन् 1952 में परिवार नियोजन कार्य शुरू किया और 1976 में पहली बार भारत की राष्ट्रीय जनसंख्या नीति बनाई गई। परिवार नियोजन को अपनाने वाला भारत पहला राष्ट्र था। इस पहल को आगे बढ़ाते हुए 2019 में जनसंख्या नियंत्रण बिल पारित किया गया था जिसके अनुसार प्रत्येक जोड़ा ''टू चाइल्ड'' पॉलिसी को अपनाएगा। यानी कि भारत के प्रत्येक जोड़े की दो से अधिक संताने नहीं होंगी, हालांकि सन् 2022 में इस बिल को वापस ले लिया गया था। इस नीति का उद्देश्य शैक्षणिक लाभ, मुफ्त स्वास्थ्य सेवा, बेहतर रोजगार के अवसर तथा आवास ऋण में छूट देने के माध्यम से इस नीति को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करना था।

भारत अपनी विकास की गति को तीव्र करने के लिए स्वतंत्रता के पश्चात् ही परिवार नियोजन पर बल देने लगा था ताकि समग्र विकास के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए समग्र जनसंख्या सहभागी बन सके यह तभी संभव हो सकता है जब सभी को समान अवसर मिले।

17.3 भारत में जनाधिक्य के कारण

17.3.1 अशिक्षा

भारत में जन अधिकार का पहला और सबसे महत्वपूर्ण कारण है शिक्षा। भारत की जनगणना 2011 के अनुसार अभी भी यहाँ शिक्षित लोगों की संख्या 74.4 प्रतिशत है, यहाँ शिक्षा का अभाव होता है वहाँ पर तार्किक सोच का विकास होना मुश्किल है। आर्थिक सोच न होने के कारण लोगों के बीच यह मानता है कि बच्चे ईश्वर की देन है कुछ समुदाय में यह भी मान्यता है कि निरोध को प्रयोग करना धर्म के खिलाफ है।

17.3.2 परिवार नियोजन के प्रति उदासीनता

आधुनिक भारत में अभी भी यौन शिक्षा या सेक्स एजुकेशन को लेकर विरोधाभास है। सामान्यतः भारत जैसे परम्परागत देश में सेक्स से सम्बन्धित विषयों को Taboo या निषेध माना जाता है फल स्वरूप अज्ञानता तथा उदासीनता के कारण भारतीय परिवार नियोजन साधनों का उपयोग नहीं करते हैं तथा सरकार द्वारा दी जाने वाले सुविधाओं का लाभ नहीं लेते हैं।

17.3.3 अंधविश्वास

भारत की जनगणना 2021 के अनुसार अभी भी भारत की 68.84 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती हैं। इस कारण अभी भी उनके बीच अनेक अंधविश्वास व्याप्त हैं। उनका यह भी मान्यता है कि गर्भनिरोधक का प्रयोग करने या नसबंदी कराने से शारीरिक कमजोरी हो जाती है। ग्रामीण क्षेत्रों में ज्यादातर लोग परिवार नियोजन को नहीं मानते हैं। इस तरह ग्रामीण लोकजन के बीच आधुनिक भार में भी विविध स्तरों पर अंधविश्वास कायम है जिसे प्रचार–प्रसार के माध्यम से समाप्त किया जाता है।

17.3.4 मनोरंजन के साधनों की कमी

स्वस्थ मनोरंजन मनुष्य की एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है किन्तु अभी भी भारत के नगरीय तथा ज्यादातर ग्रामीण क्षेत्रों में मनोरंजन के साधनों का अभाव है। ग्रामीण क्षेत्रों में तथा कुछ नगरीय क्षेत्रों में यौन सम्बन्धों को मनोरंजन का एक साधन माना गया है जिसके फलस्वरूप प्रजनन दर में वृद्धि होती है।

17.3.5 मृत्युदर में गिरावट

स्वतंत्रता के पश्चात् भी भारत ने अपने विकास की गति को तीव्र करने का प्रयास किया तथा अनेक नियोजित प्रयासों द्वारा विकसित राष्ट्र बनने का प्रयत्न किया। विकास तथा प्रगति के इन्हीं प्रयासों के फलस्वरूप भारत में उच्च कोटि की स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध होने लगी जिसके कारण भारत में जीवन प्रत्याशा बढ़ गई तथा मृत्यु दर में कमी आई। जीवन प्रत्याशा का बढ़ना तथा मृत्युदर में कमी आने के कारण भारत में जनसंख्या वृद्धि की गति तीव्र हुई। वर्तमान समय में भारत की मृत्युदर 1901 की दर 42.6 से घटकर 2021 में 8.5 हो गई है।

17.3.6 शरणार्थियों की समस्या

सन् 1971 में हुए भारत–पाकिस्तान युद्ध के पश्चात् ही भारत में शरणार्थियों की समस्या उत्पन्न हो गई थी। समय–समय पर भारत में पड़ोसी देशों जैसे पाकिस्तान, बांग्लादेश, नेपाल, श्रीलंका से आते रहे हैं और आज भी लोग पुनर्वास के द्वारा भारत में आ रहे हैं जिससे भारत की जनसंख्या में वृद्धि होती है। कुछ शरणार्थी भारत में अवैध रूप से प्रवेश करते हैं तथा कुछ शरणार्थियों को भारत सरकार पुनर्वास की सुविधा उपलब्ध कराती है।

17.3.7 गर्म जलवायु

भारत में जन अधिकार का अन्य कारण यहाँ कि गर्म जलवायु भी है। गर्म जलवायु के कारण कम उम्र में ही परिपक्वता आ जाती है। जिससे कम उम्र में ही भारतीय स्त्रियों में प्रजनन की क्षमता आ जाती है, और जनसंख्या में वृद्धि होती है।

जनसंख्या वृद्धि के कारण भारत में रहकर काम करने की इच्छा रखने वालों की एक बड़ी भीड़ खड़ी हो गई है कि जनसंख्या का वह युवा भाग जो कार्य करने की क्षमता रखता है तथा कार्य करने को उन्मुख भी है, उनके लिये रोजगार उपलब्ध कराना एक बड़ी चुनौती है।

17.4 भारत में जनाधिक्य के दुष्परिणाम

भारत में जनाधिक्य के निम्नलिखित दुष्परिणाम है :

17.4.1 बेरोजगारी

जनसंख्या वृद्धि के कारण भारत में रहकर काम करने वालों की इच्छा रखने वालों की

एक बड़ी भीड़ खड़ी हो गई है कि जनसंख्या का वह युवा भाग जो कार्य करने की क्षमता रखता है तथा कार्य करने को उन्मुख भी है उनके लिए रोजगार उपलब्ध कराना एक बड़ी चुनौती है, क्योंकि जनसंख्या वृद्धि बड़ी तेजी से हुई है तथा भारत में रोजगार के अवसर सीमित है।

17.4.2 गरीबी

व्यक्ति की पाँच मूलभूत आवश्यकता है भोजन, वस्त्र, मकान, स्वास्थ्य और शिक्षा है। इन पाँच मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति न होने की स्थिति को हम गरीबी या निर्धनता कहते हैं। भारत की जनसंख्या विश्व में सर्वाधिक है तथा यहाँ संसाधनों की उपलब्धता सीमित है। ऐसी स्थिति में इतनी विशाल जनसंख्या को आवश्यकताओं की पूर्ति कर पाना अत्यन्त कठिन है। यही कारण है कि अनेक सरकारी प्रयासों के बाद भी भारत में निर्धनता एक बहुत बड़ी समस्या है।

17.4.3 प्राकृतिक संसाधनों का ह्रास

प्राकृतिक संसाधनों पर जनसंख्या वृद्धि का प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है, पृथ्वी सीमित मात्रा में पानी और खाद्य पदार्थों का उत्पादन कर सकती है, जो वर्तमान जरूरतों के हिसाब से कम है। पिछले 50 वर्षों में देखी गई अधिकांश पर्यावरणीय क्षति पृथ्वी पर लोगों की बढ़ती जनसंख्या के कारण ही है। इसमें वनों का कटाव एवं वन्य जीवों का विलुप्ति कारण आदि शामिल है।

17.4.4 पर्यावरण का क्षरण

पर्यावरण असंतुलन का सबसे बड़ा कारण जनसंख्या का अनियंत्रित बढ़ाना है, जिसके कारण आवासीय क्षेत्रों को बढ़ाने के लिए जंगलों, पर्वतीय क्षेत्रों तथा समूह स्थलों को भी छोंटा किया जा रहा है, इस कारण प्रकृति का सन्तुलन बिगड़ रहा हैं और प्राकृतिक आपदाएं बढ़ती जा रही है।

17.4.5 अर्थव्यवस्था पर विपरीत प्रभाव

जनसंख्या वृद्धि के कारण अर्थव्यवस्था पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। बेरोजगारी पर्यावरण का अवनयन, आवास की कमी, निम्न जीवन स्तर जैसी समस्याएं उत्पन्न हो जाती है। भारत में गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले लोगों की संख्या काफी अधिक है, अर्थव्यवस्था पर विपरीत प्रभाव के कारण अपराध, भ्रष्टाचार, कालाबाजारी और तस्करी जैसे समस्याएं बढ़ जाती है।

17.4.6 स्वास्थ्य पर प्रभाव

किसी देश की बढ़ती जनसंख्या का प्रभाव उस देश के निवासियों के जीवन स्तर पर पड़ता है। भारत में संतुलित पोषण की भारी कमी है। जनसंख्या आधिक्य के कारण जीवन की गुणवत्ता निम्न हो जाती है, जिसके परिणामस्वरूप स्वास्थ्य सम्बन्धी अनेक विकास उत्पन्न हो जाते हैं। अपर्याप्त स्वास्थ्य सुविधाएं तथा वित्तीय संसाधनों की कमी स्थिति को और बद्तर बना देते हैं।

17.5 सारांश

बढ़ती जनसंख्या न सिर्फ भारत बल्कि सम्पूर्ण विश्व के लिए एक गम्भीर और ज्वलंत समस्या बनकर उभरी है। विकसित देशों के साथ–साथ विकासशील और अविकसित राष्ट्र भी

इस समस्या का समाधान चाहते हैं।

जनसंख्या में होने वाले परिवर्तन की तीन प्रमुख प्रक्रियाएं हैं– जन्मदर, मृत्युदर एवं प्रवास भारत में 1980 तक उच्चदर तथा मृत्युदर में निरन्तर कमी आने के कारण जनसंख्या अत्यधिक बढ़ गई। जनसंख्या वृद्धि का तीसरा महत्वपूर्ण घटक है। प्रवास, दूसरे देशों से होने वाला प्रवास भी काफी हद तक जनसंख्या वृद्धि को प्रभावित करता है। इसके अलावा परिवार नियोजन के प्रति उदासीनता, सरकारी नीतियों का अप्रभावी होना भी भारत में जनसंख्या वृद्धि होने का प्रमुख कारण है। भारतीय आज भी भाग्यवादी है वह जीवन के महत्वपूर्ण फैसलों को भाग्य पर छोड़ देते हैं, जिसके कारण अतार्किक रूप से जनसंख्या वृद्धि होती रहती है। यही कारण है कि स्वतंत्रता के पश्चात् तुरन्त ही भारत में अपने नीति निर्माण में जनसंख्या को एक महत्वपूर्ण बिन्दु माना। परन्तु उसके बाद भी आज तक वह जनसंख्या को नियंत्रित करने में असफल रहा। अपेक्षित समय से पूर्व ही भारत ने चीन को जनसंख्या में पीछे छोड़ते हुए विश्व में प्रथम स्थान प्राप्त कर लिया है।

किसी भी राष्ट्र के संसाधनों की एक सीमा होती है। भारत भी विश्व की सर्वाधिक जनसंख्या वाला राष्ट्र बन चुका है, परन्तु उसके पास इतनी विशाल जनसंख्या का भरण पोषण कर पाने की क्षमता नहीं है। अत्यधिक जनसंख्या वृद्धि ने भारत के आर्थिक तथा सामाजिक विकास पर विपरीत प्रभाव डाला है। भारत में गरीबी और बेरोजगारी की समस्या बढ़ गई है तथा इतनी विशाल जनसंख्या के निवास की व्यवस्था करने के लिए व्यापक स्तर पर वनों की कटाई की गई है, जिसका पर्यावरण पर विपरीत प्रभाव पड़ा है।

भारत के विकास की सबसे बड़ी बाधा तीव्र जनसंख्या वृद्धि होती ही है। इसे नियंत्रित करने के लिए व्यापक स्तर पर सरकारी नीतियों तथा जन जागरूकता अभियान कार्यक्रम लागू करने की आवश्यकता है।

17.6 संदर्भ–ग्रन्थ

1. Morris, Morris David (January 1980) : The Physical Quality of Life Index (PQLI). Development Digest.
2. Nussbaum, Martha and Sen, Amartya (ed.) (1993) " The Quqlity of Life, Oxford : Clarendon Press.
3. Thompson, Warren S. and David T. Lcwis : Population Problems, New York: Mc Graw Hill Book Co. 1976.
4. डॉ. मिश्रा, जे.पी., जनांकिकी, साहित्य भव पब्लिकेशन्स आगरा।
5. डॉ. बघेल, डी.एस., जनांकिकी, विवेक प्रकाशन, दिल्ली।
6. डॉ. पन्त, जीवन चन्द्र, जनांकिकी, गोयल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ।
7. अशोक कुमार, जनसंख्या, एक समाज वैज्ञानिक अध्ययन, हिन्दी ग्रंथ अकादमी प्रयाग, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ।
8. डॉ. मलैया, के.सी., जनसंख्या शिक्षा, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
9. सिन्हा, बी.सी. एवं पुष्पा सिन्हा (2011), ''जनांकिकी के सिद्धान्त'', मयूर पेपर बैक्स, नई दिल्ली।

10. चौबे, पी.के. (2000), ''भारत में जनसंख्या नीति'', कनिष्ट प्रकाशन, नई दिल्ली।

11. मिश्र, प्रकाश (2012), ''जनांकिकी'', साहित्य भवन पब्लिकेशन, दिल्ली।

12. दत्त, रूद्र एवं के.पी.एम. सुन्दमा (2010), ''भारतीय अर्थव्यवस्था'', एस. चन्द एण्ड कम्पनी, नई दिल्ली।

13. कुमार, वी. (2007) : जनांकिकी, साहित्य भवन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा.) लि., आगरा।

14. सिन्हा एवं सिन्हा (2005) : जनसंख्या के सिद्धान्त, मयूर पेपरबैक्स, नोएडा।

15. गुप्त, एस.एन. (2009) : जनांकिकी के मूल तत्व, वृंदा पब्लिकेशन्स, प्रा.लि., दिल्ली।

17.7 बोध के प्रश्न

17.7.1 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. भारत में जनाधिक्य के कारण तथा दुष्परिणाम पर निबन्ध लिखिए।

17.7.2 लघु उत्तरीय प्रश्न

1. भारत में जनाधिक्य के कारणों पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
2. भारत में जनाधिक्य के दुष्परिणामों पर संक्षिप्त प्रकाश डालिए।

17.7.3 वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. जनसंख्या की दृष्टि से भारत विश्व में किस स्थान पर है?

   A. प्रथम B. द्वितीय C. तृतीय D. चतुर्थ

2. मूलभूत आवश्यकताओं के क्या नहीं सम्मिलित है?

   A. भोजन B. स्वास्थ्य C. शिक्षा D. रोजगार

3. क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत विश्व में कौन से स्थान पर है?

   A. पहले B. चौथे C. सातवें D. नौंवे

4. जनसंख्या वृद्धि के तीन प्रमुख कारक क्या है?

   A. जन्मदर–मृत्युदर–प्रवास B. जन्मदर–मृत्युदर–शरणार्थी

   C. जन्मदर–मृत्युदर–रोजगार D. जन्मदर–मृत्युदर– जलवायु

17.8 वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर

प्रश्न 1 – A

प्रश्न 2 – D

प्रश्न 3 – C

प्रश्न 4 – A

17.9 पारिभाषिक शब्दावली

जनाधिक्य : ऐसी स्थिति जब मानव जनसंख्या किसी क्षेत्र की पारिस्थितिकीय वहन क्षमता से अधिक हो जाए।

प्रवास : एक स्थान से दूसरे स्थान पर चले जाना।

मृत्युदर : प्रति 1000 जनसंख्या पर 1 वर्ष में मरने वाले लोगों की संख्या।

जन्मदर : प्रति 1000 व्यक्तियों में जन्म लेने वाले जीवित शिशुओं की संख्या।

पर्यावरण : वह परिवेश अथवा परिस्थितियों जिसमें एक व्यक्ति अथवा वस्तु रहती है और अपना विशेष आचरण, स्वभाव विकसित करती है, इसके अन्तर्गत भौतिक तथा सांस्कृतिक दोनों तत्व आते हैं।

शरणार्थी : व्यक्ति विशेष या उनका समूह जो किसी कारणवश अपने देश या निवास स्थान को छोड़कर अन्यत्र शरणागत हो जाता है।

इकाई–18 : जनसंख्या नीति की परिभाषा और उद्देश्य, जनसंख्या नीति का सकारात्मक और नकारात्मक पहलू

इकाई की रूपरेखा

18.1 उद्देश्य

18.2 प्रस्तावना

18.3 जनसंख्या नीति का अर्थ

18.4 जनसंख्या नीति की परिभाषा

18.5 जनसंख्या नीति के उद्देश्य

18.6 जनसंख्या नीति के तत्व

18.7 जनसंख्या नीति के भाग

18.8 जनसंख्या नीति को प्रभावित करने वाले मुख्य कारक

18.9 जनसंख्या नीति की आवश्यकता

18.10 जनसंख्या नीति का सकारात्मक पहलू

18.11 जनसंख्या नीति का नकारात्मक पहलू

18.12 सारांश

18.13 संदर्भ–ग्रन्थ

18.14 बोध के प्रश्न

18.14.1 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

18.14.2 लघु उत्तरीय प्रश्न

18.14.3 वस्तुनिष्ठ प्रश्न

18.15 वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर

18.16 पारिभाषिक शब्दावली

18.1 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई के उद्देश्य निम्नलिखित हैं :

1. जनसंख्या नीति के अर्थ एवं परिभाषा की विवेचना करना।
2. जनसंख्या नीति के उद्देश्य एवं इसके तत्वों की विवेचना करना।
3. जनसंख्या नीति को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों को जानना।
4. जनसंख्या नीति की आवश्यकता संबंधी तथ्यों को प्रस्तुत करना।
5. जनसंख्या नीति के सकारात्मक एवं नकारात्मक पहलुओं की विवेचना करना।

18.2 प्रस्तावना

आधुनिक समाज में तीव्र गति से शिक्षा, संचार, प्रौद्योगिकी आदि का प्रसार हो रहा है। जिससे इसमें परम्परागत समाज की तुलना में तीव्र गति से परिवर्तन हो रहा है। आज विश्व के सभी राष्ट्रों में नियोजन की जितनी भी योजनाओं का निर्माण किया जा रहा है उनका मुख्य उद्देश्य आर्थिक विकास होता है। इसका मूल कारण यह कहा जा सकता है कि आर्थिक विकास वर्तमान समय की आवश्यकता है। किसी भी देश का आर्थिक विकास बहुत हद तक उस देश के जनसंख्यात्मक विशेषताओं पर आधारित होता है। जहाँ जनसंख्या देश के आर्थिक विकास में सहायक होती है। वही बाधक भी होती है। किसी भी देश का आर्थिक विकास उस देश की जनसंख्या की प्रकृति आकार वितरण एवं संगठन पर निर्भर करता है। इसलिए यह आवश्यक हो जाता है कि देश में एक उपयुक्त जनसंख्या नीति का निर्माण कर लिया जाए।

जनसंख्या संबंधी नीति का तात्पर्य किसी देश की सरकार की उस मान्यता से है जिसके अनुसार वह जनसंख्या की वृद्धि अथवा निरोध को प्रोत्साहित अथवा हतोत्साहित करती है। यह नीति सभी राज्यों के लिए एक समान न होकर विभिन्न देशों की परिस्थितियों पर निर्भर करती है। इसका कारण स्पष्ट है कि किन्ही देशों में प्राकृतिक संसाधनों की प्रचुरता रहती है तथा उनका प्राविधिक स्तर भी पर्याप्त मात्रा में ऊँचा रहता है। अतएव कभी–कभी इन देशों में प्राकृतिक साधनों के समुचित विदोहन के लिए श्रम–शक्ति का अभाव जान पड़ने लगता है। फलस्वरूप यहाँ पर जनसंख्या की वृद्धि को प्रोत्साहित करना आवश्यक हो जाता है। सोवियत संघ तथा आस्ट्रेलिया आदि देशों में बहुत कुछ इसी प्रकार की स्थिति पायी जाती है। इसके विपरीत भारत तथा चीन जैसे अल्पविकसित देशों में प्राकृतिक साधनों की प्रचुरता होते हुए भी समुचित औद्योगिक विकास के अभाव में इन देशों की जनसंख्या का एक बहुत बड़ा भाग बेकारी व अर्द्ध–बेकारी की स्थिति में पड़ा रहता है। इन देशों में तीव्र गति से बढ़ती हुए जनसंख्या एक गम्भीर समस्या के रूप में उपस्थित होती है, अतएव इन देशों में जनसंख्या–संबंधी नीति का प्रधान उद्देश्य तीव्र गति से बढ़ती हुई जनसंख्या का नियंत्रण होना है।[1]

18.3 जनसंख्या नीति का अर्थ

जनसंख्या नीति का अर्थ किसी देश की सरकार की इस नीति से है जिसके द्वारा सरकार जनसंख्या वृद्धि एवं नियंत्रण को निर्धारित करती है। संकीर्ण रूप में जनसंख्या नीति का अर्थ '' जनसंख्या की विशेषताओं या आकार संरचना और वितरण को प्रभावित करने का प्रयत्न है''। वृहत रूप में इसका अर्थ'' आर्थिक और सामाजिक दशाओं को नियमित करने के प्रयत्न जिनसे जनांकिकीय परिणाम संभावित हो'' है। नोर्टमैन (1975) ने कहा कि उक्त संकीर्ण अर्थ उस 'स्पष्ट नीति' (explicit policy) से है जो जनसंख्या की विशषताओं के प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है और विस्तृत अर्थ उपलक्षित नीति (Implicit Policy) से है जो इन विशेषताओं के परोक्ष रूप से और कभी–कभी बिना बाह्य (explicit) इरादे को प्रभावित करती है।[2]

जनसंख्या नीति से आशय उस सरकारी मान्यता से है जिसके अनुसार वह जनसंख्या निरोध को प्रोत्साहित करती है। जहाँ जनसंख्या की अधिकता की समस्या होती है वहाँ जनसंख्या नीति का स्पष्ट आधार जन्म–दर पर नियंत्रण संबंधी उपाय लाने से है। जनसंख्या नीति का प्रयोग जनसंख्या नियंत्रण एवं समस्त आर्थिक नीतियों में किया जाता है।[3]

जनसंख्या नीति दोनों ही प्रकार की हो सकती है अर्थात ऐसी नीति जिससे जनसंख्या का नियंत्रण हो तथा एक ऐसी नीति जिससे जनसंख्या वृद्धि सम्भव हो। विश्व इतिहास में अनेक ऐसे उदाहरण हैं जिनके द्वारा जनसंख्या वृद्धि की नीतियों को प्रोत्साहित किया गया। हिटलर ने विशुद्ध आर्य जाति की वृद्धि के लिए 'प्रेम–शिविरों' (Love-camps) की अवधारणा को प्रवृत्त किया। रूस ने अपने देश में विभिन्न समयों में विभिन्न प्रकार की जनसंख्या नीतियों का सफलतापूर्वक संचालन कर यह सिद्ध कर दिया कि राष्ट्र के हित में मानव प्रजनन व्यवहार को भी नियंत्रण में किया जा सकता है।

आज विश्व के अनेक देशों के सम्मुख तीव्र गति से बढ़ती हुई जनसंख्या की समस्या है अतः अधिकांश देशों की जनसंख्या नीतियाँ जनसंख्या नियंत्रण से सम्बन्धित है।[4]

18.4 जनसंख्या नीति की परिभाषा

जनसंख्या नीति को विभिन्न विद्वानों ने परिभाषित किया है। इन विद्वानों द्वारा दी गयी परिभाषाएँ निम्नलिखित है :

जनसंख्या नीति को परिभाषित करते हुए मिर्डल (Myrdal) ने 'National and family' में लिखा है, ''जनसंख्या नीति में वास्तव में मोटे रूप से सम्पूर्ण समाज की नीति होती है। अगर हम समाज के व्यावहारिक पहलुओं पर ध्यान नहीं देंगे तो जनसंख्या नीति का क्षेत्र अनावश्यक रूप से संकुचित हो जायेगा। जनसंख्या नीति को अन्य सामाजिक नीतियों पर प्रभाव डालना चाहिए।''

यह परिभाषा जनसंख्या नीति के व्यापक दृष्टिकोण को स्पष्ट करती है इसका कारण यह है कि इस परिभाषा में सम्पूर्ण सामाजिक एवं आर्थिक नीतियों का समावेश जनसंख्या नीति के अन्तर्गत किया गया हैं इस दृष्टिकोण से इसके अन्तर्गत शामिल नहीं किया जा सकता है। इस तरह यह पता चलता है कि व्यवहार में जनसंख्या नीति के संकुचित अर्थ को ही ग्रहण किया जाता है।

संयुक्त राष्ट्र संघ के जनसंख्या आयोग के अनुसार– ''जनसंख्या नीति के अन्तर्गत वे सभी कार्यक्रम एवं कार्यवाहियाँ शामिल की जाती हैं जो जनसंख्या के आकार, उसके वितरण एवं विशेषताओं में परिवर्तन लाकर आर्थिक, समाजिक, जनांकिकी, राजनीतिक अथवा अन्य किसी सामूहिक उद्देश्य की प्राप्ति के लिए प्रयुक्त की जाती है।''

जे.जे. स्पेन्गलर ने इसके उद्देश्यों को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि– ''राष्ट्रीय जनसंख्या नीति के उद्देश्यों के अन्तर्गत हम राज्य को उन समस्त नीतियों में शामिल कर लें जिनके अंतर्गत जनसंख्या की मात्रा व किस्म या भौगोलिक वितरण में परिवर्तन लाया जा सकता है।''

एस. चन्द्रशेखर के अनुसार– ''जनंसख्या नीति राष्ट्रीय सरकार के द्वारा देश की आबादी के आकार और संगठन में किसी सरकारी कानून या निर्देशन के द्वारा परिवर्तन लाने का जानबूझकर किया गया प्रयत्न है।''

तेराव (Terao) के अनुसार– ''जनसंख्या की समस्या के हल हेतु जो उपाय किये जाते हैं, उन्हें ही जनसंख्या नीति के अंतर्गत लिया जा सकता है। इस नीति में मुख्यतः जनसंख्या वृद्धि अथवा निरोध दोनों ही सम्मिलित किये जाते हैं।''

पी.सी. जैन के अनुसार– ''जनसंख्या नीति केन्द्र अथवा राज्य सरकार द्वारा विचारपूर्वक बनायी गयी और क्रियान्वित की गयी नीति होती है, जिसका प्रमुख उद्देश्य प्रजनन दर को घटा कर जनसंख्या वृद्धि की दर को घटाना है।''

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि जनसंख्या नीति का प्रत्यक्ष संबंध जनसंख्या में वृद्धि या कमी करने से सम्बन्धित नीतियों से है। वास्तव में वह नीति या कार्यक्रम जिसके माध्यम से जनसंख्या को अर्थव्यवस्था एवं आर्थिक विकास के अनुरूप लाने का प्रयत्न किया जाता है। जनसंख्या नीति के अन्तर्गत आता है। इसी तरह जब अर्थव्यवस्था को जनसंख्या के अनुरूप लाने का प्रयत्न किया जाता है तो वह आर्थिक नीति के अन्तर्गत आता है। हालांकि दोनों पक्षों में घनिष्टता है। लेकिन आर्थिक नीति को जनसंख्या नीति में शामिल करना उचित एवं व्यावहारिक प्रतीत नहीं होता है।[5]

18.5 जनसंख्या नीति के उद्देश्य

जनसंख्या नीति का पहला उद्देश्य जन्म–दर में न्यूनता लाना कहा जा सकता है। आर्थिक योजनाओं के विकास के लिए जन्म दर में नियंत्रण पाना अत्यन्त आवश्यक प्रतीत होता है। अन्यथा सभी आर्थिक नीतियों का नियोजन संभव नहीं होता है।

जनसंख्या नीति का दूसरा उद्देश्य जनसंख्या के स्तर को सुधारना कहा जा सकता है। इस नीति का उद्देश्य जनसंख्या के जन्म दर को कम करके जनसंख्या के जीवन स्तर को सुधारना होता है। जनसंख्या के स्तर में सुधार करना राष्ट्रहित में अति आवश्यक होता है।

जनसंख्या नीति का तीसरा उद्देश्य आर्थिक विकास की गति को तीव्र करना कहा जा सकता है। अगर विकसित देशों के संदर्भ से देखा जाय तो यह पता चलता है कि वहाँ आर्थिक विकास होने से जन्म दर एवं मृत्यु दर दोनों ही कम हो गये हैं। इस तरह यह कहा जा सकता है कि आर्थिक विकास की गति तीव्र करना जनसंख्या नीति का उद्देश्य होता है।

जनसंख्या नीति का चौथा उद्देश्य मृत्यु दर में न्यूनता लाना कहा जा सकता है। जनसंख्या नीति के माध्यम से जिस तरह जन्म दर कम किया जाता है उसी तरह मृत्यु दर को भी कम किया जाता है।

सामान्य रूप से कहा जा सकता है कि जनसंख्या का प्रमुख एवं प्रत्यक्ष उद्देश्य देश की जनसंख्या संबंधी समस्याओं का समाधान करना होता है। विस्तृत अर्थों में जनसंख्या का गुणात्मक एवं परिमाणात्मक नियमन एवं सु–नियोजन ही जनसंख्या नीति का वास्तविक लक्ष्य

है। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए जनसंख्या नीति के अन्तर्गत निम्नलिखित उद्देश्यों की पूर्ति का प्रयत्न किया जाता है।–

1. जनसंख्या की किस्म में सुधार
2. जनसंख्या का परिमाणात्मक नियमन अर्थात जन्म दर एवं मृत्यु दर में समुचित कमी।
3. जनसंख्या का संतुलित प्रतिस्थापन एवं नियोजित परिवार।

विभिन्न विद्वानों ने भी जनसंख्या नीति के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला है। इसमें पाल मिडॉज (Paul Meadows) एवं फ्रैंक डब्ल्यू नोटेस्टीन (Frank W. Notestein) आदि प्रमुख हैं। पाल मिडॉज ने जनसंख्या नीति के उद्देश्यों को निम्नलिखित बिन्दुओं के माध्यम से स्पष्ट किया है।

1. जनसंख्या की संरचना में सुधार
2. जनसंख्या वृद्धि का नियमन
3. जन्म व मृत्यु दरों पर नियंत्रण
4. जनसंख्या के भौगोलिक वितरण में संतुलन
5. आर्थिक विकास एवं जनसंख्या का नियमन

कम विकसित देशों के सम्बन्ध में जनसंख्या नीति के लक्ष्यों के सम्बन्ध में फ्रैंक डब्लू नोटेस्टीन ने कहा है कि इन देशों की जनसंख्या नीति का मुख्य उद्देश्य मृत्यु एवं जन्म दर से होने वाली गिरावट के मध्य समयान्तराल को कम करना है। उनका सुझाव है कि जनसंख्या को कम करने के लिए जहाँ जनसंख्या में नवीनतम आशा एवं उत्साह का संचार कर परिवार को सीमित रखने का प्रलोभन देना होगा। वहीं इसके लिए आवश्यक सामाजिक एवं आर्थिक वातावरण का भी समुचित निर्माण आवश्यक होगा।[6]

18.6 जनसंख्या नीति के तत्व

जनसंख्या नीति के अन्तर्गत जनसंख्या से सम्बन्धित तत्वों का समावेश किया जाता है–

1. जनसंख्या के आधार एवं गठन से सम्बन्धित नीति।
2. जन्म दर एवं मृत्यु दर बढ़ाने या घटाने से सम्बन्धित नीति।
3. जनसंख्या के वितरण को संतुलित करने की नीति।
4. जनसंख्या को अनुकूलतम स्तर पर बनाएँ रखना।
5. जनसंख्या की किस्म, शिक्षा, आहार, आवास आदि गुणात्मक एवं संरचनात्मक सुधार सम्बन्धी नीति।

जनसंख्या के समस्त पहलुओं का नियोजन एवं जनसंख्या पर नियंत्रण ही जनसंख्या नीति के दो आधार स्तम्भ कहे जा सकते हैं। जनसंख्या की समस्या को हल करने के लिए जो भी सकारात्मक कदम उठाये जाते हैं उन सभी का समावेश जनसंख्या नीति के अन्तर्गत किया जाता है। इनमें मुख्य रूप से जनसंख्या को सीमित करने एवं वृद्धि करने से सम्बन्धित नीतियों तथा कार्यक्रमों को शामिल किया जाता है।[7]

18.7 जनसंख्या नीति के भाग

जनसंख्या नीति के अल्पकालिक एवं दीर्घकालिक लक्ष्यों के आधार पर उसे दो भागों में विभाजित किया जा सकता है जो निम्नलिखित हैं–

1. अल्पकालिक जनसंख्या नीति
2. दीर्घकालिक जनसंख्या नीति

जहाँ अल्पकालिक पहलू के अन्तर्गत जनसंख्या से सम्बन्धित मौजूदा समस्याओं एवं अल्पकालीन कार्यक्रमों में शामिल किया जाता है। वहीं दीर्घकालिक पहलू के अन्तर्गत जनसंख्या की दीर्घकालिक एवं भावी समस्याओं एवं उनसे सम्बन्धित कार्यक्रमों को शामिल किया जाता है। एक उपयुक्त जनसंख्या नीति में दोनों पक्षों को संतुलित रूप में महत्व दिया जाता है। जनसंख्या नीति स्पष्ट (Explicit) एवं अस्पष्ट (Implicit) दोनों हो सकती है। जहाँ स्पष्ट या व्यक्त नीति के तहत जनसंख्या की समस्याओं को जनसंख्या की एक सुस्पष्ट एवं प्रत्यक्ष नीति अपनाकर सुलझाया जाता है। वहीं अव्यक्त नीति के अन्तर्गत जनसंख्या समस्या का समाधान किसी प्रत्यक्ष नीति के द्वारा न करके देश की सामाजिक आर्थिक एवं राजनीतिक नीतियों के अन्तर्गत किया जाता है।[8]

18.8 जनसंख्या नीति को प्रभावित करने वाले मुख्य कारक

जनसंख्या नीति को प्रभावित करने वाले कुछ प्रमुख कारक निम्नलिखित है–

1. जन्म दर (Birth Rate)
2. मृत्यु दर (Death Rate)
3. स्थानान्तरण (Migration)

(A) जन्म दर : जन्म दर या प्रजनन को प्रभावित करने वाली दो नीतियाँ होती हैं जो निम्नलिखित हैं :

1. सकारात्मक नीति (Prenatalist Policy)
2. नकरात्मक नीति (Antinatalist Policy)

सकारात्मक नीति वह नीति है जो जन्म दर वृद्धि को प्रोत्साहित करती है। समाज के अस्तित्व को बढ़ावा देने के लिए जनवृद्धि को बढ़ावा दिया जाता है। इस नीति को स्वीडन में अपनाया गया है। वहाँ प्रथम बच्चे के जन्म के समय दम्पत्ति को भत्ता दिया जाता है। पूरक मदद की जाती है। मातृ एवं बाल कल्याण केन्द्र खोले जाते है। विवाह के लिए ऋण दिये जाते हैं। निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था की जाती है। ईधन की सुविधा दी जाती है।

गृहकार्य के लिए सेवक दिये जाते है, माता एवं शिशु को निःशुल्क प्रवास की सुविधा दी जाती है तथा बच्चे वाले दम्पत्ति के लिए सरकारी टैक्स माफ कर दिये जाते हैं। इसी तरह की जनसंख्या को प्रोत्साहित करने वाली प्रवृत्तियाँ जर्मनी, एशिया एवं जापान आदि विकसित देशों में पायी जाती हैं। ईजराइल में जनसंख्या वृद्धि को प्रोत्साहन देने के लिए वृहत परिवारों को सरकार आर्थिक सहायता देती है। उसने गर्भपात रोकने के लिए कठोर नियम बनाएँ हैं।

नकारात्मक नीति को उन देशों द्वारा प्रोत्साहन दिया जाता है जो अपनी जनसंख्या को रोकने के पक्षधर होते हैं। यह दो प्रकार से होता है :

1. प्रत्यक्ष नीति

2. अप्रत्यक्ष नीति

प्रत्यक्ष नीति में गर्भ निरोधक साधन, अनिवार्य बंध्यीकरण, गर्भपात का नियम एवं विवाह की आयु को बढ़ाना आदि का समावेश किया जाता है।

अप्रत्यक्ष नीति में शीघ्र एवं भविष्य के लिए जन्म दर को न्यून बनाने के उपायों का समावेश होता है। स्त्री शिक्षा, स्त्रियों के रोजगार, जनसंख्या शिक्षण, गर्भवती स्त्रियों के लिए स्वास्थ्य एवं चिकित्सा आदि का आयोजन, निरोधक साधनों को अपनाकर एवं ग्रामीण क्षेत्रों में लघु उद्योगों को प्रोत्साहित करके जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित किया जाता है।

(B) मृत्यु दर : जनसंख्या नीति को प्रभावित करने वाला दूसरा कारक मृत्यु दर कहा जा सकता है। मृत्यु दर से सम्बन्ध रखने वाली नीति का हमेशा यह उद्देश्य होता है कि मृत्यु दर में कमी हो। द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात अनेक संक्रामक रोगों ने जन स्वास्थ्य को बुरी तरह प्रभावित किया था। इसमें मलेरिया, हैजा, प्लेग एवं इन्फलुएंजा आदि मुख्य हैं जिन्होंने सामान्य स्वास्थ्य को तहस–नहस करके रख दिया था। इन मानवघाती समस्याओं के निवारण हेतु विश्व के सभी देशों ने कदम उठाये। 1974 में बुखारेस्ट में एक कान्फ्रेस का आयोजन किया गया एवं इसमें यह निश्चित किया गया कि 1985 तक जन्म के समय व्यक्ति की प्रत्याशित आयु 50 वर्ष हो एवं शिशु मृत्यु दर 120 प्रति हजार से भी कम हो।

(C) स्थानान्तरण : जनसंख्या नीति को प्रभावित करने वाला तीसरा कारक स्थानान्तरण कहा जा सकता है। स्थानान्तरण नीतियों का संबंध दो प्रकार के स्थानान्तरण से है जो क्रमशः आन्तरिक स्थानान्तरण एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्थानान्तरण है। आन्तरिक स्थानान्तरण में किसी भी भौगोलिक एवं राजनीतिक सीमा को पार किया जाता है चाहे वह जिले की ही हो। साथ ही यह स्थानान्तरण स्थायी होना चाहिए। यात्रा एवं शिक्षा प्राप्त करने के उद्देश्य से किया गया थोड़े समय का स्थानान्तरण प्रवास नहीं कहा जायेगा।

आन्तरिक प्रवास का मुख्य कारण सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक हो सकता है। खासतौर पर रोजगार के अवसरों की खोज में ग्रामीण लोग नगर की ओर प्रवासी बने हैं। विवाह के पश्चात अधिकांश स्त्रियाँ प्रवासी होती है यू.एन.ओ. (UNO) की रिपोर्ट के अनुसार विकसित देशों में महानगरीकरण को रोकने या नियंत्रित करने के लिए अन्तर्देशीय स्थानान्तरण की कोई नीति नहीं बनायी गयी है। अविकसित या विकासशील देशों में भी ग्रामीण क्षेत्रों से नगरों की ओर तेजी से जाने वाली जनसंख्या पर कोई रोकथाम एवं नीति की व्यवस्था नहीं है। विकसित एवं विकासशील देशों में आन्तरिक प्रवास की नीतियाँ एक जैसी हैं अन्तर्राष्ट्रीय स्थानान्तरण या देशान्तरण पर विकसित देशों में अनेक कड़े–प्रतिबन्ध की नीतियाँ अपनायी गयी हैं। आज कनाडा, यू.एस.ए. जापान, जर्मनी एवं कुछ एक मध्यपूर्वीय देशों में विदेशियों के प्रवेश पर कड़े प्रतिबन्ध है। अनेक अधिनियमों के द्वारा बाहर से आने वालों को निरूत्साहित किया जाता है। भारत में प्रवेश पर भी अनेक प्रतिबन्ध हैं। साथ ही ब्रेन ड्रेन अर्थात उच्च बौद्धिक क्षमता रखने वाले लोगों पर, यहाँ से दूसरे देशों के पलायन करने पर प्रतिबन्ध लगाए जा रहे हैं।[9]

18.9 जनसंख्या नीति की आवश्यकता

विश्व के अधिकांश देशों में आज जनसंख्या नीति की आवश्यकता को महसूस किया जा रहा है। इसे वर्तमान समय की सबसे बड़ी आवश्यकता कहा जा रहा है। दरअसल जनसंख्या वृद्धि की समस्या से आर्थिक विकास के मार्ग में अवरोध उत्पन्न होते हैं। इससे किसी भी राष्ट्र

का भविष्य अन्धकारमय हो जाता है। विभिन्न देशों में बेरोजगारी, निर्धनता, खाद्यान्न पदार्थों का अभाव, निम्न जीवन स्तर, उपभोक्ताओं में वृद्धि पूँजी का अभाव एवं विकास की समस्या भी उत्पन्न हो जाए तो उस देश का भविष्य अन्धकारमय हो जायेगा। इन देशों में सार्वजनिक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सुविधाओं में वृद्धि से मृत्यु दर में कमी आयी है लेकिन जन्मदर में उस अनुपात में कमी नहीं आयी है। फलतः जनसंख्या वृद्धि की समस्या उत्पन्न हो गयी है। इसलिए आवश्यकता इस बात की है कि एक उपयुक्त जनसंख्या नीति बनायी जाये तथा उसे क्रियान्वित किया जाए जिससे जनसंख्या वृद्धि की समस्या से निजात मिल सके। जनसंख्या नीति के अन्तर्गत परिवार नियोजन कार्यक्रम की अहम् भूमिका होती है क्योंकि इसे अपना कर ही किसी देश की जनसंख्या को नियंत्रित किया जा सकता है। जनसंख्या नीति की आवश्यकता एवं महत्व को निम्नलिखित बिन्दुओं के माध्यम से स्पष्ट किया जा सकता है।

A. सामाजिक दृष्टि से आवश्यकता एवं महत्व

B. आर्थिक दृष्टि से आवश्यकता एवं महत्व

C. राजनीतिक दृष्टि से आवश्यकता एवं महत्व

D. शारीरिक दृष्टि से आवश्यकता एवं महत्व

(A) सामाजिक दृष्टि से आवश्यकता एवं महत्व : एक स्वस्थ राष्ट्र के निर्माण के लिए सामाजिक वातावरण का दोषमुक्त एवं समस्या रहित होना अति आवश्यक होता है। अगर परिवार नियोजित रहता है तो न केवल जीवन स्तर ऊँचा उठता है बल्कि स्त्रियों के कार्य क्षेत्र में भी विस्तार होता है। स्वस्थ नागरिक देश के आधार स्तम्भ होते हैं क्योंकि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है। इसी पर समाज की उन्नति भी निर्भर करती है। सीमित परिवार के रहने से रहन–सहन का स्तर बढ़ता है। साधनों के अभाव में उत्पन्न होने वाला पारिवारिक कलह, तनाव, चिन्ता दूर होगी जिससे वैयक्तिक एवं पारिवारिक विघटन रूकेगा। अतः इससे समाज का भी विघटन नही होगा। गृहस्थ जीवन सुखी और सम्पन्न रहते हुए सामाजिक उन्नति में अपेक्षित सहयोग देगा जो सांसारिक जीवन का प्रमुख आधार होता है। जन्म दर एवं मृत्यु दर दोनों में गिरावट आने से जीवन प्रत्याशा, असामयिक मृत्यु एवं बीमारियों से छुटकारा मिलेगा तथा देश का नागरिक लम्बे समय तक अपनी योग्यता, अनुभव एवं कार्यक्षमता से देश को लाभ पहुँचा सकेंगे फलतः प्रत्येक दृष्टि से सामाजिक दृष्टिकोण से आवश्यकता एवं महत्व होता है।

(B) आर्थिक दृष्टि से आवश्यकता एवं महत्व : जनसंख्या नीति एवं परिवार नियोजन का आर्थिक दृष्टिकोण से भी महत्व होता है।

1. राष्ट्रीय आय एवं प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि कर रहन–सहन के स्तर में सुधार करने के लिए।
2. भूमि पर बढ़ते हुए जनसंख्या के दबाव को कम करने एवं खाद्यान्न अभाव को दूर करने के लिए।
3. बेरोजगारी एवं निर्धनता की समस्या का समाधान के लिए।
4. पूँजी निर्माण की दर में वृद्धि कर आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करने के लिए।
5. जनसंख्या में गुणात्मक सुधार कर उनकी कार्यक्षमता एवं उत्पादकता में वृद्धि कर देश के उत्पादन को बढ़ाने में।

6. शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं एवं आवास व्यवस्था पर शासकीय व्यय भार को कम करने के लिए।

7. अनुपादक उपभोक्ताओं के भार को कम करने के लिए।

(C) राजनीतिक दृष्टि से आवश्यकता एवं महत्व : राजनीतिक दृष्टि से आज जनसंख्या को अनुकूलतम स्तर पर रखने के लिए उपयुक्त जनसंख्या नीति का विशेष महत्व होता है। तेजी से बढ़ती हुई जनसंख्या अनेक समस्याओं को जन्म देकर आर्थिक विकास के मार्ग में बाधक बनती है। साथ ही यह राजनीतिक अस्थिरता एवं अव्यवस्था भी उत्पन्न करती है। आये दिन हड़ताल, तोड़–फोड़ एवं मारपीट की घटनाएँ होती रहती हैं जिससे देश को शक्तिशाली बनाए रखने के लिए सबसे बड़ी आवश्यकता देश का आर्थिक रूप से शक्तिशाली होना है। इसके लिए जनसंख्या का अनुकूलतम स्तर पर होना अनिवार्य है। ऐसा तभी संभव हो सकता है जब परिवारों का आकार सीमित हो, जनसंख्या की किस्म में सुधार हो, बेरोजगारी एवं निम्न जीवन स्तर की समस्याएँ जिनसे राजनीतिक असन्तोष उत्पन्न होता है, नहीं रहे। इसके लिए एक उपयुक्त जनसंख्या नीति की आवश्यकता होती है। यह विश्व के सभी देशो के लिए आवश्यक प्रतीत होती है।

(D) शारीरिक दृष्टि से आवश्यकता एवं महत्व : जनसंख्या नीति एवं परिवार नियोजन का शारीरिक दृष्टि से भी आवश्यकता एवं महत्व है अर्थात् शारीरिक दृष्टि से भी एक उचित जनंसख्या नीति आवश्यक होती है। एक सही जनसंख्या नीति में जन्म नियंत्रण के साथ–साथ दम्पत्तियों एवं बच्चों की स्वास्थ्य रक्षा पर भी ध्यान दिया जाता है। कम समयान्तराल एवं अधिक बच्चे पैदा होने से जहाँ कमजोर एवं निर्बल सन्तान उत्पन्न होती हैं वही माता–पिता के स्वास्थ्य पर भी इसका बुरा प्रभाव पड़ता है। इसलिए यह आवश्यक होता है कि बच्चे परिपक्व आयु के बाद उत्पन्न हो तथा कम संख्या में उत्पन्न हो। साथ ही उनके जन्म में पर्याप्त समयान्तराल भी हो। इससे एक ओर जनसंख्या किस्म में सुधार होगी वहीं दूसरी ओर अति जनसंख्या की समस्या उत्पन्न नहीं होगी। जनसंख्या नीति में सुप्रजनन नीति को अपनाकर अयोग्य (जैसे–कोढ़ी, यौनिक बीमारियों से पीड़ित पागल तथा अन्य संक्रामक बीमारियों जो पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तान्तरित होती रहती है) से पीड़ित व्यक्तियों से सन्तानोत्पत्ति पर रोक लगाना देश के लिए वरदान साबित होगा। शिशु मृत्यु–दर की दृष्टि से भी जल्दी–जल्दी एवं अधिक बच्चे पैदा करने से रोकना अधिक उपयोगी होता है। डॉ0 वुडवरी एवं डा0 ब्रूने तथा लागे ने अपने सर्वेक्षणों से उक्त तथ्य को प्रमाणित कर दिया है। इस तरह यह पता चलता है कि एक स्वस्थ एवं सबल समाज के निर्माण के लिए उपयुक्त जनसंख्या नीति की बहुत आवश्यकता होती है।[10]

18.10 जनसंख्या नीति का सकारात्मक पहलू

जनसंख्या नीति का सकारात्मक पहलू के अन्तर्गत जनसंख्या को सीमित रखने तथा बढ़ाने से सम्बन्धित सभी सकारात्मक नीतियों एवं कार्यक्रमों को शामिल किया जाता है जिसके द्वारा जनसंख्या के किस्म में सुधार के साथ–साथ जनसंख्या का उचित नियमन भी किया जाता है। जनसंख्या में गुणात्मक सुधार के लिए जहाँ शिक्षा, स्वास्थ्य, चिकित्सा, प्रशिक्षण, आवास एवं आहार में सुधार सम्बन्धी सेवाओं पर विशेष बल दिया जाता है। वही स्वस्थ एवं प्रतिभाशाली स्त्री–पुरुषों को सन्तान पैदा करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। प्रायः सभी विकसित एवं कम विकसित देशों में सकारात्मक जनसंख्या नीति को ही महत्व दिया जाता है।[11]

18.11 जनसंख्या नीति का नकारात्मक पहलू

जनसंख्या नीति के नकारात्मक पहलू के अन्तर्गत जनसंख्या नियंत्रण के लिए मृत्यु दर को अधिक बनाये रखने पर बल दिया जाता है। यह नीति सकारात्मक नीति के ठीक विपरित होती है। जो उस बात पर बल देती है कि जनसंख्या वृद्धि को रोकने के लिए मृत्यु दर को गिरने न दिया जाय। वास्तव में विकासशील देशों में जनसंख्या वृद्धि का एक आधारभूत कारण स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सुविधाओं में वृद्धि कहा जा सकता है।

इससे मृत्यु दर में काफी गिरावट आयी तथा जन्म–दर तुलनात्मक रूप से कम गिरी है या यथावत रही है। जनसंख्या नीति का नकारात्मक पहलू इस बात पर बल देता है कि यदि मृत्यु दर को गिरने न दिया जाय तो उन देशों में जनसंख्या वृद्धि की समस्या स्वतः समाप्त हो जायेगी। लेकिन वर्तमान समय में इस नीति को अपनाना शायद ही किसी देश के लिए संभव हो ऐसा उचित भी प्रतीत होता है। इस नीति का एक अनुकरणीय पक्ष नकारात्मक सुप्रजनन है। जो इस बात पर बल देता है कि उन व्यक्तियों को सन्तान उत्पन्न करने से वंचित रखा जाना चाहिए जिन्हें शारीरिक एवं मानसिक निर्योग्यताएँ विद्यमान हैं। अमेरिका जैसे देश नकारात्मक सुप्रजनन पर बल देते हैं। नकारात्मक जनसंख्या नीति प्राचीन समय में काफी प्रचलित रही है। हालांकि इस संबंध में कोई ठोस प्रमाण प्राप्त नहीं है कि इसका संबंध जनसंख्या नियंत्रण से था या नहीं। इतना अवश्य कहा जा सकता है कि बच्चों को मार डालने की प्रथा अनेक समाजों में मिलती थी। उन समाजों में आस्ट्रेलिया के ट्यूबर, दक्षिण अमेरिका के इण्डियन्स, अफ्रीका के अन्य कबीलों, प्राचीन ग्रीस एवं चीन तथा भारत में कहीं–कहीं केवल लड़कियों को मार डालने का स्पष्ट प्रमाण मिलता है। इसी तरह बहुत से समाजों में पहले अपंगों, रोगियों, कोढ़ियों एवं वृद्धों को मार डाला जाता था। गर्भपात एवं युद्ध प्राचीन समय से लेकर आज तक प्रचलित है। वर्तमान समय में इन नीतियों को किसी भी दृष्टिकोण से उचित नहीं कहा जा सकता है। इसलिए आज कोई भी देश जनसंख्या नीति के नकारात्मक पहलू से सहमत नहीं है। लेकिन गेरॉण्ड एफ विनफील्ड एवं विलियम बी0 विनफिल्ड आज के युग में भी मृत्यु–दर अधिक रखने के किसी न किसी रूप में पक्षधर हैं। उनका विचार है कि विकासशील देशों की जनसंख्या वृद्धि को रोकने के लिए तब तक मृत्यु–दर को कम नहीं होने देना चाहिए जब तक जन्म दर कम न हो जाये। लेकिन आज इस बात से सहमति नहीं जतायी जा सकती है कि जनसंख्या नियंत्रण के लिए मृत्यु दर को ऊँचा रखा जाए। यह मानवतावादी, समाजवादी, लोकतान्त्रिक एवं कल्याणकारी समाज के लिए सर्वथा अनुपयुक्त होगा। यही कारण है कि आज सम्पूर्ण विश्व की जनसंख्या की सकारात्मक नीति को ही अपनाकर जनसंख्या नियोजन एवं आर्थिक विकास करना चाहती है।[12]

18.12 सारांश

वैश्विक जनसंख्या में तीव्र एवं उसकी नृजातीय–प्रजातीय विविधता एवं प्रवसन जनित कुछेक देशों में उत्पन्न जनसंख्या असंतुलन वर्तमान उपभोक्तावादी परिदृश्य में राष्ट्रों एवं राज्यों की सरकारों को इस हेतु प्रेरित करती है कि स्थानीय प्राकृतिक एवं मानवजनित संसाधनों के उचित उपभोग की दृष्टिकोण से जनसंख्या को नियंत्रित करना आवश्यक होता है।

जनसंख्या नीति जनसंख्या सुधार, नियोजन एवं संतुलित प्रतिस्थापन हेतु अति आवश्यक है। इसके माध्यम से उचित जनसंख्या संतुलन बनाए रखना संभव होता है। इस हेतु अल्पकालिक एवं दीर्घकालिक नीति के माध्यम से अप्रत्यक्ष एवं प्रत्यक्ष विधि से नियंत्रण स्थापित किया जाता है। इससे सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सर्वोपरि सांस्कृतिक स्थिरता एवं अनुकूलन की स्थिति बनाए रखना संभव हो पाता है। स्थिरता एवं सामाजिक गत्यात्मक ही

मानव समाज के लिए विकास के प्रमुख कारण है।

18.13 सन्दर्भ ग्रन्थ

1. पाण्डेय, गणेश एवं अरुणा पाण्डेय : जनसंख्यात्मक अध्ययन, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2006, पृ. सं. 219
2. आहूजा, राम : भारतीय समाज रावत पब्लिकशन्स, जयपुर, 2012, पृ. सं. 364
3. पाण्डेय, गणेश एवं अरुणा पाण्डेय : जनसंख्यात्मक अध्ययन, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2006, पृ. सं. 219
4. कुमार, वि. : जनांकिकी, साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा, 1998, पृ. सं. 386
5. पाण्डेय, गणेश एवं अरुणा पाण्डेय : जनसंख्यात्मक अध्ययन, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2006, पृ. सं. 220 221
6. वही, पृ. सं. 221–222
7. वही, पृ. सं. 222
8. वही, पृ. सं. 223
9. वही, पृ. सं. 224–225
10. वही, पृ. सं. 226 227–228
11. वही, 2006, पृ. सं. 228
12. वही, पृ. सं. 229

18.14 बोध के प्रश्न

18.14.1 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. जनसंख्या नीति से क्या समझते हैं? उसके तत्वों की विवेचना कीजिए।
2. जनसंख्या नीति के तत्व क्या हैं? जनसंख्या नीति को प्रभावित करने वाले कारकों की विवेचना कीजिए।

18.14.2 लघु उत्तरीय प्रश्न

1. जनसंख्या नीति क्या है?
2. जनसंख्या नीति के तत्व कौन–से हैं?
3. जनसंख्या नीति की आवश्यकता क्यों हैं?

18.14.3 वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. जनसंख्या नीति किसी देश की जनसंख्या की वृद्धि अथवा निरोध को प्रोत्साहित अथवा हतोत्साहित करती है?

   (क) सत्य (ख) असत्य

2. 'Nation and Family' के लेखक मिर्डल (Myrdal) हैं?

(क) सत्य (ख) असत्य

3. जनसंख्या वृद्धि को प्रभावित करने वाले कारक जन्म दर, मृत्यु दर एवं स्थानान्तरण हैं?

(क) सत्य (ख) असत्य

18.15 वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर

1. क
2. क
3. क

18.16 पारिभाषिक शब्दावली

संसाधन : स्रोत जिसका उपयोग आवश्यकता पूर्ति हेतु किया जाता है।

प्रवास : एक स्थान से दूसरे स्थान पर गमन करना।

नियोजन : वर्तमान परिस्थिति के अन्तर्गत भविष्य की आकांक्षाओं को दृष्टिगत रखते हुए कार्य योजना तैयार करना।

शरणार्थी : शरणार्थी वह व्यक्ति होता है जो उत्पीड़न, हिंसा या युद्ध के कारण अपने देश को छोड़ने के लिए बाध्य हुआ हो।

जन्मदर : एक कैलेण्डर वर्ष में प्रति सहस्र जनसंख्या में घटित होने वाली लेखबद्ध जीवित जन्म संख्या है।

इकाई–19 : जनसंख्या नीति के उपागम, जनसंख्या नीति की आवश्यकता

इकाई की रूपरेखा

19.1 उद्देश्य
19.2 प्रस्तावना
19.3 जनसंख्या नीति की अवधारणा
19.4 जनसंख्या नीति के उद्देश्य
19.5 भारत में जनसंख्या नीति
    19.5.1 भारत में जनसंख्या नीति (स्वतंत्रता से पूर्व)
    19.5.2 भारत में जनसंख्या नीति (स्वतंत्रता के पश्चात्)
    19.5.3 पंचवर्षीय योजना (1951 से 1956)
- प्रथम
- द्वितीय
- तृतीय
- चतुर्थ
- पंचम

    19.5.4 जनसंख्या नीति–1916
    19.5.5 जनसंख्या नीति–1977
- छठवीं

    19.5.6 जनसंख्या नीति–1981
- सातवीं
- आठवीं
- नौवीं

19.6 राष्ट्रीय जनसंख्या–2005
    19.5.1 तात्कालिक उद्देश्य
    19.5.2 दीर्घकालिक उद्देश्य
19.7 जनसंख्या नीति की आवश्यकता
    19.6.1 आर्थिक दृष्टि से
    19.6.2 सामाजिक दृष्टि से
    19.6.3 राजनैतिक दृष्टि से
19.8 सारांश
19.9 सन्दर्भ ग्रन्थ
19.10 बोध के प्रश्न
    19.10.1 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न
    19.10.2 लघु उत्तरीय प्रश्न
    19.10.3 वस्तुनिष्ठ प्रश्न
19.11 वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर

19.12 पारिभाषिक शब्दावली

19.1 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप :

1. बता सकेगें जनसंख्या नीति की अवधारण क्या है,
2. जनसंख्या नीति के अध्ययन के उपागम एवं जनसंख्या नीति की आवश्यकता को समझ सकेंगे।
3. भारतीय में स्वतंत्रतापूर्व व पश्चात् जनसंख्या नीति किस प्रकार की रही व समय के साथ इसमें क्या परिवर्तन आए, समझ सकेंगे।
4. भारत में स्वतंत्रता से पहले जनसंख्या नीति किस प्रकार की रही है और स्वतंत्रता पश्चात् समय के साथ उसमें क्या–क्या परिवर्तन आये हैं, आप यह समझ सकेंगे।

19.2 प्रस्तावना

जनसंख्या नीति से आशय उस योजना से है, जिसके अनुसार देश की सरकार वहाँ जनसंख्या नियोजन की योजना बनाती है। अर्थात् इसके द्वारा सरकार देश की जनसंख्या को संसाधनों के सापेक्ष अनुकूल रखने का प्रयास करती है। जनसंख्या नीति प्रत्येक देश की समरूप नहीं होती है, क्योकि उनकी परिस्थितियों में अत्यधिक भिन्नता/विभिन्नता पायी जाती है।

प्रस्तुत इकाई के अध्याय में हम जनसंख्या नीति, उसके अध्ययन के उपागम एवं जनसंख्या नीति की आवश्यकता और उससे संबंधित बिन्दुओं पर चच्रा करेंगे।

19.3 जनसंख्या नीति की अवधारणा

किसी भी देश के विकास हेतु प्राकृतिक एवं मानवीय संसाधनों का महत्वपूर्ण योगदान होता है, जिसमें सर्वाधिक भूमिका मानवीय संसाधनों अर्थात् देश में निवास करने वाली जनसंख्या की होती है।

जनसंख्या नीति सविचार निर्मित ऐसे विशिष्ट योजना है, जिनके माध्यम से सरकार प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से जनांकिकीय परिवर्तन को प्रभावित एवं नियंत्रित करती है।

जनसंख्या नीति के माध्यम से किसी देश में जनसंख्या का नियोजन सम्यव किया जाता है।

जनसंख्या नीति के अन्तर्गत जनसंख्या के परिमाणात्मक एवं गुणात्मक दोनों पहलुओं का अध्ययन किया जाता है। जनसंख्या नीति के परिमाणात्मक पहलू के अन्तर्गत देश में मौजूद राष्ट्रीय संसाधनों के अनुपात में जनसंख्या के आकार व संरचना का अध्ययन किया जाता है। जन्मदर, प्रवास, मृत्यु ऐसे परिमाणात्म तत्व है, जो जनसंख्या के संरचना को मुख्यतः प्रभावित करते है। गुणात्मक पहलू के अन्तर्गत ऐसे परिवर्तन को शामिल किया जाता है, जो जनसंख्या के गुणों जैसे– जीवन प्रत्याशा, स्वास्थ्य स्तर, शिक्षा, श्रम उत्पादकता स्तर, जोखिम लेने की क्षमता इत्यादि का अध्ययन किया जाता है। अतः हम कह सकते है कि देश के आर्थिक विकास के अनुरूप जनसंख्या का संरचनात्मक नियंत्रण करने का प्रयत्न जनसंख्या नीति द्वारा किया जाता है। भारत में जनसंख्या वृद्धि तीव्र गति से हो रही है। द स्टेट आफ वर्ल्ड पापुलेशन

रिपोर्ट 2022 (swp) जनसंख्या दृष्टि से भारत विश्व में दूसरे स्थान पर है। **डॉ0 चन्द्रशेखर के अनुसार– "भारत में संतान उत्पादन सबसे बड़ा कुटीर उद्योग बन गया है।"[1] (बघेल एवं वघेल, 2006 पेज, 335)** भारत में जनंसख्या नियोजन आवश्यक है, क्योकि जनसंख्या नीतियों के बिना देश का आर्थिक द्रुत गति से सम्भव नहीं हो सकेगा। **इन्दिरा गांधी ने कहा था जनसंख्या के तीव्र गति से बढ़ते रहने पर आयोजित विकास करना कुछ ऐसी भूमि पर मकान बनाने के समान है, जिसे बाढ़ का पानी बहा ले जा रहा है।** अर्थात् औद्योगिक व कृषि विकास से जो भी उन्नति होती, वह जनसंख्या वृद्धि में डूब जाती है एवं कोई भी प्रगति दिखाई नहीं पड़ती है।[2]

संयुक्त राष्ट्र संघ के जनसंख्या आयोग के अनुसार– "जनसंख्या नीति के अन्तर्गत वे समस्त कार्यक्रम एवं कार्यवाहियाँ शामिल की जाती है, जो जनसंख्या के आकार, उसके वितरण एवं जनांकिकीय विशेषताओं में परिवर्तन लाकर आर्थिक सामाजिक, जनांकिकीय, राजनीतिक अथवा अन्य किसी सामूहिक उद्देश्य की प्राप्ति के लिए प्रयुक्त की जाती है।"[3]

एस चन्द्रशेखर के अनुसार– "जनसंख्या नीति राष्ट्रीय सरकार द्वारा देश की जनसंख्या के आधार व गठन में किसी सरकारी कानून अथवा निर्देश द्वारा परिवर्तन लाने का जानबूझकर किया गया प्रयत्न है।"[5]

19.4 जनसंख्या नीति के उद्देश्य

सामान्यतः जनसंख्या नीति का उद्देश्य देश की जनसंख्या सबंधी सभी समस्याओं का समाधान करना जनसंख्या का गुणात्मक व परिमाणात्मक नियमन करना है। अतः जनसंख्या नीति के अन्तर्गत निम्न उद्देश्यों को प्राप्त करने का प्रयास किया जाता है।[5]

1. देश की आवश्यकता अनुसार जनसंख्या में वृद्धि या ह्रास कर इसे अनुकूलतम स्तर पर लाना।
2. जनसंख्या का परिणात्मक नियमन (अर्थात् जन्मदर व मृत्युदर पर नियंत्रण रखना)।
3. आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करना
4. जनसंख्या का सन्तुलित, प्रतिस्थापन व नियोजित परिवार
5. जनसंख्या के वितरण में संतुलन, इत्यादि।

पॉल मिडॉन ने जनसंख्या नीति के निम्न उद्देश्य स्पष्ट किए :

- जनसंख्या की संरचना में सुधार
- जन्म व मृत्यु दरो पर नियंत्रण
- जनसंख्या वृद्धि का नियमन करना
- जनसंख्या के भौगोलिक वितरण में संतुलन
- आर्थिक विकास एवं जनसंख्या का नियमन करना।[6]

19.5 भारत में जनसंख्या नीति

उपर्युक्त जनसंख्या नीति के अभाव में राष्ट्र का सतत् विकास संभव नहीं है। अतः जनसंख्या नीति परम आवश्यक है। भारत में जनसंख्या नीति को दो भागों में विभाजित कर सरलता से समझा जा सकता है। दो प्रकार से देखा जा सकता :

1. स्वतंत्रता के पूर्व की जनसंख्या नीति
2. स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् जनसंख्या नीति

19.5.1 भारत में जनसंख्या नीति (स्वतंत्रता के पूर्व)

स्तवंत्रता पूर्व जनसंख्या वृद्धि को समस्या नहीं माना जाता था। ब्रिटिश शासन भी भारतीय लोगों के परम्पराओं, मूल्यों में हस्तक्षेप करने के पक्ष में नहीं थी। इसलिए उस समय कोई भी जनसंख्या नीति का निर्माण नहीं हुआ। परन्तु भारत के कुछ Intellectuals बुद्धि जीवी वर्ग द्वारा जनसंख्या नीति के निर्माण की बात कही जा रही थी, क्योंकि वह वर्ग लगातार बढ़ रहे जनसंख्या से होने वाली समस्याओं से परिचित था। प्यारे कृष्ण बाटल ने 1916 में The population problems in India पुस्तक में जनसंख्या नियोजन करने पर बल दिया। 1925 में प्रो. R.S. Krne द्वारा महाराष्ट्र में Birth Control Clinic को प्रारंभ किया गया। तत्पश्चात् 11 June, 1930 को मैसूर में सरकारी Birth Control Clinic की स्थापना की गयी, जोकि ऐसा करने वाला देश का पहला राज्य था। सन् 1935 में नेहरू की अध्यक्षता में 'राष्ट्रीय नियोजन समिति' का गठन करके भारत में जनसंख्या वृद्धि से होने वाले दुष्प्रभावों, परिवार नियोजन को नीतियों का अभिन्न अंग बनाने, जनांकिकी सर्वेक्षण करने, इत्यादि सम्बन्धित अनेक सिफारिशें प्रस्तुत करता है।[7] 1935–36 में श्रीमती मार्गरेट सेंगर ने अपने वैचारिकी एवं अनुभवों के आधार पर जनसंख्या नीति में परिवार नियोजन कार्यक्रम को जोड़ने एवं इसे जनमानस के समक्ष लोक प्रिय बनाने की सलाह दी। 1939 में उ.प्र. व म.प्र. में संतति निग्रह अर्थात् जन्म–नियंत्रण चिकित्सालयों की स्थापना की गई। सन् 1945 में जोसेफ भोर की अध्यक्षता में 'स्वास्थ्य सर्वेक्षण एवं विकास समिति' की स्थापना की जिसने सरकारी अस्पतालों में जन्म–नियंत्रण सेवाओं की आवश्यकता पर बल दिया। महात्मा गांधी जन्म–नियंत्रण करने के पक्ष में थे, परंतु वे कृत्रिम विधियों के स्थान पर ब्रह्मचर्य पालन की बात कहते थे। डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने भी आर्थिक विकास को तीव्र गति देने हेतु जनसंख्या नियंत्रण करने का मत प्रस्तुत किया।

19.5.2 भारत में जनसंख्या नीति (स्वतंत्रता के पश्चात्)

स्वतंत्रता पूर्व जनसंख्या नियोजन हेतु किए गये प्रयास न तो संगठित थे, न ही इस विषय में कोई नीति–निर्माण हुआ था। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् योजना आयोग के माध्यम से जनसंख्या नीति की योजनाबद्ध शुरूआत हुई।

19.5.3 पंचवर्षीय योजना (1951–56)

स्वतंत्रता पश्चात् देश में पंचवर्षीय योजनाओं के साथ जनसंख्या नीति का निर्माण व आवश्यकतानुसार उनमें परिवर्तन भी होता रहा है।

प्रथम पंचवर्षीय योजना जनसंख्या की समस्याओं परिवार नियोजन के विषय में लोगों को जागरूक करने के तरीकों को ज्ञात करने तक ही सीमित थी।

- **द्वितीय**

पंचवर्षीय योजना में परिवार नियोजन कार्यक्रमों के विषय में जागरूकता, शिक्षा में वृद्धि करने का लक्ष्य प्राप्त करने का प्रयास किया गया ताकि लोग निरोधको को अपना सके। स्वास्थ्य केन्द्रो पर नसबन्दी की सुविधा भी उपलब्ध कराने का प्रयास किया गया।

- **तृतीय**

इस पंचवर्षीय योजना का मुख्य केन्द्र जन्मदर नियंत्रण रहा, जिससे जनांकिकीय शोध परिवार नियोजन पर अधिक व सीमित हो गए।

- **चतुर्थ**

पंचवर्षीय योजना में भी समस्त फोकस परिवार नियोजन नीतियों पर ही बना रहा। 'स्वास्थ्य मंत्रालय' के नाम को परिवर्तित कर इसका नाम 'परिवार कल्याण मंत्रालय' रख दिया गया।

- **पंचम / पांचवी**

पंचवर्षीय योजना में गरीबी को समाप्त करने हेतु परिवार नियोजन व जनसंख्या नियंत्रण को महत्वपूर्ण माना गया।

19.5.4 राष्ट्रीय जनसंख्या नीति - 1976

आपातकाल में लायी गयी जनसंख्या नीति का मुख्य उद्देश्य जनसंख्या विस्फोट की समस्या का त्वरित (Solution) समाधान करना था। इसके मुख्य विशेषताएं निम्न थी :

- गर्भसमापन की सुविधा प्रदान की गई।
- विवाह की आयु में वृद्धि कर 15 से 18 कर दी गई।
- राज्य सरकारो को यह अधिकार दिया गया कि वे विधि निर्माण कर बन्ध्याकरण को अनिवार्य कर सकते है।
- परिवार नियोजन कार्यक्रम को लोगो तक पहुँचाने के लिए कार्यक्रम चलाए गए।
- केन्द्र द्वारा राज्य को दिए जाने वाले अनुदान का 8 प्रतिशत परिवार नियोजन कार्यक्रम हेतु निश्चित कर दिया गया।
- जनसंख्या नियंत्रण करने के लिए, 2 बच्चों के पश्चात नसबंधी कराने वाले दम्पति को आर्थिक प्रोत्साहन दिया।
- टी.वी., रेडियो, चलचित्र पोस्टर के माध्यम से प्रचार कर परिवार नियोजन को लोगो तक पहुँचाया गया।
- सरकार द्वारा महिला शिक्षापर बल दिया गया।

19.5.5 नई जनसंख्या नीति–1977

जनसंख्या नीति–1977 में परिवार नियोजन कार्यक्रमों को सकारात्मक स्वरूप देते हुए 'अनिवार्यता' के स्थान पर 'स्वेच्छा' को महत्व दिया गया। इसके पाठयक्रम के अंग के रूप में जन सं0 नीति को रखा गया।

- **छठवीं**

इस पंचवर्षीय योजना में भी परिवार नियोजन कार्यक्रम को प्राथमिकता दी गई।

19.5.5 राष्ट्रीय जनसंख्या नीति–1981

राष्ट्रीय जनगणना 1981 है जो 10 वर्ष में प्रारम्भ किया गया। इसमें छोटे परिवार को परिवार नियोजन कार्यक्रम के अन्तर्गत लाना, नसबन्दी से संबंधित भ्रन्तियों को दूर करना, स्वास्थ्य सुविधाओं को बेहतर बनाना, जागरूकता का प्रसार करना, परिवार नियोजन के साधनों की सुलभता को सुनिश्चित करना महिला शिक्षा में वृद्धि व जनसंख्या नियंत्रण से संबंधित दीर्घकालीन नीतियों पर बल देना इत्यादि इसकी विशेषताएँ थी।

- **सातवीं**

पंचवर्षीय योजना में भी सरकार ने नीति में संशोधन किया व नए जन्मदर व मृत्युदर संबंधित लक्ष्य निधारित किए।

- **आठवीं**

पंचवर्षीय योजना में योजना आयोग ने जनसंख्या वृद्धि को सबसे बड़ी समस्या माना व प्रजनन दर के कमी, जीवन प्रत्याशा में वृद्धि, मृत्युदर के कमी हेतु लक्ष्य निर्धारित किए।

- **नवीं**

पंचवर्षीय योजना में प्रजनन व बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम पर अत्यधिक बल दिया गया।

19.6 राष्ट्रीय जनसंख्या नीति–2000

राष्ट्रीय जनसंख्या नीति का मुख्य उद्देश्य परिवार नियोजन एवं मातृ व शिशु स्वास्थ्य को सुधारने पर केन्द्रित था।

जब मई 11 को भारत की जनंसख्या 1 अरब पहुॅच गई, तो देश में चल रहे परिवार कल्याण कार्यक्रमों की विफलताः स्पष्ट हो गई एवं एक नई जनसंख्या नीति की आवश्यकता महसूस हुई। उसी दौरान डॉ. एम.एस. स्वामीनाथन की अध्यक्षता में एक समिति का निर्माण हुआ, जिन्होंने राष्ट्रीय जनसंख्या नीति एवं उसके क्रियान्वयन से सम्बन्धित महत्वपूर्ण सुझाव प्रस्तुत किये। सन् 1996 में जनसंख्या नीति के प्रारूप की संसद से स्वीकृति मिली और सरकार ने 15 फरवरी 2000 को एक नई जनसंख्या नीति देश के समक्ष प्रस्तुत की।

"The policy affirms commitment of the government to world voluntary & informed cherice & consent of cifines while availing of reproductive health case services & continuation of the target free approach in administering family planning services[10] नई जनसंख्या नीति में जनसंख्या की राष्ट्रीय स्त्रोतो के अनुसार करने व। देश में हरने वाले लोगों के जीवन–स्तर में गुणात्मक सुधार लाने की दृष्टि से 3 उद्देश्य निश्चिय किए गए, जोकि निम्नलिखित है :

19.6.1 तात्कालिक उद्देश्य

इस नीति का तात्कालिक उद्देश्य उचित मात्रा में गर्भनिरोधक उपायों का विस्तार करने कि लिए वंचित लोगों तक इसकी पहुँच को बढ़ाना था, जिसके लिए बुनियादी स्वास्थ्य ढ़ॉचे का विकास करना, स्वास्थ्य कर्मियों की नियुक्ति करना एवं प्रजनन व बाल/शिशु स्वास्थ्य हेतु

एकीकृत सुविधाए उपलब्ध कराना था।

19.6.2 दीर्घकालीन उद्देश्य

जनसंख्या नीति का दीर्घकालीन उद्देश्य सन् 2045 तक जनसंख्या की स्थिति के स्तर पर स्थिर करना है, जो सतत आर्थिक विकास, सामाजिक विकास तथा पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से अनुकूल हो। नई जनसंख्या नीति, 2020 तक में सामाजिक–जनांकिकीय लक्ष्य 2010 तक

- 14 वर्ष तक निशुल्क व अनिवार्य शिक्षा एवं प्राथमिक व माध्यमिक स्तर पर स्कूल छोड़ने वाले बच्चों की दर को घटाकर 20 प्रतिशत तक लाना। स्वास्थ्य सेवाएँ वंचित लोगों तक पहुँचाना।
- प्रजनन व शिशु स्वास्थ्य सेवाएं निम्न लोगों तक नहीं पहुँची हैं, उन्हे ये सुविधाएँ उपलब्ध कराना।
- बच्चों को सार्वभौमिक टीकारण कर विभिन्न प्रकार की बीमारियां से बचाव करना।
- संक्रामक बीमारियों की रोकथाम करना।
- जन्म, मृत्यु विवाह, गर्भ (Pregnancy) का पंजीकरण कराना
- परिवार कल्याण कार्य क्रमों को जनकेन्द्रिय करना।
- मातृ मृत्युदर को सौप्रति लाख व शिशु मृत्युदर तीस प्रति हजार तक नीचे लाया।
- 80 प्रतिशत प्रसव संस्थाओं व 100 प्रतिशत प्रसव की प्रशिक्षित व्यक्तियों द्वारा करवाना।
- छोटे परिवारो को प्रोत्साहित करने हेतु उससे सम्बन्धित प्रोत्साहनों की घोषणा की गई।
- बालविवाह निरोधक अधिनियम व प्रसव पूर्व लिंडा परीक्षण को सख्ती से लागू करनां
- राष्ट्रीय जनसंख्या आयोग का गठन करना लक्ष्य था जो कि 11 मई 2000 ईस्वी में गठन कर प्राप्त कर लिया गया।[11]

19.7 जनसंख्या नीति की आवश्यकता

जनसंख्या नीति को आज के समय की सर्वाधिक महत्वपूर्ण आवश्यकता में से एक है। भारत के समक्ष जनसंख्या वृद्धि एक बहुत बड़ी समस्या है, जिसके कारण मांग–पूर्ति में असंतुलन बना हुआ है। बिना एक उपयुक्त नीति के देश का विकास संभव नहीं है। उतः भारत में उपयुक्त जनसंख्या नीति की आवश्यकता व महत्व को निम्न आधार से स्पष्ट कर सकते है।

19.7.1 आर्थिक आधार की दृष्टि से

- भारत में निरंतर प्रयासो के बावजूद भी खाद्यपूर्ति में असंतुलन बना है। योजना आयोग के अनुसार हमारी खाद्य समस्या का मुख्य कारण खाद्यान्न की मॉग एवं पूर्ति में तत्कालीन असंतुलन नहीं, बल्कि देश में खाद्यान्न की अपेक्षा जनसंख्या की निरंतर वृद्धि है।'' उचित नीति के द्वारा खाद्यान्न की कमी को दूर किया जा सकता है।

- राष्ट्रीय आय व प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि कर रहन–सहन के स्तर में सुधार करना ।

- राष्ट्रीय नीति द्वारा जनसंख्या नियमन कर देश में फैली बेरोजागारी एवं गरीबी की समस्या को कम किया जा सकता है।

- देश के आर्थिक विकास में वृद्धि हेतु अति आवश्यक है नही तो जो आर्थिक विकास होता, वह जनसंख्या की आबादी में समा जायेगा।

- शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं पर देश की आय का एक बड़ा भाग व्यय किया जाता है। फिर भी स्थिति में ज्यादा सुधार नहीं आ पाता है। जनसंख्या नियमन द्वारा यह व्यय कम किया जा सकता है।

- देश में सभी नागरिको को आवास उपलब्ध नहीं है। इसका बहुत बड़ा कारण पूर्ति से अधिक है। जनसंख्या आधिक्य को संतुलन में लाकर इस समस्या को हल किया जा सकता है।

19.7.2 सामाजिक दृष्टि से

जनसंख्या नीति सामाजिक दृष्टि से भी अत्यंत आवश्यक है, क्योकि अनुकूलतम जनसंख्याहीन से देश का विकास होता है। परिवार की स्थिति अच्छी होने पर स्त्रियों को शिक्षा प्राप्त करने का मौका मिलेगा, जिसमें देश के शिक्षा स्तर में वृद्धि होगी व स्वास्थ्य स्तर में सुधार होगा। रहन–सहन का स्तर में सुधार होने से पारिवारिक एवं अन्य आन्तरिक कलह कम होगी जिससे सामाजिक विघटन को नियंत्रित करने में सफलता मिलेगी।

19.7.3 राजनैतिक दृष्टि से

तीव्रता से बढ़ती जनसंख्या राजनैतिक अस्थिरता, अव्यवस्था, को जन्म देता है। अतः राजनैतिक स्थिरता होने से भी जनसंख्या नीति आवश्यक है।

बिना जनसंख्या नियोजन के देश का सर्वांगीण विकास संभव नहीं हैं, हमें विवाह की आयु में वृद्धि कर, गर्भ निरोध के तरीके अपनाकर बंध्याकरण इत्यादि को प्रोसाहित कर जनवृद्धि संतुलन को अनुकूल करना होगा।

19.8 सारांश

उपरोक्त कथनों से ज्ञात होता है कि देश में जनसंख्या नीति का उद्देश्य देश में जनसंख्या वृद्धि और परिवार नियोजन से संबंधित चुनौतियों और मुद्दों का समाधान करना है। इसका उद्देश्य जिम्मेदार और नियोजित पितृत्व को बढ़ावा देकर सतत् विकास हासिल करना है। यह नीति सुलभ और किफायती प्रजनन स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान करने के महत्व पर जोर देती है और आजादी से पहले भी भारत की बढ़ती जनसंख्या समस्या के लिए सुझाव और उपचार

विकसित करने के प्रयास किये गए थे। जनसंख्या नीति जो केवल सीमित प्रजनन पर ही बल नहीं देता, बल्कि गर्भ निरोधक के कृत्रिम साधनों का भी प्रबल समर्थन करता है और जनसंख्या वृद्धि को कम करने तथा जनसंख्या वृद्धि एवं खाद्य असंतुलन से उत्पन्न समस्याओं को समाप्त करने के सुझाव भी दिये।

19.9 सन्दर्भ ग्रन्थ

1. बघेल, डॉ. डी.एस एवं बघेल, डॉ. किरण (2006) : जनांकिकी, विवेक प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ 335
2. वही, पृष्ठ 336
3. पन्त, डॉ. जे.सी. (2010)
4. वही
5. बघेल, किरण (1980). : जनाकिकी एवं भारत में जनस्वास्थ्य. पुष्पराज प्रकाशन, इलाहाबाद
6. मिर्डाज पाल (1948) : टुवर्डस ए सोशलाइजड पॉप्युलेशन पॉलिसी, खण्ड–11, संख्या–02 टॉयलर दव फ्रांसिस, U.S.A.
7. पन्त, डॉ. जे. सी (2010) : जनांकिकी, विशाल पब्लिशिंग कं., जालन्धन पृष्ठ. 411
8. झिगन, एम.एल. भट्ट, बी.के एवं देसाई, जे. एन (2005) डेमोग्राफी, वृन्दा पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली पृष्ठ 249–251
9. Baldwin, George B. (1973) : Population Policies in Developed Countries elibrary.imf.org.
10. पंत, डॉ. जे.सी. (2010) : जनांकिकी, विशाल पब्लिशिंग कं., जालन्धर, पृष्ठ–418.
11. वही, पृष्ठ 252–254

19.10 बोध के प्रश्न

19.10.1 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. जनसंख्या नीति से क्या तात्पर्य है? वर्तमान परिस्थितियों में जनसंख्या नीति की महत्ता का वर्णन कीजिए।
2. भारत की जनसंख्या नीति 2000 पर एक निबंध लिखिए।
3. जनसंख्या नीति से सम्बन्धित सरकारी प्रयासों की क्रमबद्ध विवेचना करिए।

19.10.2 लघु उत्तरीय प्रश्न

1. जनसंख्या वृद्धि का भारत में मुख्य कारण क्या है? इसकी विवेचना कीजिए।
2. जनसंख्या नीति से आशय उस योजना से है, जिसके माध्यम से देश की सरकार वहाँ की जनसंख्या को संसाधनों के सापेक्ष रखने का प्रयास करती है।
3. जनसंख्या नीति के उद्देश्य की विवेचना कीजिए।
4. परिवार नियोजन पर एक निबंध लिखिए।

19.10.3 वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. जनसंख्या वृद्धि का भारत में मुख्य कारण क्या है :

   (A) जन्मदर में वृद्धि (B) आर्थिक विकास

   (C) मृत्युदर में कमी (D) कम आयु में विवाह

2. भारत में प्रथम जनसंख्या नीति किस वर्ष आयी ?

   (A) 1981 (B) 1976

   (C) 2000 (D) 1990

3. 'The Population Problem in India' पुस्तक के लेखक कौन हैं?

   (A) Pyare Kishan Wattal (B) Paul Ehrlich

   (C) Malthus (D) W.D. Borrie

19.11 वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर

1. C
2. B
3. A

19.12 पारिभाषिक शब्दावली

जनसंख्या विस्फोट : जब किसी देश की जनसंख्या अत्यधिक तीव्र गति से वृद्धि होती है, तो उस स्थिति को जनसंख्या विस्फोट कहते है।

परिवार नियोजन : परिवार नियोजन से तात्पर्य ऐसी योजना बनाकर परिवार निर्माण करने से है, जिसमें परिवारिक आय, मातृ स्वास्थ्य व बच्चों के पालन–पोषण के स्त्रोतों को ध्यान में रखकर संतान की संख्या निश्चित की जाए।

जनांकिकी : जनांकिकी जन समंक का अध्ययन करने वाला विज्ञान है।

इकाई–20 : जनसंख्या शिक्षा का अर्थ एवं परिभाषा, जनसंख्या शिक्षा के तत्व

इकाई की रूपरेखा

20.1 उद्देश्य

20.2 प्रस्तावना

20.3 जनसंख्या शिक्षा का अर्थ

20.4 जनसंख्या शिक्षा की परिभाषाएँ

20.5 जनसंख्या शिक्षा का उद्देश्य

20.6 जनसंख्या शिक्षा का क्षेत्र एवं विषय सामग्री

20.7 जनसंख्या शिक्षा का महत्व एवं आवश्यकता

20.8 भारत में जनसंख्या शिक्षा

20.9 जनसंख्या शिक्षा के तत्व

20.10 सारांश

20.11 संदर्भ–ग्रन्थ

20.12 बोध के प्रश्न

20.12.1 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

20.12.2 लघु उत्तरीय प्रश्न

20.12.3 वस्तुनिष्ठ प्रश्न

20.13 वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर

20.14 पारिभाषिक शब्दावली

20.1 उद्‌देश्य

इस इकाई के उद्‌देश्य निम्नलिखित हैं :

1. जनसंख्या शिक्षा की अवधारणा से परिचित होंगे।
2. जनसंख्या शिक्षा के अर्थ एवं परिभाषा की विवेचना करना।
3. जनसंख्या शिक्षा के उद्‌देश्य को जानना।
4. जनसंख्या शिक्षा के महत्व एवं तत्व की विवेचना करना।
5. जनसंख्या शिक्षा की आवश्यकता से परिचित होना।

20.2 प्रस्तावना

किसी भी समूह की सदस्य संख्या बढ़ जाने के बाद जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करना कठिन हो जाता है। इन मूलभूत आवश्यकताओं में भोजन वस्तु एवं आवास की समस्या एक बहुत बड़ी समस्या है। साथ ही यौन संतुष्टि की माँग भी बढ़ जाती है एवं जब उस माँग की पूर्ति उचित मात्रा में एवं समय पर नहीं हो पाती है तब प्रत्येक सदस्य का जीवन अभावग्रस्त एवं संघर्षमय होता चला जाता है। इसका परिणाम यह होता है कि सामाजिक ढाँचे में अनेक परितर्वन होते चले जाते हैं। इस तरह जनसंख्या वृद्धि से जनसंख्या की लघुत्तम इकाई व्यक्ति से लेकर परिवार, समाज, देश एवं सम्पूर्ण विश्व की प्रत्येक क्रिया एवं प्रतिक्रिया प्रभावित होती है जिसकी उपेक्षा स्वयं जनसंख्या के लिए घातक एवं विनाशक रूप धारण कर विस्फोटक स्थिति का निर्माण करती है। प्रकृति के 'संतुलन नियम' के अनुसार कई जीव–जन्तु स्वयं की तीव्रगति से बढ़ती हुई संख्या को नियंत्रित करने के लिए स्वयं के अंश से उत्पादित सन्तति का भक्षण कर लेते हैं तथा अपनी सुख–सुविधा के अनुसार अपनी संख्या के संतुलन को बनाये रखते हैं। लेकिन यह संतुलन नियम मानव जाति एवं उसकी संतति पर लागू नहीं हो सकता। उसका कारण यह है कि मानव कभी अपनी संतति का भक्षण नहीं कर सकता है। इसलिए आवश्यकता इस बात की है कि मानव अपनी संख्या के संतुलन को बनाये रखने के

लिए अपने स्वयं प्रजनन को नियंत्रित कर ले। इसके लिए जनसंख्या शिक्षा का अध्ययन–अध्यापन अनिवार्य होना चाहिए। साथ ही देश की अप्रत्याशित रूप से बढ़ती जनसंख्या की समस्याओं के लिए भी जनसंख्या शिक्षा विषय एक महत्वपूर्ण गम्भीर, गहन एवं दीर्घकलीन भूमिका अदा करता है।[1]

20.3 जनसंख्या शिक्षण का अर्थ

जनसंख्या शिक्षा अत्यधिक जनसंख्या वृद्धि से उत्पन्न समस्याओं के विषय में गहन ज्ञान, समझ एवं जागरूकता प्रदान करता है। जिसे प्राप्त करके व्यक्ति अपने स्वयं, परिवार, समाज, समुदाय, देश एवं विश्व के जीवन स्तर को उच्च एवं समृद्ध बना सकता है। जनसंख्या शिक्षा शब्द का सर्वप्रथम परिचय कराने का श्रेय कोलम्बिया विश्वविद्यालय के Teachers College के प्रोफेसर स्लाने आर. वेलेंड (Whyland Sloan R.) को जाता है। उन्होंने जनसंख्या शिक्षा के अर्थ को स्पष्ट करते हुए 'Population Education, Orientation for the Teacher' में लिखा है, ''There Should be no confusion in understanding the meaning of population Education as it is quite different from sex Education or Education from family Living.'' जनसंख्या शिक्षा 'यौन शिक्षा' एवं 'पारिवारिक जीवन–स्तर शिक्षण' से पूर्णतया भिन्न है।[2] जनसंख्या शिक्षा का संक्षेप में अर्थ, जनसंख्या शिक्षा अत्यधिक जनसंख्या वृद्धि से उत्पन्न गंभीर समस्याओं के विषय में गहन ज्ञान, समझ तथा जागरूकता प्रदान करती है, जिसे प्राप्त करके व्यक्ति स्वयं अपने परिवार, समाज–समुदाय, देश और विश्व के जीवन स्तर को उच्च एवं समृद्ध बना सकता है।[3]

20.4 जनसंख्या शिक्षा की परिभाषाएँ

जनसंख्या शिक्षा को विभिन्न विद्वानों ने परिभाषित किया है। इन विद्वानों द्वारा दी गयी परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं–

जनसंख्या शिक्षा को परिभाषित करते हुए फैनुफ, सी.टी. (Fanueff, C.T.) ने 'Report of the project of population Dynamics curriculum' में लिखा है– ''जनसंख्या शिक्षा एक ऐसा शैक्षणिक आयोजन है जिसका प्राथमिक उद्देश्य अनियंत्रित जनवृद्धि को रोकने के लिए एक विवेकपूर्ण दृष्टिकोण का विकास करना है।''

बेरेलसन ने जनसंख्या शिक्षा को परिभाषित करते हुए लिखा है– ''जनसंख्या शिक्षा द्वारा शिक्षक एवं विद्यार्थियों में जनसंख्या के विषय में जागरूकता, विवेक व ज्ञान विकसित किया जाता है। साथ ही पारिवारिक जीवन, प्रजनन एवं मूलभूत मान्यताओं का भी ज्ञान कराया जाता है।''

जनसंख्या शिक्षा को परिभाषित करते हुए विडरमैन (Viederman) ने लिखा है– ''जनसंख्या शिक्षा, एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा विद्यार्थी जनसंख्या प्रक्रियाओं (स्वरूप एवं अर्थ), जनसंख्या की विशिष्टताओं, जनसंख्या परिवर्तन के कारणों एवं परिणामों, स्वयं अपने–अपने परिवार, समाज एवं विश्व परिवर्तन के लक्षणों की खोज एवं अन्वेषण करता है।''

मैसीलास (Massilas) ने जनसंख्या शिक्षा को परिभाषित करते हुए लिखा है, ''जनसंख्या शिक्षा उस वास्तविक ज्ञान का अध्ययन और अध्यापन है जिसके द्वारा जनसंख्या के स्वरूप व प्रकृति को समझा जा सके और जनसंख्या परिवर्तन के स्वभाविक परिणामों का ज्ञान

प्राप्त किया जा सके।''

जनसंख्या शिक्षा को परिभाषित करते हुए गोपाल राव (Gopal Rao) ने लिखा है– ''जनसंख्या शिक्षा, एक शैक्षिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा जनसंख्या के प्रश्नों का अभ्यास संभव होता है। तीव्र गति से होने वाली जनसंख्या वृद्धि से उत्पन्न होने वाली समस्याओं के प्रति विद्यार्थियों के विचारपूर्वक निर्णय लेने में यह शिक्षा सहायक बनती है।''

1970 में बैंकाक में यूनेस्को द्वारा आयोजित एक गोष्ठी 'जनसंख्या तथा पारिवारिक जीवन शिक्षा' में जनसंख्या शिक्षा को इस प्रकार परिभाषित किया गया है– ''जनसंख्या शिक्षा एक ऐसा शैक्षणिक कार्य है जो शिक्षार्थियों को परिवार, समाज राष्ट्र एवं समग्र विश्व की आबादी की परिस्थिति के विषय में स्पष्ट विचार प्रस्तुत करता है तथा इस संदर्भ में स्वयं के और देश के प्रति अपने कर्त्तव्य, व्यवहार और उत्तरदायित्व की समझ व अनुभूति विकसित करता है।''

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि जनसंख्या शिक्षा एक शैक्षिक प्रक्रिया है। यह शिक्षा छात्रों को जनसंख्या एवं उसकी गतिविधियों के विषय में जागरूक बनाता है। जनसंख्या शिक्षा जनवृद्धि के कारणों एवं उससे उद्‌भूत होने वाले भयंकर परिणामों के विषय में विस्तृत जानकारी प्रदान करता है। छात्रों को गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करने के बाद परिवार के सन्दर्भ में विवेकपूर्ण एवं समझदारी पूर्वक निर्णय लेने में उचित मार्गदर्शन करता है। यह शिक्षा जनसंख्या वृद्धि के कारण एवं जीवन–स्तर पर पड़ने वाले कुप्रभाव को भी दर्शाता है। इस शिक्षा के द्वारा छात्रों में यह आत्मसात कराया जाता है कि वर्तमान काल में कम सन्तति देशभक्ति के साथ–साथ आने वाली पीढ़ी के प्रति नैतिक कर्त्तव्य भी हैं।[4]

20.5 जनसंख्या शिक्षा का उद्‌देश्य

जनसंख्या शिक्षा का उद्‌देश्य बढ़ती हुई जनसंख्या से उत्पन्न खतरों का ज्ञान आने वाली पीढ़ी को कराना है, जिससे वे अपने भविष्य को सुखी बना सके। जनसंख्या शिक्षा का पहला उद्‌देश्य यह है कि यह शिक्षा सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक जीवन के पहलुओं पर जनसंख्या के पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन एवं स्पष्टीकरण करता है। यह जनसंख्या की प्रक्रिया और उसकी वृद्धि के परिणामों का अभ्यास कराता है।

जनसंख्या शिक्षा का दूसरा उद्‌देश्य माता एवं बच्चे के स्वास्थ्य की सुरक्षा, शिशु कल्याण, कुटुम्ब की आर्थिक समृद्धि एवं युवा पीढ़ी की जिम्मेदारी का परिचय कराना होता है।

जनसंख्या शिक्षा का तीसरा उद्‌देश्य व्यक्ति एवं कुटुम्ब पर बढ़ती हुई जनसंख्या के प्रभाव को समझना एवं पारस्परिक सहकार तथा उत्तरदायित्व की भावना विकसित करना है।

1969 में जनसंख्या शिक्षा का एक परिसंवाद मुम्बई में आयोजित किया गया जिसमें जनसंख्या शिक्षा के हेतुओं को स्पष्ट करते हुए बताया गया कि –

1. परिवार के कद को इच्छानुसार नियंत्रित किया जा सकता है। आज शिशु का जन्म संयोग नहीं बल्कि इच्छा है, इस बात की जानकारी छात्रों को देनी चाहिए।
2. परिवार के सदस्यों के अच्छे स्वास्थ के लिए परिवार की आर्थिक समृद्धि के लिए छोटे कुटुम्ब का महत्व बतलाना है।
3. छोटे कद के परिवार एवं व्यक्तिगत जीवन इन दोनों के बीच सीधा सम्बन्ध है इसका स्पष्टीकरण करना है।

4. भावी पीढ़ी का भविष्य उज्ज्वल बनाने के लिए जो अवसर प्रदान करना है, उस अवसर के सन्दर्भ में छोटा कुटुम्ब कितना उपयोगी है उसके विषय में ज्ञान देना हैं।
5. उनमें ऐसे दृष्टिकोण का विकास करना है कि जनसंख्या शिक्षा जीवन को समृद्ध बनाने में सहायक, मार्गदर्शक बनता है।[5]

इण्डोनेशिया के जनसंख्या विशेषज्ञ टोक्रोविरोना (Tyokrowirona) के अनुसार इसके प्रमुख उद्देश्य निम्न प्रकार हैं–

1. जनांकिकी के मूलभूत सिद्धान्तो का ज्ञान।
2. तीव्र जनसंख्या वृद्धि के कारणों की जानकारी।
3. तीव्र जनसंख्या वृद्धि के प्रभावों के सन्दर्भ में ज्ञान अर्जित करना।
4. लोगों के कल्याण और आर्थिक, सामाजिक विकास के संबंधो के बारे में ज्ञान प्राप्त करना।
5. भाग्यवादी दृष्टिकोण के विपरित इस प्रकार का ज्ञान कराना कि परिवार के आकार के नियंत्रित करना व्यक्ति के वश में है।
6. पर्यावरण संबंधी एकरूपता के अर्थ एवं महत्व को समझना।
7. छोटे परिवारों के मानव के महत्व को समझ कर जीवन स्तर की गुणात्मकता से सम्बन्ध स्थापित करना।
8. व्यक्ति के 'स्व' तथा पर्यावरण पर जनसंख्या घनत्व तथा जनसंख्या वृद्धि के परिणामों को समझना।
9. सामाजिक संरचना तथा सामाजिक परिवर्तनों के मानव व्यवहार पर प्रत्यक्ष प्रभाव का आभास कराना।

उपर्युक्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए छात्र–छात्राओं को जनसंख्या के विविध पक्षों की शिक्षा दी जानी चाहिए जिससे वे स्वयं, प्रौढ़ शिक्षा तथा स्वयंसेवी संस्थानों द्वारा जनसंख्या शिक्षा के उद्देश्यों को जनता में प्रचारित व प्रसारित करें। इससे साक्षरता बढ़ने के साथ ही साथ जनसंख्या समस्याओं की ओर जागरूकता बढ़ेगी तथा धीरे–धीरे जन्म दर में ह्रास होगा एवं सीमित परिवार का विचार सार्थक होगा।[6]

20.6 जनसंख्या शिक्षा का क्षेत्र एवं विषय सामग्री

शिक्षा के क्षेत्र में जनसंख्या शिक्षा एक नया क्षेत्र है। जनसंख्या शिक्षा की संकल्पना की कभी–कभी परिवार नियोजन, पारिवारिक जीवन एवं यौन शिक्षण के साथ मिश्रित कर दिया जाता है। लेकिन वास्तविकता यह है कि यह सभी जनसंख्या शिक्षा के आन्तरिक पहलू है, उसके पर्यायवाची नहीं हैं।

हौसर (Hauser) ने जनसंख्या शिक्षा के अध्ययन क्षेत्र के लिए निम्नलिखित विषयों की सिफारिश की है–

(i) **जनसंख्या वृद्धि–** इसके अन्तर्गत प्रवृत्ति, भविष्य के लिए दृष्टिकोण, जन्म दर, मृत्यु दर एवं जनसंख्या के संक्रमण सिद्धान्त को शामिल किया जाता है।

(ii) जनसंख्या इतिहास– इसके अन्तर्गत भूतकाल से आधुनिक समय तक के इतिहास को शामिल किया जाता है।

(iii) जनसंख्या संयोजन– इसके अन्तर्गत प्रवृत्ति, भविष्य के लिए दृष्टिकोण, लिंग एवं आयु एवं सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक विशिष्टताओं का अध्ययन किया जाता है।

(iv) जनसंख्या वितरण– इसके अन्तर्गत जनसंख्या वितरण का अध्ययन किया जाता है।

(v) जनसंख्या शिक्षा के अन्तर्गत जैविक एवं जातीय ज्ञान का अध्ययन किया जाता है।

(vi) जनसंख्या शिक्षा के अन्तर्गत जनसंख्या अनुसंधान की पद्धतियों का अध्ययन किया जाता है।

(vii) जनसंख्या शिक्षा के अन्तर्गत जनसंख्या के सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक तथ्यों के सन्दर्भ में ज्ञान प्राप्त किया जाता है।

दिल्ली में 1970 में 'National Council of Education Research' ने एक वर्कशाप का आयोजन किया। इस वर्कशाप में जनसंख्या शिक्षा के विषयों की स्पष्टता निम्नलिखित प्रकार से की गयी–

(a) जनसंख्या वृद्धि

(b) स्वास्थ्य, पोषण एवं जनसंख्या

(c) जनसंख्या एवं सामाजिक तथा आर्थिक विकास

(d) जैविक तथ्य (पारिवारिक जीवन एवं जनसंख्या)

उपर्युक्त विवरणों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि जनसंख्या शिक्षा का मुख्य विषय जीवन स्तर को उन्नति की ओर ले जाना होता है। जनसंख्या शिक्षा के विषय सामग्री के अन्तर्गत निम्नलिखित तत्वों का समावेश किया जा रहा है–

(i) जनसंख्या वृद्धि का इतिहास– इसके अंतर्गत विश्व के सन्दर्भ में सामान्य ज्ञान एवं भारत के सन्दर्भ में विशिष्ट ज्ञान, जनसंख्या वृद्धि के कारण, प्रवृत्ति एवं समस्या का अध्ययन किया जाता है।

(ii) जनसंख्या वृद्धि की गति– इसके अन्तर्गत जनसंख्या वृद्धि की तीव्र गति का आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक पहलुओं और राष्ट्रीय विकास पर प्रभाव का अध्ययन किया जाता है।

(iii) भारतीय जनांकिकी का परिचय– इसके अंतर्गत जनसंख्या वृद्धि, जन्म दर, मृत्यु दर एवं प्रवास का अध्ययन किया जाता है।

(iv) जनसंख्या नीति– इसके अंतर्गत विश्व के सन्दर्भ में सामान्य ज्ञान एवं भारत के सन्दर्भ में विशिष्ट ज्ञान का अध्ययन किया जाता है।

(v) प्रजनन क्रिया का पूर्व प्राथमिक ज्ञान– इसके अन्तर्गत प्रजनन क्रिया का पूर्व प्राथमिक ज्ञान का अध्ययन किया जाता है।

(vi) जनसंख्या वृद्धि की गति– इसके अन्तर्गत जनसंख्या वृद्धि की तीव्र गति का व्यक्ति, उसके पारिवारिक जीवन एवं जीवन स्तर पर प्रभाव का अध्ययन किया जाता है।

जनसंख्या शिक्षा के अन्तर्गत जन–जीवन को समृद्ध बनाने के लिए जनसंख्या को ही महत्व दिया जाता है। इसलिए इससे सम्बन्धित अनेक विषय इसकी विषय–सामग्री बन जाती

हैं। इनमें निम्नलिखित प्रमुख हैं–

जनसंख्या का इतिहास स्थिति, जनसंख्या विस्फोट, जनसंख्या वृद्धि का सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक जीवन पर प्रभाव, जनसंख्या वृद्धि का प्राकृतिक सम्पत्ति एवं पर्यावरण पर कुप्रभाव, प्रजनन क्रिया को नियंत्रण में लाने के लिए जातीय ज्ञान एवं जनसंख्या नीति आदि। इसके अतिक्ति वृद्धि से सम्बन्धित अनेक समस्याएँ जैसे– आवास, जल, भोजन, वस्त्र, चिकित्सा, शिक्षा, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार एवं असामाजिक तत्वों की समस्या आदि का अध्ययन किया जाता है।[7]

20.7 जनसंख्या शिक्षा का महत्व व आवश्यकता

भारत वर्ष जैसे विकासशील देश जो जनसंख्या विस्फोट की स्थिति से गुजर रहा है, जनसंख्या शिक्षा आवश्यक एवं महत्वपूर्ण है। यहाँ जनसंख्या शिक्षा सभी वर्गों के लिए आवश्यक है चाहे वह विद्यार्थी हो, विवाहित हो, अविवाहित हो, बूढ़े हो अथवा बच्चे हों। जनसंख्या शिक्षा का महत्व निम्नलिखित है।

(1) जनसंख्या संबंधी आँकड़ों का ज्ञान– जनसंख्या शिक्षा से हमें जनसंख्या संबंधी आँकड़ों का ज्ञान होता है जिनकी सहायता से जन्म दर, मृत्यु दर, जनसंख्या वृद्धि दर, आयु विशिष्ट जन्म एवं मृत्यु दर आदि का पता लगाया जा सकता है।

जनसंख्या शिक्षा में जनसंख्या के आकार, जनसंख्या संरचना, जनसंख्या में लैंगिक अनुपात, विवाह की आयु आदि विषयों का ज्ञान कराया जाता है। जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण कैसे लगाया जाये, जनसंख्या वृद्धि के दुष्प्रभाव क्या हैं, छोटे परिवार के लाभ क्या हैं, आदि का ज्ञान जनसंख्या शिक्षा से होता है।

(2) जनसंख्या नियंत्रण व सीमित परिवार के लाभ– हमारे देश में भावी दंपत्तियों की संख्या काफी है। लोग बड़ी संख्या में विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं, अतः आवश्यकता है कि संतानोत्पादक आयु से पूर्व इसके दृष्टिकोण में परिवर्तन करके वैचारिक क्रान्ति लायी जाये। इससे जनसंख्या वृद्धि की दर पर सफलतापूर्वक अंकुश लगाया जा सकता है। नियमित जन्म दर नियमन करने तथा छोटे से सीमित परिवार के लाभों से भावी दम्पत्तियों को अवगत कराने के लिए जनसंख्या शिक्षा अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

(3) मातृ एवं शिशु कल्याण कार्यक्रम– मातृ एवं शिशु कल्याण कार्यक्रम के बारे में जानकारी प्रदान करना जनसंख्या शिक्षा का महत्वपूर्ण अंग है। गर्भावस्था में स्त्रियों को किस तरह का पौष्टिक एवं संतुलित आहार दिया जाना चाहिए तथा कौन–कौन से टीके कब लगाये जाने चाहिए इसकी जानकारी जनसंख्या शिक्षा के अन्तर्गत प्रदान की जाती है। इसी तरह नवजात शिशु की देखभाल प्रथम एक वर्ष तक विशेष रूप से कैसे की जानी चाहिए तथा विभिन्न बीमारियों से उन्हें बचाने के लिए कब और कितने समय पश्चात् कौन–कौन से टीके लगाये जाने चाहिए तथा साथ ही साथ चार वर्ष तक की आयु के बच्चों के संबंध में क्या–क्या सावधानियाँ बरती जानी चाहिए, इसका ज्ञान जनसंख्या शिक्षा के अंतर्गत कराया जाता है। इससे शिशु मृत्यु दर को नियंत्रित करने में सहायता मिलती है।

(4) स्वास्थ्य एवं जनसंख्या नीति की जानकारी– जनसंख्या नीति के अंतर्गत देश की स्वास्थ्य नीति तथा जनसंख्या नीति की जानकारी प्रदान की जाती है। देश के स्वास्थ्य नीति का क्या लक्ष्य है तथा इसे कितने समय में प्राप्त किया जाना है? किस तरह की स्वास्थ्य सुविधाएँ प्रदान

की जा चुकी हैं तथा अभी कौन–कौन सुविधाएँ उपलब्ध करायी जाने वाली हैं। आदि की जानकारी जनसंख्या शिक्षा के माध्यम से दी जाती है।

(5) सद्नागरिकता का विकास– सद्नागरिकता के विकास के लिए भी जनसंख्या शिक्षा आवश्यक है, क्योंकि एक अच्छे नागरिक को देश की ज्वलंत समस्याओं का ज्ञान होना चाहिए। हमारे विद्यार्थी भी जनसंख्या शिक्षा के माध्यम से देश की आर्थिक स्थिति, जीवन स्तर का परिवार के आकार से संबंध तथा राष्ट्रीय आवश्यकताओं का ज्ञान प्राप्त करके अपने दृष्टिकोण एवं आचार–विचार में समुचित परिवर्तन कर सकते हैं।

(6) पारिस्थितिकी के मध्य संतुलन– जनसंख्या शिक्षा का उद्देश्य मानव एवं पारिस्थितिकी के मध्य संतुलन स्थापित करना है। पृथ्वी पर प्राप्त अकार्बनिक, वनस्पतिक व जैविक अववयों के समग्र रूप को पारिस्थितिकी कहते हैं। मनुष्य इस तंत्र का एक अंग मात्र है। इस तंत्र के अवयवों में एक प्राकृतिक संतुलन पाया जाता हैं। परन्तु इनमें से यदि किसी अवयव में परिवर्तन हुआ है तो वह समस्त तंत्र को प्रभावित कर देता है। जनसंख्या की तीव्र वृद्धि से पारिस्थितिकी तंत्र शिथिल हो रहा है। फलतः मनुष्य के समक्ष जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, सामाजिक प्रदूषण आदि अनेक पर्यावरण समस्याएँ भयंकर रूप धारण कर रही हैं।

जनसंख्या शिक्षा के अन्तर्गत जनसंख्या वृद्धि के फलस्वरूप पर्यावरण पर पड़ रहे दुष्प्रभावों तथा उससे बचने के लिए किये जाने वाले उपायों का अध्ययन भी सम्मिलित होता है। लोगों को इस बात की जानकारी होनी चाहिए कि प्रदूषित वातावरण का मानव जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है? पर्यावरण असंतुलन के लिए कौन–कौन से कारक उत्तरदायी हैं? पर्यावरण को प्रदूषित होने से कैसे बचाया जा सकता हैं? वन सम्पदा, पेड़–पौधे तथा विभिन्न प्रकार के पशु–पक्षी, जीव–जन्तु किस तरह पर्यावरण को स्वच्छ एवं प्रदूषण रहित बनाने में सहायता करते हैं? फलतः जनसंख्या शिक्षा से पारिस्थितिकी के मध्य संतुलन बनाये रखने में सहायता मिलती है।[8]

20.8 भारत में जनसंख्या शिक्षा

भारत में जनसंख्या शिक्षा के महत्व को समझा गया और सन् 1969 में पापुलेशन एजुकेशन के नेशनल सेमिनार बंबई में (National Seminar on Population Education Held at Bombay in 1969) एक विशेष पापुलेशन एजुकेशन सेल अर्थात् जनसंख्या कक्ष की स्थापना की नींव–नेशनल काउंसिल आफ एजुकेशन रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग के अंतर्गत रखी गयी। नवंबर, 1973 में पापुलेशन ग्रोथ एण्ड ह्यूमन डवलपमेन्ट विषय पर इंडियन सोशल इंस्टीट्यूट, नयी दिल्ली द्वारा आयोजित संगोष्ठी में 'जनसंख्या शिक्षा कक्ष' के प्रमुख प्रोफेसर टी0 एस0 मेहता ने जनसंख्या शिक्षा के महत्व को समझते हुए 'जनसंख्या शिक्षा' को प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्चस्तरीय शिक्षा में अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाने की जोरदार सिफारिश की जिससे कि अधिकाधिक युवा वर्ग जनसंख्या वृद्धि से पैदा होने वाली समस्याओं के प्रति जागरूक रहकर अपने परिवार के नियंत्रण के बारे में उचित निर्णय ले सके।

इंडियन–एजुकेशन कमीशन (1964-1966) ने जनसंख्या की समस्या को महत्वपूर्ण समस्या मानकर एक सिफारिश की कि ''शिक्षा को, राष्ट्रीय योजनाओं को सफल बनाने हेतु एक प्रभावशाली माध्यम के रूप में प्रयोग किया जाये, जिससे कि व्यक्ति, समाज व देश का कल्याण हो। गुजरात में सरदार पटेल विश्वविद्यालय को इस बात का श्रेय जाता है कि सर्वप्रथम इसने जनसंख्या शिक्षा को आपरेशन कोर्स के रूप में अपनाया।''[9]

20.9 जनसंख्या शिक्षा के तत्व

जनसंख्या शिक्षा किसी एक विषय अथवा जीवन के किसी एक विशिष्ट पहलू से सम्बन्धित नहीं है, बल्कि यह मानव जीवन के सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखते हुए प्रदान की जाती है। उस विचार धारा के अनुसार जनसंख्या के निम्नलिखित प्रमुख तत्व हैं–

(1) जनसंख्या सम्बन्धी आँकड़े– जनसंख्या संबंधी आँकड़ों से देश, प्रदेश, जिला, नगर एवं ग्रामीण क्षेत्रों की कुल जनसंख्या की जानकारी के अतिरिक्त जनसंख्या वृद्धि दर, वृद्धि के कारणों आदि के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त हो जाती है। इसके साथ ही साथ यह भी ज्ञात हो जाता है कि जनसंख्या कब से बढ़ रही है। जनसंख्या के आँकड़े 10 वर्षीय जनगणना (Census) द्वारा, जन्म मृत्यु पंजीकरण द्वारा तथा विभिन्न प्रकार के शोध अध्ययनों द्वारा भी प्राप्त हो जाते हैं।

(2) स्वास्थ्य एवं स्वास्थ्य विज्ञान– जनसंख्या शिक्षा के अन्तर्गत जनसंख्या के स्वास्थ्य का स्तर स्वास्थ्य विज्ञान के ज्ञान के स्तर का समावेश भी किया जाता है। स्वास्थ्य का स्तर जानने के लिए देश, प्रदेश के विभिन्न भागों में अस्पतालों की संख्या, सरकारी अस्पतालों में कार्यरत चिकित्सकों की संख्या, नीति चिकित्सकों की संख्या आदि का ज्ञान लाभप्रद होता है। इसके अन्तर्गत युवा पीढ़ी के सदस्यों को व्यक्तिगत सफाई जैसे शरीर की सफाई, दाँतों की सफाई, शरीर की विभिन्न आवश्यकताओं, आदि से सम्बन्धित ज्ञान का समावेश भी इसके अन्तर्गत किया जाता है।

(3) सफाई, स्वच्छता एवं पर्यावरण– जनसंख्या शिक्षा के अन्तर्गत वातावरण तथा पर्यावरण की स्वच्छता का भी समावेश किया जाता है। दूषित वातावरण के मानव जीवन पर प्रभाव का अध्ययन भी जनसंख्या शिक्षा की विषय–वस्तु है। पेड़–पौधों से आक्सीजन किस प्रकार प्राप्त होती है, जो कि मनुष्य के जीवन के लिए आवश्यक है, जनसंख्या वृद्धि से पर्यावरण किस प्रकार प्रभावित होता है, वन–सम्पदा मानव जीवन के सुख के लिए क्यों आवश्यक है, आदि का अध्ययन जनसंख्या शिक्षा के अन्तर्गत ही किया जाता है।

(4) खाद्य एंव पौष्टिक आहार– मनुष्य की तीन मौलिक आवश्यकताओं में से भोजन एक प्रमुख आवश्यकता है, जो कि जनसंख्या शिक्षा का एक तत्व है। किस वर्ग के लिए किस प्रकार से तथा कितनी मात्रा में भोजन की आवश्यकता है, प्रतिदिन मनुष्य को कितनी मात्रा में तथा कौन–कौन सा भोजन खाने चाहिए, पौष्टिक आहार किन–किन तत्वों से प्राप्त होता है, आदि का अध्ययन जनसंख्या शिक्षा की अध्ययन विषय–वस्तु है।

(5) परिवार परिसीमन– परिवार सीमित करने के कौन–कौन से अस्थाई तथा स्थायी उपाय हैं, किसी साधन की क्या अच्छाइयाँ तथा कौन–कौन सी बुराइयाँ हैं, चिकित्सकों तथा साधनों की सेवा सुविधाएँ कहाँ से प्राप्त की जा सकती है। आदि से सम्बन्धित जानकारी जनसंख्या शिक्षा से प्राप्त की जा सकती है। यदि परिवार में बच्चों की संख्या बढ़ जाती है तथा संसाधनों का अभाव महसूस किया जाता है, तब उसमें सामंजस्य कैसे स्थापित किया जा सकता है, आदि का ज्ञान भी जनसंख्या शिक्षा के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त यदि परिवार में दम्पत्ति सन्तानविहिन है तब चिकित्सक द्वारा परीक्षण, दवाई अथवा शल्य किया आदि से दम्पत्ति की सहायता करना भी इसी शिक्षा का अभिन्न अंग है। इस प्रकार परिवार परिसीमन कार्यक्रम केवल बच्चों की संख्या सीमित करने तक ही सीमित नहीं है बल्कि संतान विहिनता की दशा में उपयुक्त सहायता प्रदान करने से भी सम्बन्धित है।

(6) मातृ एवं शिशु कल्याण कार्यक्रम– मातृ एवं शिशु कल्याण कार्यक्रम का जनसंख्या शिक्षा में विशेष स्थान है। समाज में गर्भवती माताओं एवं शिशुओं का विशेष स्थान होता है। वास्तव में परिवार में माता ही सब प्रकार की शिक्षा प्रदान करती है तथा परिवार के विभिन्न सदस्यों की उचित देखभाल भी करती है। यदि माता का ही स्वास्थ्य ठीक नहीं होगा, उसे उपयुक्त पौष्टिक भोजन प्राप्त नहीं होगा, रोग प्रतिरोधक दवाईयाँ अथवा टीके उपलब्ध नहीं होंगे तब वह भी परिवार का स्तर ऊँचा उठा सकने में सफल नहीं होगी। इस प्रकार नवजात शिशु के लिए प्रथम वर्ष तक विशेष देख–रेख तथा उसके पश्चात भी लगभग 4 वर्ष की आयु तक विशेष रूप से ध्यान देना आवश्यक होता है, जिससे शिशुओं को विभिन्न रोगों से बचाया जा सके और ऊँची शिशु मृत्यु–दर को कम किया जा सके। इसके अतिरिक्त माताओं की प्रसव से पूर्व प्रसवकाल तथा प्रसवोत्तर काल में उचित देखभाल होनी चाहिए। इस प्रकार की जानकारी मातृ एवं शिशु कल्याण कार्यक्रम से प्राप्त की जा सकती है। इन सभी बिन्दुओं का समावेश जनसंख्या शिक्षा के अन्तर्गत किया जाता है।

(7) स्वास्थ्य एवं जनसंख्या नीति– देश की स्वास्थ्य नीति की विवेचना भी जनसंख्या शिक्षा का ही अंग है। एक वर्ष अथवा पाँच वर्ष की समयावधि में स्वास्थ्य सेवा तथा सुविधाओं में कितनी प्रगति होगी, आदि का अध्ययन इसी के अन्तर्गत किया जाता है। स्वास्थ्य नीति के अन्तर्गत लक्ष्य निर्धारित किया जाता है तथा उन लक्ष्यों को कितने समय में प्राप्त किया जा सकता है, यह भी निर्धारित किया जाता है। जनसंख्या नीति में देश की जनसंख्या स्थिति, स्थिति में सुधार लाने के उपाय एवं उससे प्राप्त होने वाली उपलब्धियों एवं लक्ष्यों का उल्लेख किया जाता है। भारत की जनसंख्या नीति के अन्तर्गत जिसका सृजन सर्वप्रथम 1976 में एवं पुनरीक्षण 1977–78 में किया गया था, केवल परिवार नियोजन की विधियों को ही अपनाना ध्येय नहीं था, बल्कि इसके अन्तर्गत अनेक बातों का समावेश किया गया था, जैसे परिवार के सदस्यों की संख्या तथा संसाधनों में इसका पारस्परिक सामंजस्य, विवाह की आयु का निर्धारण लड़कियों की शिक्षा, जनसंख्या शिक्षा तथा परिवार नियोजन कार्यक्रम की सफलता एवं प्रभाव आदि। उपर्युक्त सभी ज्ञान का समावेश जनसंख्या शिक्षा के अन्तर्गत किया जाता है। इस प्रकार जनसंख्या शिक्षा केवल यौन शिक्षा मात्र नहीं है तथा न ही यह केवल किसी एक पहलू को ही लेकर प्रदान की जाती है, बल्कि यह जनसंख्या के सभी वर्गों के लिए आवश्यक है, चाहे वे छात्र हो, विवाहित हो, बूढ़े हो या बच्चे हों।[10]

20.10 सारांश

प्रत्येक देश राज्य में उपलब्ध संसाधनों की निश्चित सीमा होती है जो एक निश्चित जनसंख्या की आवश्यकताओं की ही पूर्ति कर सकने में सक्षम होगी। प्रकृति के अन्य जीव जन्तु विभिन्न कारणों से संतुलित संख्या में रहते हैं किन्तु मानव प्रकृति पर नियंत्रण स्थापित करने के साथ सतत अपने अनुकूल व्यवस्था कर लिया जिससे जनसंख्या आधिक्य की स्थिति उत्पन्न हो गई। इसको अनेक मानव जनित समस्यायें भी प्रकट हुई है। जनसंख्या शिक्षा के माध्यम से अनुकूलतम जनसंख्या विषयक ज्ञान एवं जागरूकता का निर्माण संभव होगा जिससे ना केवल मानव सुख–शांति में वृद्धि संभव होगी, बल्कि मानव सह–अस्तित्व भी बढ़ेगा।

20.11 सन्दर्भ ग्रन्थ

1. पाण्डेय, गणेश एवं अरुणा पाण्डेय : जनसंख्यात्मक अध्ययन, राधा पब्लिकेशन्स, नई

दिल्ली, 2006, पृ. सं. 30

2. वही, पृ. सं. 31
3. सिन्हा, वी.सी. एवं पुष्पा सिन्हा : जनांकिकी के सिद्धान्त, मयूर पेपरबैक्स, नोएडा, 2005, पृ. सं. 483
4. पाण्डेय, गणेश एवं अरुणा पाण्डेय : जनसंख्यात्मक अध्ययन, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2006, पृ. सं. 31 32
5. वही, पृ. सं. 33
6. सिन्हा, वी.सी. एवं पुष्पा सिन्हा : जनांकिकी के सिद्धान्त, मयूर पेपरबैक्स, नोएडा, 2005, पृ. सं. 484
7. पाण्डेय, गणेश एवं अरुणा पाण्डेय : जनसंख्यात्मक अध्ययन, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2006, पृ. सं. 33 34
8. सिन्हा, वी.सी. एवं पुष्पा सिन्हा : जनांकिकी के सिद्धान्त, मयूर पेपरबैक्स, नोएडा, 2005, पृ. सं. 485 486
9. वही, पृ. सं. 487
10. कुमार, वि. : जनांकिकी, साहित्य भवन, आगरा, 1998, पृ. सं. 414 415 416

20.12 बोध के प्रश्न

20.12.1 दीर्घ उत्तर प्रश्न

1. जनसंख्या शिक्षा से क्या समझते हैं? इसके विषय क्षेत्र की विवेचना करें।
2. जनसंख्या शिक्षा के उद्देश्य एवं अंग की विवेचना कीजिए।

20.12.2 लघु उत्तरीय प्रश्न

1. जनसंख्या को परिभाषित करें।
2. जनसंख्या शिक्षा को परिभाषित करें।
3. जनसंख्या नीति से क्या समझते हैं?

20.12.3 वस्तुनिष्ठ प्रश्न

(1) गुजरात के सरदार पटेल विश्वविद्यालय ने सर्वप्रथम जनसंख्या शिक्षा को आपरेशन कोर्स के रूप में अपनाया?

(क) सत्य (ख) असत्य

(2) 'जनसंख्या शिक्षा' को प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्चस्तरीय शिक्षा में अनिवार्य रूप से पढ़ाने की जोरदार सिफारिश प्रोफेसर टी.एस. मेहता ने की?

(क) सत्य (ख) असत्य

(3) जनसंख्या शिक्षा, जनसंख्या संबंधी आंकड़ों के ज्ञान के लिए आवश्यक है?

(क) सत्य (ख) असत्य

(4) जनसंख्या संबंधी आँकड़ों का संग्रहण एवं विश्लेषण, जनसंख्या शिक्षा की विषय सामग्री है?

(क) सत्य (ख) असत्य

20.13 वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर

1. क
2. क
3. क
4. क

20.14 पारिभाषिक शब्दावली

जनसंख्या वृद्धि : इसके अन्तर्गत जन्मदर, मृत्युदर एवं जनसंख्या के संक्रमण सिद्धान्त को शामिल किया जाता है।

जनसंख्या इतिहास : इसके अन्तर्गत भूतकाल से आधुनिक समय तक के इतिहास को शामिल करना।

जनसंख्या संयोजन : जनसंख्या संयोजन के अन्तर्गत भविष्य के लिए दृष्टिकोण, लिंग, आयु के साथ सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक विशिष्टताओं का अध्ययन किया जाता है।

जनसंख्या वितरण : इसके अन्तर्गत जनसंख्या वितरण का अध्ययन किया जाता है।

जनसंख्या शिक्षा : जनसंख्या शिक्षा एक शैक्षणिक आयोजन है जिसका उद्देश्य अनियन्त्रित जनसंख्या वृद्धि को रोकने तर्कपूर्ण दृष्टि का विकास।

इकाई–21 : जनसंख्या शिक्षा का पाठ्यक्रम और उद्देश्यए जनसंख्या शिक्षा की आवश्यकता तथा महत्व

इकाई की रूपरेखा

21.1 प्रस्तावना

21.2 उद्देश्य

21.3 जनसंख्या शिक्षा का अर्थ

21.4 जनसंख्या शिक्षा की परिभाषा

21.5 जनसंख्या शिक्षा के तत्त्व

21.6 जनसंख्या शिक्षा की प्रकृति

21.7 जनसंख्या शिक्षा का पाठ्यक्रम

21.8 जनसंख्या शिक्षा के उद्देश्य

 21.8.1 जनसंख्या शिक्षा के सामान्य उद्देश्य

 21.8.2 जनसंख्या शिक्षा के विशिष्ट उद्देश्य

21.9 जनसंख्या शिक्षा की आवश्यकता तथा महत्त्व

21.10 जनसंख्या शिक्षा के उपाय

21.11 सारांश

21.12 सन्दर्भ ग्रन्थ

21.13 बोध के प्रश्न

 21.13.1 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

 21.13.2 लघु उत्तरीय प्रश्न

 21.13.3 वस्तुनिष्ठ प्रश्न

21.14 बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर

21.15 पारिभाषिक शब्दावली

21.2 उद्देश्य

इस इकाई का उद्देश्य निनलिखित तथ्यों को उजागर करना है :

1. जनसंख्या शिक्षा का अर्थ समझना एवं विभिन्न परिभाषाओं से परिचित होना।

2. जनसंख्या शिक्षा के विभिन्न तत्वों से परिचित होना।

3. जनसंख्या शिक्षा की प्रकृति को समझना।

4. जनसंख्या शिक्षा के पाठ्यक्रम को जानना।

5. जनसंख्या शिक्षा के विशिष्ट उद्देश्यों से परिचित होना।

6. जनसंख्या शिक्षा के महत्व एवं आवश्यकता से परिचित होना।

21.1 प्रस्तावना

आज विश्व की जनसंख्या बीसवीं सदी के मध्य की तुलना में तीन गुना से भी अधिक अधिक है। वैश्विक मानव जनसंख्या 1952 में अनुमानित 2.5 अरब लोगों से बढ़कर नवम्बर 2022 के मध्य में 8.0 अरब तक पहुँच गई, जिसमें 2010 के बाद से 1 अरब लोग और 1998 के बाद से 2 अरब लोग शामिल हो गए। अगले 30 वर्षों में दुनिया की जनसंख्या में लगभग 2 अरब लोगों की वृद्धि होने की उम्मीद है। वर्तमान 8 बिलियन से 2050 में 9.7 बिलियन और 2080 के मध्य में लगभग 10.4 बिलियन तक पहुँच सकता है।

यह नाटकीय वृद्धि बड़े पैमाने पर प्रजनन आयु तक जीवित रहने वाले लोगों की बढ़ती संख्या, मानव जीवन काल में क्रमिक वृद्धि, बढ़ते शहरीकरण और बढ़ते प्रवासन के कारण हुई है। इस वृद्धि के साथ प्रजनन दर में बड़े बदलाव हुए हैं। इन प्रवृत्तियों का आने वाली पीढ़ियों पर दूरगामी प्रभाव पड़ेगा।

15 नवम्बर 2022 को विश्व की जनसंख्या 8 अरब तक पहुँच गई, जो मानव विकास में एक मील का पत्थर है। जबकि वैश्विक जनसंख्या को 7 से 8 अरब तक बढ़ने में 12 साल लगे, इसे 9 अरब तक पहुँचने में लगभग 15 साल लगेंगे – 2037 तक, जो एक संकेत है कि वैश्विक जनसंख्या की समग्र वृद्धि दर धीमी हो रही है। फिर भी कुछ देशों में प्रजनन क्षमता का स्तर ऊँचा बना हुआ है। उच्चतम प्रजनन स्तर वाले देश आमतौर पर प्रति व्यक्ति आय सबसे कम होते हैं। इसलिए वैश्विक जनसंख्या वृद्धि समय के साथ दुनिया के सबसे गरीब देशों में केन्द्रित हो गई है, जिनमें से अधिकांश उप–सहारा अफ्रीका में हैं।

विश्व की जनसंख्या 2030 में 8.2 अरब तक पहुँचने का अनुमान है और 2020 में 9.7 अरब और 2100 तक 10.4 अरब तक बढ़ने का अनुमान है। किसी भी प्रकार के प्रक्षेपण के साथ, इन नवीनतम जनसंख्या अनुमानों के आसपास कुछ हद तक अनिश्चितता है। ये आँकड़े मध्यम प्रक्षेपण संस्करण पर आधारित हैं, जो उन देशों के लिए प्रजनन क्षमता में गिरावट का अनुमान लगाता है जहाँ बड़े परिवार अभी भी प्रचलित हैं, साथ ही प्रति महिला औसतन दो से कम बच्चों वाले कई देशों में प्रजनन क्षमता में मामूली वृद्धि हुई है। सभी देशों में जीवित रहने की सम्भावनाओं में भी सुधार होने का अनुमान है। (स्रोत– https://www.un.org/en/global & issues/population)

जनसंख्या में तेज बढ़ोत्तरी संसार के कई देशों के लिए एक विकराल समस्या बन गई है। विशेषकर अल्पविकसित देशों में यह समस्या आज सबसे बड़ी चुनौती बन गई है। इस स्थिति को नियन्त्रित करने अथवा इस समस्या से मुक्ति पाने के लिए संसार के समस्त देश अपने अपने संसाधनों के एवं बाह्य सहायता के माध्यम से प्रयासरत हैं। यद्यपि ये समस्या अभी पूरी तरह खत्म नहीं हो पाई है तथापि विश्व में चल रहे जनसंख्या नियन्त्रण के प्रयासों में में ही नहीं अपितु स्वास्थ्य सेवाओं में में भी पर्याप्त विकास हुआ है। इसके फलस्वरूप भ्रूण हत्या, शिशु

एवं बाल मृत्यु में उल्लेखनीय कमी आ रही है। इसके परिणामस्वरूप विकसित एवं विकासशील देशों की आय तथा जनसंख्या संरचना में पर्याप्त बदलाव आया है।

सामान्य रूप विकासशील देशों में 40 से 45 प्रतिशत जनसंख्या 15 वर्ष से कम आयु वर्ग में देखी जाती है, जो लगभग 5 से 20 वर्ष के पश्चात पुनरुत्पादन प्रारम्भ कर देंगे तब लोगों का ध्यान इस तरफ जाएगा। इसका प्रमुख कारण यह है कि जनसंख्या से उत्पन्न तात्कालिक समस्या से मुक्ति पाने के लिए सीमित वित्तीय संसाधनों के अंतर्गत प्रजनन दर नियंत्रण करने का प्रयास किया जाता है। इस तरह जनसंख्या नियन्त्रण की दृष्टि से विश्व के अधिकांश देशों का ध्यान केवल पुनरुत्पादन आयु वर्ग की ओर ही आकर्षित हो रहा है। जबकि आवश्यकता इस बात की है लोगों का ध्यान पूर्व–पुनरुत्पादन आयु वर्ग के लोगों की ओर ही जाना चाहिए। इसलिए ये उचित ही होगा की बच्चों को, जो की भविष्य के माता पिता हैं, जनसंख्या तथा के और बड़े परिवार से उत्पन्न समस्याओं के प्रति जागरूक कर दिया जाए। इससे उनमें परिवार के आकार तथा देश की जनसंख्या की समस्या के प्रति स्वतः जागरुकता उत्पन्न हो जाए। इस तरह की जागरुकता जनसंख्या शिक्षा के माध्यम से लाई जा सकती है। अतः आवश्यकता इस बात की है की जनसंख्या शिक्षा को स्कूल स्तर से ही प्रारम्भ करने पर गम्भीरतापूर्वक विचार किया जाए।

भारत की जनसंख्या वर्तमान में 1.4 बिलियन हो गई है तथा इसके वर्ष 2026 तक चीन से ज्यादा हो जाने की सम्भावना है। ऐसे में भारत के लिये जनसंख्या शिक्षा अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। यूनेस्को के अनुसार जनसंख्या शिक्षा एक शैक्षिक कार्यक्रम है, जो परिवार, समुदाय, राष्ट्र और विश्व की जनसंख्या की स्थिति के अध्ययन के लिये छात्रों में उस स्थिति के प्रति तर्कसंगत और जिम्मेदार दृष्टिकोण और व्यवहार विकसित करने के उद्देश्य से प्रदान की जाती है।''

भारतीय नागरिकों के बारे में सूचना

मार्च 2001 में भारत की जनसंख्या जहाँ 1,028,737,436 थी वो 1 मार्च 2011 में 1,210,193,422 पर पहुँच गई थी (623,700,000 पुरुष और 586,400,000 महिलायें)। वर्ष 2001–2011 के दौरान भारत की कुल दशकीय वृद्धि 181 मिलियन हो गई थी।

(स्रोत https://knowindia.india.gov.in/hindi/profile/population.php)

ब्यौरे	विवरण
आबादी (जनसंख्या)	1 मार्च 2011 को भारत की जनसंख्या 1,210.9 मिलियन (623.2 मिलियन पुरुष और 587.6 मिलियन महिलाएं) थी ।
जनसंख्या वृद्धि दर	औसत वार्षिक घातांकी वृद्धि दर वर्ष 2001–2011 के दौरान 1.64 प्रतिशत है।
जन्म दर	वर्ष 2011–15 की जनगणना के अनुसार अनुमानित जन्म दर 20.1 है।
मृत्यु दर	वर्ष 2011–15 की जनगणना के अनुसार अनुमानित मृत्यु दर 7.2 है।
सम्भावित जीवन दर	65.8 वर्ष (पुरुष) 68.1 वर्ष (महिला) (सितम्बर 2006–2011 की स्थिति के अनुसार)
लिंग अनुपात	2011 की जनगणना के अनुसार 940

साक्षरता 2001 की जनसंख्या के अनंतिम परिणाम के अनुसार देश मे साक्षरता दर 74.04 प्रतिशत है। 82.14 प्रतिशत पुरुषों के लिए और महिलाओं के लिए 65.46 है।

21.3 जनसंख्या शिक्षा का अर्थ

सामान्य अर्थों में जनसंख्या शिक्षा अत्यधिक जनसंख्या वृद्धि से उत्पन्न गम्भीर समस्याओं के सन्दर्भ में विस्तृत जानकारी, सोच तथा जागरूकता उत्पन्न करती है। जनसंख्या शिक्षा से व्यक्ति स्वयं अपने परिवार, समाज, देश के प्रति अपने उतरदायित्व को समझते हुए अपने परिवार के आकार को व्यवस्थित एवं नियन्त्रित करने के प्रति जागरूक हो सकता है। वास्तव में, जनसंख्या शिक्षा एक वृहद् अवधारणा है, परिवार नियोजन उस वृहद् अवधारणा का छोटा स्वरूप है। जनसंख्या शिक्षा का सम्बन्ध जनसंख्या के गुणात्मक सुधारों से है। संक्षेप में, जनसंख्या शिक्षा का तात्पर्य छात्रों को यह समझने योग्य बनाना है कि परिवार का आकार नियन्त्रित होना चाहिए। यदि परिवार का आकार छोटा होगा, जनसंख्या कम होगी तो इससे जीवन–स्तर को बनाए रखने में सहायता मिलेगी। जनसंख्या शिक्षा के द्वारा छात्र यह समझ सकेंगे कि परिवार के सदस्यों का स्वास्थ्य और कल्याण की रक्षा परिवार की आर्थिक स्थिरता तथा आनेवाली पीढ़ियों की सम्पन्नता के लिए आवश्यक है। इस प्रकार स्पष्ट है कि जनसंख्या शिक्षा वर्तमान तथा भावी परिवार कल्याण, स्वास्थ्य, आर्थिक सम्पन्नता तथा राष्ट्रीय जीवन–स्तर को ऊँचा उठाने का प्रयास करती है।

21.4 जनसंख्या शिक्षा की परिभाषा

जनसंख्या शिक्षा का अर्थ समझने के पश्चात आइए अब हम इससे सम्बन्धित परिभाषाओं पर गौर करते हैं। जनसंख्या शिक्षा की कुछ प्रमुख परिभाषाएँ इस प्रकार हैं :

1. **वी.के.आर.वी. राव–** "जनसंख्या शिक्षा केवल जनसंख्या चेतना से ही सम्बन्धित नहीं, अपितु इसके साथ विकसित मूल्य और दृष्टिकोण भी संलग्न हैं, ताकि इसकी गुणात्मकता व मात्रात्मकता का ध्यान भी रखा जाए।"[1]

2. **यूनेस्को–** "जनसंख्या शिक्षा एक शैक्षणिक कार्यक्रम है, जिसके कारण परिवार, समुदाय, राष्ट्र और विश्व की जनसंख्या की स्थिति का बोध कराया जाता है, जिससे विद्यार्थियों में इस स्थिति के प्रति तर्कपूर्ण दृष्टिकोण और उत्तरदायित्वपूर्ण व्यवहार विकसित किया जा सके।"

3. **मसीआल्स–** "जनसंख्या शिक्षा ऐसे विश्वसनीय ज्ञान की विधियों का सीखना तथा शिक्षण है, जो जनसंख्या के स्वरूप तथा जनसंख्या परिवर्तन के मानवीय परिणामों को खोज करती है।"

4. **जनसंख्या गोष्ठी 972 (फिलीपीन्स)–** "जनसंख्या शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा लोगों में व्यक्ति, परिवार, समाज और देश के लिए अच्छा जीवन स्तर प्राप्त करने के लिए जनसंख्या की स्थिति के बारे में उचित जानकारी, दृष्टिकोण एवं व्यवहार तथा जाग्रति का विकास करना है।"

5. **स्टीफन वीडरमैन के अनुसार –** "जनसंख्या शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से एक छात्र जनसंख्या प्रक्रियाओं, जनसंख्या विशेषताओं, परिवर्तन के जनसंख्या स्त्रोतों की प्रकृति

और महत्त्व का अध्ययन एवं विश्लेषण करता है और इन प्रक्रियाओं, विशेषताओं और परिवर्तनों का स्वयं, उसके परिवार, समाज और दुनिया पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन और विश्लेषण करता है।"

जनसंख्या सन्दर्भ संस्थान (Population Reference Bureau) ने जनसंख्या शिक्षा के प्रति व्यापक दृष्टिकोण अपनाते हुए स्पष्ट किया कि "जनसंख्या शिक्षा, जनसंख्या की विस्फोटक वृद्धि, लोगों के वितरण एवं केंद्रीभूत होने की प्रवृत्त में टीवा परिवर्तन, आयु एवं अन्य जनांकिकीय परिवर्तनों के प्रभाव तथा मानव की समस्याओं के साथ तादात्म्य उपस्थित करने के परिणामों तथा व्यक्ति, परिवार, समाज तथा परिवेश पर पड़ने वाले प्रभाव को समझने का प्रयास है। एक विशिष्ट आयु वर्ग तक सीमित न करके उन विद्यार्थियों तक सीमित किया जा सकता है जो कि आने वाली एक अथवा दो दशाब्दियों में प्रमुख संतानोत्पादक हो जायेंगे।

इस प्रकार जनसंख्या शिक्षा ज्ञान की वह शाखा है, जिसमें जनसंख्या वृद्धि के दुष्परिणामों तथा जनसंख्या नियन्त्रण के उपायों के प्रति जागरुकता उत्पन्न की जाती है। इसके अन्तर्गत जनसंख्या परिवर्तन के विभिन्न पहलुओं का व्यक्ति, समाज, तथा देश पर पड़ने वाले प्रभावों का ज्ञान कराया जाता है। ऐसी शिक्षा भावी पीढ़ी को प्रजनन दर में कमी लाने हेतु प्रेरित करती ताकि व्यक्ति, समाज तथा देश का जीवन स्तर ऊँचा उठे तथा देश का सर्वांगीण विकास हो सके। इसे संक्षिप्त रूप में इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है–

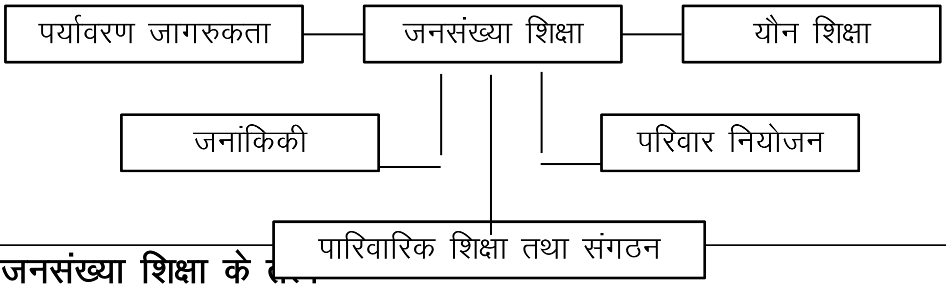

21.5 जनसंख्या शिक्षा के त

जनसंख्या शिक्षा के प्रमुख तत्वों को निम्न रूप से समझ जा सकता है।

1. छात्रों में परिवार के आकार के प्रति समझ विकसित करना।
2. जनसंख्या की वृद्धि के कारणों और परिणामों को समझने में व्यक्ति की सहायता करना।
3. परिवार के आकार और राष्ट्रीय जनसंख्या में परिवर्तन के व्यक्ति पर प्रभाव के बारे में सटीक जानकारी प्रदान करना।
4. इस तथ्य की समझ विकसित करना कि परिवार के सदस्यों के स्वास्थ्य और कल्याण के लिये तथा युवा पीढ़ी के लिये अच्छी संभावनाएँ सुनिश्चित करने हेतु भारतीय परिवार छोटे और कॉम्पैक्ट होने चाहिये।
5. व्यक्ति को यह समझने में सक्षम बनाना है कि एक विशाल जनसंख्या व्यक्ति और समाज को कैसे प्रभावित करती है।
6. छात्रों को जनसंख्या शिक्षा की अवधारणा को समझने के लिये आवश्यक ज्ञान, कौशल, दृष्टिकोण और मूल्यों को प्राप्त करने में सक्षम करना।
7. वर्तमान में जनसंख्या स्थितियों के बारे में सचेत और सही निर्णय लेने में सक्षम बनाना।

8. जनसंख्या लक्ष्यों को पूरा करने में सरकार के प्रयासों में सहयोग हेतु प्रेरित करना।

9. शैक्षणिक कार्यक्रमों का आयोजन।

अस्तु, जनसंख्या शिक्षा का मुख्य प्रयोजन बढ़ती जनसंख्या के प्रति चेतना उत्पन्न करना एवं अंततः मानव जीवन को सुखी बनाना है।

21.6 जनसंख्या शिक्षा की प्रकृति

जनसंख्या शिक्षा की प्रकृति के अंतर्गत निम्नलिखित तथ्यों को सम्मिलित किया गया है जो इस प्रकार है :

(1) अपनी प्रकृति के अनुसार, यह जीवन की गुणवत्ता जैसे मात्रात्मक एवं गुणात्मक तथ्यों पर विचार करता है। इसलिए जनसंख्या शिक्षा मूल रूप से मानव संसाधन विकास से जुड़ी हुई है।

(2) यह पूर्णतः शिक्षा पर आधारित पाठ्यक्रम है जिससे यह विद्यार्थियों को ज्ञान, कौशल एवं मूल्य अर्जित करने में मदद करता है।

(3) जनसंख्या शिक्षा का सम्बन्ध सभी विषयों से है इसलिए यह बहुविषयक अवधारणा है।

(4) यह व्यक्ति, परिवार एवं समाज के कल्याण के लिए जनसंख्या की स्थिति और जनसंख्या सम्बन्धी मामलों को समझने के लिए एक शिक्षण वातावरण प्रदान करता है।

(5) जनसंख्या शिक्षा मानव जीवन की गुणवत्ता के संदर्भ में उसके पर्यावरण के साथ अंतःक्रिया का अध्ययन है।

(6) जनसंख्या शिक्षा मुख्य रूप से जनसंख्या कारकों एवं सामाजिक–आर्थिक प्रक्रियाओं के मध्य सम्बन्धों के बारे में बात करती है।

(7) जनसंख्या शिक्षा के अंतर्गत जनसंख्या परिवर्तन तथा सामाजिक और जैविक परिणामों का अध्ययन भी सम्मिलित है।

21.7 जनसंख्या शिक्षा का पाठ्यक्रम

विश्व में तीव्र गति से बढ़ती हुई जनसंख्या के सन्दर्भ में जनसंख्या शिक्षा के महत्व को स्वीकार करते हुए जनसंख्याविदों तथा योजनाकारों ने ये मत व्यक्त किया है कि जनसंख्या शिक्षा की व्यवस्था शिक्षा के सभी स्तरों पर राजकीय अथवा निजी संगठनों द्वारा किया जाना चाहिए। जनसंख्या शिक्षा के पाठ्यक्रम में निम्नलिखित विषयों के अध्ययन को सम्मिलित किया जाना चाहिए :

(1) जनसंख्या, जन्मदर, यौन शिक्षा में सिद्धान्तों का ज्ञान।

(2) प्रजनन तथा मानव विकास की क्रिया का ज्ञान। स्वास्थ्य, शिक्षा, गृह विज्ञान आदि विषयों की जानकारी।

(3) बालकों के जन्म, स्वस्थ रहने की विधियाँ तथा स्त्रियों के स्वास्थ्य से सम्बन्धित जानकारी। विज्ञान तथा गृहविज्ञान की जानकारी।

(4) जीवन–स्तर और पारिवारिक आहार के सम्बन्ध में जानकारी।

(5) स्वास्थ्य तथा छोटे परिवार के महत्त्व की जानकारी।

(6) खाद्यान्न उत्पत्ति और जनसंख्या वृद्धि की विभिन्न समस्याओं की जानकारी।

(7) विवाह के नैतिक तथा व्यावहारिक दृष्टिकोण का ज्ञान।

(8) चार्ट, मानचित्र आदि के माध्यम से जनसंख्या वृद्धि के घातक परिणामों की जानकारी।

(9) विद्यालयों में समय–समय पर परिसंवाद, वाद–विवाद, निबन्ध, भाषण, प्रतियोगिताओं का आयोजन कर जनसंख्या शिक्षा के प्रति जागरुकता उत्पन्न करना।

(10) जनसंख्या वृद्धि की समस्या को अन्य समस्याओं की जननी के रूप में जानकारी प्रदान करना।

(11) छात्रों को सामाजिक तथा राष्ट्रीय दायित्व का निर्वाह करने सम्बन्धी जानकारी।

21.8 जनसंख्या शिक्षा के उद्देश्य

जनसंख्या शिक्षा के प्रमुख उद्देश्यों को निम्न दो भागों में विभाजित किया जा सकता है :

21.8.1 जनसंख्या शिक्षा के सामान्य उद्देश्य

अन्य विज्ञान अथवा ज्ञान की शाखाओं की तुलना में जनसंख्या शिक्षा की अवधारणा नई है। मूल उद्देश्य भावी पीढ़ी को बढ़ती जनसंख्या के खतरों की जानकारी देना तथा जनसंख्या का नियन्त्रण के उपाय सुझाना। जनसंख्या शिक्षा के सामान्य उद्देश्यों को निम्नलिखित भागों में विभाजित किया जा सकता है–

(अ) मानवीय–विकासात्मक उद्देश्य– श्रीमती वाडिया अध्यक्ष, परिवार नियोजन संस्थान, मुम्बई ने जनसंख्या शिक्षा के मानवीय और विकासात्मक उद्देश्यों को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि "जीवन का पूर्ण मूल दर्शन पुनर्जाग्रत करना है, जिसके अध्ययन से न केवल अनवरत जनसंख्या की वृद्धि को ही दृष्टिगत रखना है, वरन् मानव जीवन के अन्तःसम्बन्धित उन सभी पहलुओं को भी सम्मिलित करना है, जिनका सम्बन्ध सम्पूर्ण मानवीय अस्तित्त्व एवं उनके कार्यों से बाध्य परिवेश व्यक्तिगत तथा पारिवारिक सम्बन्धी से है।"

(आ) जनसंख्या वृद्धि का ज्ञान– जनसंख्या शिक्षा का दूसरा सामान्य उद्देश्य जनसंख्या वृद्धि के प्रति लोगों को जागृत करना है।

(इ) छोटे परिवार का ज्ञान– जनसंख्या शिक्षा के माध्यम से यह बताने का प्रयास किया जाता है कि छोटा परिवार सुख का आधार है। लोगों में इस प्रकार की भावना को जागृत किया जाता है।

(ई) स्वास्थ्य के प्रति जागरुकता– स्वास्थ्य के प्रति जागरुक बनाना भी जनसंख्या शिक्षा का उद्देश्य है। जनसंख्या वृद्धि का माँ तथा बच्चों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। इसकी जानकारी प्रदान करना जनसंख्या शिक्षा का उद्देश्य है।

(उ) उच्च जीवन स्तर– जनसंख्या शिक्षा के माध्यम से लोगों को जीवन स्तर को ऊँचा उठाने के लिए भी प्रेरित करना है। लोगों को जनसंख्या के संगठन के महत्त्व की जानकारी देकर उनके स्वास्थ्य, शिक्षा, आवास, भोजन तथा जीवन की अन्य सुविधाओं की जानकारी प्रदान करना है।

(ऊ) अन्य उद्देश्य– जनसंख्या शिक्षा के अन्य सामान्य उद्देश्य इस प्रकार हैं–

(i) विकास का संतुलित ज्ञान कराना।

(ii) सदस्यों में उत्तरदायित्व की भावना को विकसित करना।

(iii) नारी सम्मान के प्रति चेतना का विकास करना।

(iv) परिवार कल्याण की भावना को जागृत करना।

(v) जन–वृद्धि की हानियों से परिचित–कराना।

(vi) बढ़ते हुए प्रदूषण की ओर ध्यान दिलाना।

(vii) नागरिकों में परिवार, समाज और राष्ट्र के प्रति निर्णायक प्रवृत्ति को विकसित करना।

21.8.2 जनसंख्या शिक्षा के विशिष्ट उद्देश्य

सामान्य उद्देश्यों के अतिरिक्त जनसंख्या शिक्षा के कुछ विशिष्ट उद्देश्य हैं। ये विशिष्ट उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

(अ) ज्ञानात्मक उद्देश्य– जनसंख्या शिक्षा के ज्ञानात्मक उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

(i) जनसंख्या वृद्धि के विचार से परिचित कराना।

(ii) जनसंख्या प्रवृत्ति की व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र को जानकारी देना।

(iii) जनसंख्या वृद्धि के सहायक कारकों की जानकारी देना।

(iv) जनसंख्या नियन्त्रण के उपायों के सुझाव देना।

(v) जनसंख्या वृद्धि का समाज, राष्ट्र और परिवार के विकास पर पड़ने वाले प्रभावों की जानकारी देना।

(vi) छोटे और लघु परिवारों के लाभों की जानकारी देना तथा बड़े परिवारों के नुकसानों का ज्ञान कराना।

(vii) लोगों में इस प्रकार की भावना का विकास करना कि छोटे परिवार ही सुख के आधार हैं।

(viii) यह जानकारी देना कि स्वस्थ जीवन के लिए उचित पोषण अनिवार्य है।

(ix) उस प्रक्रिया से अवगत कराना जिससे पौधों तथा जीव–जन्तुओं का विकास और विनाश होता है।

(आ) अभिवृत्तिपरक उद्देश्य– जनसंख्या शिक्षा के अभिवृत्तिपरक उद्देश्य निम्न हैं :

(i) इस विचार को प्रस्फुटित करना कि जनसंख्या वृद्धि को रोकना राष्ट्रीय कर्त्तव्य है।

(ii) ऐसी भावना को आधार प्रदान करना कि सुख का आधार केवल छोटा परिवार ही है।

(iii) समाज, राष्ट्र, व्यक्ति और परिवार में उत्तरदायित्व की भावना का विकास करना।

(iv) जनसंख्या वृद्धि में सहायक कुरीतियों और अन्धविश्वासों को समाप्त करने की दिशा में जागरुकता विकसित करना।

(v) व्यक्तिगत स्वास्थ्य एवं वातावरण के प्रति जागरुकता एवं निष्ठा का विकास करना।

(vi) आस–पास के अस्वस्थकारी वातावरण को दूर करने के प्रति जागरुकता पैदा करना।

(इ) योग्यतापरक उद्देश्य– जनसंख्या शिक्षा के कौशल तथा योग्यतापरक उद्देश्य निम्न हैं :

(i) जनसंख्या सम्बन्धी मानचित्रों को पढ़ने का कौशल विकसित करना।

(ii) जनसंख्या सम्बन्धी आँकड़ों के संकलन का ज्ञान एवं कौशल उत्पन्न करना।

(iii) संकलित आँकड़ों तथा तथ्यों को प्रदर्शित करने का कौशल विकसित करना।

(iv) दैनिक जीवन में प्रयोग आनेवाली वस्तुओं के रख–रखाव और कौशल का ज्ञान प्राप्त करना।

(v) प्राकृतिक संसाधनों को क्षरण से बचाने तथा उनके उपयोग के लिए कौशल का विकास करना।

21.9 जनसंख्या शिक्षा की आवश्यकता तथा महत्त्व

आज के युग में जनसंख्या शिक्षा का महत्त्वपूर्ण स्थान हैं। इसका कारण यह है कि जनसंख्या में निरन्तर वृद्धि मानव समाज के लिए बड़ी चुनौती है। मानव अजेय प्राणी है। वह सभी समस्याओं का निदान करने की क्षमता रखता है। जनसंख्या शिक्षा का महत्त्व तथा इसके अध्ययन की आवश्यकता निम्नलिखित कारणों से है :

(1) जनसंख्या का ज्ञान– जनसंख्या शिक्षा के अध्ययन का महत्त्व इसलिए है कि इसकी सहायता से व्यक्ति को जनसंख्या के सम्बन्ध में ज्ञान होता है। जनसंख्या जन की संख्या है। व्यक्ति जन है। अतः उसके लिए जन की संख्या का ज्ञान अनिवार्य है। यह ज्ञान जनसंख्या शिक्षा के माध्यम से ही प्राप्त किया जा सकता है।

(2) जनसंख्या वृद्धि के कारणों का ज्ञान–जनसंख्या शिक्षा के अध्ययन का दूसरा महत्त्व यह है कि इसकी सहायता से हमें जनसंख्या में वृद्धि के कारणों की जानकारी होती है।

(3) जनसंख्या वृद्धि के प्रभावों का ज्ञान– जनसंख्या शिक्षा से मात्र जनसंख्या में वृद्धि के कारणों का ही ज्ञान नहीं होता है, अपितु जनसंख्या वृद्धि के परिणामस्वरूप इसका समाज पर पड़ने वाले प्रभावों की भी जानकारी होती है। इस प्रकार जनसंख्या शिक्षा जनसंख्या वृद्धि के दुष्परिणामों की जानकारी और उससे बचने के उपाय बतलाती है।

(4) राष्ट्रीय विकास में सहायक– जनसंख्या शिक्षा देश के आर्थिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक विकास में सहायक है। जनसंख्या शिक्षा के माध्यम से निम्न कार्य आर्थिक विकास में सहायक होते हैं :

(i) कुशल श्रमिकों का निर्माण,

(ii) कार्यक्षमता में वृद्धि,

(iii) जीवन–स्तर को ऊँचा उठाने की चेतना,

(iv) राष्ट्रीय विकास को अपना विकास समझने की जागरुकता,

(v) प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि की प्रेरणा,

(vi) सामाजिक बुराइयों से छुटकारा,

(vii) सांस्कृतिक उन्नति की चेतना।

(5) सुखी पारिवारिक जीवन का आधार– जनसंख्या शिक्षा परिवार को सुखी तथा सम्पन्न बनाने में सहायक है। इस शिक्षा के माध्यम से यह जानकारी होती है कि छोटा परिवार आर्थिक उन्नति का आधार है तथा इससे जीवन–स्तर को ऊँचा उठाया जा सकता है। छोटे परिवार में सदस्यों के स्वास्थ्य की रक्षा की जा सकती है तथा बच्चों के भविष्य का निर्माण किया जा सकता है। इस, प्रकार जनसंख्या शिक्षा सुखी पारिवारिक जीवन का आधार है।

(6) परिवार कल्याण कार्यक्रमों की सफलता– जनसंख्या शिक्षा के माध्यम से परिवार नियोजन तथा परिवार कल्याण के मार्ग में आने वाली बाधाओं को दूर किया जा सकता है। परिवार के बारे में जनता के मन में अनेक पूर्वाग्रह तथा शंकाएँ हैं। जनसंख्या शिक्षा इन शंकाओं तथा पूर्वाग्रहों को दूर कर सकता है।

(7) सामाजिक बुराइयों को रोकने में सहायक– जनसंख्या शिक्षा की सहायता से समाज में व्याप्त अनेक सामाजिक बुराइयों और अन्धविश्वासों का अन्त करने में सहायता मिलती है। जनसंख्या शिक्षा लोगों में ऐसी चेतना को विकसित करती है, जिसकी सहायता से उन्हें सामाजिक बुराइयों को दूर करने में मदद मिलती है।

(8) युवकों में जनसंख्या शिक्षा का महत्त्व– जनसंख्या शिक्षा का सबसे बड़ा महत्त्व युवकों के लिए है। ये लोग विवाहित होते हैं तथा सनन्तानोत्पत्ति में लगे हुए होते हैं। युवकों में इस प्रकार की शिक्षा की सहायता से जनसंख्या नियन्त्रण में मदद मिलती हैं।

21.10 जनसंख्या शिक्षा के उपाय

जनसंख्या शिक्षा को लागू करने के लिए निम्नलिखित उपाय अपनाए जा सकते हैं जैसे :

1. स्कूली पाठ्यक्रम में 'जनसंख्या शिक्षा' नामक विषय को शामिल करना।
2. जनसंख्या शिक्षा कार्यक्रम के सफल क्रियान्वयन के लिये शिक्षकों का प्रशिक्षण।
3. पंचायत स्तर पर वेब सीरीज जैसे– पंचायत, श्रव्य–दृश्य कार्यक्रम और सम्मेलनों के माध्यम से जागरूकता।
4. लड़कियों की विवाह आयु में वृद्धि तथा उनकी शिक्षा पर बल।

21.11 सारांश

विकासशील देश में ज्यादा आबादी संसाधनों पर दबाव बनाती है ऐसी स्थिति में प्राकृतिक एवं भौतिक संसाधनों में प्रति व्यक्ति हिस्सेदारी बढ़ाने हेतु एवं अनुकूलतम जनसंख्या की स्थिति लाने हेतु तार्किक कदम उठाने होंगे क्योंकि जरूरतें पूरी ना होने पर समाज में नकारात्मकता का भाव पैदा होता है जिससे कई प्रकार की विसंगतियाँ जन्म लेती है। अधिक जनसंख्या का तब तक कोई फायदा नहीं जब तक कि लोग तकनीकी रूप से दक्ष नहीं होंगे ऐसे में दो या अतिविशिष्ट परिस्थितियों में तीन बच्चों की नीति पर काम करना होगा। जनसंख्या नीति का आम लोगों के जीवन से जुड़ाव होना चाहिये और इसमें विधायिका,

कार्यपालिका, नौकरशाही, मीडिया, पेशेवरों, शिक्षकों और आम जनता सहित सभी हितधारकों को सम्मिलित होना चाहिये। वास्तव में बल या कानून के भय की अपेक्षा जनसंख्या शिक्षा और जागरूकता ही जनसंख्या नियंत्रण का समुचित उपाय हो सकती है।

इसमें कोई दो राय नहीं है कि शिक्षा के प्रसार के चलते सम्पन्न और शिक्षित लोगों के अलावा आम लोगों में भी कम बच्चे पैदा करने के प्रति जागरूकता बढ़ी है। अब लोग अकुशल श्रमिक पैदा करने के बदले कौशलयुक्त सन्तान के प्रति आग्रही हो रहे हैं। बहुसंख्यक समुदाय में यह मिथक भी टूट रहा है कि पुत्र से मुखाग्नि मिलने के बाद ही मोक्ष की प्राप्ति होती है। आप अपने आसपास उन जोड़ों की शिनाख्त कर सकते हैं जिन्होंने एक ही सन्तान पर सन्तोष कर रखा है। यह सन्तान पुत्री भी हो सकती है और पुत्र भी। उस जमाने की तुलना में जब पुत्र की चाहत में लोग कई सन्तानों के पिता बन जाते थे। आज इस चाहत में कमी आई है। अतीत पर गौर करें तो पायेंगे कि जनसंख्या वृद्धि बेवजह नहीं थी। समाज के पास कई तर्क थे। कई मुश्किलें थीं। शिशु मृत्यु दर अधिक रहने के कारण लोग अधिक से अधिक सन्तान इसलिए चाहते थे कि उनमें से कुछ असमय चले जायेंगे और बचे बच्चे बुढ़ापे की लाठी बनेंगे। लेकिन अब शायद ही कोई बच्चा बुढ़ापे में अपने अभिभावकों का सहारा बन पाता है। सम्पन्न लोगों में तो लाठी न बन पाने की प्रवृत्ति विकृति के स्तर पर है। आपमें से कई लोग उन सम्पन्न पुत्रों को जानते होंगे, जिन्होंने बुढ़ापे में अपने माँ या बाप या फिर दोनों को घर से बाहर का रास्ता दिखा दिया। इस प्रवृत्ति का भी जनसंख्या नियन्त्रण पर प्रभाव पड़ा है। इसी तरह शिशु मृत्यु दर में कमी और स्कूल में पढ़ाई की गारण्टी का असर भी जनसंख्या वृद्धि की रफ्तार को कम करने में मददगार है।

21.12 सन्दर्भ ग्रन्थ

10. Thompson, Warren S. and David T. Lewis: Population Problems; New York: Mc Graw Hill Book Co. 1976.
11. Dr. Premi, M.K., Ramanamma, A., Bambawale, Usha,. An Introduction to social demography, Vikas Publishing House, New Delhi.
12. Alva Myrdal (1978): An International Economy : Greenwood press.
13. Appleman, Philip (ed.) Thomos Robert Malthus: An Essay on the Principle of Population, New York: W.W. Norton and Co., Inc., 1976.
14. World Development Report, 2023
15. Benjamin, B. (1959): Elements of Vital Statistics, George Allen & Unwin Publication, London.
16. डॉ. मिश्रा, जे.पी., जनांकिकी, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा।
17. डॉ. बघेल. डी.एस., जनांकिकी, विवेक प्रकाशन, दिल्ली।
18. डॉ. पन्त, जीवन चन्द्र, जनांकिकी, गोयल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ।

21.13 बोध के प्रश्न

आइए अब हम इस अध्याय से जुड़े कुछ प्रश्नों के माध्यम से प्राप्त ज्ञान का परीक्षण करते हैं।

21.13.1 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. जनसंख्या शिक्षा की अवधारणा की विवेचना कीजिए।
2. जनसंख्या शिक्षा के उद्देश्य एवं महत्व को संक्षेप में लिखिए।

21.13.2 लघु उत्तरीय प्रश्न

1. जनसंख्या शिक्षा पर एक निबन्ध लिखिए।
2. जनसंख्या शिक्षा की व्याख्या कीजिए।

21.13.3 बहुविकल्पीय प्रश्न

1. "जनसंख्या शिक्षा केवल जनसंख्या चेतना से ही सम्बन्धित नहीं अपितु इसके साथ विकसित मूल्य और दृष्टिकोण भी संलग्न हैं ताकि इसकी गुणात्मकता व मात्रात्मकता का ध्यान भी रखा जाए।" यह कथन सम्बन्धित है –

   अ. मसीआल्स

   ब. यूनेस्को

   स. वी.के.आर.वी. राव

   द. स्टीफन वीडरमैन

2. "जनसंख्या शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से एक छात्र जनसंख्या प्रक्रियाओं, जनसंख्या विशेषताओं, परिवर्तन के जनसंख्या स्त्रोतों की प्रकृति और महत्त्व का अध्ययन एवं विश्लेषण करता है और इन प्रक्रियाओं, विशेषताओं और परिवर्तनों का स्वयं, उसके परिवार, समाज और दुनिया पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन और विश्लेषण करता है।" यह कथन सम्बन्धित है :

   अ. मसीआल्स

   ब. यूनेस्को

   स. वी.के.आर.वी. राव

   द. स्टीफन वीडरमैन

3. जनसंख्या शिक्षा का उद्देश्य .... है।

   अ. जनसंख्या वृद्धि करना

   ब. जनसंख्या के प्रति व्यक्तियों को जागरूक करना

   स. जनसंख्या के प्रति विरूचि उत्पन्न करना

   द. उपरोक्त में से कोई नहीं

4. जनसंख्या शिक्षा की प्रकृति में सम्मिलित है–
   अ. जनसंख्या के मात्रात्मक एवं गुणात्मक तथ्यों पर विचार करना
   ब. जनसंख्या के प्रति विद्यार्थियों को ज्ञान, कौशल एवं मूल्य में वृद्धि
   स. जनसंख्या परिवर्तन तथा सामाजिक और जैविक परिणामों का अध्ययन
   द. उपरोक्त सभी
5. जनसंख्या शिक्षा के पाठ्यक्रम में कौन एक सम्मिलित नहीं है–
   अ. जनसंख्या, जन्मदर, यौन शिक्षा में सिद्धान्तों का ज्ञान
   ब. जीवन–स्तर और पारिवारिक आहार के सम्बन्ध में जानकारी
   स. विभिन्न प्रकार की सामाजिक समस्याओं का कारण ज्ञात करना
   द. खाद्यान्न उत्पत्ति और जनसंख्या वृद्धि की विभिन्न समस्याओं की जानकारी
6. जनसंख्या शिक्षा के विशिष्ट उद्देश्यों में शामिल है–
   अ. ज्ञानात्मक उद्देश्य
   ब. अभिवृत्तिपरक उद्देश्य
   स. योग्यतापरक उद्देश्य
   द. उपरोक्त सभी
7. जनसंख्या शिक्षा का महत्त्व है :
   अ. जनसंख्या के सम्बन्ध में ज्ञान
   ब. सामाजिक बुराइयों को रोकने में सहायक
   स. देश के आर्थिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक विकास में सहायक
   द. उपरोक्त सभी
8. जनसंख्या शिक्षा के प्रमुख उद्देश्यों को निम्न कितने भागों में विभाजित किया जा सकता है?
   अ. जनसंख्या शिक्षा के सामान्य उद्देश्य
   ब. जनसंख्या शिक्षा के विशिष्ट उद्देश्य
   स. अ एवं ब दोनों
   द. न तो अ न ही ब

9. जनसंख्या शिक्षा के तत्व में कौन एक सम्मिलित नहीं है :
   अ. जनसंख्या के प्रति जागरुकता उत्पन्न करना
   ब. मानव जीवन को सुखी बनाने में सहायता करना
   स. जनसंख्या वृद्धि का पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभावों की जानकारी प्राप्त करना
   द. युवाओं को जनसंख्या वृद्धि के बारे में शिक्षित न करना
10. जनसंख्या शिक्षा परिवार को सुखी तथा सम्पन्न बनाने में सहायक है, यह कथन है :
   अ. आंशिक सत्य
   ब. पूर्णतः सत्य
   स. आंशिक असत्य
   द. पूर्णतः असत्य

21.14 बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर

1.(स) 2.(द) 3.(ब) 4.(द) 5.(स) 6.(द) 7.(द) 8.(स) 9.(द) 10.(ब)

21.15 पारिभाषिक शब्दावली

- **जनाधिक्य** : जनाधिक्य (Human Overpopulation) एक ऐसी स्थिति है जब मानव जनसंख्या किसी क्षेत्र की पारिस्थितिकीय वहन क्षमता (carrying capacity) से अधिक हो जाती है। इस शब्दावली का मतलब है कि जब एक क्षेत्र अपनी संवाहन क्षमता से अधिक जनसंख्या को सहन करने में असमर्थ हो जाता है, तो उसे जनाधिक्य कहा जाता है। भारत में भी जनाधिक्य की समस्या उपस्थित है जिसके कारण अनगिनत आर्थिक सामाजिक और पर्यावरण समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं। इसे समझने के लिए हमें सुरक्षित जनसंख्या परिसीमा के अंदर रहने के लिए उपाय ढूंढने की आवश्यकता है।

- **जनसंख्या नियंत्रण** : जनसंख्या नियंत्रण (Population Control) वह प्रक्रिया है जिसके अन्तर्गत किसी देश की जनसंख्या के आकार (size), उसकी वृद्धि (Growth), वितरण (Distribution) और विशेषताओं (characteristics) पर नियन्त्रण का प्रयत्न किया जाता है। इससे अधिकांशतः जनसंख्या वृद्धि के नियंत्रण का संकेत मिलता है।

- **जनसंख्या रचना** (Population Composition) : किसी जनसंख्या के बारे में यह विवरण कि उसने आयु, लिंग, जाति, धर्म, इत्यादि के आधार पर तथा वैवाहिक स्थिति, शिक्षा और व्यवसाय, इत्यादि के आधार पर लोगों की पृथक पृथक संख्या कितनी है?